



जहाँ चाह  
वहाँ रह













# जहाँ चाह वहाँ राह

उज्जबेक लोक-कथाएं



पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड

5—ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली—110055

फोन : 23523349, 23529823

ई—मेल : pph5e@bol.net.in

प्रथम भारतीय संस्करण : जुलाई, 2010

मूल्य : रु. 170.00 (साधारण)  
रु. 200.00 (सजिल्द)

प्रस्तुत लोक कथाओं में उज़बेक लोगों के चरित्र, उनके रहन-सहन, रीति-रिवाजों, भावनाओं और आकांक्षाओं की झलक मिलती है। इन कहानियों में बुराइयों पर व्यंग्य किया गया है।

## विषय-सूची

तीन बहादुर . . . . .	7
नेकी कर, दरिया में डाल . . . . .	19
तीन भूठ और हर भूठ में चालीस गप्पें . . . . .	24
ज़ियाद बातिर . . . . .	30
गुली . . . . .	41
मूर्ख बादशाह . . . . .	49
जादू का डण्डा . . . . .	52
बुलबुल . . . . .	57
जहाँ चाह, वहाँ राह . . . . .	73
विद्वान गधा . . . . .	78
चतुर बेटी . . . . .	79
ताहिर और जोहरा . . . . .	83
जादूई हीरा . . . . .	94
क्रूर बादशाह . . . . .	100
हुस्नाबाद . . . . .	104
गरीब की बेटी . . . . .	114
सींगोंवाला सिकंदर . . . . .	130
मरता क्या न करता . . . . .	132
शाहजादी माहेसितारा . . . . .	136
पिता की अंतिम इच्छा . . . . .	170
सुनहले देश का महावीर . . . . .	175
चालीस चोर और एक गंजा . . . . .	197





## तीन बहादुर



हां, तो सुनो! पुराने ज़माने में एक आदमी रहता था। वह न बहुत अमीर था न बहुत गरीब। उसके तीन बेटे थे। तीनों चाँद-से सुन्दर थे, पढ़े-लिखे थे। सब समझदार थे और बुरे लोगों के पास भी नहीं फटकते थे।

बड़ा बेटा—तोंगूच बातिर\* इक्कीस साल का था, मँझला—ओरतानचा बातिर अठारह साल का था और सबसे छोटा—केंजा बातिर सोलह साल का था।

एक बार उनके पिता ने तीनों बेटों को बुलाकर अपने पास बिठाया और प्यार से उनके सिरों पर हाथ फेरकर कहा:

“मेरे बेटो, मैं धनवान नहीं हूँ, मेरे मरने के बाद थोड़ी-बहुत जायदाद बचेगी जरूर, मगर तुम लोग उसके सहारे ज्यादा दिन गुजारा नहीं कर सकोगे। इससे ज्यादा की तुम मुझसे आशा भी मत करो। मैंने तुम्हें दो गुण सिखाये हैं: पहला—तुम्हें तन्दुरुस्त बनाया, जिससे तुम कुशल योद्धा बने; दूसरा—तुम्हें किसी भी चीज़ से न डरना सिखाया, जिससे तुम बहादुर बने। इसके अलावा मैं तुम्हें तीन सीखें और दे रहा हूँ। इन्हें ध्यान से सुनो और हमेशा याद रखो: ईमानदारी से रहना, तभी तुम चैन से जी सकोगे; कभी डींग मत हाँकना, तब तुम्हें

\* बातिर—बहादुर।



कभी शरमिन्दा नहीं होना पड़ेगा ; कभी आलस मत करना—तभी सौभाग्यशाली बन सकोगे। और बाकी बातों का खयाल तुम खुद रखना। मैं तुम्हें तीन घोड़े दे रहा हूँ : एक मुश्की, एक लाखी और एक धूसर रंग का। मैंने तुम्हारे बूले खाने की स्वादिष्ट चीजों से भर दिये हैं। खुशकिस्मती तुम्हारी बाट जोह रही है। तुम जाओ और जाकर दुनिया देखो। बिना दुनिया देखे तुम अपने पैरों पर खड़े न हो सकोगे। अपनी किस्मत आजमाओ। खुदा हाफिज, मेरे बेटो !”

तीनों भाई सफ़र की तैयारी करने लगे। वे सुबह जल्दी ही घोड़ों पर सवार होकर रवाना हो गये। वे दिन भर चलते रहे और बहुत दूर पहुँच गये। शाम को ही उन्होंने आराम करने का फ़ैसला किया। उन्होंने घोड़ों से उतरकर खाना खाया, पर सोने के पहले आपस में यह तय किया :

“चूँकि यह जगह सुनसान है, इसलिए हमें एक-साथ नहीं सोना चाहिए। हम तीनों बारी-बारी से जागकर बाकी दो सोनेवालों की रक्षा करेंगे।

उन्होंने जैसा तय किया ; वैसा ही किया।

पहले तोंगूच पहरा देने लगा और बाकी दोनों सो गये। तोंगूच बातिर काफ़ी देर तक बैठा-बैठा तलवार से खेलता चाँदनी रात में चारों ओर देखता रहा ...

सन्नाटा छाया हुआ था। हर चीज़ गहरी निद्रा में मग्न थी।

अचानक जंगल की तरफ़ से शोर सुनाई दिया। तोंगूच बातिर तलवार खींचकर तैयार हो गया।

जहाँ तीनों भाई रुके थे, वहाँ से थोड़ी दूरी पर एक शेर की माँद थी। आदमी की गंध पाकर शेर स्टेपी में निकल आया।

तोंगूच बातिर को अपने पर विश्वास था कि वह शेर का मुक़ाबला अकेला ही कर सकता है। भाइयों की नींद खराब न हो, इस लिए वह एक ओर को भागा। शेर भी उसके पीछे लपका।

तोंगूच बातिर ने मुड़कर शेर के बायें पंजे पर तलवार से वार करके उसे घायल कर दिया। घायल शेर उस पर टूट पड़ा, पर उसने एक ओर हटकर शेर के दायें पंजे पर वार किया। शेर पूरे जोर से फिर तोंगूच बातिर पर भपटा, पर उसने शेर के सिर पर एक जोरदार वार किया। शेर वहीं ढेर हो गया।

तोंगूच बातिर ने शेर की पीठ पर बैठकर उसकी खाल की एक पट्टी काटी और अपनी कमीज़ के नीचे बांध ली। फिर वह अपने सोये हुए भाइयों के पास लौट आया, जैसे कुछ हुआ ही न हो।

इसके बाद ओरतानचा बातिर ने उठकर पहरा दिया। उसकी पहरेदारी के दौरान कोई घटना नहीं घटी।

उसके बाद केंजा बातिर ने दिन निकलने तक अपने भाइयों की रखवाली की। इस तरह पहली रात बीत गयी।







सुबह उठकर भाई फिर सफ़र पर चल पड़े। वे चलते चलते बहुत दूर पहुँच गये और शाम को एक बड़े पहाड़ के नीचे रुके। उस पहाड़ की तलहटी में पोपलर का एक घना पेड़ था, जिसके नीचे ज़मीन में से एक चश्मा फूट रहा था। उस चश्मे के पास एक गुफा थी, जिस में साँपों का राजा अजगर सुलतान रहता था।

बहादुरों को इसकी कोई खबर न थी। उन्होंने आराम से घोड़े बाँध दिये, उन्हें खरहरा करके चारा दिया और खुद खाना खाने बैठ गये। सोने से पहले उन्होंने पहली रात की तरह पहरा देने का फ़ैसला किया। पहले तोंगूच बातिर ने पहरा दिया, उसके बाद ओरतानचा बातिर की पहरा देने की बारी आयी।

चाँदनी रात थी, सन्नाटा छाया हुआ था। अचानक कहीं से शोर आता सुनाई पड़ा। थोड़ी देर बाद गुफा में से देग जैसे सिरवाला और लम्बे लट्टे जैसे धड़वाला अजगर-सुलतान रेंगता हुआ चश्मे की ओर बढ़ा।

ओरतानचा बातिर ने अपने भाइयों की नींद खराब नहीं करनी चाही, इस लिए वह चश्मे से दूर स्तेपी में भागा।

आदमी की गंध पाकर अजगर-सुलतान उसके पीछे लपका। ओरतानचा बातिर ने एक ओर हटकर साँपों के राजा की पूँछ पर तलवार चलायी। अजगर-सुलतान वहीं छटपटाने लगा। बहादुर ने मौका देखकर उसकी पीठ पर चार किया। साँपों का राजा बुरी तरह घायल होकर ओरतानचा बातिर पर उछला। तब बहादुर ने आखिरी वार से उसका काम तमाम कर दिया।

इसके बाद उसने अजगर की खाल की एक पतली पट्टी काटकर अपनी कमीज़ के नीचे बाँध ली और अपने भाइयों के पास आकर बैठ गया, जैसे कुछ हुआ ही न हो। फिर केंजा बातिर की पहरा देने की बारी आयी। जब सुबह हुई, तीनों भाई फिर सफ़र पर चल पड़े।

उन्होंने दिन भर चलते चलते कई ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों और स्तेपी को पार किया। सूर्यास्त के समय वे एक अकेली पहाड़ी के पास पहुँचे और घोड़ों से उतरकर आराम करने लगे। उन्होंने आग जलाकर खाना खाया और फिर बारी-बारी से पहरा देने लगे: पहले तोंगूच बातिर की, फिर ओरतानचा बातिर की और सबसे आखिर में केंजा बातिर की बारी आयी।

केंजा बातिर बैठा हुआ अपने सोये हुए भाइयों की रखवाली करता रहा था। आग कब बुझ गयी, उसे पता भी नहीं चला।

“हमारे लिए बिना आग के रहना खतरनाक होगा,” केंजा बातिर ने सोचा।

वह पहाड़ी के ऊपर चढ़कर चारों ओर देखने लगा। उसे कहीं दूर एक दीया टिमटिमाता हुआ नज़र आया।

केंजा बातिर घोड़े पर सवार होकर उसी ओर चल पड़ा।

वह काफी देर चलता रहा और अंत में एक अकेले घर तक पहुँच गया।

केंजा बातिर निःशब्द घोड़े से उतरकर दबे पाँव खिड़की के पास आया और अन्दर झाँकने लगा।

कमरे में रोशनी थी और चूल्हे पर देगची में शोरबा पक रहा था। चूल्हे के चारों ओर



लगभग बीस आदमी बैठे थे। उन सब के चेहरे डरावने थे और आंखें निकली हुई थी। उन लोगों के इरादे नेक नहीं लगते थे।

केंजा बातिर ने सोचा: “अच्छा, यहाँ चोरों का गिरोह बैठा है। इन्हें यो ही छोड़कर चला जाना एक ईमानदार आदमी के लिए अच्छा नहीं होगा। मैं इनको बेवकूफ बनाऊंगा। इनका विश्वास प्राप्त करके, मौका मिलते ही अपना इरादा पूरा कर लूंगा।”

वह दरवाजा खोलकर अन्दर घुसा। चोरों ने उचककर अपने-अपने हथियार सभाल लिये।

“उस्ताद,” केंजा बातिर चोरों के सरदार से बोला, “मैं दूर शहर से आया आपका एक तुच्छ सेवक हूँ। अभी तक मैं छोटे-मोटे काम ही करता रहा हूँ। मैं बहुत दिनों से किसी गिरोह में शामिल होना चाहता था। जब मैंने सुना कि आप यहाँ मौजूद हैं, तो मैं फौरन यहाँ दौड़ा आया। आप मेरी छोटी उम्र पर मत जाइये। मुझे आपसे पूरी आशा है। आप ही मुझे अपने गिरोह में शामिल कर सकते हैं। मैं हर तरह के काम में निपुण हूँ। मुझे सेंध और सुरंग लगाना और टोह लेना आता है। मैं आपके काम का आदमी हूँ।”

इस तरह केंजा बातिर ने बड़ी चतुराई से उनसे बात की।

चोरों के सरदार ने जवाब दिया:

“तुमने आकर बहुत अच्छा किया।”

केंजा बातिर ने सीने पर हाथ रखकर सादर सिर नवाया और आग के पास आकर बैठ गया।

शोरबा पक चुका था। सब ने खाना खाया।

उस रात चोरों ने बादशाह का खजाना लूटने की ठानी। खाने के बाद वे सब घोड़ों पर सवार होकर चल पड़े। केंजा बातिर उनके साथ हो लिया। थोड़ी देर बाद वे शाही महल के बाग के पास पहुँचकर घोड़ों से उतर गये। महल में कैसे घुसें—वे इसके बारे में आपस में सलाह करने लगे।

अंत में उन्होंने यह फैसला किया: पहले केंजा बातिर दीवार फाँदकर अन्दर जायेगा और पता लगायेगा कि पहरेदार सो रहे हैं या नहीं। फिर सब एक-एक करके दीवार फाँदकर बाग में इकट्ठे हो जायेंगे और फौरन महल में घुस जायेंगे।

चोरों ने केंजा बातिर की दीवार पर चढ़ने में मदद की। वह बाग में कूदा और इधर-उधर घूमकर उसने पता लगा लिया कि सब पहरेदार सो रहे हैं। वहाँ उसे एक घोड़ागाड़ी खड़ी मिली, जिस को वह दीवार के पास खींच लाया।

इसके बाद घोड़ागाड़ी पर चढ़कर उसने कहा: “मौका बहुत अच्छा है।”

सरदार ने चोरों को एक-एक करके दीवार पार करने का हुक्म दिया।

पहले चोर ने पेट के बल दीवार पर लेटते ही सिर झुकाया और गाड़ी पर उतरने ही वाला था कि उसी क्षण केंजा बातिर ने उसकी गरदन पर तलवार चला दी। चोर का कटा सिर नीचे लुढ़क गया।

“उतरो,” केंजा बातिर ने कहा और चोर की लाश खींचकर नीचे फेंक दी।



सक्षेप में, केजा बातिर ने एक के बाद एक सभी चोरों के सिर काट डाले और उसके बाद महल की ओर चल दिया।

सोये हुए पहरेदारों के पास से चुपचाप गुजरकर केजा बातिर तीन दरवाजोंवाले कक्ष में पहुँचा। वहाँ दस दासियों का पहरा था, पर वे भी सो रही थीं।

उस पर किसी की नज़र न पड़ी। केजा बातिर पहले दरवाजे में घुसा और उसने अपने आपको एक बहुत सजे कमरे में पाया। उसकी दीवारों पर रेशम के परदे लटके थे, जिन पर काकरेजी फूल कढ़े हुए थे।

इस कमरे में चाँदी के पलंग पर सफ़ेद पोशाक में लिपटी एक सुन्दरी सोयी हुई थी, जिसकी खूबसूरती के आगे दुनिया के सभी फूल फीके लगते थे। केजा बातिर ने दबे पाँव उसके पास पहुँचकर, उसके दाहिने हाथ से सोने की अंगूठी उतारकर अपनी जेब में रख ली। फिर वह कक्ष में लौट आया।

“अब ज़रा दूसरा कमरा देखूँ, वहाँ क्या है?” केजा बातिर ने अपने मन में कहा।

उसने दूसरा दरवाजा खोला, तो सामने एक बहुत ही शानदार ढंग से सजा कमरा देखा, जिसकी दीवारों पर लटके रेशमी परदों पर तरह-तरह की चिड़ियाओं की तस्वीरे कढ़ी हुई थीं। कमरे के बीचोंबीच दस दासियों से घिरी एक सुंदर युवती चाँदी के पलंग पर सोयी हुई थी। उसको लेकर चाँद और सूरज में बहस होती थी कि उनमें से वह किस पर गयी है।

केजा बातिर ने चुपचाप उस युवती के हाथ से कंगन उतारकर अपनी जेब में डाल लिया। फिर वहाँ से वह उसी कक्ष में लौट आया।

“अब तीसरे कमरे में जाना चाहिए,” उसने सोचा।

वहाँ तो इतनी शानदार सजावट थी कि बस पूछिये मत। कमरे की दीवारें गहरे लाल रंग के रेशमी परदों से सजी थीं।

वहाँ सोलह सुन्दर दासियों से घिरी एक सुंदरी चाँदी के पलंग पर सोयी हुई थी। यह लड़की इतनी आकर्षक थी कि स्वयं तारों की रानी, सुबह का तारा, भी उसकी चाकरी करने के लिए तैयार थी।

केजा बातिर ने धीरे से इस लड़की के दाहिने कान से सोने की बाली उतारकर अपनी जेब में डाल ली।

फिर उसने महल से निकलकर दीवार पार की और घोड़े पर सवार हो अपने भाइयों के पास खाना हो गया।

दोनों भाई अभी गहरी नींद सो रहे थे। इस प्रकार सूर्योदय तक केजा बातिर तलवार से खेलता बैठा रहा।

सुबह उठकर बहादुरों ने नाश्ता किया, अपने घोड़ों की जीनें कसीं और उन पर सवार होकर सफर पर चल पड़े।

थोड़े समय बाद तीनों भाई एक शहर में पहुँचे और एक सराय में ठहरे। अपने घोड़ों को सायबान में बांधकर वे चायखाने में जाकर बैठे। चाय की चुसकियाँ लेते हुए तीनों भाई



इधर-उधर की बातें करने लगे कि अचानक बाहर से ढिंढोरची की आवाज आयी।

“खल्क खुदा की, मुल्क बादशाह का! कल रात को किसी ने शाही महल के बाग में बीस चोरो के सिर काट डाले और हर शाहजादी का सोने का एक-एक गहना उठा ले गया। हमारे बादशाह चाहते हैं कि शहर का हर छोटा-बड़ा उन्हें इस घटना का रहस्य समझाये और बताये कि वह आदमी कौन है, जिसने इतनी बहादुरी का काम किया है। अगर किसी के घर में परदेसी लोग हो, तो वह उन्हें फ़ौरन महल में लेकर आये।”

सराय के मालिक ने अपने मेहमानों को बादशाह के सामने हाज़िर होने के लिए कहा।

तीनों भाई उठकर धीरे-धीरे महल की ओर चल दिये।

बादशाह को जब मालूम पड़ा कि वे विदेशी हैं, तो उसने उन्हें एक शानदार ढंग से सजे हुए ख़ास कमरे में बिठाने का हुक्म दिया और वज़ीर को उनका भेद लेने का काम सौंपा।

वज़ीर बोला:

“अगर उनसे सीधे ही पूछा गया, तो वे शायद ही कुछ बतायें। बेहतर होगा कि हम छिपकर उनकी बातें सुनें।”

जिस कमरे में भाई बैठे थे, वहाँ उनके अलावा और कोई नहीं था।

उनके आगे दस्तरख़ान बिछा दिया गया और तरह-तरह के खाने परोस दिये गये। भाइयों ने खाना शुरू किया।

बादशाह और वज़ीर पास के कमरे में चुपचाप बैठे उनकी बातें सुनने लगे।

“हमें मेमने का गोشت परोसा गया है,” तोंगूच बातिर बोला, “लेकिन लगता है, इसे कुत्ते के दूध पर पाला गया था।”

“आप ठीक कह रहे हैं,” ओरतानचा बातिर ने उसका समर्थन किया, “बादशाहों को कुत्तों के गोشت से भी नफ़रत नहीं होती। मुझे तो इस बात पर आश्चर्य हो रहा है कि इस मुरब्बे में से आदमी की बू आ रही है।”

“बिल्कुल ठीक है,” केजा बातिर बोला, “सारे बादशाह खून पीनेवाले होते हैं। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि मुरब्बे में आदमी का खून मिला हो। मुझे तो इस बात पर आश्चर्य हो रहा है कि थाल में रोटियाँ इस ढंग से सजायी गयी हैं, जिस ढंग से सिर्फ़ एक अच्छा नानबाई ही सजा सकता है।”

तोंगूच बातिर बोला:

“ऐसा ही होना चाहिए। देखो, हमें यहाँ यह मालूम करने के लिए बुलाया गया है कि शाही महल में क्या हुआ था। इसमें कोई शक नहीं कि हमसे भी इसके बारे में पूछा जायेगा। हम क्या बतायें?”

“हम भूठ नहीं बोलेंगे,” ओरतानचा बातिर बोला। “हम सब सच-सच बता देंगे।”

“हाँ, अब हमें तीन दिनों में हुई बातों के बारे में एक दूसरे को बताने का समय आ गया है,” केजा बातिर ने कहा।

तोंगूच बातिर ने बताया कि वह पहली रात को शेर से कैसे लड़ा था। फिर उसने शेर



की खाल की पट्टी निकालकर भाइयों के सामने रख दी। उसके बाद ओरतानचा बातिर ने भी जो कुछ दूसरी रात को उसके साथ हुआ था, बताया और साँपों के राजा की खाल की पट्टी निकालकर भाइयों को दिखा दी। इसके बाद केंजा बातिर ने तीसरी रात का सारा किस्सा सुनाकर भाइयों को गहने भी दिखाये।

अब बादशाह और वजीर सारा रहस्य समझ गये, पर भाइयों ने गोश्त, मुरब्बे और रोटियों के बारे में जो कहा, वह उनकी समझ में नहीं आया। इस लिए उन्होंने पहले गड़रिये को बुलवाया। गड़रिया आया।

“सच-सच बता!” बादशाह ने कहा। “कल तू ने जो मेमना भेजा था, उसे क्या कुतिया के दूध पर पाला था?”

“हुजूर,” गड़रिया गिड़गिड़ाने लगा, “अगर मेरी जान बल्लों, तो अर्ज करूं।”

“हमने तेरी जान बल्ली, सच-सच बता,” बादशाह ने कहा।

गड़रिया बोला:

“जाड़े में मेरी भेड़ सर गई थी। मुझे मेमने पर दया आयी और मैंने उसे कुतिया के धनों के लगा दिया। उसी ने मेमने को दूध पिलाकर बड़ा किया। कल मैंने आपको वही मेमना भेजा था, क्योंकि दूसरा मेरे पास था ही नहीं, आपके नौकरों ने पहले ही मेरी सारी भेड़ें छीन ली थीं।”

उसके बाद बादशाह ने माली को बुलाने का हुक्म दिया।

“सच-सच बता,” बादशाह ने उससे कहा, क्या मुरब्बे में आदमी का खून मिला था?”

“हुजूर,” माली बोला, “एक ऐसा किस्सा हुआ था, अगर मेरी जान बल्लों, तो मैं आपको सब कुछ सच-सच बता दूंगा।”

“अच्छा बता, हम तुझ पर रहम करते हैं,” बादशाह ने कहा।

तब माली बोला:

“पिछली गर्मियों में कोई रोजाना मेरे बाग के सबसे अच्छे अंगूर चुराने लगा। मैं वहाँ छिपकर पहरा देने लगा। एक दिन मैंने देखा कि कोई आ रहा है। मैंने चोर के सिर पर जोर से लाठी मारी। इसके बाद मैंने अंगूर की बेल के नीचे एक गहरा गढ़ा खोदकर उसकी लाश उसमें गाड़ दी। अगले साल बेल बहुत फूल गयी और इतनी अच्छी फसल हुई कि अंगूर ज्यादा और पत्ते कम नज़र आते थे। पर अंगूर का स्वाद कुछ अजीब-सा था। इसीलिए मैंने आपको ताजा अंगूर न भेजकर उसका मुरब्बा बनाकर भेजा।”

जहाँ तक रोटियों का सवाल था, तो उन्हें खुद बादशाह ने खाल में सजाया था। मालूम पड़ा कि बादशाह का पिता नानबाई था। बादशाह बहादुरों के कमरे में आया और दुआ-सलाम करके बोला:

“आप लोगों ने जो कुछ एक दूसरे से कहा, वह सब सच है और इस लिए आप मुझे और भी ज्यादा अच्छे लगे। मेरी आपसे एक दरखास्त है, मेरे बहादुर मेहमानों, इसे सुन लीजिये।”



“फरमाइये,” तोगूच बातिर बोला, “हमसे जैसे बन पड़ेगा, हम आपकी मदद करेंगे।”

“मेरी तीन बेटियाँ हैं, मगर बेटा कोई नहीं। आप यहीं बस जाइये। मैं अपनी तीनों बेटियों की शादी आप लोगों के साथ कर दूंगा, शादी का जश्न मनाऊँगा और शहर के सारे लोगो को बुलाकर सबको चालीस दिन तक पुलाव खिलाऊँगा।”

“बात तो आपकी बहुत अच्छी है,” तोगूच बातिर ने जवाब दिया, “पर हम आपकी बेटियों से शादी कैसे कर सकते हैं, जब कि हम न किसी बादशाह के बेटे हैं और न ही हमारे पिता धनवान हैं? आपने अपनी दौलत हुकूमत करके जमा की है, और हम लोगों ने मेहनत करके जीना सीखा है।”

बादशाह ने हठ किया:

“आखिर आपके पिता किस बात में मुझसे कम हैं? वास्तव में तो वह मुझसे भी ज्यादा दौलतमंद है। और इस वक्त मैं, उन लड़कियों का पिता, जिनके आगे बड़े-बड़े देशों के बादशाह रो चुके हैं, आपसे हाथ जोड़कर मन्नत कर रहा हूँ कि आप मेरी बेटियों को अपनी पत्नियों के रूप में स्वीकार कर लें।”

भाई राजी हो गये। बादशाह ने दावत दी। चालीस दिनों तक दावतें होती रहीं और इसके बाद नवविवाहित बहादुर शाही महल में रहने लगे। बादशाह को छोटा दामाद केंजा बातिर सबसे प्यारा था। इस लिए वह अक्सर उसके पास आया करता था। एक दिन बादशाह छाया में लेटा आराम कर रहा था। अचानक नहर में से एक जहरीला सांप निकल आया और बादशाह की ओर लपका। वह उसे डसने ही वाला था कि तत्क्षण केंजा बातिर वहाँ दौड़ा आया। उसने म्यान से तलवार निकालकर साँप के दो टुकड़े कर डाले और एक ओर फेंक दिये।

अभी केंजा बातिर अपनी तलवार म्यान में डाल भी न पाया था कि बादशाह की नींद खुल गयी। उसके दिल में शक पैदा हो गया। “इसे इस बात से संतोष नहीं कि मैंने अपनी बेटी की शादी इससे कर दी,” बादशाह ने सोचा। “यह सब इसके लिए काफी नहीं। लगता है, इसका इरादा मुझे मारकर खुद बादशाह बनने का है।”

बादशाह ने जाकर वज़ीर को सारा किस्सा सुनाया। वज़ीर बहुत दिनों से अपने दिल में इन बहादुरों के प्रति वैर भाव छिपाये हुआ था और ऐसे मौके की तलाश में ही था। वह बादशाह के कान भरने लगा।

“आपने मुझसे सलाह किये बग़ैर अपनी प्यारी बेटियों की शादी ऐरे-सैरे नत्थू खैरों से कर दी है। और अब आपका चहेता दामाद आपकी हत्या करना चाहता है। आप सावधान रहिये, वरना वह चालाकी से किसी न किसी तरह आपकी हत्या करे देगा।”

बादशाह ने वज़ीर की बात पर विश्वास कर लिया और हुकम दिया: “केंजा बातिर को जेल में डाल दिया जाये।”

केंजा बातिर को कैद कर लिया गया। केंजा बातिर की पत्नी, छोटी शाहजादी उदास



रहने लगी। वह दिन-रात रोती रहती। उसके गुलाबी गालों का रंग उड़ गया। एक बार उसने अपने पिता के पैरों में गिरकर पति को मुक्त करने की विनती की।

तब बादशाह ने केजा बातिर को जेल से लाने का हुक्म दिया।

“तुम कितने मक्कार निकले,” बादशाह ने कहा, “तुमने क्यों मेरा कत्ल करने की सोची?”

इसके जवाब में केजा बातिर ने बादशाह को तोते की कहानी सुनायी।

### तोते की कहानी

किसी जमाने में एक बादशाह रहता था। उसका एक तोता था। बादशाह अपने तोते को इतना प्यार करता था कि उसके बगैर एक घड़ी भी नहीं रह सकता था।

तोता बादशाह के साथ मीठी-मीठी बातें करके उसका मन बहलाता था। एक बार तोते ने विनती की:

“मेरे माँ-बाप, भाई-बहन मेरे देश हिन्दुस्तान में हैं। मैं बहुत दिनों से पिंजरे में कैद हूँ। आप कृपा करके मुझे बीस दिन की छुट्टी दे दीजिये। मैं अपने देश हो आऊँगा, बारह दिन मुझे जाने-आने में लगेंगे, आठ दिन मैं घर रह लूँगा और अपने माँ-बाप, भाई-बहनों से मिल लूँगा।”

“नहीं,” बादशाह ने जवाब दिया, “अगर मैं तुझे छोड़ दूँ, तो तू वापस नहीं आयेगा और मैं ऊबने लगूँगा।”

तोता विश्वास दिलाने लगा:

“हुजूर, मैं वादा करता हूँ और उसे निभाऊँगा।”

“अच्छा, ठीक है, अगर तू यही चाहता है, तो मैं तुझे सिर्फ दो हफ्ते की छुट्टी दूँगा, बादशाह बोला।

“खुदा हाफिज, मैं किसी न किसी तरह दो हफ्ते बाद वापस लौट आऊँगा,” तोता खुश होकर बोला।

वह पिंजरे से निकलकर दीवार पर बैठा, और सब लोगों से विदा लेकर दक्षिण की ओर उड़ चला। बादशाह खड़ा-खड़ा उसे उड़कर दूर जाते देखता रहा। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि तोता लौटकर आयेगा।

तोता छ. दिन में अपने वतन हिन्दुस्तान पहुँच गया और उसने अपने माँ-बाप को ढूँढ़ लिया। बेचारा बड़ा खुश था, एक पहाड़ी से दूसरी पहाड़ी पर, एक डाल से दूसरी डाल पर, एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उड़ने-फुदकते लगा, हरे-भरे जंगलों में अपने रिश्तेदारों, जान-पहचानवालों के यहाँ गया और उसे पता भी न चला कि दो दिन कब बीत गये। वापस पिंजरे में जाकर कैद होने का वक्त आ गया। माँ-बाप और भाई-बहनों से बिछुड़ते समय तोते को बड़ा दुःख हुआ।

सुख के क्षण बीत गये और दुःख की घड़ी आ पहुँची। पंख लटक गये। कौन जाने वह फिर कभी वापस आ भी पाये या नहीं।

रिश्तेदार और जान-पहचान के लोग इकट्ठे हो गये। सबको तोते पर तरस आ रहा था और सब उसे बादशाह के पास न लौटने की सलाह देने लगे। पर तोता बोला

“नहीं, मैंने वायदा किया है। क्या मैं अपना वचन तोड़ सकता हूँ?”

“तूने कभी किसी बादशाह को अपना वायदा निभाते देखा है?” एक तोता बोला। “अगर तेरा बादशाह न्यायप्रिय होता, तो क्या वह कभी तुझे चौदह साल कैद रखता? क्या तू दुनिया में इसी लिए आया है कि कैद में बंद रहे? क्या आजाद रहने का यह मौका हाथ से सिर्फ़ इसी लिए जाने देगा कि तुझे किसी का दिल बहलाना है? तेरा बादशाह दयावान कम और निर्मम ज्यादा है। बादशाह और शेर के पास रहना कभी खतरे से खाली नहीं होता है।”

पर तोते ने किसी की सलाह नहीं मानी और जाने की तैयारी करने लगा।

सब तोते की माँ बोली.

“ऐसी हालत में मैं तुम्हें एक सलाह देती हूँ। हमारे यहाँ कायाकल्प के फल होते हैं। जो एक भी फल खायेगा, फौरन जवान हो जायेगा, बूढ़ा नौजवान बन जायेगा, और बुढ़िया — जवान लड़की। तू ये बहुमूल्य फल बादशाह को ले जाकर दे और उससे तुम्हें आजादी देने की प्रार्थना कर। शायद उसमें न्यायप्रियता जाग उठे, और वह तुम्हें आजाद कर दे।”

सबने इस सलाह का समर्थन किया। तुरंत कायाकल्प के तीन फल लाये गये। तोते ने अपने रिश्तेदारों और जान-पहचानवालों से विदा ली और उत्तर की ओर उड़ चला। सब अपने दिलों में बड़ी-बड़ी उम्मीदें लिये उसे उड़कर दूर जाते देखते रहे।

तोता छः दिन में वापस पहुँच गया और उसने बादशाह को फल भेंट करके उनके गुणों का बखान किया। बादशाह बहुत खुश हुआ। उसने तोते को आजादी देने का वायदा किया, एक फल अपनी पत्नी को दे दिया और बाक़ी दो प्याले में रख दिये।

वज़ीर को बहुत ईर्ष्या हुई। वह गुस्से से काँपने लगा और उसने मामला बिगाड़ने की ढ़ानी।

“इस चिड़िया के लाये हुए फल खाने से पहले इन्हें आजमा लेना चाहिए। अगर ये अच्छे हुए, तो इन्हें कभी भी खाया जा सकता है,” वज़ीर ने कहा।

बादशाह ने उसका सुझाव मान लिया। और वज़ीर ने मौक़ा पाकर कायाकल्प के फलों में तेज़ ज़हर मिला दिया।

इसके बाद वज़ीर बोला:

“अच्छा लाइये, अब इन्हें आजमाया जाये।”

दो मोर लाये गये और उन्हें ये फल खाने के लिए दिये गये।

दोनों मोर वहीं मर गये।

“अगर आप ये फल खा लेते तो आपका क्या हाल होता?” वज़ीर ने पूछा।

“मैं भी मर गया होता!” बादशाह कह उठा। उसने बेचारे तोते को पिंजरे में से नि-



काला और उसकी गरदन मरोड़ दी। इस तरह बेचारे तोते ने बादशाह से अपना “इनाम” पा लिया।

कुछ दिन बाद बादशाह ने एक बूढ़े किसान से नाराज होकर उसे मौत की सजा देने का फैसला किया। बादशाह ने उसे कायाकल्प का बचा हुआ फल लाकर खिलाने का हुक्म दिया। जैसे ही बूढ़े ने वह फल खाया, उसके बाल काले हो गये, दाँत नये निकल आये आँखों में जवानी की चमक आ गयी और वह बीस साल का नौजवान बन गया।

बादशाह समझ गया कि उसने तोते को बेकार ही मार डाला, पर अब पछताये क्या होता था।

“अच्छा, अब मैं आपको बताता हूँ कि जब आप सोये हुए थे, तो क्या हुआ था,” केजा बातिर ने अंत में कहा।

वह बाग में गया और वहाँ से साँप के दोनों टुकड़े लाकर दिखा दिये। बादशाह केजा बातिर से माफी माँगने लगा।

केजा बातिर ने उससे कहा

“हुजूर मुझे भाइयों के साथ अपने देश जाने की इजाजत दीजिये। बादशाहों के साथ कभी सुख-चैन में नहीं जिया जा सकता।”

बादशाह ने उन्हें कितना ही मनाया, कितना ही गिड़गिड़ाया, पर बहादुर नहीं माने।

“हम आपके दरबारी बनकर शाही महल में नहीं रह सकते। हम अपनी मेहनत के बल पर जियेंगे,” वे बोले।

“अच्छा, फिर मेरी बेटियों को मेरे पास ही छोड़ दो,” बादशाह ने कहा।

पर उसकी बेटियाँ बीच में ही बोल पड़ीं-

“हम अपने पतियो से अलग नहीं होगी।”

बादशाह को बड़ा आश्चर्य हुआ और न चाहते हुए भी उसे उन्हें जाने देना पड़ा।

नौजवान बहादुर अपनी पत्नियों के साथ अपने पिता के पास लौट आये और सुख-चैन से रहने लगे।



# नेकी कर, दरिया में डाल



बहुत दिन हुए नूराता पहाड़ों की तलहटी में बसे एक शहर में, जिस का नाम आज की पीढ़ी को याद नहीं रहा, लोहारों की बस्ती में एक माहिर लोहार रहता था। लेकिन लोगों की याददाश्त बहुत कमजोर होती है, और अब अन्दाज़ लगाना भी मुश्किल है कि उस गरीब पर सुयोग्य आदमी का नाम क्या था।

उस वर्ष भीषण सूखा पड़ा था। आम तौर पर गरमियों में पानी में भरी रहनेवाली नदी सूख चुकी थी। नहरे सूख गयी थीं।

पेड़ों के पत्ते झड़ चुके थे। रेगिस्तान की निर्मम सांभो ने उस साल की फसल बरबाद कर दी थी। अकाल मुंह बाये खड़ा था।

पर गरम से गरम हवा से भी बेकों\* और खानों के बागों को कोई नुकसान नहीं पहुँचा, न ही सूखे की छाया फलों से लदे उनके पेड़ों और अगूर की बेलों पर पड़ी। क्योंकि पहाड़ों की तलहटी में से जाड़े और गरमी में सदैव फूटने रहनेवाले चश्मों का पानी सूखता नहीं। वे बाग और चश्मे शहर के सबसे धनी, सबसे ज्यादा लोभी आदमियों की जायदादे थीं।

कड़ी गरमी के कारण तालाब सूख चुके थे और माँएँ प्यास के मारे तड़प रहे बच्चों को छाती से चिपटाये शहर की तपती हुई गलियों में भटक रही थी, बागों के मालिक उनके दुख और आँसुओं को बेपरवाही से देख रहे थे।

असहाय औरतें निराश होकर रो रही थीं, चिल्ला-चिल्लाकर बच्चों के गले बैठ गये थे। लोगों के असतोष की लहर गासक के ऊँची पहाड़ी पर बने महल तक पहुँचने लगी। लोग नगर के शासक के पास गये और उन्हें अपनी मुसीबतों से बचाने में उनकी सहायता करने का अनुरोध किया। लोगो ने कहा “हमारे बच्चे मर रहे हैं। आपके पास शक्ति है पानी है और दौलत भी—हमारी मदद कीजिये।”

पर उसने साफ इनकार कर दिया “तुम्हारी तकदीर में यही बदा है। अगर अल्लाह यह जुल्म सह रहा है, तो तुम नाशवानों को भी सहना चाहिए। जो शिकायत करेगा, वह काफिर होगा!”

शहर के लोग क्रोधित हो उठे। लोगों की भीड़ गलियों और मैदानों में मारी-मारी फिरने लगी। लोग चिल्लाने लगे: “कहाँ है पानी?”

जनता में रोष बढ़ने लगा। पर धनवानों के बागों की दीवारें ऊँची और अगम्य थीं। जनता के क्रोध का आवेग दीवारों के पत्थरों से टकराकर ठंडा पड़ गया। बहुत-से ताकतवर

\* बेक — जमींदार. सामंत।



और सौहसी आदमी शासक के सैनिकों की तलवारों से मौत के घाट उतर गये। स्तेपी में दूर फेकी गयी लाशों पर कौबों और गिद्धों के झुंड बहुत दिनों तक मडराते रहे।

सारे शहर में मायूसी छा गयी, बाजार सुनसान हो गये, केवल तपती हवा गलियों में बहती रही।

और लोहार, गुस्से में भरा, पहाड़ों में चला गया।

लोहारखाने में सन्नाटा छा गया। लोहे पर हथौड़े की आवाज़ें गूँजनी बन्द हो गयी, भट्टियों में आग ठंडी पड़ गयी।

भटकते हुए लोहार को पहाड़ों में एक सफेद दाढ़ीवाला गडरिया मिला, जिसने उसे अपने यहाँ शरण दी। पत्थर के चूल्हे पर रूखा-सूखा खाना पक रहा था, इस बीच लोहार अपने दुख के बारे में और घाटी के लोगों की दर्द भरी ज़िन्दगी के बारे में गडरिये को बताने लगा।

बूढ़ा चूल्हे की आग को ताकता हुआ सोचता रहा।

फिर वह तनकर खड़ा हो गया, गुफा की छत की ऊँचाई से चमक रही उसकी आँखों में खून उतर गया।

“मैं पानी का देवता हूँ, उस नदी के उद्गमों का रक्षक हूँ, जो घाटी की जीवनदाता है। मैं जानता हूँ,” वह बोला, “किस तरह घाटी के लोगों को सुखी बनाया जा सकता है, मैं जानता हूँ, कैसे उनके हाथों में महाशक्ति दी जा सकती है। मैं तुम्हें नीचे घाटी में जाने की आज्ञा देता हूँ गाँव और शहर के लोगों को इकट्ठा करो और उन्हें कुदालें लेकर यहाँ आने को कहो।”

जब सूरज रेतीले मैदान के ऊपर आसमान पर चढ़ रहा था, लोहार तेज कदमों से शहर की ऊँची मीनारों की ओर बढ़ता जा रहा था।

लोहार ने रास्तों, गाँवों, बाजारों के मैदानों, हमामों और मसजिदों के दरवाजों पर लोगों को आवाज़ें दे-देकर मुनादी की। हजारों आदमी पहाड़ों की ओर चल पड़े।

पानी के देवता ने उन्हें इकट्ठा करके कहा “तुम्हारी मुसीबतों का कारण सूखा है। घाटी में बाँध बना दो। पानी का भंडार बना लो, फिर तुम्हें भीषण से भीषण सूखे में भी रेगिस्तान की गरम हवाओं से कोई खतरा नहीं रहेगा।”

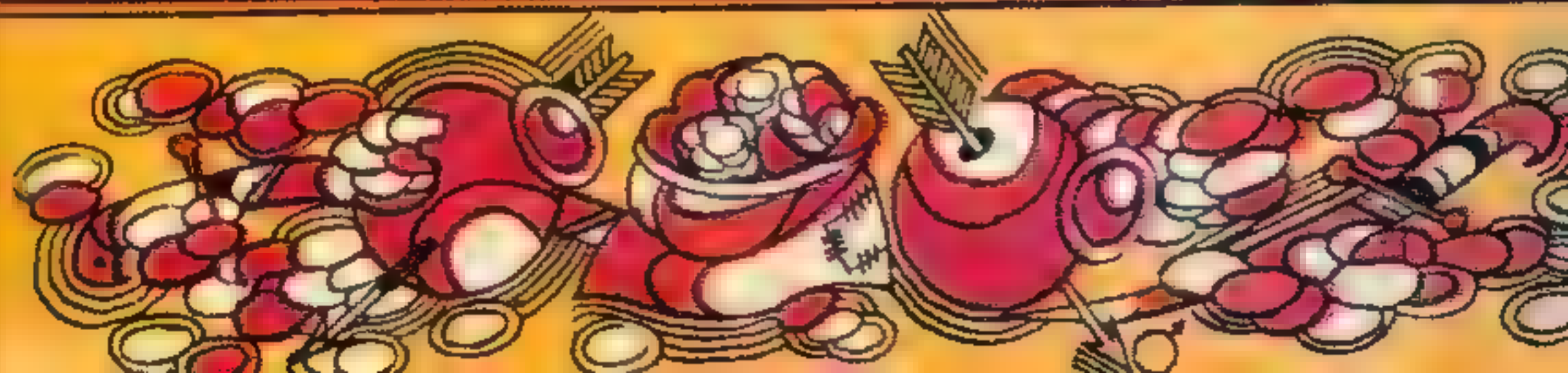
लोग फौरन बाँध बनाने में जुट गये।

उधर धनवानों और बागों के मालिकों ने रेगिस्तान में रहनेवाले दुष्ट जादूगर अजरूब के पास अपना एक वफादार आदमी यह सन्देश देकर भेजा “ऐ ज़िन्दा और मरों के मालिक! छोटे लोग आपकी ताकत के खिलाफ पत्थरों का किला खड़ा कर रहे हैं। आप पहाड़ों पर उड़कर जायें और अपनी आँखों से देख लें।”

दुष्ट अजरूब पहाड़ों की ओर उड़ा। आसमान में ऊँचाई तक इतनी धूल और मिट्टी छा गयी कि तारे भी छिप गये।

गुस्से से पागल हुए अजरूब ने पहाड़ी घाटी में कुदालें चलानेवाले हजारों लोगों पर आग का तूफान भेजा। बहुत से लोग जल गये, बहुतों का दम घुट गया, लगता था कि घाटी में







इकट्ठे हुए सारे लोग मर जायेगे। पर पानी के देवता ने आग पर पहाड़ी भील का पानी छिड़क दिया और बर्फीले पानी से चट्टानें ठंडी हो गयीं, गरम हवा हमाम की हवा जैसी सुहानी हो गयी। क्रोध से कांपता हुआ अजरूब वहाँ से चला गया।

लोग फिर ज़मीन खोदने, चट्टानें तोड़ने, बाँध बनाने लगे, पर उन पर एक और मुसीबत आनेवाली थी।

धरती डोलकर कांपने लगी। छत की ज़ंजीर से लटके दीये की तरह चांद इधर-उधर डोलने लगा। धरती की छाती में से एक चीख निकली। पहाड़ों की चोटियाँ आपस में टकराकर पाताल में गिरने लगी। चट्टानों का समूह तेज़ी से घाटी में नीचे की ओर लुढ़कने लगा।

पर पानी के देवता ने हाथ के एक इशारे से बाँध बनानेवालों को पहाड़ों की ढलान पर ला खड़ा किया। और लोगों को गिरनेवाले पत्थरों से कोई नुकसान नहीं हुआ, बल्कि उनसे बाँध बनने में आसानी हो गयी।

अजरूब हार नहीं माननेवाला था। उसने सारे पहाड़ों और घाटियों के खूँवार शेरों, आग उगलनेवाले अजदहों, तेंदुओं, जंगली भेड़ियों, लकड़बग्घों, गीदड़ों, जहरीले साँपों, बिच्छुओं को इकट्ठा करके लोहार और उसके साथियों पर हमला कर दिया। अंधेरी रात में, जब हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा था, जंगली जानवरों और कीड़ों की फ़ौजें खामोश छावनी पर टूट पड़ी, जहाँ मिट्टी की भोंपड़ियों और तबुओं में थके-हारे बाँध बनानेवाले सोये हुए थे। इस सकट और भगदड़ में लोहार घबराया नहीं। उसने जंगली आर्चा\* की रालदार डालों की सैकड़ों मशाले जलाने का हुक्म दिया। उनकी लाल-लाल लपटों से सारे जंगली जानवर और कीड़े डरकर भाग गये।

लोहार अपने लोगों के साथ मिलकर पाँच पोपलरों जितना ऊँचा बाँध बना रहा था। ऐसी पानी के देवता की आज्ञा थी। जिन शिलाखंडों को काट और तराशकर बाँध बनाया जा रहा था, उनमें से हर एक घर के बराबर था। और शिलाखंडों को एक दूसरे से जोड़ने के लिए लोहार वहीं आस-पास के पहाड़ों से सीसा निकालकर और उसे पिघलाकर दरारों में भर रहा था।

जादूगर चुप नहीं बैठा। वह समझ गया कि बाँध में बंधी नदी लोगो की सेवा करेगी, सूखी हुई धरती को खूब पानी देगी, जिससे लोगों का हौसला बढ़ जायेगा और वे उसके काबू से निकल जायेगे।

उसने बाँध बनानेवालों पर गरज के साथ बिजली मिरायी। पर लोहार और उसके साथी डटे रहे।

एक हजार दिनो तक लोग चट्टानें तोड़ते हुए नहर खोदते रहे।

जादूगर ने खुदे हुए ग़ार में लोगों को कुचला, उनके सिरों के ऊपर पत्थर गिराये। जहरीले

---

\* आर्चा – मध्य एशिया का नुकीले पसोवाला एक सदाबहार पेड़।



साँप उन्हे डसकर मारते रहे। पर रात-दिन लोहा ठोका-पीटा जाता रहा। लोग जब पहाड़ का सीना फोड़ते, तो वह काँपकर कराह उठता।

और अततः खुशी का दिन भी आ गया।

बाँध में बँधी नदी शांत हो गयी। पानी पहाड़ी सुरंग में से होकर धीरे-धीरे नहर में बहने लगा और शीतल जल की धारा ने गरमी से तपी धरती की प्यास बुझा दी।

भुभुलाया अजरूब ऊँचे काले पहाड़ की चोटी पर बैठा गुस्से में दाँत पीसता रहा।

लोग खुशी-खुशी शहर लौट रहे थे। उस दिन दावत हुई, नाच-गाने हुए। धनवान और बागों के मालिक लोहार के आगे सिर झुकाने दौड़े-दौड़े आये। बड़े अभिमानी लोग लोहार के पाँव पडकर जोर से कहने लगे, "तुम महान हो!"

लोहार के हृदय में उनके प्रति दया जाग उठी। उसने उन्हें कोई सजा नहीं दी, बल्कि उन अभिमानियों को क्षमा कर दिया और अपने हाथों ही अपनी बरबादी के बीज बो दिये। वह जानियों की सीख भूल गया: "दुश्मन मरा ही भला।"

पर बागों के मालिकों के दिल में घोर घृणा छुपी हुई थी। धनवानों ने लोहार को बरबाद कर डालने की कसम खायी।

कई सालों तक अजरूब रेगिस्तान में निर्वासित-सा भटकता रहा और उसमें गौरैया जितनी ताकत रह गयी।

उधर बागों के मालिकों और अमीरों ने दुष्ट जादूगर को चोरी से शहर बुलवाया। वे लोग उसके साथ षड्यंत्र रचते रहे। अजरूब दूर के एक देश चला गया और उसने वहाँ रहनेवाले असम्य और खौफनाक घुड़सवार लुटेरे लोगों को इस शहर की सुख-समृद्धि के बारे में बताया।

उन लोगों ने लालच में आकर इस शहर के लिए कूब कर दिया। उन काले कौबों-से लोगों की सेना ने शहर का घेरा डाल दिया। घेरा बहुत दिन तक चला। बड़ी घमासान लड़ाई हुई। बहादुर लोहार ने दुश्मनों के बादशाह के साथ हुए मरणांतक द्वन्द्व में उसे मार डाला। विजय द्वन्द्व-युद्ध के नियमानुसार नगरवासियों की हुई। यही परम्परा थी।

दुश्मन थककर कमजोर हो गया, लड़ाकू घुड़सवार लुटेरों के हाथ ढीले हो गये। उन्होंने अपनी स्तेपी में लौट जाना चाहा।

पर बेईमान अमीरों ने अपने एक सेवक के साथ असम्य खानाबदोशों की छावनी में सन्देश भेजा,

"यहाँ से थोड़ी दूर एक बाँध है, जिससे शहर को पानी और जीवन मिलता है। बाँध पत्थरों और सीसे से बना है। और सीसे की दुश्मन आग है।"

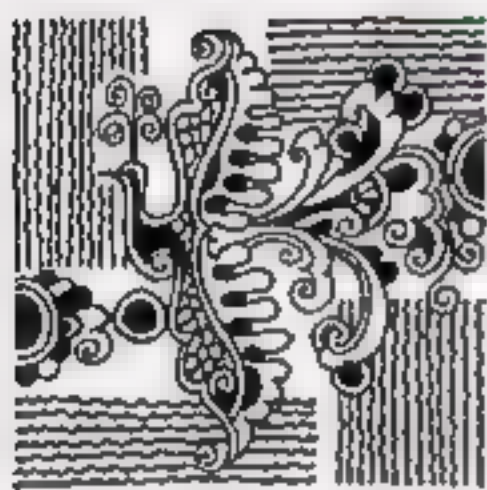
हजारों घुड़सवार घाटी में दौड़ पड़े। उन्होंने लकड़ियाँ, सूखी टहनियाँ और कंटीली झाड़ियाँ इकट्ठी कीं। आग की लपटें आसमान को छूने लगीं, गरमी से सीसा पिघल गया और पत्थर कोई सहारा न होने के कारण खिसककर नीचे बिखर गये। पानी की दीवार तेजी से घाटी में बढने लगी, खेत और बाग डूब गये, शहर बह गया, बहुत-से नगरवासी और दुश्मन के सारे सैनिक मारे गये। दुष्ट जादूगर अजरूब भी मारा गया।



बहुत थोड़े नगरवासी जिन्दा बच पाये . पर वे भी यह स्थान छोड़कर चले गये। उस समय से यह शहर खंडहर पड़ा है।

यह बिल्कुल सत्य घटना है , और अगर किसी को इसकी सचाई में सदेह हो , तो वह स्वयं उस घाटी में जाकर देख ले। वहाँ अब भी वे सीसे के अश्वाले पत्थर दिखाई देगे , जिनसे लोहार ने बाँध बनाया था।

## तीन झूठ और हर झूठ में चालीस गप्पें



बहुत दिन हुए एक बादशाह था। उसकी बेटी शादी के लायक हो गयी थी। बहुत-से देशों के बादशाहों और खानों के बेटे उसके साथ शादी करने के इरादे से आये , पर शाहजादी बड़ी तुनुकमिजाज थी और वह किसी से शादी करने के लिए तैयार नहीं हुई।

एक बार बादशाह ने अपनी बेटी को बुलाया और बोला .

“ऐ , मेरी आखों का तारा ! सारे बादशाहों से मैंने कह रखा है कि मैं तेरे लिए दूल्हा ढूँढ़ रहा हूँ , एक से एक बहादुर नौजवान आ रहे हैं , पर तू सबको मना कर रही है। आखिर इसकी वजह क्या है ?”

“पिता जी !” बेटी ने जवाब दिया “मैं शादी उसी के साथ करूँगी , जो मुझे तीन झूठ गढ़कर सुनाये और हर झूठ में चालीस गप्पें हों , बशर्ते उन्हें वह दिलचस्प ढंग से सुना सके।”

बादशाह ने चारों ओर मुनादी करवाने का हुक्म दिया।

“जो कोई तीन झूठ गढ़ेगा और हर झूठ में चालीस गप्पें सुनायेगा , उसी के साथ मैं अपनी बेटी की शादी कर दूँगा।”

लोग चारों ओर में शाहजादी के साथ शादी की तमन्ना लिये आने लगे और गप्पें गढ़ने लगे। बादशाह ने देश के सारे विद्वानों को इकट्ठा करके उनसे कहा

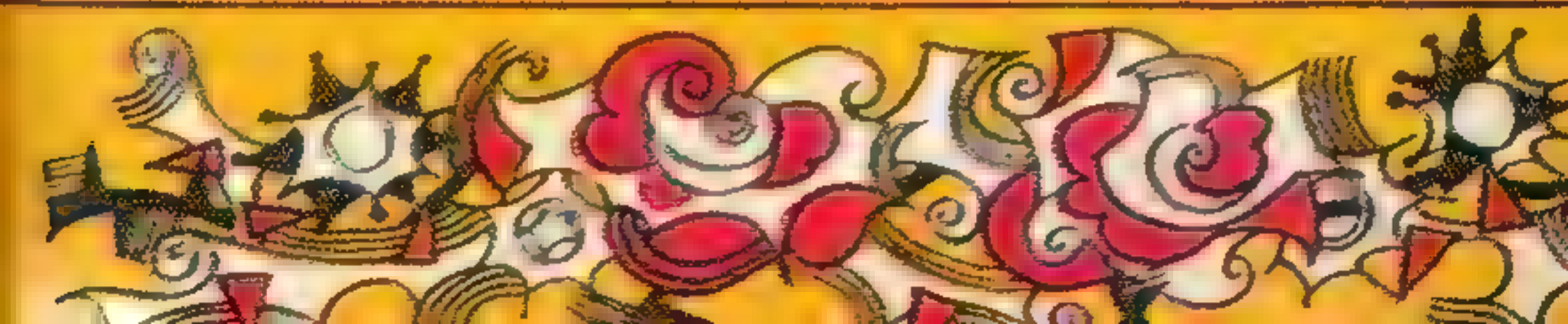
“अगर कोई तीन झूठ सुनाये और हर झूठ में चालीस गप्पें हों और वह बिल्कुल सफ़ेद झूठ हो , तो कहिये कि यह झूठ है , अगर सच हो , तो कहिये सच है। अगर आप ने सच को झूठ बनाया , तो आपके सिर कटवा दूँगा और आपकी जायदाद लुटवा दूँगा।”

हर नौजवान अपनी-अपनी गप्पें सुनाने लगा। हर बार , जब भी बादशाह ने विद्वानों से पूछा

“यह सच है या झूठ ?”

“ऐसा तो होता रहता है ,” उसे जवाब मिला।







बहुत-से बादशाह और शाहजादे आये और खाली हाथ लौट गये।

उस शहर में एक गरीब नौजवान रहता था। एक बार वह सूखी टहनियाँ इकट्ठी करने पहाड़ों में गया, तो उसने बादशाह की यह मुनादी सुनी:

“जो तीन भूठ और हर भूठ में चालीस गधों गढ़कर सुनायेगा उसकी शादी शाहजादी के साथ कर दी जायेगी।”

“अहा,” गरीब नौजवान ने सोचा, “बोलने का यह बड़ा अच्छा मौका मिला है।” और वह महल की ओर चल दिया।

“ओ बदबू मारनेवाले भिखारी, तू यहाँ किस लिए आया है?” पहरेदार उस पर बरस पड़े और उसे महल के दरवाजे में नहीं घुसने दिया।

“मैं बादशाह से एक दरखास्त करने आया हूँ,” नौजवान बोला।

“भिखारी कौन-सी दरखास्त करेगा। चल भाग यहाँ से, यहाँ मत खड़ा हो।”

“मैं यह बताने आया हूँ कि मेरे मालिक के पास दो सौ भेड़ें हैं, जिन्हें बादशाह को महसूल के तौर पर देना है,” नौजवान ने आदरपूर्वक हाथ जोड़कर कहा।

एक पहरेदार फौरन दौड़कर बादशाह के पास पहुँचा और बोला:

“शहंशाह, एक भिखारी आया है, कहता है, उसके मालिक के पास बादशाह के लिए दो सौ भेड़े हैं।”

बादशाह बहुत खुश हुआ।

“उसे मेरे सामने पेश करो!”

नौजवान को पेश किया गया। बादशाह चिल्लाकर बोला:

“ऐ गुलाम, बता कहाँ हैं तेरी भेड़ें?”

गरीब लड़का बोला:

“ऐ शहंशाह, मुझे बोलने की इजाजत दीजिये। मैं गरीब और अनाथ हूँ। मैं अपने बाप का इकलौता बेटा था, मेरे भाई मर रहे थे, पर हम तीन बच गये। हम तीनों भाइयों ने न एक-दूसरे को देखा था और न ही पहचानते थे। एक दिन हम अचानक मिल गये, दुआ-सलाम हुआ। मैंने देखा—हममें से एक के चोगे में गरेबान नहीं है, दूसरे के में आस्तीन नहीं है और तीसरे के में—पल्ला नहीं है। जिस तरह ‘अंधा अंधे को अंधेरे में भी ढूँढ़ लेता है,’ हम तीनों मिले और दोस्त बन गये। हम चल पड़े, न हमने रास्ते पर कदम रखा और न ही रास्ते के किनारे चले। हमें ज़मीन पर तीन सिक्के पड़े दिखाई दिये; उनमें से दो बिल्कुल धिसे हुए थे और एक पर कुछ भी नहीं लिखा था। हमने वह सिक्का उठा लिया, जिस पर कुछ नहीं लिखा था और आगे चल पड़े। रास्ते-रास्ते चलते रहे, चलते रहे और बहुत दूर पहुँच गये। चलते रहे, चलते रहे, फिर घाटी में उतरे। हमने नदी में तीन मछलियाँ देखीं। दो मरी हुई थी, और एक बेजान थी। हमने बेजान मछली उठा ली और उस भाई के पल्ले में डाल दी, जिसके चोगे में पल्ला नहीं था। आगे चले। चलते चलते हमने अपने सामने तीन घर देखे दो बिना छत के थे और एक पर छत बिल्कुल नहीं थी। हम उस घर में घुसे, जिस

पर छत नहीं थी, वहाँ हमने तीन देग देखे. दो में छेद ही छेद थे और एक बिना पेदे का था। हमने बेजान मछली बिना पेदे के देग में डाल दी और पानी डालकर उसे पकाने की तैयारी करने लगे। सूखी टहनियाँ ढूँढ़ी, पर एक टहनी भी नहीं ढूँढ़ पाये। बिना आग के ही मछली पकायी। आँच में कोई कमी नहीं रखी. सारी हड्डियाँ गल गयी, पर गोشت कच्चा रह गया। खाते-खाते हम तीनों के पेट भर गये और इतने मोटे हो गये कि जब हमने बाहर निकलना चाहा, तो दरवाजे में से नहीं निकल पाये। हमें दीवार में एक छोटी-सी दरार दिखाई दी और हम उसी में से बाहर निकलकर बागे चल पड़े। रास्ते-रास्ते चलते रहे, चलते रहे बहुत दूर निकल गये और स्तेपी में आ पहुँचे। हमने देखा घास पर बिना पैदा हुए खरगोश का बच्चा पड़ा है। हमने बिना रोपे गये पोपलर की बिना तोड़ी हुई डाल का डंडा बनाकर खरगोश के बच्चे को मारा। उसने तीन कलाबाजियाँ खायी और ढेर हो गया। हमने उसके टुकड़े कर दिये। खरगोश में से तीन मन चरबी निकली और तीन मन गोشت। गोشت को हमने न उबाला, न मुखाया और जल्दी से उठाकर उसे खा लिया, पर पेट नहीं भरा, भूखे रह गये। मेरे दोनों बड़े भाई गुस्सा हो गये और मुझसे नाराज होकर वहाँ से चले गये। 'चरबी मेरे लिए बच गयी,' मैं बड़ा खुश हुआ। अपने जूते उतारकर मैं उनपर चरबी मलने लगा। सारी चरबी मैंने एक ही जूते पर लगा दी और दूसरे के लिए कम पड़ गयी। मैं बुरी तरह थककर सो गया। अचानक मैंने शोरगुल सुना। मैं फ़ौरन बिस्तर से उठा तो देखा—जिस जूते पर मैंने चरबी मली थी, वह बिना चरबी मले जूते से लड़ रहा है। मैंने दोनों जूतों के जबड़ों पर धूँसे मारे और फिर सो गया। आधी रात में मैं ठंड में कांपता हुआ उठा, तो देखा—जिस जूते पर मैंने चरबी मली थी, वह मेरा चोगा ओढ़कर सो रहा है, और जिस जूते पर मैंने चरबी नहीं मली थी, वह नाराज होकर कहीं भाग गया है। मैंने चरबी मले हुए जूते को जगाकर उसे पहन लिया। बिना पल्ले के चोगे का पल्ला उठाकर पीछे पेट्टी में उड़स लिया और घर आ गया। जब मैं गया था, तो घर में मेरी बुढ़िया माँ और मुर्गा बचे थे। और जब घर लौटा, तो देखा न बुढ़िया घर में है, न मुर्गा। मैंने मुड़कर देखा तो दूसरा जूता भी नदारद था। 'क्या मुसीबत है! मैं उन्हें कहाँ ढूँढ़ूँगा?' मैं दुखी होकर आपके महल में आया। मैं आप से मिलना चाहता था। पर दरवाजे पर खड़े आपके नौकरों ने मुझे किसी भी तरह अन्दर नहीं घुसने दिया।"

गरीब नौजवान सिर झुकाकर चुप हो गया।

बादशाह ने हैरत में पड़कर अपने विद्वानों की ओर देखा।

वे खड़े हुए और सिर झुकाकर बोले:

"ऐ, बादशाह, इस कुत्ते के बच्चे ने जो कुछ कहा है, वह सब झूठ है। ऐसे ही यह अपने मालिक की भेड़ों के लिए भी कहेगा कि वे खो गयीं।"

बादशाह चिल्लाया:

"मैं तुझसे पूछता हूँ, भेड़े कहाँ हैं?"

"शहशाह, मुझे अपनी बात कहने की इजाजत दीजिये। जब आपके पहरेदारों ने मुझे



दरवाजे में नहीं घुसने दिया, तो मैं बहुत दुःखी होकर अपनी बुढ़िया माँ, मुर्गे और दूसरे जूते को ढूँढ़ने निकला। मैं चलते-चलते बहुत दूर पहुँच गया और एक गाँव में जा पहुँचा। मैंने लोगों से पूछताछ करके अपने मुर्गे को ढूँढ़ लिया। वह जमींदार की जमीन जोत रहा था। हम गले मिले, दुआ-सलाम हुआ। छ. महीनों में मुर्गे को तनख्वाह में बोरी सीने की एक सूई मिली और उसे भी उसका मालिक अपने पास रखे हुआ था। मैं मालिक से लड़ा और शोर मचाकर उससे सूई छीन ली। 'मेरे साथ चल', मैंने मुर्गे से कहा। 'नहीं,' वह बोला, 'मुझे छ. महीने नौकरी करनी है; तीन महीने हो चुके हैं, मियाद पूरी होने पर मुझे पैसा मिलेगा और मैं खुद आ जाऊँगा।' मैंने सूई लेकर मुर्गे से विदा ली और घर पहुँचा, पर घर नदारद था, बिल्कुल गायब हो गया था। मैं बहुत दुःखी हुआ और अपनी बुढ़िया माँ और दूसरे जूते को ढूँढ़ने निकल पड़ा। मैंने टीले पर चढ़कर देखा, कोई दिखाई नहीं दिया। पहाड़ी पर चढ़कर देखा—कोई दिखाई नहीं दिया। मैं घाटी में लौट आया। सूई को मैंने जमीन में गाड़ दिया और उस पर चढ़कर देखा, तो मेरी बुढ़िया माँ सिर-दरिया के घाट पर कपड़े धोती नज़र आयी। मैं सूई उठाकर चल पड़ा। माँ तक पहुँचने के लिए न जाने मैंने कितने पहाड़ और नदियाँ पार कीं। मालूम पड़ा, मुझसे बिछुड़ने के बाद वह एक आदमी के घर में नौकरी करने लगी थी। 'चलो,' मैंने कहा। 'तनख्वाह के पैसे मिलने तक मैं नहीं जाऊँगी,' वह बोली। 'तीन साल काम करके मैंने तीन महीने खाने लायक पैसा कमाया है। तू जा, मुझे तीन महीने और काम करना है, मैं खुद आ जाऊँगी।' मैंने बिना पल्ले के चोरो का पल्ला कमर में उड़सा और मुड़कर चल दिया। थोड़ी दूर चलने के बाद मैंने देखा, नदी में बाढ़ आयी हुई है और पुल बह गया है। गरमी के दिन थे, मैं प्यास के मारे तड़प रहा था। मैंने पानी पीना चाहा, पर नदी तो जम गयी थी। मैंने बर्फ तोड़नी चाही, लेकिन पथरीली जमीन पर एक पत्थर भी नहीं मिला, इस लिए अपने सिर से ही बर्फ तोड़ी। गढ़े में सिर डालकर पानी पिया और आगे चल पड़ा। रास्ते में मुझे सूई की याद आयी। मैं किनारे पर लौट आया। देखा, मेरी सूई गायब थी। 'मेरी सूई भी चली गयी,' मैं दुःखी होकर माँ के पास आया। उसकी नौकरी के आखिरी तीन महीने खत्म हो चुके थे। पर जब उसने तनख्वाह माँगी, तो मालिक चिल्लाया: 'तुझे तनख्वाह भी दूँ क्या!' उसने माँ को इतने जोर से मारा कि वह वहीं मर गयी। 'मेरी जिन्दगी में कितना दुःख है?' मैं परेशान होकर आपके महल में आया, शहंशाह, आपसे मिलने के लिए। पर मुझे दरवाजे के अन्दर कदम नहीं रखने दिया गया।"

यह कहकर गरीब नौजवान ने सिर झुका लिया।

बादशाह और ज्यादा हैरत में पड़कर अपने विद्वानों की ओर देखने लगा।

विद्वानों में जो सबसे ज्यादा बुद्धिमान था, वह खड़ा हुआ और सिर झुकाकर बादशाह से बोला:

"बादशाह सलामत, इस पिल्ले पर विश्वास मत कीजिये और इससे भेड़ें तलब कीजिये। यह आवारा भूठ बोलता है। अब यह कहेगा कि इसकी भेड़ें चुरा ली गयीं।"

गरीब नौजवान तीसरी बार बोला:

“ऐ शहशाह, मुझे बोलने की इजाजत दीजिये। जब मुझे महल में नहीं घुसने दिया गया, तो मैंने उस मालिक के पास जाकर हल्ला मचाने की सोची, जिसने मेरी बूढ़ी माँ को मार डाला था। ‘बुढ़िया की तनख्वाह मुझे दे, उसके खून के बदले में रुपया दे,’ मैं उस पर चिल्लाया। मालिक का गरेबान पकड़कर मैं उसे बाहर घसीट लाया। लोग इकट्ठे हो गये और उन्होंने फैसला मेरे हक में किया। मालिक ने मुझे एक गधे दिया। मैं गधे पर बैठकर घर चल दिया। चलता रहा, चलता रहा, रास्ते में मुझे चालीस कारवाँ दिखाई दिये। कारवाँ के सरदार ने मुझे आवाज़ दी, ‘ऐ, सुन, तेरे गधे की पीठ पर से काठी सरक गयी है! उतरकर जीन के नीचे की गद्दी ठीक कर ले।’ मैंने उतरकर देखा, गधे की पीठ पर घाव हो गया था ‘अरे सुनना, इसकी क्या दवा करूँ?’ मैंने उससे पूछा। कारवाँ के सरदार ने जवाब दिया, ‘यह अखरोट ले और इसे जलाकर, इसकी राख घाव पर लगा दे, ठीक हो जायेगा।’ मैंने अखरोट जलाकर राख गधे के घाव पर बुरक दी। जैसे ही मैंने जीन के नीचे की गद्दी ठीक करनी चाही, मुझे घाव में से अखरोट का पेड़ उगता हुआ दिखाई दिया। पलक झपकते पेड़ बड़ा हो गया और उसमें फूल आ गये। थोड़ी देर बाद देखा, अखरोट पक भी गये। ‘क्या करूँ?’ मैंने सोचा। ‘अगर मैंने पेड़ पर चढ़कर उसे हिलाया, तो गधे की कमर टूट जायेगी, बेहतर यही रहेगा कि अखरोट पत्थर मारकर ही तोड़ूँ।’ मैं गधे को खेत में ले आया, जहाँ पत्थर नहीं थे। मैंने आस्तीनें ऊँची करके अखरोट के पेड़ पर पत्थर मारने शुरू किये। न तो कोई पत्थर ही वापस गिरा और न ही कोई अखरोट ज़मीन पर गिरा। मैं पत्थर फेंकता रहा, पूरी ताकत लगाकर फेंकता रहा। देखा, पत्थर भी खत्म हो गये। ‘अब और कोई चारा नहीं रहा, मैं खुद ही चढ़ता हूँ!’ मैंने फैसला किया। अखरोट के पेड़ पर चढ़ा तो वहाँ खरबूजों और तरबूजों का खेत दिखाई दिया और उसके एक किनारे पर नहर में पानी कलकल करता बहता नज़र आया। ‘यह तरबूज बोलने के लिए सबसे अच्छी जगह है,’ मैंने सोचा और तरबूज के बीज बो दिये। और पलक झपकते तरबूज पक गये। वे इतने बड़े थे कि दोनों हाथों में नहीं समा रहे थे। मैंने नहर के किनारे बैठकर जैसे ही तरबूज में चाकू की नोक घुसेड़ी, तरबूज कट गया और चाकू तरबूज के अन्दर गिर गया। मैंने भुक्कर उसे निकालना चाहा, पर मैं खुद भी उसके अंदर गिर पड़ा। अंदर चाकू दूँढ़ता रहा। एक आदमी मिला, मैंने उससे पूछा ‘भाई, आपने मेरा चाकू तो नहीं देखा?’ ‘आप बस चाकू ही खोज रहे हैं?’ बूढ़े ने पूछा। ‘हमारे चालीस कारवाँ थे और हर कारवाँ में चालीस अंठ थे। हम सब बिछुड़ गये, मैं किसी को भी नहीं ढूँढ़ पाया।’ ऐ, बादशाह, मैं अपनी इस बदकिस्मती के बारे में बताने आपके महल आया।”

ग़रीब नौजवान ने यह कहकर सिर झुका लिया।

बादशाह सोच में पड़ गया। विद्वानों में से एक खड़ा हुआ और सिर झुकाकर बोला

“शहशाह, आप इस पिल्ले को दो मोहरें देकर यहाँ से भगा दीजिये।”

पर दरवाजे की आड़ में खड़ी बादशाह की बेटी ने सारी बात सुन ली थी। वह अपने पिता के पास दौड़ी आयी और बोली:



“इसने मेरी तीनों शर्तें पूरी कर दीं। चाहे यह गरीब भी क्यों न हो, मैं शादी इसके साथ ही करूँगी।”

गरीब नौजवान ने सिर झुकाकर बादशाह को सलाम किया।

“शहशाह, मैं कुछ सालों से पहाड़ों में अपने मालिक की भेड़े चरा रहा हूँ। मालिक से मेरी दो सौ भेड़ें निकलती हैं। उसने मुझे भेड़े नहीं दीं और नौकरी से निकाल दिया।

आप मेरे मालिक से दो सौ भेड़ें कमूल कीजिये, मैं शादी के मौके पर उन्हें आपको नज़र करता हूँ।”

बादशाह ने अपनी बेटी की शादी गरीब नौजवान के साथ कर दी और इस मौके पर बड़ी शानदार दावत दी।

हमने भी दावत में छककर खाया-पिया और अपनी मूछों और दाढ़ी पर खूब घी मला।

## ज़ियाद बातिर



बहुत दिन हुए एक सुलतान नाम का बादशाह था। उसकी बेटी सुंदर, सुशील, बुद्धिमान और विद्वान थी। उसका नाम क्रमरखान\* था।

तीर, बरछी और तलवार चलाने में कोई शाहजादी का मुकाबला नहीं कर सकता था।

बादशाह अपनी बेटी को बेटे से भी ज्यादा प्यार करता था।

क्रमरखान से शादी के इच्छुक नौजवानों की कोई गिनती नहीं थी।

बहुत-से देशों के बादशाहों और जमींदारों के बेटे उससे शादी करने आये, पर सबको उसने बस एक ही जवाब दिया।

“मेरी शादी करने का कोई इरादा नहीं है।”

बादशाह के महल में एक बूढ़ा दस्तकार काम करता था। वह सब हुनरों में माहिर था। उसकी बनायी चीज़ें बादशाह को बहुत पसन्द आती थी और उसने बूढ़े दस्तकार को सब दस्तकारों का सरदार बना दिया।

उस दस्तकार का एक बीस साल का बेटा था, जो सुगठित और सुन्दर होने के साथ-साथ बहादुर और बुद्धिमान भी था। उसका नाम ज़ियाद बातिर था। दूसरे बहादुरों में उसका नाम बड़ा मशहूर था।

\* खान — उज़बेक स्त्रियों व पुरुषों के नामों के साथ लगाया जानेवाला आदरसूचक सम्बोधन।







दस्तकार ने अपने बेटे को अपना हुनर सिखाना चाहा और बोला :

“ मेरे बेटे , हुनर सीख ले : बड़ा होने पर तेरे काम आयेगा । ”

थोड़े समय में ही बेटे ने अपने पिता से सभी हुनर सीख लिये ।

पिता अपने पुत्र को देखकर खुश होता , पर उसे यह पता न था कि ज़ियाद बातिर सुन्दर शाहज़ादी के प्यार में तड़पता है , रात भर सोता नहीं , आँहें भरता है ।

एक बार कमरखान ने दस्तकार को एक धनुष बनाने का हुक्म दिया । बूढ़े ने काम शुरू कर दिया और कुछ दिनों में ही धनुष बना डाला ।

पर ज़ियाद बातिर भी धनुष बनाने लगा । काम समाप्त करने के बाद उसने यह धनुष अपने पिता को दिखाया ।

उस धनुष पर बेलबूटेदार लिखावट में दो पंक्ति की एक प्रेम-कविता लिखी थी ।

दस्तकार ने धनुष देखा और हैरत में पड़ गया । ज़ियाद बातिर का धनुष लाजवाब था । इस धनुष को हाथ में लेने के बाद कोई उसकी सराहना किये बग़ैर नहीं रह सकता था ।

बूढ़ा दस्तकार बहुत खुश हुआ और अपने बेटे का माथा चूमकर बोला :

“ शाबाश , मेरे बेटे ! तू इतनी अच्छी तरह मेरे सारे हुनर सीख गया , अब तू ज़िन्दगी में कभी गरीब नहीं रहेगा । ”

दस्तकार ने शाहज़ादी को ज़ियाद बातिर का बनाया हुआ धनुष भेजा । शाहज़ादी को धनुष बड़ा पसंद आया । वह ऐसा ही धनुष पाना चाहती थी ।

शाहज़ादी ने दस्तकार को क़ीमती तोहफ़े भेजे ।

कुछ समय बाद दस्तकार की मृत्यु हो गयी । बादशाह ने ज़ियाद बातिर को बुलवाया और उसे सब दस्तकारों का सरदार बना दिया ।

एक बार बादशाह अपनी बेटी के पास आया और उसने वहाँ दीवार पर बेहद खूबसूरत धनुष टँगा हुआ देखा । बादशाह ने धनुष को दीवार से उतारकर देखा , उसकी बनावट देखकर बहुत खुश हुआ और हैरत में पड़ गया ।

अचानक बादशाह ने धनुष पर लिखी हुई कविता देखी और पढ़ी । उसने ज़ियाद बातिर को बुलाकर पूछा :

“ यह कविता धनुष पर किस ने लिखी है ? ”

“ मैंने , ” ज़ियाद बातिर ने जवाब दिया ।

“ नमकहराम , तेरे लिए यह क्या कम है कि मैंने तुझे सब दस्तकारों का सरदार बना दिया ? और तू मेरी बेटी के लिए प्रेम-कविता लिखता है । ”

बादशाह आग-बबूला हो गया और उसने जल्लाद को बुलाकर ज़ियाद बातिर को मौत की सज़ा देने का हुक्म दिया ।

पर एक वज़ीर ने बादशाह के पैरों में गिरकर नौजवान दस्तकार को माफ़ कर देने और उसकी जान बख़्शने की प्रार्थना की । बादशाह ने वज़ीर की बात मान ली , पर फिर भी उसने ज़ियाद बातिर को शहर से निकाल देने का हुक्म दिया ।

जियाद बातिर लंबे सफर पर निकल पड़ा। वह बहुत दिनों तक स्तेपी और पहाड़ियों में चलता रहा और बहुत-से रास्तों पर भटकता हुआ अंत में पहाड़ों के पास पहुँचा। उसे जगह बहुत अच्छी लगी। चारों ओर हरी-भरी घास थी, साफ़ हवा थी, जिसको देखकर उसका दिल खुश हो उठा और उसने वहीं आराम करने की ठानी। जियाद बातिर को पास ही एक बूढ़ा चरवाहा घोड़े चराता नजर आया। उसने चरवाहे के पास पहुँचकर सलाम किया।

बूढ़े ने देखा कि नौजवान बुरी तरह थक गया है, उसने भशक में से निकालकर एक घ्याला किमिज़\* उसे दिया।

“कहाँ से आ रहे हो, बेटा?” चरवाहे ने पूछा।

जियाद बातिर ने सारा किस्सा चरवाहे को बता दिया। बूढ़े को उस पर दया आयी और उसने सहानुभूतिपूर्वक पूछा:

“और अब कहाँ जा रहे हो, बेटा?”

“मैं कहाँ जाऊँगा, अब्बा? बेघर कहाँ जा सकता है? जाऊँगा, जहाँ मेरे पैर मुझे ले जायें।”

बूढ़ा बोला:

“मैं यहाँ के लोगों के घोड़े चराता हूँ। मैं खानदानी चरवाहा हूँ। अगर तुम्हें यह जिंदगी पसंद हो, तो तुम मेरे बेटे की तरह रहो।”

जियाद बातिर को चरवाहे की बात अच्छी लगी।

“अब्बा, अगर आप मुझे पनाह दे रहे हैं और इसके अलावा मुझे अपना बेटा समझकर रखना चाहते हैं, तो मैं तहेदिल से आपके साथ रहने को तैयार हूँ।”

इस तरह जियाद बातिर चरवाहे के पास रहकर घोड़े चराने लगा। वह अच्छी तरह गुलेल चलाना भी सीख गया।

जब कभी जंगली जानवर घोड़ों के झुंड पर हमला करते, जियाद बातिर गुलेल से पत्थर का अचूक निशाना लगाकर उन्हें खदेड़ देता।

बूढ़ा चरवाहा बहुत खुश था। पहले जंगली जानवर उसे काफी नुकसान पहुँचाते थे, पर जियाद बातिर के आने के बाद से घोड़े चैन से चरने लगे।

जियाद बातिर की ख्याति दूर-दूर तक फैल गयी।

जियाद बातिर को अपने धर्मपिता के साथ घोड़े चराता छोड़कर अब आप बादशाह की बेटी शाहजादी कमरखान का हाल सुनिये।

कमरखान ने किसी को नहीं बताया कि वह जियाद बातिर को प्यार करती है, पर उसने अपने दिल में बहुत पहले ही फैसला कर लिया था:

“अगर मेरे पिता मेरा विवाह करना चाहेंगे, तो मैं केवल जियाद बातिर से ही विवाह करूँगी।”

\* किमिज़ — घोड़ों के दूध से बना एक प्रकार का पेय।



बादशाह ने जब ज़ियाद बातिर को शहर से बाहर निकाल दिया, तब कमरखान की ज़िन्दगी में अघेरा छा गया। वह दिन-रात ज़ियाद बातिर के बारे में सोचती रहती और रोती रहती।

काफी समय तक शाहज़ादी ने अपने दिल का दुःख किसी को नहीं बताया।

उसकी चालीस दासियाँ थीं। उनमें से सबसे बड़ी का नाम हुमायुं था।

कमरखान तड़पती रही, तड़पती रही और अंत में उसने अपने दिल के दुःख के बारे में हुमायुं को बता ही दिया। अपना ग़म भुलाने के लिए कमरखान अक्सर शिकार पर जाने लगी।

वसंत के एक दिन कमरखान अपने पिता से इजाज़त लेकर दासियों के साथ मर्दाने कपड़े पहने शिकार पर गयी। उन्होंने जंगल में पहुँचकर कई चकोर और दूसरी चिड़ियाँ मारी। इसके अलावा उन्हें और कोई शिकार नज़र नहीं आया।

कमरखान घोड़ा दौड़ाकर आगे बढ़ी और उसने दूर आसमान को छूता एक ऊँचा पहाड़ देखा। कमरखान पहाड़ की ओर बढ़ी। अचानक तंग घाटी में से एक भेड़िया उसकी ओर लपका। कमरखान ने तीर चलाकर भेड़िये को मार दिया और उसकी खाल उतारकर अपनी दासियों में से एक को दे दी।

कमरखान अपनी दासियों के साथ आगे बढ़ी, तो उसे जंगल में एक हिरण चरता हुआ नज़र आया। हिरण के कानों में सोने की बालियाँ थीं, सींगों पर सोने की मुहरें लटक रही थीं और गरदन पर बेशकीमती हार थे। कमरखान को हिरण बहुत अच्छा लगा और उसने उसे पकड़ना चाहा।

“इस हिरण को पकड़कर मेरे पास ला दो,” उसने दासियों को आज्ञा दी, “पर उस पर तीर मत चलाना, कमंद से पकड़ना। देखना, कोई हिरण को छोड़े नहीं, और अगर किसी ने उसे छोड़ दिया, तो मैं उसे शिकार से निकाल दूँगी और सारी दुनिया के सामने उसकी बेइज्जती करूँगी।”

दासियों ने कमंद संभाल कर हिरण को घेरना शुरू किया। हुमायुं ने कमंद फेंकी, पर निशाना चूक गया। हिरण शाहज़ादी के सामने से भागा। कमरखान ने एक के बाद एक तीन बार कमंद फेंकी, पर हिरण को न पकड़ पायी। उसे अपनी दासियों के सामने बड़ी शरमिन्दगी महसूस हुई और दुःख भी हुआ। इस लिए उसने हिरण के पीछे घोड़ा दौड़ाया।

हिरण तीर की तरह भागा जा रहा था।

शाहज़ादी का घोड़ा भी हवा से बातें कर रहा था, पर वह हिरण के पीछे ही दौड़ता रहा। अंत में, हिरण और घोड़ा दोनों ही थक गये। हिरण हाँफता हुआ एक गुफा में घुस गया।

शाहज़ादी खुश हुई, उसने सोचा, “अब इसे जरूर पकड़ लूँगी।” वह भी गुफा में घुसी, पर गुफा का एक और रास्ता भी था और हिरण उसमें से निकलकर भाग गया।

कमरखान ने फिर घोड़ा हिरण के पीछे दौड़ाया। वह घोड़ा दौड़ाती रही, दौड़ाती रही और उस पहाड़ के पास आ पहुँची, जहाँ ज़ियाद बातिर घोड़े चरा रहा था।

ज़ियाद बातिर ने जब देखा कि कोई घुड़सवार हिरण का पीछा कर रहा है, तो उसने

निशाना लगाकर गुलेल से पत्थर मारा। पत्थर निशाने पर लगा और हिरण का एक सींग टूट गया। हिरण ज़मीन पर गिर पड़ा।

कमरखान आग-बबूला हो गयी और तलवार निकालकर बोली:

“ऐ, गुस्ताख चरवाहे! अगर मैं हिरण को मारना चाहती, तो मैंने उसे बहुत पहले ही मार दिया होता। मैं उसे ज़िंदा पकड़ना चाहती थी। दूसरे के शिकार पर निशाना लगाने की तेरी मजाल कैसे हुई?”

अचानक चट्टान के पीछे से एक बहुत बड़ा शेर निकलकर उस पर भपटा।

शाहजादी का घोड़ा डरकर पीछे भागा। कमरखान घोड़े से गिर पड़ी और अपनी ही तलवार से उसका हाथ घायल हो गया।

ज़ियाद बातिर ने शेर को देखते ही गुलेल में पत्थर लगाकर निशाना साधा।

जैसे ही शेर ने शाहजादी पर छलाँग लगानी चाही, वैसे ही पत्थर उसके सिर में लगा। शेर वहीं ढेर हो गया।

ज़ियाद बातिर दौड़कर शाहजादी के पास पहुँचा, उसने देखा एक नौजवान बेहोश पड़ा है और उसके चेहरे पर नक्राब है।

ज़ियाद बातिर ने तुरंत अपनी कमीज़ उतारी और एक आस्तीन फाड़कर कमरखान की मरहम-पट्टी की।

“बेचारे नौजवान की जान बचानी चाहिए,” उसने सोचा, “अगर यह बेकार ही मर गया, तो बहुत बुरा लगेगा।”

ज़ियाद बातिर ने पानी लाकर घायल के चेहरे पर उसके छीटे दिये, पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। “नक्राब हटाना चाहिए,” ज़ियाद बातिर ने सोचा, “जिससे यह थोड़ा बहुत पानी पी सके।”

उसने नौजवान का नक्राब हटाया, तो काले-काले घुंघराले बाल बिखर गये और ज़ियाद बातिर ने देखा कि सामने उसकी प्यारी कमरखान बेहोश पड़ी है।

इस अप्रत्याशित बात और दुःख के मारे ज़ियाद बातिर बेहोश होते-होते बचा।

“मेरी प्यारी, आंखें खोलो, मुझे मत तड़पाओ। तुम मुझे मार डालना चाहती थी, मार डालो। पर ऐसे बेजान मत पड़ी रहो, आंखें खोलो,” ज़ियाद बातिर मन-ही-मन यह कहता हुआ माफ़ी माँगता रहा।

थोड़ी देर बाद लड़की को होश आने लगा। उसने आंखें खोलकर देखा — चरवाहे की आँखों से आँसू बह रहे हैं, ध्यान से देखा, तो अपने प्यारे ज़ियाद बातिर को पहचान गयी और फिर बेहोश हो गयी।

एक-एक करके दासियाँ वहाँ पहुँचने लगीं। उन्होंने देखा एक शेर मरा पड़ा है, शाहजादी बेहोश पड़ी है और कोई चरवाहा उसके ऊपर झुका हुआ उसके चेहरे पर पानी के छीटे दे रहा है।

लड़कियाँ जल्दी से घोड़ों से उतरीं। हुमायुं शाहजादी का सिर अपनी गोदी में रखकर



रोने लगी, उसे होश में लाने की कोशिश करने लगी और घाव पर दवाई लगाने लगी। कमर-खान को होश आया।

लड़कियाँ फौरन शाही महल लौट जाना चाहती थीं, पर कमरखान तैयार नहीं हुई  
“जब तक मेरा घाव ठीक नहीं हो जाता, मैं यहाँ से कहीं नहीं जाऊँगी।”

वहाँ एक चश्मा था और चश्मे के पास दो छायादार पेड़ थे।

दासियो ने शाहजादी को पेड़ों के नीचे लिटा दिया। शाहजादी सोचने लगी, “ज़ियाद बातिर ने मुझे पहचाना या नहीं?”

उसने कटाक्ष भरी आवाज़ में पूछा:

“आप कब से यहाँ चरवाहे का काम कर रहे हैं?”

ज़ियाद बातिर सोचने लगा, “मुझे मार डालना चाहती है, चाहे मार दे, कुछ भी हो, मैं सच ही कहूँगा,” और बोला:

“उस समय से जब से आपके पिता ने मुझे देशनिकाला दिया था।”

शाहजादी ज़ियाद बातिर से माफ़ी माँगने लगी।

“गलती मेरी थी। मैं अपने पिता को रोक नहीं सकी।”

ज़ियाद बातिर बहुत खुश हुआ और अपने धर्मपिता को बुलाने गया।

“हमें अपने प्यारे मेहमानों की अच्छी खातिरदारी करनी चाहिए,” बूढ़े चरवाहे ने कहा।

वह गाँव से एक बड़ा देग लेकर आया। पाँच भेड़ें काटकर उसने पुलाव पकाया, सारी लड़कियों को खिलाया और उनको किमिज़ भी पिलाया।

इस तरह पन्द्रह दिन बीत गये। शाहजादी का घाव ठीक होने लगा।

अब शाहजादी के पिता का हाल सुनिये।

कमरखान को शिकार पर गये एक महीना बीत चुका था, पर उसकी कोई खबर नहीं थी।

बादशाह ने एक बहादुर को बुलाया और बोला:

“शाहजादी की एक महीने से कोई खबर नहीं मिली है, तुम जाकर पता लगाओ, वह कहाँ है। उसे ढूँढ़कर महल में लाओ।”

यह बहादुर काफी पहले से शाहजादी से शादी करना चाहता था इसी लिए वह ईमानदारी से बादशाह की सेवा कर रहा था। ऐसा हुकम मिलने पर वह बड़ा खुश हुआ, और फौरन यात्रा के लिए तैयार हो गया। उसने अपने साथ कुछ सैनिक लिये, शराब ली और सफर पर चल पड़ा।

पाँच दिनों की यात्रा के बाद उसने शाहजादी को ढूँढ़ लिया और देखा—वह पेड़ के नीचे बैठी ज़ियाद बातिर के साथ बातें कर रही है। यह देखकर बहादुर को बड़ा दुःख हुआ।

पर अपशब्द कहकर शाहजादी को नाराज़ करने की उसे हिम्मत नहीं हुई। वह घोड़े से उतरा और अभिवादन करके बोला:

“आपके पिता बहुत परेशान हो रहे हैं, उन्होंने मुझे आपको ढूँढ़ने के लिए भेजा है।”

उसे खाना परोसा गया। बहादुर ने शराब की सुराही निकाली। लड़कियों ने शराब ढाली।

शराब के दो प्याले पीते ही बहादुर को नशा चढ़ गया, उसकी आंखें लाल हो गयीं, नसों में खून उबलने लगा। वह ज़ियाद बातिर को चिढ़ाने लगा, उसकी हर बात में मीन-मेख निकालने लगा।

“तुम मेरी बात क्यों काट रहे हो?” भगड़ालू बहादुर कहने लगा और उसने उठकर ज़ियाद बातिर के एक घूँसा मारा। ज़ियाद बातिर को बड़ा बुरा लगा, उसने ईंट का जवाब पत्थर से दिया।

बहादुर के मुँह से झाग निकलने लगे और वह वहीं ठेर हो गया।

सैनिक ज़ियाद बातिर पर दूट पड़े और जमकर लड़ाई शुरू हो गयी।

ज़ियाद बातिर ने सबको मार भगाया और शाहजादी से कहा:

“अब मेरे लिए यहाँ रहना खतरे से खाली न होगा। चलो किसी दूसरे देश भाग चले।”

शाहजादी ने दासियों को बादशाह के पास लौट जाने का हुक्म दिया और कहा:

“अगर पिता जी मेरे बारे में पूछें, तो कह देना कि कमरखान दूसरे देश चली गयी।”

सारी लड़कियाँ रोती हुई शहर वापस आयीं।

उधर ज़ियाद बातिर और शाहजादी चरबाहे धर्मपिता से विदा लेकर घोड़ों पर सवार होकर सफ़र पर चल पड़े। वे रास्ते में पड़ाव डालकर शिकार करते और फिर आगे बढ़ते।

इस तरह कुछ दिनों बाद वे हिरात नाम के शहर पहुँचे। वहाँ बादशाह हुसैन मिर्जा राज करता था।

वे एक सराय में ठहरे। ज़ियाद बातिर एक लोहारखाने में काम करने लगा। कुछ दिनों बाद उन दोनों ने शादी कर ली।

एक बार एक अमीर आदमी ज़ियाद बातिर के पास आया और बोला:

“आप लोगों को सराय में रहने की क्या जरूरत है, मैंने आपके लिए अपने मोहल्ले में एक मकान ढूँढ़ लिया है।”

ज़ियाद बातिर को मकान पसंद आ गया। अपनी तनख्वाह में से बचे पैसे ज़ियाद बातिर ने उस आदमी को दिये और अपनी पत्नी के साथ नये घर में रहने लगा।

उस अमीर का एक नौकर डाकू था। अमीर ने उसको बुलाया और बोला:

“आज शाम को कहीं मत जाना, मुझे तुमसे काम है।”

और आधी रात को वह डाकू को लेकर ज़ियाद बातिर के घर आया। अमीर ने ज़ियाद बातिर के सो जाने के बाद उसकी हत्या करके कमरखान को उड़ा ले जाने की योजना बनायी।

पर कमरखान ने कदमों की आहट सुनकर ज़ियाद बातिर को जगा दिया। ज़ियाद बातिर ने अपने घर के सामने दो आदमियों को खड़े देखा।

वह अपने तकिये के नीचे से खंजर निकालकर डाकू से भिड़ गया। और कमरखान ने लपककर अमीर के मुँह पर ऐसा घूँसा मारा कि उसका गाल ही सूज गया। ज़ियाद बातिर ने नौकर को मार डाला, उधर शाहजादी अमीर को ज़मीन पर गिराकर उसका गला घोटने लगी।



अमीर प्राणों की भीख माँगने लगा :

“मुझे छोड़ दो, रहम करो!”

शाहजादी ने सोचा, “इसे मार डालना चाहिए,” पर ज़ियाद बातिर बोला :

“ठीक है, छोड़ दो इस नीच को। भाग यहां से और फिर कभी ऐसी हरकत मत करना।”

अमीर सिर पर पाँव रखकर भागा। घर पहुँचते ही उसके दिमाग में ख्याल आया मैं क्यों न बादशाह के पास जाकर शिकायत करूँ? अपने सूजे हुए गाल पर पट्टी बाँधकर वह महल में पहुँचा।

बादशाह हुसैन मिर्जा दरबारियों से घिरा हुआ अपने तख्त पर बैठा था।

अमीर ने आकर शिकायत की :

“शहंशाह, कुछ दिन हुए नीच सानदान का एक आदमी एक लड़की लेकर अपने शहर में आया है। मैंने उसे ईमानदार आदमी समझकर उसके लिए एक मकान का बंदोबस्त कर दिया। पर उसने मुझे बुरी तरह पीटा और घायल कर दिया... हुजूर, आप उस नीच और आवारा आदमी को सजा दीजिये, उसे शहर से निकाल दीजिये।”

हुसैन मिर्जा गुस्सा होकर बोला :

“ऐसे आदमी को शहर से निकाल देना कम होगा, उसे मौत की सजा मिलनी चाहिए।” और उसने अपने सैनिकों को ज़ियाद बातिर को पकड़कर लाने भेजा।

सैनिकों ने जाकर ज़ियाद बातिर व कमरखान को पकड़ लिया और उनके हाथ-पैर बाँधकर महल में घसीट लाये। कमरखान को देखते ही हुसैन मिर्जा दुनिया में सब कुछ भूल गया और ज़ियाद बातिर से बोला :

“तुम इतनी खूबसूरत लड़की को कहाँ से ले आये? तुम जरूर इसे कहीं से उड़ाकर लाये हो।”

“आप उसी से पूछिये,” ज़ियाद बातिर ने जवाब दिया।

“इस खूबसूरत लड़की को यहीं छोड़ दो और तुम यहीं से चले जाओ,” उसने ज़ियाद बातिर से कहा।

पर ज़ियाद बातिर जाने के लिए तैयार नहीं हुआ।

बादशाह आग-बबूला हो गया। उसने जल्लादों को बुलाया और ज़ियाद बातिर को मौत की सजा देने का हुक्म दिया।

जल्लाद ज़ियाद बातिर को मौत की सजा देने ले गये। रास्ते में उसने कंधों को झटका देकर रस्सी तोड़ दी और सारे सैनिकों को मारकर अपने मालिक लोहार के पास भाग गया।

ज़ियाद बातिर ने उसे सारा किस्सा सुनाया। लोहार ने कहा :

“यहाँ से थोड़ी दूर एक गुफा है, तुम उसमें छिप जाओ और मैं शहर जाकर पता लगाता हूँ, लोग क्या बातें कर रहे हैं। कल मैं तुम्हारे पास आकर तुम्हें सब कुछ बताऊँगा।”

अब शाहजादी का हाल सुनिये।

पहले बादशाह उसके साथ ढंग से बातें करता रहा, उसे सब्ज बाग़ दिखलाता रहा

“मैं तुम्हें सोने में पीली कर दूँगा। तुम्हारे पास सारी शाहजादियों से ज्यादा धन-दौलत होगी। तुम मेरी चौथी बीवी बनकर मेरे महल में रहो।”

पर कमरखान टस से मस न हुई।

बादशाह और ज्यादा गुस्सा हुआ। उसके बाग में जमीन के नीचे एक चोर-जेल थी, जिसके बारे में किसी को पता नहीं था।

बादशाह ने कमरखान को उस जेल में कैद कर दिया। जब बादशाह ने सुना कि ज़ियाद बातिर भाग गया है, तो उसने शहर के सारे दरवाजे बन्द कर देने और उसको ढूँढकर पकड़ लाने का हुक्म दिया। ज़ियाद बातिर को कोने-कोने में खोजा गया, पर वह कहीं नहीं मिला।

शाम होते ही लोहार गुफा में आया, जहाँ ज़ियाद बातिर छिपा था और वे सलाह करने लगे कि आगे क्या किया जाये। लोहार थोड़ी देर सोचकर बोला:

“बादशाह का अलीशेर नवाई नाम का एक बजीर है। तुम्हें उसके पास जाकर अपनी मुसीबतों के बारे में बताना चाहिए। वह न्यायप्रिय आदमी है, मुसीबत में तुम्हारी मदद करेगा।”

“अच्छा,” ज़ियाद बातिर बोला, “ऐसा ही करूँगा।”

आधी रात में वह गुफा से निकलकर अलीशेर नवाई के घर पहुँचा, दरवाजा छटखटाय़ा और बोला:

“मैं नवाई का यश सुनकर बहुत दूर से उनसे सलाह माँगने आया हूँ। मुझे उनसे मिलने दीजिये।”

हमेशा की तरह अलीशेर अभी तक सोये नहीं थे। वह काफ़ी रात गये तक और कभी-कभी तो सुबह तक कविताएँ लिखते रहते थे। उनके नौकर ने उनके पास आकर कहा:

“कोई नौजवान काफ़ी दूर से आपसे सलाह माँगने आया है।”

“उसे अंदर आने दो,” अलीशेर नवाई बोले।

ज़ियाद बातिर ने अंदर आकर सलाम किया और बैठकर अपनी सारी मुसीबतें अलीशेर नवाई को सुनायी।

नवाई ने उसे तसल्ली दिलायी:

“तुम घबराओ मत। बादशाह कमरखान को नहीं मारेगा। कल मैं उसके बारे में पता लगाकर तुम्हें बताऊँगा।”

दूसरे दिन अलीशेर नवाई शाही महल में गये और उसके बाग में घुसे। उन्हें तो पता ही था कि वहाँ जमीन के नीचे एक जेल है।

बाग में घूमते-घूमते उन्हें माली मिल गया। माली ने अलीशेर नवाई को झुककर सलाम किया और उन्हें एक गुलदस्ता भेंट किया। माली बाग और जेल दोनों की देखभाल करता था। पर इस बारे में किसी को मालूम नहीं था।

अलीशेर नवाई ने माली से पूछा:

“तहखाने में जो खूबसूरत लड़की कैद है, उसके बारे में तुम्हें कुछ मालूम है?”



“मालूम है, हुजूर,” माली बोला। “खुद बादशाह ने उसे तहखाने में डालने का हुक्म दिया है।”

अलीशेर नवाई ने घर पहुँचकर ज़ियाद बातिर को बताया कि कमरखान सही-सलामत है। इसके बाद अलीशेर नवाई ने अपने आदमियों को बादशाह के बाग तक एक सुरंग खोदने का हुक्म दिया।

तीन दिन में सुरंग खोदकर कमरखान को जेल में से निकाल लिया गया। उसे अलीशेर नवाई के घर ले आया गया, जहाँ उसके रहने का इंतज़ाम पहले से ही कर दिया गया था।

नवाई ज़ियाद बातिर से बोले:

“मेरे घर में कोई भी तुम्हारा बाल बांका नहीं कर सकता। तुम लोग आराम से रहो।”

ज़ियाद बातिर और कमरखान नवाई के घर में तीन साल रहे।

कमरखान ने एक बेटे को जन्म दिया। वह अब पैरों भी चलने लगा था।

एक बार अलीशेर नवाई बाग में टहल रहे थे, तो उन्होंने वहाँ एक लड़के को पानी में बैठे छपछप करते देखा। उन्होंने उसे गोदी में उठाकर कुछ फूल दिये। दरवाज़े के पास पहुँचते ही उन्होंने ज़ियाद बातिर को ये शब्द कहते सुना:

“मेरी प्यारी कमरखान, मत रोओ, मैं जानता हूँ, तुम्हें अपनी माँ की याद सता रही है ... मत रोओ ... चुप हो जाओ ... अपने देश को याद करके मेरा दिल भी तड़पता है ..”

अलीशेर नवाई यह सब सुनकर अंदर आये। कमरखान आंसू पोंछकर बड़ी हो गयी और उसने भुक्ककर अलीशेर नवाई को सलाम किया। नवाई बोले:

“तुम दुःखी मत होओ। बस एक महीना और सबर करो, फिर मैं खुद तुम दोनों को लेकर तुम्हारे देश जाऊँगा और तुम्हारे पिता को सब कुछ समझा दूँगा।”

एक महीना गुज़र गया। अलीशेर नवाई ने बादशाह से दूसरे देश के दौरे पर जाने की इजाजत माँगी और चार बफ़ादार नौजवानों को बुलाकर सफ़र की तैयारी शुरू कर दी। उन चारों नौजवानों ने सफ़र के एक हफ़्ता पहले कमरखान और ज़ियाद बातिर को चुपचाप शहर से निकालकर पहाड़ों में छिपा दिया। अलीशेर नवाई अपने सफ़र का सामान जमा करके चल दिये। रास्ते में उन्होंने पहाड़ों में जाकर कमरखान और ज़ियाद बातिर को अपने साथ ले लिया।

वे काफ़ी दिन चलते रहे और लंबे सफ़र के बाद कमरखान के देश पहुँचे। बादशाह को जब अलीशेर नवाई के आने की खबर मिली तो उसने अपने सैनिकों को उनकी अगवानी करने भेजा।

अलीशेर नवाई के आने के कुछ दिन बाद बादशाह ने उन्हें अपने महल में बुलाया।

“आपका स्वागत है,” बादशाह बोला, “कहिये कैसे आना हुआ?”

अलीशेर नवाई ने जवाब दिया:

“मैं आपके पास दो कसूरवार लोगों के लिए माफ़ी माँगने आया हूँ। अगर आप उन्हें माफ़ कर देंगे, तो मैं कुछ दिन आपके यहाँ टहरूँगा और माफ़ नहीं करेंगे, तो फौरन चला जाऊँगा।”

बादशाह बोला :

“ऐ महान नवाई, अगर उन कसूरवारों ने मेरे पिता की हत्या भी की होती, तो भी मैं उन्हें माफ कर देता, इस लिए कि आप उनके लिए माफ़ी मांग रहे हैं। मुझे बताइये, वे कौन हैं?”

तब अलीशेर नवाई ने कमरखान और ज़ियाद बातिर को लाने का हुक्म दिया। कमरखान आयी और पिता के सीने से लिपट गयी। बादशाह खुशी के मारे बेहोश हो गया। वह बहुत दिनों से सोच रहा था कि उसकी बेटी मर चुकी है। बादशाह को होश में लाया गया, तो वह रोते-रोते पूछने लगा :

“मेरी बेटी, तुम कहाँ चली गयी थीं?”

उसी समय ज़ियाद बातिर भी आ पहुँचा। बादशाह उसे मौत की सज़ा देना चाहता था, पर अलीशेर नवाई ने उसका वायदा याद दिलाया। बादशाह को एक मामूली चरवाहे ज़ियाद बातिर को अपना दामाद मानने को तैयार होना पड़ा।

अलीशेर नवाई कई दिनों तक बादशाह के मेहमान रहे और फिर अपने घर हिरात लौट गये।

ज़ियाद बातिर और कमरखान ज़िन्दगी भर उनका एहसान नहीं भूले।

ज़ियाद बातिर ने सबसे पहला काम उस बूढ़े चरवाहे को बुलवाने का किया, जिसके साथ वह पहाड़ों में घोड़े चराता रहा था और उसे अपने छायादार बाग़ में शरण दी।

ज़ियाद बातिर जीवन भर सीधे-सादे लोगों को प्यार करता रहा और गरीबों, भूखे-नंगों की मदद करता रहा।

## गुली



कहते हैं कि बहुत दिन हुए हिरात और समरकंद में हुसैन बायकरा नाम का बादशाह राज करता था और विद्वान कवि अलीशेर नवाई उसके बड़े वज़ीर थे।

यह भी कहा जाता है कि बचपन से ही बादशाह और वज़ीर में बड़ी गहरी दोस्ती थी। हुसैन अलीशेर से बात किये या उसे देखे बिना एक दिन भी नहीं रह पाता था। हुकूमत का कोई भी काम हुसैन विद्वान अलीशेर की सलाह लिये बग़ैर नहीं करता था।

एक बार जब बादशाह शिकार पर जाने लगा, तो अलीशेर ने उसके साथ न जाने का बहाना बनाया और घोड़े पर सवार होकर अकेले ही शहर के एक दूर के मुहल्ले की ओर



चल दिये। बड़े वजीर के इस रहस्यमय अकेलेपन के दो कारण थे : विद्वान अलीशेर को शिकार जैसा क्रूर और खूनी मनोरंजन पसन्द नहीं था, दूसरे, एक अनजानी सुन्दर लड़की की आंखों की खूबसूरती ने उन्हें मोह लिया था। चालीस दिन हुए मुहब्बत का तीर वजीर के दिल में लग चुका था।

वसत के एक दिन एक शांत गली में से गुजरते हुए अलीशेर नवाई ने कुछ सरसराहट-सी सुनी और अनायास ऊपर की ओर देखा। उनकी आश्चर्यचकित आंखों को एक इतना खूबसूरत चेहरा नजर आया, जिसकी तुलना में चांदनी भी उतनी ही फीकी लगने लगी, जितना कि सोने की चमकती मोहर के पास पड़ा मोरचा छाया तर्बे का बटन।

पर आश्चर्यचकित हुआ अलीशेर इस अनिच्छा सुंदरता का आनंद केवल क्षण भर के लिए ही ले पाये। वह खूबसूरत चेहरा इतनी जल्दी आंखों से ओझल हो गया, जैसे वह वहाँ कभी था ही नहीं।

अलीशेर नवाई आश्चर्यचकित और परेशान होकर वहाँ से चले गये, पर उन्होंने दूसरे दिन उसी गली में से उसी समय इस तरह निकलने का फ़ैसला किया, जैसे वह संयोगवश वहाँ से गुजर रहे हों।

उस दिन से अलीशेर अपनी नींद और दिल का चैन खो बैठे। वह हर रोज़ उस मुहल्ले में जाते, जहाँ वह आकर्षक आंखोंवाली लड़की रहती थी, पर उसके बाद वह उन्हें दुबारा दिखाई नहीं दी।

फिर भी अलीशेर ने अपने बफ़ादार नौकरों से पता लगवा लिया कि वह सुंदरी एक मामूली जुलाहा अबू सलीह की बेटी है और उसका नाम गुली है, जिसमें गुल जैसी सुगंध है।

काफ़ी देर सोच-विचार करने के बाद अंत में अलीशेर ने लड़की के पिता से मिलकर बात करने का फ़ैसला किया।

अबू सलीह के घर पहुँचकर अलीशेर ने उसका दरवाज़ा खटखटाया।

“कौन है?”

“एक मुसाफ़िर।”

“मुसाफ़िर, तुम्हें क्या चाहिए?”

“क्या आदरणीय अबू सलीह घर पर हैं?”

दरवाज़ा खुला और स्वयं अबू सलीह बाहर आया।

बड़े वजीर को अपने सामने खड़ा देखकर बेचारा जुलाहा घबरा गया और काँपने लगा, क्योंकि उस ज़माने में शासकों के दर्शन से केवल दुःख और कष्ट ही मिलते थे।

पर अलीशेर ने नम्रतापूर्वक सिर झुकाया और अंदर आने की इजाज़त माँगी।

हक्का-बक्का हुआ और अभी तक काँपता हुआ अबू सलीह वजीर को अपने घर के अंदर लेकर आया और उसे सम्मानपूर्वक बिठा दिया।

अलीशेर ने हिचकिचाहट के कारण और अबू सलीह ने डर और घबराहट के कारण केवल एक दूसरे का अभिवादन किया और काफ़ी देर तक चुप बैठे रहे।







अतः मैं जब अलीशेर ने देखा कि बात ज़रा भी आगे नहीं बढ़ी है, तो वह उठ खड़े हुए और आदरपूर्वक सिर झुकाकर बोले:

“आदरणीय अबू सलीह, मुझ तुच्छ को आपका दामाद बनने की आज्ञा दीजिये।”

अचभे में पड़े अबू सलीह की आवाज़ ही बंद हो गयी। वह कभी सपने में भी नहीं सोच सकता था कि उस जैसे मामूली जुलाहे की लड़की के साथ, चाहे वह कितनी ही सुंदर क्यों न हो, शाही तल्ल के आधार और रक्षक स्वयं बज़ीर अलीशेर नवाई शादी करना चाहेंगे।

वह खुशी से फूला न समाया और सिर झुकाकर अलीशेर से बोला:

“सरकार, हमारे परिवार का सब कुछ आपके हाथों में है। हमारे लिए यह बड़े सम्मान की बात है कि आप एक तुच्छ जुलाहे की बेटी से शादी करना चाहते हैं।”

“पर लड़की से पूछ लीजिये, उसकी क्या इच्छा है?”

“पिता की आज्ञा का पालन करना बेटी का कर्तव्य होता है!” अबू सलीह कह उठा।

तब अलीशेर सिर झुकाकर बोले:

“मैं शरीअत के सारे क़ायदे-क़ानून जानता हूँ, पर उनके अलावा दिल के अपने भी क़ायदे-क़ानून होते हैं। प्यार में दबाव डालना मौत से भी बुरा होता है। अगर आपकी बेटी ‘नहीं’ कहे, तो मैं चुपचाप सिर झुकाकर यहाँ से चला जाऊँगा।”

अबू सलीह जनानख़ाने में गया और बेटी से बोला:

“बेटी, तेरी किस्मत खुल गयी। तू अब महल में रहेगी। खुद बज़ीर अलीशेर तुझसे शादी करना चाहते हैं। मैंने ‘हाँ’ कह दी है, पर या अल्लाह, वह बड़े अजीब आदमी हैं, वह तेरी रज़ामंदी भी चाहते हैं! वह अपना इरादा बदल दें, इससे पहले तू अपनी रज़ामंदी दे दे। उनके आँख के इशारे की देर है और हमारे घर, हम सब लोगों और नौकरों का नामोनिशान भी बाक़ी न बचेगा।”

गुली मुस्कराकर बोली: “अपने माँ-बाप का कहना मानना मेरा कर्तव्य है। आप बज़ीर से कह दीजिये, मेरी बेटी आपकी लौंडी है!”

बूढ़ा खुशी से फूला न समाता अलीशेर के पास दीड़ा आया, बोला:

“मैंने आपसे कहा था न कि गुली बहुत समझदार है। वह राज़ी है!”

अलीशेर ने उसी दिन अगुओं को अबू सलीह के यहाँ भेजा।

अलीशेर नवाई निस्सन्देह एक असाधारण व्यक्ति थे। उन्होंने इस बात का स्वयं यकीन कर लेना चाहा कि लड़की क्या चाहती है और इस लिए रोज़ाना शाम को अपने भावी ससुर के घर आने लगे।

अलीशेर और गुली बगीचे में घूमते और बिना किसी रुकावट के अपने प्यार के बारे में बातें करते। अलीशेर गुली को समर्पित और प्रेम की उच्च भावनाओं से ओत-प्रोत अपनी नई गज़लें उसे सुनाते और गुली दोम्बा\* बजाते हुए अपनी कोयल-सी कूकती सुरीली आवाज़ में

\* दोम्बा — एक प्रकार का वाद्ययंत्र।

गीत गाती। लगता था, दोनों युवा प्रेमियों के आनंद की कोई सीमा न थी।

शादी का दिन नजदीक आ गया था। अलीशेर ने अपनी मंगेतर के पिता को दस हजार अशरफियाँ कलीन\* के तौर पर दीं। दोनों प्रेमियों की सगाई हो गयी।

एक दिन जब अलीशेर अपनी मंगेतर के घर में थे, बादशाह हुसैन ने अपने दरबारियों से पूछा:

“मुझे अपना दोस्त वजीर अलीशेर नज़र नहीं आ रहा है।”

तब छोटा वजीर मजेदीन तस्त के नजदीक आकर बोला:

“हुज़ूर, आपके हुकम के मुताबिक पिछले कई दिनों से हमारे जासूस आपके वजीर अलीशेर का छाया की तरह पीछा कर रहे हैं, जिससे कि आपको उसकी नीयत और हरकतों का पता रहे।”

“हमारे जासूसों ने क्या पता लगाया?”

“हुज़ुरे आली, आपकी हुकूमत के हर आदमी की नीयत और मंशा शीशे से ज्यादा साफ़ और नेक होनी चाहिए। अलीशेर आपको धोखा दे रहा है।”

“क्या! उसकी हिम्मत कैसे हुई!”

“हुज़ूर, अलीशेर आपसे तो कहता है कि वह शाम को रोज़ाना नयी गज़लें लिखता है। पर हकीकत यह है कि वह अपना वक्त एक बेहद खूबसूरत लड़की के साथ गुज़ारता है। सरकार, उसने एक असली हीरा आपसे छिपाकर रखा हुआ है, जो बादशाह के हरम में चार चांद लगा सकता है। उस लड़की का नाम गुली है। वह जुलाहे अबू सलीह की बेटी है।”

जब अलीशेर नवाई वहाँ पहुँचे, तो बादशाह हुसैन बोला:

“हमने शादी करने का फ़ैसला किया है।”

इस पर अलीशेर ने पूछा:

“क्या आपकी मंगेतर खूबसूरत है? क्या वह अच्छे खानदान से है?”

“वह खूबसूरत है और उसका बाप एक इज्जतदार आदमी है।”

“मुबारक हो, हुज़ूर।”

हुसैन बड़े कपटी ढंग से हँसकर तस्त के पास खड़े अपने दरबारियों से बोला:

“आप लोगों ने सुना, हमारे बड़े वजीर ने हमारी शादी के इरादे को ठीक बताया है। हम अपने दोस्त बड़े वजीर अलीशेर को निकाह कराने की ज़िम्मेदारी सौंपते हैं। हमारे दोस्त, जल्दी-से-जल्दी तोहफे लेकर लड़की के घर जाओ।”

अलीशेर को किसी तरह का शक नहीं हुआ और वह सिर झुकाकर बोले:

“बादशाह का निकाह तय कराना मेरे लिए बड़ी इज्जत की बात है। पर मुझे कहाँ जाना है?”

“जुलाहे अबू सलीह के घर।”

---

\* कलीन—वर पक्ष की ओर से वधू के पिता को दी जानेवाली राशि।



अलीशेर के चेहरे का रंग उड़ गया और वह सिर झुकाकर बोले :

“मैं सरकार का हुक्म अदा नहीं कर सकता।”

बादशाह हुसैन गुस्से से आग-बबूला हो उठा।

“यानी, यह सच है कि तुम अपनी हरकतें मुझसे छिपा रहे थे। या तो हमारी हुक्म-उदूली की सजा भुगतने को तैयार रहो, या फिर उस खूबसूरत लड़की के साथ हमारा निकाह तय कराओ।”

पर अलीशेर अपने निश्चय पर डटे रहे। वह फिर सिर झुकाकर बोले।

“एक दूल्हे के लिए अपनी ही मंमेतर का निकाह दूसरे के साथ तय कराना नामुमकिन है, चाहे वह दूसरा—खुद बादशाह ही क्यों न हो।”

यह कहकर वह वहाँ से चले गये।

बादशाह हुसैन ने फौरन अलीशेर को समरकंद से निकाल देने का फरमान जारी कर दिया और निकाह की जिम्मेदारी मजेद्दीन को सौंप दी।

बुरी खबर लेकर अलीशेर घोड़ा दौड़ाता हुआ जुलाहे अबू सलीह के घर पहुँचा। उसने घोड़ा इतनी तेजी से दौड़ाया कि घोड़े के मुँह से भाग निकलने लगे।

बगीचे में महकते हुए गुलाब के फूलों के बीच अलीशेर रोते हुए अपनी गुली को प्यार की बरबादी की खबर सुनायी।

“इस दुनिया में लोगों को जुल्म और सितम के कारण कभी चैन नहीं मिल सकता,” अलीशेर अपनी बेबसी पर दुःखी होकर बोले।

“मैं चाहे मर जाऊँ पर हुसैन की बीवी कभी नहीं बनूंगी,” गुली बोली।

जिस समय वे ये बातें कर रहे थे, अबू सलीह के घर मजेद्दीन बादशाह के तोहफे लेकर आया।

निकाह तय करने के लिए आये हुए प्रतिष्ठित आदमी को सम्मानपूर्वक बैठा छोड़कर अबू सलीह बगीचे में आया और अलीशेर की ओर देखे बिना बोला:

“वजीर मेरा दामाद हो सकता था, पर किस्मत की मर्जी यही कि मैं खुद बादशाह का ससुर बनूँ।”

इस पर गुली ने थोड़ी देर पहले अपने प्यारे अलीशेर को कहे हुए शब्द दोहरा दिये।

“मैं चाहे मर जाऊँ पर हुसैन की बीवी कभी नहीं बनूंगी।”

“हाय, हाय!” अबू सलीह कह उठा, “बादशाह तुम्हारी इन बातों से नाराज हो उठेगा। वह मेरे घर को जलाकर खाक कर देगा और मेरा नामोनिशान ही मिट जायेगा।”

अबू सलीह रोता रहा, आहें भरता रहा, अपने और अपने घरवालों को बरबादी से बचाने के लिए बेटी को मनाता रहा, पर गुली अपने निश्चय पर डटी रही।

अबू सलीह जाकर मजेद्दीन के पैरों में गिरा और कहने लगा:

“इसकी अक्ल पर पत्थर पड़ गये हैं। उसने ‘इनकार’ कर दिया है, पर मैं आपसे इल्ति-जा करता हूँ, आप बादशाह को कुछ मत बताइये। थोड़ी देर में वह समझ जायेगी कि वजीर

की बीवी बनने से तो बादशाह की लौंडी बनना ज्यादा अच्छा है।”

मजेद्दीन यह कहकर चला गया कि वह शाम की नमाज के बाद जवाब लेने के लिए दुबारा आयेगा। जाने के पहले उसने ऊँची आवाज में कहा :

“ मैं कसम खाता हूँ अगर लड़की अपनी मर्जी से न मानी, तो मैं उसकी चोटी पकड़कर उसे घसीटता हुआ महल में ले जाऊँगा। ”

गुली अपने कमरे में जाकर वहाँ से मुसल्लस\* के दो प्याले भरकर ले आयी। उनमें से एक प्याला अपने प्रियतम को देकर उसने कहा :

“ जुदाई मौत से भी बुरी होती है। शराब के इस प्याले में मुझे बादशाह के हाथों का खिलौना बनने की बदकिस्मती से बचने का रास्ता नज़र आ गया है। ”

अलीशेर गुली को रोक पाते, इसके पहले ही उसने शराब का अपना पूरा प्याला पी डाला।

“ क्या इसमें जहर था ? ” अलीशेर ने पूछा।

गुली ने मौन होकर स्वीकृति में सिर हिलाया। तब अलीशेर ने भी बिना कुछ कहे अपना प्याला पी डाला।

“ मेरी गुली के बिना मैं जिन्दा नहीं रह सकता, ” वह बोले।

दोनों प्रेमियों के होंठ मिल गये।

शाम की नमाज के बाद मजेद्दीन जुलाहे अबू सलीह के घर आया। गुली ने सोचा कहीं निर्दय बादशाह उसके घरवालों को मार डालने और घर मिट्टी में मिला देने की अपनी धमकी पूरी न कर दे, इस लिए उसने अपने पिता से कहा :

“ मुझे मंज़ूर है, पर मेरी एक शर्त है — निकाह आज से चालीस दिन के पहले नहीं होना चाहिए। ”

बादशाह हुसैन ने शादी की तैयारियाँ शानदार ढंग से करने का हुक्म दिया और अबू सलीह को सिर से लेकर पैर तक सोने से ढक दिया। अलीशेर को देशनिकाला दिये जाने का हुक्म रह कर दिया गया।

शादी की दावत के दौरान अलीशेर नवाई एक मुसाफ़िर के वेष में अपनी प्रियतमा से विदाई लेने हरम में आये।

उन्होंने गुली को बीमार पाया। वह बदन तोड़ देनेवाले बुखार के दौरे में तड़प रही थी, पर पहले की तरह सुंदर दिखाई दे रही थी और उसकी आँखों की चमक सितारों की ठंडी जगमगाहट से मुकाबला कर रही थी।

“ मैं बादशाह की बीवी नहीं बनूँगी, ” गुली ने कहा, “ जहर असर कर रहा है और मैं मर रही हूँ। ”

“ मेरी प्यारी गुली, ” अलीशेर ने रुंधे कंठ से कहा, “ मैंने भी तुम्हारे साथ जहर पिया

---

\* मुसल्लस — एक प्रकार की अंगूरी शराब।



था, पर मुझ पर उसका कोई असर नहीं हो रहा है और न ही बीमारी का कोई निशान नज़र आ रहा है।”

तब गुली ने कहा:

“जिस दिन से यह दुनिया बनी है, तब से आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ कि किसी ने प्रियतम को अपने हाथों से जहर पिलाया हो। मेरे महबूब, तुम्हारे प्याले में सिर्फ शराब ही थी।”

“मैं कितना बदकिस्मत हूँ,” अलीशेर कह उठे, “तुमने क्यों इतनी बेरहमी से काम लिया?”

“प्रियतम, मैंने ऐसा इस लिए किया कि तुम मुझे कभी न भूल पाओ।”

उसी क्षण गुली के कमरे में गुस्से में भरा बादशाह हुसैन घुस आया। हिजड़ों में से किसी ने दावतवाले कक्ष में जाकर उसे अलीशेर के हरम में आने की खबर दे दी थी। बादशाह के हाथों में नंगी तलवार थी।

“जिसने भी मेरे हरम की देहरी लांघने की हिम्मत की,” हुसैन चिल्लाकर बोला, “वह मरेगा।”

“जरा धीरे बोलिये, उसकी नींद मत खराब कीजिये,” यह कहकर अलीशेर ने गुली की ओर इशारा किया, “हुजूर, चलिये, यहाँ से बाहर चलें।”

बादशाह हुसैन ने गुली पर नज़र डाली और देखा कि वह मर चुकी है। तलवार ज़मीन पर फेंककर बादशाह बाहर चला गया।

अलीशेर तलवार उठाकर पासवाले कमरे में आये और बोले:

“अब मेरी इसके अलावा कोई और तमन्ना नहीं रही कि मेरी ज़िन्दगी का दिया भी फ़रामोशी के इस सैलाब में बुझ जाये। यह रही तलवार, लो मेरे टुकड़े-टुकड़े कर डालो!”

उन्होंने तलवार हुसैन की ओर बढ़ायी।

कहते हैं कि हुसैन को अपने किये पर बड़ा पछतावा हुआ, और उसने अपने वज़ीर अलीशेर का सिर नहीं काटा। यही नहीं, उसने अलीशेर को गले लगाकर हमेशा के लिए दोस्ती की कसम खायी।

विद्वान अलीशेर सल्तनत के बड़े वज़ीर बने रहे। उनकी सलाह के बग़ैर हुकूमत का कोई भी काम नहीं होता था।

पर यह भी कहा जाता है कि हुसैन मरते दम तक अपने दिल में अलीशेर के प्रति दुश्मनी छिपाये रहा। यह कौन नहीं जानता कि अक्सर आदमी उसी का दुश्मन हो जाता है, जिसका बुरा वह स्वयं करता है। निर्दयी और कायर हुसैन डरता था कि अलीशेर किसी न किसी दिन उससे ज़रूर बदला लेगे।

बादशाह और वज़ीर के बीच भाईचारे और दोस्ती की भावना का अंत हो चुका था। इसी वजह से अलीशेर को बहुत जुल्म और मुसीबतें सहनी पड़ी।

विद्वान् कवि अलीशेर नवाई भरते दम तक अपनी खूबसूरत गुली को प्यार करते रहे। यही कारण था कि उनकी नज़र फिर किसी और लड़की पर नहीं टिकी, चाहे उसने खूबसूरती में चाँद, सूरज और आसमान के सारे सितारों से मुकाबला क्यों न किया हो।

## मूर्ख बादशाह



बहुत समय पहले एक गरीब आदमी का पुराना घर गिर गया और उसने एक नया घर बनाने का निश्चय किया।

घर बन गया, केवल छत डालनी बाक़ी रह गयी थी, पर उस गरीब के पास पैसों की कमी पड़ गयी। उसने कारीगर से सरकंडे की छाजन बिछाकर उसके ऊपर मिट्टी डाल देने को कहा।

“छत,” वह बोला, “जब मुझसे बन पड़ा बना दूंगा।”

गरीब अपने अधबने घर में रहने लगा।

पड़ोस में एक चोर रहता था। नया घर देखकर वह सोचने लगा, “लगता है, यह गरीब धनवान हो गया है, इसने नया घर बना लिया है। अगर इसके यहाँ चोरी करूँ, तो काफ़ी माल हाथ लगेगा!”

रात को चोर उस गरीब की छत पर चढ़ गया और जैसे ही उसने पहला कदम रखा, सरकंडे बिखर गये और वह नीचे गिर पड़ा—सीधा सोते हुए गरीब आदमी के ऊपर।

गरीब की नींद खुल गयी और वह चोर को पकड़ने भागा, पर अंधेरा था, इस लिए चोर भाग निकला।

चोर को गरीब पर बड़ा गुस्सा आया। दूसरे दिन वह शिकायत करने बादशाह के पास पहुँचा।

“तुम कौन हो? तुम्हें क्या शिकायत है?” बादशाह ने पूछा।

“दानिशमंद बादशाह! मैं एक घर में चोरी करना चाहता था। मैं उसकी छत पर चढ़ा। मगर वहाँ छत की जगह सरकंडे बिछाये हुए थे। मैं नीचे गिर पड़ा और मेरा पैर टूटते-टूटते बचा। मेरी आपसे इल्तिजा है कि आप उस घर के मालिक को सजा दे।”

बादशाह ने मकान के मालिक—गरीब आदमी को बुलवाया।

“क्या यह सच है कि रात को यह आदमी तुम्हारी छत में से नीचे गिरा था?” उसने पूछा।

“जी, हुजूर, यह सच है,” गरीब ने जवाब दिया, “यह अच्छा हुआ कि यह मेरे ऊपर ही गिरा, वरना इसका पैर टूट जाता।”



“अगर यह सच है, तो मकान मालिक को फांसी दे दी जाये!” बादशाह ने जल्लादों को हुक्म दिया।

गरीब गिड़गिड़ाने लगा।

“हुजूर, मुझे क्यों फांसी दी जा रही है, सजा तो इस चोर को मिलनी चाहिए।”

“चुप रहो! तुम्हें मुझे सीख देने की हिम्मत कैसे हुई?”

गरीब ने देखा कि मामला बिगड़ रहा है और बादशाह से न्याय की आशा करना बेकार है।

“हुजूर, इसमें मेरा दोष क्या है?” गरीब बोला, “छत तो कारीगर ने बनायी थी उसी ने काम खराब किया है। उसने कमजोर सरकंडे की छाजन बिछा दी।”

“अच्छा, तब इसे छोड़ दो और उस कारीगर को फांसी दे दो,” बादशाह ने हुक्म दिया।

जल्लाद छत बनानेवाले कारीगर को पकड़कर फांसीघर में ले आये।

“मेरी बादशाह से एक इल्तिजा है!” कारीगर गिड़गिड़ाने लगा।

“बोलो! तुम क्या चाहते हो?” बादशाह ने हुक्म दिया।

“हुजूर, मैं बिल्कुल बेकसूर हूँ। कसूर तो उस कारीगर का है, जिसने छाजन बनायी थी। उसने छाजन में पतले और कम सरकंडे लगाये। अगर सरकंडे अच्छे और मजबूत होते, तो वे एक आदमी के चलने पर गिरते नहीं।”

बादशाह ने छत बनानेवाले कारीगर को छोड़ दिया और छाजन बनानेवाले कारीगर को पकड़कर लाने का हुक्म दिया।

“छाजन तुमने बनायी थी?” बादशाह ने पूछा।

“जी,” कारीगर ने जवाब दिया।

“इसे फांसी दे दो!” बादशाह चिल्लाया। “सारा कसूर इसके सरकंडों का है।”

“हुजूर, मैं एक बात कहना चाहता हूँ,” कारीगर बोला। “मैं हमेशा मजबूत सरकंडे लगाता था, पर अभी कुछ दिनों से मेरे पड़ोसी को कबूतर पालने का शौक लगा है। उसने जब अपने कबूतरों को उड़ाया और वे आसमान में मड़राने लगे, तो मैं उन्हें देखने लगा। इसी वजह से मुझे ध्यान नहीं रहा और मैंने छाजन में कमजोर और कम सरकंडे लगा दिये। कसूरवार तो कबूतरबाज है।”

बादशाह ने कारीगर को छोड़ दिया और कबूतरबाज को बुलाकर उसे फांसी देने का हुक्म दिया।

“हुजूर! मुझे कबूतर उड़ाने और उनकी उड़ान देखने का शौक है। यह कोई बड़ा गुनाह नहीं है। आप मुझे फांसी देंगे, तो भला इससे किसी को कुछ फायदा होगा? एक गरीब आदमी को मारने से तो चोर को सजा देना ज्यादा अच्छा होगा। लोग चैन से जी सकेंगे,” कबूतरबाज ने कहा।

“बिल्कुल ठीक!” बादशाह ने मान लिया। “सारा कसूर चोर का है। उसे पकड़कर फांसी दे दी जाये!” उसने हुक्म दिया।

जल्लाद चोर को पकड़कर फाँसी देने लाये। पर फाँसी का तख्ता नीचा था और चोर था लंबा। जल्लादों ने चोर को फाँसी पर चढ़ाने की पूरी कोशिश कर ली पर उसके पैर हमेशा ज़मीन को छूते रहे। जल्लाद बादशाह के पास आकर बोले:

“जहाँपनाह, चोर बहुत लंबा है, उसके पैर ज़मीन पर टिके रहते हैं, हम किसी तरह उसको फाँसी नहीं दे पा रहे हैं। क्या करें?”

बादशाह गुस्सा हुआ:

“इतनी छोटी-छोटी बातों के लिए तुम मुझसे क्यों पूछते हो? अगर चोर लंबा है, तो क्या तुम लोग चौराहे पर जाकर कोई ऐसा आदमी नहीं ढूँढ़ सकते, जिसका क़द छोटा हो? क्या तुम्हें इतनी मामूली-सी बात भी समझ में नहीं आती?”

जल्लादों ने बाहर आकर देखा, तो उन्हें एक नाटे क़द का आदमी कंधों पर आटे का बोरा रखे दिखाई दे रहा था।

“अरे, यह बिल्कुल वैसा ही है, जैसे को बादशाह फाँसी चढ़ाना चाहते हैं।” जल्लादों ने फ़ैसला कर लिया: “बादशाह का हुक्म पूरा करना चाहिए।”

वे नाटे क़द के आदमी को पकड़कर फाँसी के तख्ते पर ले आये। नाटे क़द का आदमी गिड़गिड़ाने लगा:

“मेरा क़सूर क्या है? आप मुझे किस लिए फाँसी चढ़ाना चाहते हैं?”

उसी समय बादशाह भी फाँसी का नज़ारा देखने के लिए आ गया।

“बादशाह से मेरी एक इत्तिजा है!” नाटा आदमी चिल्लाया।

“बोलो, क्या चाहते हो?” बादशाह ने पूछा।

“शहंशाह! मैं एक ग़रीब आदमी हूँ। मैं शहर में बेचने के लिए पहाड़ों में सूखी टहनियाँ इकट्ठी करता हूँ और बोझ भी ढोता हूँ। इस तरह मैं अपने परिवार का पेट पालता हूँ। मेरा क़सूर क्या है? आप क्यों मुझे फाँसी पर चढ़ाना चाहते हैं?”

“बेवक़ूफ़!” बादशाह गाली देने लगा। “मुझे क्या मालूम तुम क़सूरवार हो या नहीं? मुझे तो बस एक आदमी को फाँसी पर लटकाना है। मैं चोर को फाँसी देना चाहता था, पर उसका क़द बहुत ऊँचा है और उसके पैर ज़मीन पर टिके रहते हैं। और तुम फाँसी देने के लिए बिल्कुल ठीक क़द के हो, नाटे हो।”

“शहंशाह,” अभाग आदमी गिड़गिड़ाने लगा। “क़सूरवार तो लंबा चोर है और आप बेचारे बेक़सूर नाटे आदमी को सज़ा दे रहे हैं। कहाँ है इनसाफ़! अगर चोर ज़्यादा लंबा है, तो फाँसी के नीचे थोड़ी ज़मीन खोदने का हुक्म दीजिये।”

बादशाह सोचता रहा, सोचता रहा फिर बोला:

“बिल्कुल ठीक है! यह आदमी बिल्कुल ठीक कहता है। इसे छोड़े दो। चोर को फाँसी पर लटका दो। और उसके पैरों के नीचे गढ़ा खोद दो।”

जल्लाद फिर चोर को पकड़कर फाँसी पर ले आये और उसके गले में फंदा डालकर उसके पैरों के नीचे गढ़ा खोदने लगे।



“जल्दी करो, जल्दी करो! नहीं तो देर हो जायेगी। मुझे फौरन फाँसी दे दो!” चोर ने जल्दी मचायी।

“तुम्हे मरने की ऐसी जल्दी क्यों हो रही है?” बादशाह को आश्चर्य हुआ।

“शहंशाह! अभी-अभी स्वर्ग के बादशाह मरे हैं। स्वर्ग के बादशाह ने मरने के पहले कहा था ‘जो मरकर सबसे पहले स्वर्ग में पहुँचे, उसे बादशाह बना दिया जाये।’ इसी लिए मैं जल्दी मे हूँ। अगर मुझे फौरन फाँसी दे दी जाये, तो मैं वहाँ पहुँचकर बादशाह बन जाऊँगा अभी तक उनके तख्त पर कोई नहीं बैठा है। मुझे जल्दी से फाँसी पर लटका दो। चोर फिर चिल्लाया।

बादशाह को ईर्ष्या होने लगी। “क्या स्वर्ग का बादशाह बनना मामूली बात है! मैं क्यों न वहाँ का तख्त संभाल लूँ?” उसने यह सोचकर जल्लादों को हुक्म दिया।

“चोर को छोड़ दो और मुझे फाँसी पर लटका दो!”

“बादशाह का हुक्म सिर-आँखों पर।” जल्लादों ने चोर को छोड़ दिया और उसकी जगह मूर्ख बादशाह को फाँसी दे दी।

इस तरह प्रजा को मूर्ख बादशाह से मुक्ति मिल गयी।

## जादू का डण्डा



बहुत दिन हुए एक बूढ़ा शिकारी अपनी बुढ़िया के साथ रहता था। एक बार बूढ़े ने जाल बिछाया और छिपकर बैठ गया। उसके जाल में एक बड़ा लकलक फँस गया।

जैसे ही बूढ़ा लकलक को निकालने लगा, वह आदमी की आवाज़ में बोल उठा:

“मुझे छोड़ दो। मैं लकलकों का राजा हूँ। मुझे छोड़ दो, मैं तुम्हें जो तुम माँगोगे, दूँगा। मेरा घर उन पहाड़ों के पीछे है। तुम जिससे

भी पूछोगे, वह बता देगा कि मेरा घर कहाँ है।”

बूढ़े ने लकलक को छोड़ दिया।

बूढ़ा सुबह जल्दी उठकर लकलक से अपना मुँहमाँगा इनाम लेने चल दिया। बूढ़ा चलता रहा, चलता रहा और बहुत-से नदी-नाले और पहाड़ पार करके एक जगह पहुँचा, जहाँ भेडे बर रही थीं।

“ये भेडे किसकी हैं?” बूढ़े ने गड़रिये से पूछा।

“लकलक की,” गड़रिये ने जवाब दिया।

बूढ़ा आगे बढ़ा, तो उसने देखा घोड़ों का झुंड चर रहा है।

“ये घोड़े किसके हैं?” बूढ़े ने चरवाहे से पूछा।

“लकलक के,” उसने जवाब दिया।

“जरा सुनो,” बूढ़ा बोला, “लकलक ने मुझे इनाम देने का वायदा किया है। मैं उससे क्या माँगूँ?”

“लकलक के पास एक जादू की देगची है। तुम जैसे ही बोलोगे, ‘उबल मेरी देगची’, वह उबलने और सोना उगलने लगेगी। तुम जादू की देगची ही माँगना,” चरवाहे ने बूढ़े को सलाह दी।

बूढ़ा आगे चल दिया। चलता रहा, चलता रहा, बहुत-से नदी-नालों, भीलो, पहाड़ों और मैदानों को पार करके सात दिन और सात रात बाद लकलक के घर आ पहुँचा।

“सलाम!” बूढ़े ने दरवाजे में कदम रखते ही कहा।

लकलक अपनी चोच बजाकर बोला:

“लक-लक। अगर तुमने सलाम नहीं किया होता, तो अब तक मैं तुम्हें घोंच मारकर जिन्दा ही निकल गया होता। तुम, शायद, अपना इनाम माँगने आये हो? अच्छा, बोलो क्या चाहते हो?”

“आपके पास जो जादू की देगची है, उसे मुझे दे दीजिये,” बूढ़ा बोला।

लकलक सोचने लगा।

“बूढ़े, तुम देगची लेकर क्या करोगे? इससे अच्छा होगा कि तुम सोने से पूरा भरा घाल ले लो,” लकलक बूढ़े को मनाने लगा।

पर बूढ़ा नहीं माना।

लकलक ने बूढ़े को जादू की देगची दे दी।

बूढ़ा देगची लेकर अपने घर चल दिया।

बहुत-से पहाड़, मैदान पार करके बूढ़ा एक गाँव में पहुँचा और आराम करने के लिए अपने एक परिचित के घर रुका।

“आप जरा इस देगची का खयाल रखें,” बूढ़े ने अपने परिचित से कहा: “मैं बहुत थक गया हूँ, थोड़ी देर सो लूँ। आप बस ‘उबल, मेरी देगची’ मत कहना,” बूढ़े ने चेतावनी दी।

जैसे ही बूढ़े को नींद आयी, घर का मालिक जोर से बोला: “उबल, मेरी देगची!” और देगची सोने की अशरफियाँ उगलने लगी। उसने जादू की देगची छिपा दी और उसकी जगह एक बिल्कुल वैसी ही साधारण देगची लाकर रख दी।

बूढ़े की नींद खुली और वह देगची लेकर आगे चल दिया।

बूढ़ा अपने जाने-पहचाने रास्ते पर चलता हुआ सात दिन और सात रात बाद आखिर अपने घर पहुँच गया। अन्दर आते ही उसने कहा:

“ला, बुढ़िया, चादर बिछा, हमें अभी इतना सोना मिलेगा कि हम बहुत अमीर हो जायेंगे।”



बुढ़िया ने चादर बिछा दी। बूढ़े ने देगची चादर के बीच में रखी और जोर से चिल्लाया  
“उबल, मेरी देगची!”

पर न देगची में उबाल आया और न ही उसमें से सोना निकला। बूढ़ा फिर चिल्लाया,  
पर देगची वैसी ही रखी रही।

बूढ़ा गुस्सा होकर जोर-जोर से लकलक को कोसने लगा:

“लानत है, लकलक तुझ पर। तूने मुझे धोखा दिया और मामूली देगची दे दी। मैं  
कल जाकर दूसरी चीज माँगूँगा।”

दूसरे दिन बूढ़ा सुबह जल्दी उठकर चल दिया। चरवाहे के पास पहुँचकर उसने पूछा:

“लकलक ने मुझे धोखा दिया। अब मुझे उससे कौन-सी चीज माँगनी चाहिए?”

चरवाहा सोचकर बोला:

“लकलक के पास एक जादूई चादर है। उसे जमीन पर रखकर जैसे ही ‘खुल जा, मेरी  
चादर!’ कहोगे, तुरंत उसके ऊपर तरह-तरह के खाने आ जायेंगे। तुम वही चादर माँगना।”

बूढ़ा लकलक के पास पहुँचा और घर में कदम रखते ही बोला:

“सलाम!”

“लक-लक,” लकलक ने अपनी चोंच बजायी। “अगर तुम ने सलाम नहीं किया होता,  
तो अब तक मैं तुम्हें चोंच मारकर ज़िन्दा ही निगल गया होता। पिछली बार मैंने तुम्हें जादू  
की देगची दी थी। क्या वह ठीक काम नहीं कर रही है?” उसने पूछा।

बूढ़े ने लकलक को सारा क्रिस्ता सुनाया और कहने लगा:

“तुमने मुझे धोखा दिया। जादू की देगची की जगह तुमने मुझे मामूली देगची दे दी।  
इसी लिए मैं अब तुमसे जादूई चादर माँगने आया हूँ।”

लकलक ने बूढ़े को जादूई चादर दे दी। बूढ़ा चादर लेकर वापस चल पड़ा। काफी देर  
चलने के बाद वह उसी गाँव में पहुँचा, जहाँ पिछली बार ठहरा था।

अपने परिचित के घर आकर बूढ़े ने उससे कहा:

“मैं बहुत थक गया हूँ, थोड़ी देर सो लूँ, तब तक आप इस चादर का खयाल रखिये। बस  
‘खुल जा, मेरी चादर’ मत कहिये।”

जैसे ही बूढ़ा सो गया, परिचित ने आवाज दी, “खुल जा, मेरी चादर!” और पलक  
भपकते ही उस पर सत्तर तरह के स्वादिष्ट खाने लग गये। परिचित ने फौरन जादूई चादर  
और खाने दूसरे कमरे में छिपा दिये और उसकी जगह एक बिल्कुल वैसी ही मामूली चादर  
लाकर रख दी। बूढ़े की नींद खुली, तो वह चादर उठाकर आगे चल दिया।

घर पहुँचकर वह बोला:

“आ, बुढ़िया, तू जो चाहे, तुझे खिलाऊँगा। बोल, क्या चाहिए? अभी तैयार होकर  
आ जायेगा।”

उसने चादर रखकर आवाज दी:

“खुल जा, मेरी चादर!”

पर वह कितना ही चिल्लाया, न चादर खुली और न ही उस पर किसी तरह के पकवान आये।

बूढ़े को बहुत गुस्सा आया।

“लकलक ने दूसरी बार भी मुझे धोखा दिया। कल ही जाकर उससे दूसरी चीज माँगूंगा,” वह बोला।

दूसरे दिन पी फटते ही बूढ़ा सफ़र पर रवाना हो गया।

घरवाहे के पास पहुँचकर उसने सारा किस्सा सुनाया और पूछा:

“मुझे लकलक से अब क्या माँगना चाहिए?”

“मालूम पड़ता है, तुम्हारे दुश्मन बहुत हैं,” घरवाहे ने कहा। “तुम लकलक से जादू का डण्डा माँगो। जैसे ही तुम बोलोगे, ‘मार, डण्डे, मार!’ तुम्हारे सामने कोई भी क्यो न हो, डण्डा उसको मारने लगेगा।”

बूढ़ा फौरन आगे चल दिया। लकलक के घर पहुँचकर वह बोला:

“सलाम!”

“लक-लक,” लकलक ने चोंच बजायी। “अगर तुमने सलाम नहीं किया होता, तो अब तक मैं तुम्हें चोंच मारकर जिंदा ही निगल गया होता... फिर किस लिए आये हो? जादू की देगची और चादर मैं तुम्हें दे चुका हूँ, अब और क्या चाहिए?”

“इस बार भी तुमने मुझे धोखा दिया,” बूढ़ा कहने लगा। “जादूई चादर की जगह तुमने मुझे एक मामूली चादर दे दी। अब तुम मुझे एक असली चीज दो। मुझे वह डण्डा दो, जो खुद ही मार लगाने लगता है।”

“मुझे डण्डे की कोई जरूरत नहीं, अगर तुम्हें वह चाहिए तो ले लो,” लकलक ने कहा और जादू का डण्डा बूढ़े को दे दिया।

बूढ़ा डण्डा लेकर वापस लौटने लगा। चलते-चलते वह उसी गाँव में पहुँचा, जहाँ पहले भी ठहर चुका था। अपने परिचित के घर आकर बूढ़े ने उससे कहा:

“जरा इस डण्डे का खयाल रखना, मैं थक गया हूँ, थोड़ा सो लूँ। बस ‘मार, डण्डे, मार!’ मत कहना।”

बूढ़े के सोते ही घर के मालिक ने आवाज दी, “मार, डण्डे, मार!”

उसके आवाज देने की देर थी कि डण्डे ने घर के सब लोगों को पीटना शुरू कर दिया। चीख-चिल्लाहट सुनकर बूढ़े की नींद खुल गयी! सब रोते हुए बूढ़े के पास आये और माफ़ी माँगने लगे:

“किसी तरह डण्डे को रोक दीजिये। हमने आपकी जादू की देगची और चादर चुरा ली थी। हमें माफ़ कर दीजिये, हम दोनों चीजें आपको लौटा देंगे। किसी तरह इस डण्डे को रोक दीजिये!”

“डण्डे, रुक जा!” बूढ़े ने आवाज दी और डण्डे ने पीटना बन्द कर दिया!

घरवालो ने दूसरे कमरे में से जादू की देगची और चादर लाकर बूढ़े को दे दी। तीनों



चीजे लेकर बूढ़ा अपने घर की ओर चल दिया। कई नदी-नाले, भीले, पहाड़ और मैदान पार करके सात दिन और सात रात बाद बूढ़ा आखिर अपने घर आ पहुँचा।

देगची रखकर उसने आवाज़ दी:

“उबल, मेरी देगची!”

देगची में उबाल आने लगा और वह सोने की अशरफियाँ उगलने लगी। बूढ़ा-बुढ़िया दोनों हाथों से भी अशरफियाँ समेट नहीं पाये।

बूढ़े ने फिर आवाज़ दी:

“खुल जा, मेरी चादर!”

चादर खुल गयी और उसके ऊपर सत्तर तरह के स्वादिष्ट खाने और पकवान आ गये। बूढ़े और बुढ़िया ने अपनी जिंदगी में पहले कभी इस तरह का नजारा नहीं देखा था। उन दोनों ने छककर खाया और पिया।

उस देश के खान को जब पता लगा कि बूढ़े शिकारी को कहीं से जादू की देगची और चादर मिल गयी है, तो उसने अपने वज़ीर को उसके पास भेजा।

“जादू की देगची और चादर हमें दे दे,” वज़ीर कहने लगा।

बूढ़े ने आवाज़ दी:

“मार, डण्डे, मार!”

डण्डे ने वज़ीर की अच्छी तरह पिटाई कर दी और वह किसी तरह घिसटता हुआ खाली हाथ लौट आया।

खान ने सुबह अपनी सात हजार फ़ौज लेकर बूढ़े के घर को घेर लिया।

“बूढ़े, अगर तुझमें दम है, तो बाहर आकर लड़!” खान चिल्लाकर बोला।

बूढ़े ने दरवाज़ा खोलकर जैसे ही आवाज़ दी:

“मार, डण्डे, मार!”

डण्डे ने खान के सैनिकों को ऐसी मार लगायी, कि वे बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाकर भाग पाये।

इसके बाद डण्डा खान के पास पहुँचा और उसको भी पीटने लगा।

खान रोने-चिल्लाने लगा:

“बूढ़े, अपने डण्डे को रोक दे! मुझे जान से मत मार।”

और बूढ़ा अपने घर के दरवाज़े के आगे खड़ा हैसता रहा:

“अब तुम दुबारा कभी किसी ग़रीब की चीज़ पर अपनी नज़र नहीं डाल सकोगे।”

इस तरह बूढ़े शिकारी और उसकी पत्नी की सारी इच्छाएं पूरी हो गयीं।



# बुलबुल



बहुत समय पहले एक क्रूर बादशाह राज करता था। कई सालों तक वह अपनी प्रजा पर अत्याचार करता रहा और यातनाएं देता रहा। वह अपनी प्रजा के मुंह का आखिरी कौर भी छीन लेता था और तरह-तरह के कर लगाकर जनता को लूटता रहता था। इस तरह उसने इतना सोना-चांदी और हीरे-जवाहरात जमा कर लिये कि उसकी समझ में नहीं आता था कि वे सारी संपत्ति कहाँ छिपाये। एक बार बादशाह ने मशहूर कारीगरों को बुलाया और बोला-

“मेरे लिए एक चिनार का पेड़ बनाओ, जिस का तना नीलम का हो, शाखाएं चन्द्रकान्त मणि की, पत्ते ज़मुरंद के और फल मोतियों के हो। और पत्ते इतने घने होने चाहिए कि उनमें से सूरज की एक किरण भी छनकर न आ सके।”

बादशाह का हुक्म सुनकर जनता में बड़ा असंतोष फैल गया।

“इस तरह का चिनार का पेड़ बनने तक बादशाह हमारे बदन पर से आखिरी चिथड़ा भी उतरवा लेगा।”

बादशाह ने अपनी असंतुष्ट प्रजा पर बड़े अत्याचार किये। उसने कुछ लोगों के सिर धड़ से अलग करवा दिये, कुछ को जिन्दा ही गढ़ों में फेंकवा दिया।

सात साल में चिनार का पेड़ बनकर तैयार हो गया।

बादशाह के हुक्म से उसका पलंग बहुमूल्य पेड़ के नीचे लगवा दिया गया और वह वहाँ सोने लगा।

एक बार सुबह बादशाह को अपने दायें गाल पर गरमी-सी लगी। उसने आँखें खोलीं, तो देखा—ज़मुरंद के पत्तों में से सेब के बराबर आसमान दिखाई पड़ रहा है और उस छेद में से होकर सूरज की किरण उसके गाल पर पड़ रही है।

बादशाह आग-बबूला हो उठा:

“किसी ने मेरे चिनार का एक पत्ता चुरा लिया है। जो भी चोर को पकड़कर लायेगा, उसे मैं सिर से पैर तक सोने से ढक दूंगा। और अगर चोर नहीं पकड़ा गया, तो सारे शहर को जलाकर राख कर दूंगा।”

बादशाह के दाहिने ओर बैठे वज़ीर ने सलाह दी:

“आप रात को चालीस सिपाहियों का पहरा बैठा दीजिये। वे चोर को पकड़ लेंगे।”

बादशाह ने वज़ीर की सलाह मान ली।

चालीस हथियारबंद सिपाही चिनार के चारों ओर पहरा देने लगे। पर आधी रात होते ही, वे सबके सब खड़े-खड़े ही सो गये।



सुबह बादशाह की नींद खुली, तो उसने देखा कि चिनार के पत्तों में एक और छेद हो गया है। बादशाह इतना गुस्सा हुआ कि उसके सिर के सारे बाल सूइयों की तरह खड़े हो गये।

“जल्लादों को मेरे पास भेजो,” वह चिल्लाया।

फौरन चालीस काले भुजंग जल्लाद बादशाह के आगे आ खड़े हुए और अपनी पैनी तलवारे म्यानो से निकालकर कहने लगे:

“जिसकी मौत आयी है, उसका सिर हम धड़ से अलग कर देंगे।”

सिपाहियों की ओर इशारा करके बादशाह बोला: “इनके सिर धड़ से अलग कर दिये जायें।” पर वहाँ खड़े वजीर से न रहा गया।

“हुजूर, अगर आप हर रोज चालीस सिपाहियों को मौत की सजा देते रहे, हमारी सारी फौज ही खत्म हो जायेगी। अच्छा यही होगा कि इन सिपाहियों को काल-कोठरी में डाल दिया जाये और इनकी जगह चिनार के चारों ओर दूसरे सिपाहियों का पहरा बैठा दिया जाये।”

उन चालीस सिपाहियों को काल-कोठरी में डाल दिया गया।

बादशाह के तीन बेटे थे।

बड़ा बेटा बोला:

“आप मुझे चिनार की रखवाली करने दीजिये। मैं चोर को पकड़ लूंगा।”

बादशाह ने अपने बड़े बेटे की बात मान ली।

बादशाह का बड़ा बेटा चिनार की रखवाली करने लगा, पर आधी रात के बाद उसे भी नींद आ गयी। भोर होने पर बादशाह ने देखा पत्तों में हुआ छेद टोपी जितना बड़ा हो गया है।

बादशाह ने अपने बड़े बेटे को उसी वक्त काल-कोठरी में डलवा दिया।

“जल्दी मत कीजिये, अब मैं पेड़ की रखवाली करूंगा!” बादशाह का मँझला बेटा बोला।  
“अगर मैं चोर को न पकड़ पाऊँ, तो मुझे भी बड़े भाई के साथ मौत की सजा दे दी जाये।”

पर आधी रात को उसकी पलकें भी मुंद गयीं और सुबह पत्तों में हुआ छेद एक बड़ी रोटी जितना बड़ा दिखाई दिया।

गुस्से के मारे बादशाह की आंखें अंगारों की तरह दहकने लगीं।

“जल्लादों को मेरे पास भेजो!...” वह चिल्लाया।

पर उसी वक्त बादशाह का सबसे छोटा बेटा उसको मनाने लगा।

“मुझे तीर-कमान लेकर पेड़ की रखवाली करने की इजाजत दीजिये। मैं चोर को तीर से मारूँगा।”

बादशाह ने उसे इजाजत दे दी।

अधेरा होने के बाद छोटा शाहजादा कमान पर तीर चढ़ाकर पेड़ के नीचे खड़ा हो गया और बड़ा चौकस रहा।

आधी रात के बाद उसे भी नींद सताने लगी। उसने छुरी निकालकर, अपनी उगली चीरकर घाव पर नमक के साथ मिर्च बुरक दी। दर्द के मारे उसे नींद बिल्कुल भी नहीं आयी।

शाहजादा पेड़ के पास चौकन्ना खड़ा रहा। सूरज निकलने के पहले अचानक पेड़ पर एक अद्भुत चिड़िया आकर बैठी। उसकी चोंच नीलम की थी, पैर चन्द्रकान्त मणि के, पंख मोतियों और मृगों के थे। चिनार की टहनी पर बैठते ही चिड़िया ने इतनी मधुर आवाज़ में गाना शुरू कर दिया कि धरती और आकाश उसकी आवाज़ से गूँज उठे।

शाहजादे को उस आद्भुत चिड़िया पर बड़ी दया आयी, पर फिर भी उसने उस पर तीर चला दिया। लेकिन शाहजादे का हाथ काँप उठा और तीर लगने से चिड़िया का केवल एक पर ही टूटकर गिर पड़ा। उसी क्षण चिड़िया उड़ गयी।

बादशाह की नींद खुलने पर शाहजादा उसके पास दायें हाथ में तीर-कमान और बायें हाथ में चिड़िया का पर लिये आया।

“देखिये, मैंने उस चिड़िया का पता लगा लिया, जो हमारे चिनार के बहुमूल्य पत्ते तोड़कर ले जाती थी। वह मीठी आवाज़वाली बुलबुल है। पर मैं तीर मारकर उसे गिरा नहीं पाया। बस उसका यह एक पर मेरे हाथ आया है।”

बादशाह ने पर हाथ में लेकर देखा, तो उसे मालूम हुआ कि उस एक पर की कीमत उसकी प्रजा पर लगाये गये सात वर्षों के कर से भी ज्यादा है।

बादशाह बड़ा खुश हुआ और उसने अपने दोनों बेटों और सिपाहियों को काल-कोठरी से आजाद करने का हुक्म दिया।

उसी दिन उसने सारे शहर में मुनादी करवा दी:

“जो कोई उस चिड़िया को पकड़कर लायेगा, उसे मैं अपने साथ तख्त पर बैठाकर आधा राज दे दूँगा। और अगर चिड़िया नहीं पकड़ी गयी, तो मैं सारे शहर को आग लगाकर राख कर दूँगा!”

बादशाह के दोनों बड़े बेटे आदरपूर्वक सिर नवाकर बोले:

“आप हमें यह चिड़िया पकड़कर लाने की इजाजत दीजिये!”

बादशाह ने उनकी बात मान ली। दोनों बड़े शाहजादे सौदागरों के वेष में शहर से निकल पड़े।

तीन दिन बीत गये। छोटे शाहजादे ने सोचा: “मेरे बड़े भाइयों को कुछ नहीं मिलेगा और पिता जी गुस्से में शहर को आग लगाकर राख कर देंगे। मुझे जाना चाहिए।”

वह अपने पिता के पास जाकर बोला:

“पिता जी! मुझे यह काम करने की इजाजत दीजिये। मैं उस जादूई चिड़िया को पकड़ना चाहता हूँ। आप मुझे इजाजत दें या न दें, मैं जरूर जाऊँगा।”

बादशाह को अपने छोटे बेटे को जाने देने की इच्छा बिल्कुल न थी। पर शाहजादा अपनी जिद पर अड़ा रहा।

बादशाह किसी तरह भी अपने बेटे को जाने से न रोक पाया और उसे सफर पर जाने की इजाजत देनी ही पड़ी।

छोटा शाहजादा तेज़ रफ़्तार से चलकर एक हफ़्ते में ही अपने भाइयों से जा मिला।



तीनों भाई साथ-साथ चलते रहे, चलते रहे और एक ऐसी जगह पहुँचे, जहाँ रास्ता तीन दिशाओं में बंटता था। हर रास्ते पर एक-एक पत्थर लगा था। पहले पत्थर पर लिखा था : “जो इस रास्ते से जायेगा, वह वापस लौटकर आयेगा।” दूसरे पर लिखा था : “जो इस रास्ते से जायेगा, उसे खतरे का सामना करना पड़ेगा।” तीसरे पत्थर पर लिखा था :

“जो इस रास्ते से जायेगा, वह वापस नहीं लौटेगा।”

बड़े भाई ने पहला रास्ता चुना, मंभले ने खतरनाक रास्ता चुना और सबसे छोटे भाई ने तीसरा रास्ता चुना।

तीनों भाई एक दूसरे से विदा होकर अपने-अपने रास्ते पर चल पड़े।

मंभला भाई चलते-चलते सोचने लगा : “इस रास्ते में मुझे खतरे का सामना करना पड़ेगा, पता नहीं, मेरे साथ क्या गुजरे? क्यों न मैं बड़े भाई के साथ चला जाऊँ?” यह सोचकर उसने रास्ता बदल लिया और अपने बड़े भाई से जा मिला। वे दोनों साथ चल पड़े।

दोनों भाई एक अनजाने शहर में पहुँचे। उन्होंने घूप में बैठकर दही खाया और एक दूसरे के बालों में कंघी करने लगे।

वहाँ के बादशाह की बेटी ने अपने छज्जे पर से दोनों भाइयों को देख लिया।

“क्या इन लोगों को मेरे सामने बालों में कंघी करते हुए शर्म नहीं आती?” उसने अपने मन में कहा और गुस्से में आकर अघखाया सेब उठाकर ठीक बड़े भाई के सिर पर निशाना लगाकर फेंका। बड़े भाई ने मुड़कर देखा कि छज्जे पर एक खूबसूरत लड़की खड़ी है।

“शायद, शाहजादी को मुझसे प्यार हो गया है,” बड़े भाई ने अपने मन में सोचा और मंभले भाई के साथ महल के सामने बैठा रहा।

शाम को शाहजादी की एक नौकरानी उनके पास आयी।

“आप लोग यहाँ क्यों बैठे हैं? यहाँ से जाते क्यों नहीं?”

“शाहजादी को मुझसे प्यार हो गया है। उसने मञ्चाक में मुझे सेब का टुकड़ा फेंककर मारा और मुझे देखकर मुस्करायी भी। मैं यहाँ से क्यों उठूँ?” बड़े भाई ने कहा।

“यहाँ से फौरन हट जाओ! नहीं तो शाहजादी गुस्सा होकर तुम्हारे सिर कटवा देगी,” नौकरानी ने उन्हें डराया।

दोनों भाई डर के मारे काँपने लगे और वहाँ से उठकर चले गये।

वे लोग शहर में रहने लगे और जो धन उनके पिता ने उनके सफर के लिए दिया था, वह धीरे-धीरे सारा खर्च हो गया। उन्हें कोई काम करना नहीं आता था, इस लिए कुछ ही दिनों में उनकी हालत इतनी खराब हो गयी कि उन्हें परायी दुकान की दहलीज पर सोना पड़ा।

वे नौकरी ढूँढ़ने लगे। बड़े भाई ने एक ढाबे में खाना परोसने की नौकरी कर ली और मंभला दूसरे ढाबे में भट्ठी जलाने का काम करने लगा।

अब छोटे भाई का हाल सुनिये।

वह रात-दिन चलता एक नदी के बाद दूसरी नदी, एक भील के बाद दूसरी भील और

एक पहाड़ के बाद दूसरा पहाड़ पार करता हुआ आगे बढ़ता रहा। उसका सारा धन और खाने का सामान खत्म हो गया, केवल एक सूखी रोटी बची रही।

आखिर वह एक चश्मे के पास पहुँचा। उसके किनारे चिनार का एक छायादार पेड़ था।

छोटे भाई ने घोड़ा चिनार से बाँध दिया और अपने थैले में से आखिरी रोटी निकाली। वह रोटी को पानी में भिगोकर, टुकड़े करके खानेवाला ही था कि उसे कुछ दूरी पर धूल का बादल उठता हुआ दिखाई दिया। उसने ध्यान से देखा, तो उसे एक बहुत बड़ा बंदर सीधा उसी की ओर दौड़ता हुआ नज़र आया।

छोटा शाहजादा डरकर पेड़ के ऊपर चढ़ गया। बंदर दौड़ता हुआ आया और आते ही उसने रोटी खा ली। फिर उसने अपना मुँह पोंछा और सिर उठाकर शाहजादे को इशारा किया।

“नीचे उतर आओ!” बंदर ने आदमी की आवाज़ में कहा।

शाहजादा सोचने लगा, “रोटी से उसका पेट नहीं भरा, अब मुझे भी खाना चाहता है।” वह और ऊपर चढ़ गया।

बंदर भी उसके नीचे की हाल पर आ बैठा।

“ऐ, आदमी, नीचे उतर आओ।” बंदर ने फिर कहा। “अगर हमारे देश में कोई चिड़िया भी पर मारती है, तो वह तत्क्षण जल जाती है, और अगर आदमी घुस आता है, तो उसकी टाँगें टूट जाती हैं। तुम यहाँ किस लिए आये हो?”

शाहजादे ने पेड़ से उतरकर बंदर को शुरू से लेकर आखिर तक सारा किस्सा सुनाया।

“अगर मैंने मीठी आवाज़वाली चिड़िया अपने पिता जी को लाकर नहीं दी, तो वह सारा शहर जलाकर राख कर देंगे,” शाहजादे ने अपनी कहानी समाप्त करते हुए दुःख भरे स्वर में बंदर को बताया।

“कहते हैं, ‘जिसका तूने एक बार नमक खा लिया, जिन्दगी भर उसकी सेवा कर,’” बंदर बोला। “अच्छा होता अगर मैं तुम्हारी रोटी नहीं खाता! पर जब खा ही ली है, तो मुझे तुम्हारा एहसान चुकाना ही पड़ेगा। घोड़े पर सवार हो जाओ! अगर किस्मत ने साथ दिया, तो हमें चिड़िया को पकड़ने और तुम्हारे शहर को बरबादी से बचाने में सफलता मिलेगी।”

वे दोनों घोड़े पर सवार होकर आगे चल दिये। थोड़ी देर में वे एक बाग की ऊँची दीवारों के पास आ पहुँचे।

“मैं सुरंग खोदता हूँ, और तुम यहाँ मेरा इन्तज़ार करो। अगर मैं पाँच दिन बाद वापस न आऊँ, तो तुम वहीं लौट जाना, जहाँ से आये थे।” और बंदर ने सुरंग खोदनी शुरू कर दी।

छठे दिन बंदर लौट आया और बोला:

“मैंने सुरंग ठीक पिंजरे तक खोद दी है। पिंजरे में सात परदों के पीछे बलबल बैठी है। तुम सुरंग के आखिर तक पहुँचकर उस समय तक इन्तज़ार करो, जब तक पहरेदार सो न जाये और फिर तुरंत चिड़िया का पिंजरा उठाकर यहाँ ले आओ। पर पिंजरे पर से परदा बिल्कुल भी मत हटाना।”



बंदर की दी हुई सारी हिदायतें ध्यान में रखकर शाहजादा सुरंग में उतरा और उसके आखिरी किनारे तक पहुँचकर इंतजार करने लगा।

जब दस के दस पहरेदार सो गये, तो शाहजादे ने दबे पाँव उनके पास से निकलकर चिड़िया का पिंजरा उठा लिया। उसे यह देखने की इच्छा हुई कि क्या यह वही अद्भुत चिड़िया है, जो उसके पिता के चिनार पर आकर बैठी थी। उसने जैसे ही पहला परदा उठाया, बुलबुल इतने मधुर और ऊँचे स्वर में गा उठी कि शाहजादा सम्मोहित-सा हो उठा और पिंजरा उसके हाथों से छूट गया।

पहरेदारों की नींद खुल गयी और वे शाहजादे को पकड़कर अपने बादशाह के पास ले आये।

बादशाह जल्लाद को बुलाकर बोला:

“चोर के दोनों हाथ कोहनी तक काट दो!”

वज़ीर बोला:

“थोड़ी देर ठहरिये। पहले हमें पता लगाना चाहिए कि इसे चिड़िया की ज़रूरत क्यों पड़ी।”

“ठीक है,” बादशाह मान गया और शाहजादे ने शुरू से लेकर आखिर तक सारा किस्सा सुना दिया।

तब वज़ीर ने बादशाह से कहा:

“अगर हम चिड़िया के लिए इस बहादुर नौजवान को सजा देंगे, तो हमारी बड़ी बदनामी होगी। इससे अच्छा यह होगा कि इससे कोई कठिन काम कराया जाये।”

बादशाह मान गया और शाहजादे से बोला:

“तुम वहाँ जाओ, जहाँ सूरज डूबता दिखाई देता है। धोड़े पर नौ महीने के सफ़र के बाद तुम्हें एक शहर दिखाई देगा। वहाँ के बादशाह की एक बेटी है, जो सोने के संदूक में सोती है। अगर तुम लड़की को लाकर मुझे सौंप दोगे, तो मैं तुम्हें मीठी आवाज़वाली बुलबुल दे दूँगा!”

शाहजादे ने बंदर के पास पहुँचकर सारी बात उसे बतायी।

वे दोनों फिर धोड़े पर सवार होकर सफ़र पर चल पड़े।

नौ महीने के सफ़र के बाद अंत में वे एक बड़े शहर के पास आ पहुँचे। वे लोग मैदान में रुके और बंदर ने फिर सुरंग खोदनी शुरू कर दी। नौ दिन बाद वह अपना काम समाप्त कर शाहजादे के पास आया।

“मैंने शाहजादी के महल तक सुरंग खोद दी है,” बंदर कहने लगा। “चालीस सीढ़ियाँ चढ़कर, चालीस कमरे पार करके तुम एक छज्जे पर पहुँचोगे, वहीं तुम्हें चन्द्रमुखी सुंदरी मिलेगी। शाहजादी चालीस दासियों से घिरी अपने सोने के संदूक पर बैठी होगी। जब शाहजादी को नींद आती है, वह संदूक का ढक्कन उठाकर उसमें लेट जाती है। तुम पहले संदूक का ढक्कन उठाकर देख लेना कि शाहजादी की आंखें बन्द हैं या नहीं। अगर उसकी आंखें खुली हों, तो

तुम उसे उठा लाना और अगर उसकी आंखें बंद हों, तो उसे बिल्कुल मत छूना।”

शाहजादा सुरग में उतरकर महल तक पहुँचा और चालीस सीढ़ियाँ चढ़कर, चालीस कमरे पार करके छज्जे में भाँका। उसने देखा खूबसूरत शाहजादी अपनी चालीस दासियों से घिरी बैठी है। उसकी सुन्दरता देखकर कोई भी पागल हो सकता था। वह अपने सटूक में लेट गयी और उसकी दासियाँ भी उसके चारों ओर सो गयीं। शाहजादे ने सटूक का ढक्कन उठाकर देखा — शाहजादी की आंखें बंद थीं। उसे वापस लौट आना चाहिए था, पर वह सोचने-समझने की शक्ति खो बैठा।

शाहजादा बंदर की दी हुई चेतावनी भूल गया। वह शाहजादी को चूमने के लिए झुका। उसकी साँसों की गरमी से शाहजादी की नींद खुल गयी।

“ऐ, तुम्हें क्या चाहिए?” वह चिल्लायी।

दासियों की भी नींद खुल गयी और वे शाहजादे के हाथ बाँधकर उसे अपने बादशाह के पास ले आयीं।

बादशाह बहुत गुस्सा हुआ और उसने शाहजादे को फौरन जान से मारने का हुक्म दे दिया।

पर उसका वज़ीर बोला:

“हुजूर! अगर हम इसे मार डालेंगे, तो सुबह तक हर छोटे-बड़े आदमी तक यह खबर पहुँच जायेगी और हमारी बहुत बदनामी होगी। अच्छा होगा कि इससे कोई कठिन काम कराया जाये।”

बादशाह मान गया और बोला:

“मैंने सुना है कि यहाँ से नौ महीने के सफ़र की दूरी पर एक कुलजम नाम का समुद्र है और उस समुद्र में हीरों का द्वीप है। उस पर ओर्काजी नाम का जादूगर रहता है। उसके पास क़ारा क़ाल्दीर्गाच\* नाम का घोड़ा है। वह घोड़ा एक महीने का सफ़र पलक भपकते ही पूरा कर लेता है। तुम मुझे घोड़ा लाकर दे दो और मैं तुम्हें अपनी बेटी दे दूंगा।”

शाहजादा बंदर के पास आकर फूट-फूटकर रो पड़ा। बंदर उसको दिलासा दिलाने लगा।

“शाहजादे, तुम दुःखी मत होओ! अगर किस्मत ने हमारा साथ दिया, तो मैं तुम्हें क़ारा क़ाल्दीर्गाच घोड़ा दिला दूंगा।”

और वे फिर सफ़र पर निकल पड़े।

कई पहाड़ और मैदान पार करके वे अंत में समुद्र तक आ पहुँचे।

शाहजादा समुद्र का अनंत विस्तार देखकर उदास हो उठा।

“हम समुद्र पार नहीं कर सकेंगे,” वह बंदर से कहने लगा। “और यही मर जायेंगे।”

बंदर उसको तसल्ली दिलाने लगा।

“हर काम हिम्मत से करो! किसी बात से डरो नहीं!”

---

\* क़ारा क़ाल्दीर्गाच — काली अबानील।

और बदर ने समुद्र के नीचे सुरंग खोदनी शुरू कर दी। चालीस दिन और चालीस रात में उसने काम पूरा कर डाला और शाहजादे के पास लौट आया।

“मैंने घोड़े के अगले खुरों तक सुरंग खोद दी है। तुम सावधानी से सुरंग के मुह में से सिर निकालकर देखना। कारा काल्दीर्गाच हिनहिनायेगा, जादूगर बिस्तर से उठकर बाहर आयेगा और घोड़े को मार लगाकर फिर सोने चला जायेगा। तुम फिर सिर बाहर निकालना कारा काल्दीर्गाच फिर हिनहिनायेगा। जादूगर आकर घोड़े को मार लगायेगा और फिर सो जायेगा। फिर तुम दबे पाँव घोड़े के पास पहुँच जाना और वह हिनहिनाये उसके पहले ही उसके मुह पर किशमिश से भरा थैला बाँध देना और कहना: ‘ऐ, मेरे अच्छे घोड़े कारा काल्दीर्गाच! तुम कब तक इस दुष्ट की गुलामी करते रहोगे और इसकी मार सहते रहोगे?’ होशियारी से घोड़े को सहलाना। और बिना काठी, लगाम और गद्दी के ही उस पर सवार होकर सरपट भाग निकलना।”

बंदर की दी हुई हिदायतें अच्छी तरह याद करके शाहजादा सुरंग में उतरा और समुद्र के नीचे-नीचे घोड़े तक पहुँच गया। उसने सुरंग से सिर निकालकर देखा कि कारा काल्दीर्गाच कान खड़े किये, पूँछ उठाये हुए नाच रहा है।

अनजाने आदमी को देखकर घोड़ा जोर से हिनहिना उठा। जादूगर उठकर आया। वह मीनार जितना ऊँचा था, उसके कंधे चिनार जैसे थे, मुँह गुफा की तरह था, आँखें पुराने बोरों जितनी बड़ी थीं, नाक तंदूर जितनी बड़ी थी, बदन हाथी के समान था। उसके मुँह से आग निकल रही थी।

“अरे, बदमाश!” जादूगर घोड़े पर चिल्लाया। “अगर चिड़िया ने भी यहाँ पर मारा, तो उसके पर तत्क्षण जलकर गिर पड़ेगे, और अगर आदमी ने यहाँ कदम रखा, तो उसके पैर टूट जायेंगे। तुझे क्या आदमी की बू आ रही है?”

जादूगर ने घोड़े को चाबुक मारा और सोने चला गया।

शाहजादे ने फिर सिर बाहर निकाला। घोड़ा फिर हिनहिनाया। जादूगर फिर चाबुक लेकर आया और घोड़े पर चिल्लाने लगा:

“तू मर क्यों नहीं जाता! क्या तुझे फिर आदमी की बू आ रही है? चाहे जमीन के नीचे हो, चाहे आसमान में मुझसे बचकर न जा सकेगा। अगर मैंने उसे पकड़ लिया तो ज़िन्दा ही निगल जाऊँगा।”

घोड़े को चाबुक से बुरी तरह पीटकर जादूगर फिर चला गया।

शाहजादा फुरती से सुरंग से बाहर निकला और घोड़े के मुह पर किशमिश से भरा थैला रखकर कहने लगा:

“मेरे प्यारे दोस्त, तुम कब तक इस जादूगर के गुलाम बने रहोगे और इसकी मार सहते रहोगे?”

शाहजादे ने घोड़े को थपथपाया, उसके ऊपर सवार होकर एड़ लगायी और अपनी आँखें मीच लीं। कारा काल्दीर्गाच ने गरदन को एक झटका दिया और उसी क्षण उसके पख निकल



आये। वह बाज की तरह आसमान में उड़ चला। घोड़े के खुरों में से बिजली कड़ककर जादूगर के माथे पर लगी और उसकी नींद खुल गयी।

“ठहर, ज़रा ठहर!” वह चिल्लाया। और अपने तेज़ पंजे निकालकर घोड़े के पीछे लपका। क़ारा क़ाल्दीर्गाच समुद्र की ओर मुड़ गया। जादूगर घोड़े को पकड़नेवाला ही था, पर जैसे ही उसने घोड़े की पूँछ को छुआ कि घोड़े ने उसके बहुत जोर से लात मार दी। जादूगर का मुँह पुराने कपड़े की तरह चर से फट गया और वह पानी में गिरकर डूब गया।

घोड़े ने नौ महीने का सफ़र पलक झपकते ही पूरा कर लिया। शाहज़ादे को शहर दिखाई दिया और उसके पास उसने बंदर को देखा, जो बैठा हुआ अख़रोट तोड़-तोड़कर खा रहा था।

“अच्छा, अब क्या करें?” बंदर ने पूछा।

“बादशाह को क़ारा क़ाल्दीर्गाच देकर बदले में लड़की ले लेंगे,” शाहज़ादे ने जवाब दिया।

“भला ऐसा घोड़ा किसी को दिया जाता है? मेरी बात सुनो! मैं कलाबाज़ी खाकर घोड़ा बन जाऊँगा। तुम बादशाह के पास दोनों घोड़े लेकर जाना, वह मुझे ही चुनेगा। फिर तुम लड़की को साथ लेकर चिड़िया लेने जाना!”

बंदर ने कलाबाज़ी खायी और एक इतने अच्छे घोड़े में बदल गया कि क़ारा क़ाल्दीर्गाच उसके सामने गधे से भी बुरा लग रहा था।

शाहज़ादा घोड़े लेकर महल पहुँचा। बादशाह ने अपनी खिड़की में से मखमल की तरह चिकने दोनों मुश्की घोड़ों को देखा।

“इस आदमी को बुलाओ!” बादशाह ने वज़ीर को हुक्म दिया। “हमें ऐसे घोड़े पसंद हैं। अगर वह बेचे, तो हम ख़रीद लेंगे।”

वज़ीर ने शाहज़ादे को बुलाया।

“तुम्हारे घोड़ों की क्या कीमत है?” बादशाह ने पूछा।

“मैं इन्हें बेचूँगा नहीं। एक घोड़े के बदले में तुम्हें अपनी बेटी देनी होगी!”

“अरे, बेवकूफ़! भला कोई घोड़े के बदले में लड़की देता है?”

तब शाहज़ादे ने बादशाह को क़ारा क़ाल्दीर्गाच के बदले में अपनी बेटी देने का वायदा याद दिलाया।

“अब हम क्या करें?” बादशाह ने वज़ीर से पूछा।

“बहादुर आदमी कभी अपने वायदे से मुक़रता नहीं। प्राण जायें पर वचन न जाये। आपको अपना वायदा पूरा करना होगा।”

“एक घोड़े के बदले में सोना दूँगा और दूसरे के बदले में — बेटी। मैं दोनों घोड़े लूँगा!” बादशाह बोला।

पर शाहज़ादे ने जवाब दिया:

“एक घोड़े के बदले में तुम्हारी बेटी लूँगा और दूसरे पर सवार होकर वह शिकार पर जाया करेगी।”

बादशाह ने वज़ीर से पूछा:

“कौन-सा घोड़ा ज्यादा अच्छा है? तुम चुनो!”

वज़ीर को कारा काल्दीर्गाच पसंद आया।

“अरे, बेवकूफ! अच्छा घोड़ा तो यह है!” बादशाह ने घोड़ेरूपी बंदर की ओर इशारा किया और उसे चुन लिया।

बादशाह ने फिर अपनी बेटी को और, जिस संदूक में वह सोती थी, उसे भी लाने का हुक्म दिया।

बादशाह ने घोड़ेरूपी बंदर को ले जाकर अस्तबल में बाँधने का हुक्म दिया। पर घोड़े के कान खड़े हो गये, पूँछ तन गयी। वह लगाम की कड़ी चबा गया और अपने नज़दीक आने-वालों को काटने लगा, जो पीछे से उसके पास आता, उसके वह लात मारने लगा। इस तरह उसने किसी को अपने पास न फटकने दिया और न ही अपने को बाँधने दिया। बादशाह ने अस्तबल के फाटक पर आदमी के सिर जितना बड़ा ताला लगा दिया, और अस्तबल की छत पर चालीस सिपाहियों का पहरा बिठाकर स्वयं फाटक के पास ही सो गया। रात को घोड़ा फिर से बंदर हो गया और दीवार के छेद में से निकलकर भाग गया।

सुबह बादशाह ने झरोखे में से झाँककर देखा, पर वहाँ घोड़े का कोई निशान भी बाक़ी नहीं बचा था। बादशाह छटपटाने लगा। उसने वज़ीर को बुलाकर सारा किस्सा सुनाया।

वज़ीर ने उसे सांत्वना दी:

“कारा काल्दीर्गाच ओर्जाकी जादूगर का घोड़ा था। और सारी भली-बुरी रूहें उस जादूगर के कब्जे में रहती हैं। कितने ही बादशाह उस घोड़े को पाने के लिए अपनी जानें गँवा बैठे! शायद, जादूगर ओर्जाकी ने अपना घोड़ा वापस ले लिया है। यह अच्छा हुआ कि उसने आपको कोई नुक़सान नहीं पहुँचाया। आप उदास मत होइये। आखिर आप अपनी बेटी की शादी शाहजादे के साथ कर रहे हैं और एक घोड़ा तो उसके पास रह ही गया।”

अब शाहजादे का हाल सुनिये।

जब वह उस बाग़ के नज़दीक पहुँचा जहाँ मीठी आवाज़वाली बुलबुल थी, तो उसने देखा कि बंदर दीवार के पास बैठा अखरोट तोड़-तोड़कर खा रहा है।

“अब क्या करें?” बंदर ने पूछा।

“हम लड़की बादशाह को सौंपकर बदले में मीठी आवाज़वाली बुलबुल ले लेंगे,” शाहजादे ने जवाब दिया।

“वाह रे, नासमझ, कहीं चिड़िया के बदले में लड़की दी जाती है? मैं कलाबाज़ी खाकर लड़की बन जाता हूँ। मेरे मुक़ाबले में शाहजादी नब्बे साल की बुढ़िया से भी ज्यादा बदसूरत लगेगी। तुम हमें बादशाह के पास ले जाना और वह मुझे पसंद कर लेगा।”

“क्या ऐसा नहीं हो सकता कि मैं लड़की को यहीं छोड़ जाऊँ और सिर्फ़ तुम्हें साथ लेकर चला जाऊँ?”

“नहीं। अच्छा यही रहेगा कि वह स्वयं चुन ले, जिससे बाद में पछताये नहीं।”

बंदर एक बहुत ही खूबसूरत लड़की में बदल गया। शाहजादे ने दोनों खूबसूरत लड़कियों को दो सद्कों में रखा और बादशाह के महल की ओर चल पड़ा।

वह वहाँ पहुँचकर रुक गया और भीख माँगने लगा। बादशाह ने उसे अपनी खिड़की में से देख लिया और अपने खजानची को बुलाकर बोला:

“इस अजनबी को कुछ दे दो!”

पर वजीर बोला:

“महल के बाहर जो लड़का खड़ा है, वह भिखारी नहीं, बल्कि वही शाहजादा है, जिसे आपने खूबसूरत शाहजादी को लाने के लिए दूर देश भेजा था।”

बादशाह ने लड़के को बुलाकर पूछा:

“शाबाश, लड़के, क्या तुमने काम पूरा कर दिया?”

“जी हाँ,” उसने जवाब दिया।

“पर लड़की कहाँ है?” बादशाह ने पूछा।

“आपने मुझसे एक लड़की लाने के लिए कहा था, पर मैं दो लेकर आया हूँ। आपको उनमें जो पसंद हो, उसे रख लीजिये, दूसरी मेरे पास रह आयेगी।”

दोनों सद्कें खोले गये। दोनों लड़कियाँ एक-साथ छोक उठीं और खड़ी हो गयीं। बादशाह उनकी सुंदरता देखकर भौचक्का रह गया और उसकी मत बिगड़ गयी। लड़कियों को देखते ही जैसे उसके दिल में तीर-सा लगा। वह प्यार में पागल हो उठा और अपने दिल का चैन खो बैठा।

“इन दोनों में से कौन-सी लड़की चुनूँ?” उसने वजीर से पूछा।

वजीर ने शाहजादी की ओर इशारा किया। पर बादशाह को लड़कीरूपी बंदर ही पसन्द आया। उसे अपने पास रखकर बादशाह ने बदले में शाहजादे को मीठी आवाजवाली बुलबुल दे दी।

शहर से बाहर आकर शाहजादा क़ारा क़ाल्दीराच पर सवार हुआ। उसने एक घुटने पर सद्क में सोयी लड़की को रखा, दूसरे पर सोने के पिंजरे में बंद बुलबुल को और आगे चल पड़ा।

और बादशाह ने अपनी सारी प्रजा को बुलाकर इतनी धूमधाम से शादी की कि वैसे किसी ने न देखी होगी। जब दावत जोरों पर थी, बंदर उठकर दीवार के छेद में से बाहर निकलकर गायब हो गया।

अब शाहजादे का हाल सुनिये।

वह पुराने चिनार के पेड़ के पास पहुँचा, तो उसने देखा बंदर वहाँ बैठा अखरोट तोड़-तोड़कर खा रहा है।

“अब क्या करें?” बंदर ने पूछा।

“अब मैं अपने घर जाऊँगा,” शाहजादा बोला।

“पहले मेरे घर चलो और वहाँ तीन-चार दिन रहकर फिर अपने घर जाना।”



“तुम्हारा घर तो पहाड़ में किसी दरार में होगा, मैं उसमें कैसे घुस सकूंगा?”

बदर हँसने लगा:

“तुम्हें अभी तक पता नहीं कि मैं कौन हूँ! चलो मेरे साथ!”

शाहजादा बदर के पीछे-पीछे चला। पहाड़ पार करने के बाद वे एक बड़े दरवाजे के पास पहुँचे, जिसके ऊपर सुंदर नक्काशी पर सोने का काम था। दरवाजे के अन्दर घुसे, तो एक खूबसूरत बाग नज़र आया। बाग में गुलाब के फूल खिले थे, बुलबुलें गा रही थी, पानी के ऊपर हरे-भरे तिपतिया लहरा रहे थे। आड़ और तरह-तरह की रसदार बेरियाँ पककर जमीन पर गिर रही थी। बाग के चारों कोनों में चार सोने के घर थे और हर घर में चालीस कमरे थे। हर कमरे में छोटी परियाँ बैठी लिखना-पढ़ना सीख रही थीं।

बदर ने कलाबाज़ी खायी और एक सुंदर परी में बदल गया। शायद ही किसी माँ ने इतनी सुंदर बेटी को जन्म दिया होगा।

शाहजादा इस खूबसूरत बाग में तीन दिन रहा।

जब वह जाने लगा, तो परी ने अपने सिर का एक बाल तोड़कर उसे दिया।

“अगर तुम किसी मुसीबत में फँस गया, तो बाल का सिरा जलाना, मैं फौरन आ जाऊँगी।”

“तुमने मुझ पर इतना अहसान और हर समय मेरी सहायता किस लिए की?” शाहजादे ने पूछा।

“तुमसे मिलने से पहले ही मुझे पता चल गया था कि सुनहले देश में एक क्रूर बादशाह रहता है; वह लोगों के मुँह का आखिरी कौर भी छीनकर एक बेशकीमती पेड़ बनवा रहा है। इस पेड़ के कारण वह सारे शहर को बरबाद कर देना चाहता है। बादशाह के तीन बेटे हैं। छोटा बेटा कहने लगा: ‘अगर मेरे पिता ने पेड़ के कारण शहर को बरबाद कर दिया, तो लोग बेघर हो जायेंगे और बहुत बुरा होगा। मैं पेड़ के पत्ते तोड़नेवाली चिड़िया को पकड़ूँगा’। तब मैंने सोचा: ‘अगर यह लड़का गरीब प्रजा के लिए अपनी जान की बाज़ी लगा सकता है, तो मैं आराम से अपने तख्त पर कैसे बैठी रह सकती हूँ।’ और मुझे तब तक चैन नहीं मिला, जब तक कि सात साल बाद मैंने तुम्हें ढूँढ़ नहीं लिया।”

शाहजादा परी से विदा लेकर और उसे धन्यवाद देकर शाहजादी के साथ आगे चल पड़ा।

चलते-चलते वह उस जगह पहुँचा, जहाँ अपने भाइयों से अलग हुआ था। वह कारा काल्दी-गाँव को रोककर सोचने लगा। “मेरे भाई कहाँ हैं? मुझे जाकर उनका पता लगाना चाहिए।”

उसने लड़की और चिड़िया को एक गुफा में छोड़ा और उस रास्ते पर चल पड़ा, जिस पर उसका बड़ा भाई गया था।

शाहजादे ने शहर में आकर देखा कि बड़ा भाई ढाबे में भट्टी जलाने का काम कर रहा है।

“अरे भाई, सुनना!” शाहजादे ने ढाबे के मालिक को बुलाया। “सामनेवाली सराय में भट्टी जलानेवाले लड़के के हाथों मुझे खाना भिजवा दो।”

ढाबे के मालिक ने एक कटोरे में शोरबा डालकर बड़े भाई को दिया और उसके गाल पर एक जोरदार तमाचा भी जड़ दिया।

“समलकर ले जाना!” मालिक बोला।

बड़ा भाई शोरबा सराय में ले आया।

“तुम यहाँ बैठकर इसे खाओ!” छोटा भाई बोला।

“नहीं, नहीं, मालिक लड़ेगा।”

“नहीं लड़ेगा! बैठो, बैठो!”

जब बड़ा भाई खा चुका, तो छोटे ने पूछा:

“तुम कौन हो? कहाँ से आये हो?”

“मैं ठाबे में काम करता हूँ, यहीं पैदा हुआ था।”

“मुझसे मत छिपाओ। मैं तुम्हें पहचान गया हूँ। अगर तुम सच-सच बताओगे, तो मैं तुम्हें तुम्हारे देश ले जाऊँगा।”

बड़ा भाई रोने लगा और उसने सारी आपबीती उसे सुना दी।

“अगर तुम्हें तुम्हारा छोटा भाई दिखाई दे, तो क्या तुम उसे पहचान लोगे?” शाहजादे ने पूछा।

“हाँ, पहचान लूँगा।”

“कैसे?”

“एक बार बचपन में जब हम छोटे थे, मैं घोड़े को पानी पिलाने के लिए नदी पर ले जा रहा था, तो वह मेरे पीछे पड़ गया और कहने लगा: ‘मैं भी जाऊँगा।’ घोड़े ने उसे लात मार दी और उसके बायें कंधे पर घोड़े के खुर का निशान रह गया।”

“तुमने अपने छोटे भाई की सैर कराकर उसका जी क्यों नहीं बहलाया?”

“वह मुझे अच्छा नहीं लगता था—इसी लिए उसे सैर नहीं करायी।”

“क्या तुम्हारे भाई के कंधे की चोट का निशान ऐसा ही था?” शाहजादे ने अपना बायाँ कंधा उधाड़कर उसे दिखाया।

बड़ा भाई फौरन उसके पैरों में गिरा और फूट-फूटकर रोने लगा।

शाहजादे ने उसे उठाकर उसके आंसू पोछे और उसे बाजार ले जाकर घोड़ा और बढ़िया कपड़े खरीदवाये। बड़ा भाई बन-ठनकर घोड़े पर बैठा और वे दोनों मँभले भाई को ढूँढने निकले। पुलाव बेचनेवाले के यहाँ काम कर रहे मँभले भाई की हालत भी ठाबे में काम करनेवाले बड़े भाई से अच्छी नहीं थी।

मँभले भाई को ढूँढकर शाहजादे ने उसे भी घोड़ा और कपड़े खरीदवाये और वे तीनों अपने देश चल पड़े।

जब बड़े भाइयों ने देखा कि छोटा भाई पिता के लिए कितने अच्छे-अच्छे तोहफे ले जा रहा है, तो उन्हें उससे जलन हुई और वे वह सब भला भूल गये, जो छोटे भाई ने उनके साथ किया। रात को वे लोग छोटे भाई को मारने के बारे में आपस में सलाह करने लगे।

पर सड़क में लेटी शाहजादी ने उनकी सारी बातें सुन लीं।

जब वे लोग नदी के किनारे रात गुजारने के लिए रुके, तो लड़की ने शाहजादे को बुलाकर उसे सारी बातें बता दीं।

“तुम्हारे भाई तुम्हें जान से मार डालना चाहते हैं। तुम कहीं छिप जाओ।”

रात आयी। शाहजादा थोड़ी देर लेटा रहा और फिर कालीन पर मिट्टी डालकर, उसके पर अपना लबादा उढाकर कुछ दूरी पर जाकर छुप गया।

सुबह होने के पहले दोनों बड़े भाई आये और उन्होंने कालीन को चारों कोनों से पकड़कर नदी में फेंक दिया।

“अब जाकर घोड़ा, चिड़िया और लड़की भी हथिया लेते हैं,” वे लोग बोले।

अचानक पानी में से छप-छप की आवाज़ आयी। उन्होंने देखा शाहजादा नदी के किनारे बैठा नहा रहा है।

अपनी योजना सफल न होने पर दुष्ट भाई बड़े निराश हुए और अपने घोड़ों को सरपट दौड़ाते हुए बालू के एक टीले के पास आकर रुक गये। यहाँ पर उन्होंने एक तेज़ धारवाली तलवार बालू में गाड़ दी और स्वयं कुछ दूरी पर लेटकर कमर तक रेत में गड़ गये।

कुछ समय बाद छोटा भाई आया और पूछने लगा

“आप लोग बालू में क्यों गड़े हुए हैं?”

“इस लिए कि कमर और पैरों में दर्द न हो,” बड़ा भाई बोला। “आओ, हम तुम्हें भी गाड़ दें, तुम्हारे पैर कभी नहीं दुखेंगे।”

शाहजादा घोड़े से उतरा और उसके भाइयों ने उसे कमर तक रेत में गाड़ दिया। गरम रेत के कारण उसके पैर जलने लगे।

“अरे, भाई, रेत तो बहुत गरम है!” वह बोला।

“तुम अपने पैरों को हिलाओगे तो वह ठंडी हो जायेगी।”

छोटा भाई पैर हिलाने लगा और रेत में छिपी तलवार से उसके दोनों पैर घुटनों तक काट गये।

भाइयों ने शाहजादे की दोनों आंखें फोड़ दी और लड़की, घोड़ा और चिड़िया लेकर वहाँ से भाग निकले।

पिता के पास पहुँचकर भाइयों ने सारे तोहफे उन्हें सौंप दिये।

बादशाह बड़ा खुश हुआ। उस लड़की को उसने अपने बड़े बेटे की मग़ेतर घोषित करके हरम में भेज दिया और उसकी सेवा में चालीस दासियाँ लगा दी, कारा काल्दीर्गाच को उसने अपने अस्तबल में बधवा दिया और मीठी आवाज़वाली बुलबुल को पिंजरे सहित अपने बहुमूल्य चिनार पर लटकवा दिया।

पर बुलबुल ने गाना बंद कर दिया और चोंच-पंख में दबाये बैठी रही। कारा काल्दीर्गाच जो सामने से उसके पास आता, उसे काटता और जो पीछे से आता उसके लात मारना शुरू कर देता, अपने पास किसी को भी फटकने नहीं देता। चालीस दासियों से घिरी हुई लड़की अपने सोने के सटूक में ही लेटी रहती और सिर उठाकर भी नहीं देखती।



अब शाहजादे का हाल सुनिये।

तीन दिन और तीन रात बाद उसे होश आया। उसे परी के दिये हुए बाल की याद आयी। बाल को जलाते ही परी अपने सीने के सिंहासन पर बैठी और अपनी दासियों से घिरी वहाँ आ पहुँची।

“ऐ, आदमी के बेटे, किसने तुम्हारा यह हाल किया है?” परी ने आते ही पूछा।

उसने अपनी दासियों को शाहजादे को अपने तल्ल पर बिठाकर उसे धरती के दूसरे कोने पर कोहेकाफ नाम के पहाड़ में अपने पिता के पास ले जाने के लिए कहा और उन्हें यह सदेश पहुँचाने का हुक्म दिया:

“इस आदमी को जीवनदायी सागर के पानी में डुबकी लगवाकर हमारे तरीके से इसका इलाज करना। चालीस दिन बाद जब यह ठीक हो जाये, तो इसे मेरे पास भेज देना। यह मुझे सगे भाई की तरह प्यारा है।”

परी की दासियाँ तल्ल पर बैठे शाहजादे को उड़ाकर कोहेकाफ में परी के पिता के पास ले आयीं।

चालीस दिन में शाहजादा स्वस्थ हो गया और पहले से भी ज्यादा सुन्दर दिखने लगा।

“मैं इस हालत में तुम्हें तुम्हारे पिता के पास नहीं जाने दूँगी,” परी ने कहा। “पहले मैं तुम्हें एक भिखारी का रूप प्रदान करूँगी और फिर वहाँ पहुँचाऊँगी। अगर तुम्हारे पिता ने उस लड़की की शादी तुम्हारे बड़े भाई के साथ कर दी है और उसे वहाँ का बादशाह बना दिया है, तो हम शहर में बिना घुसे ही वापस लौट आयेंगे; और अगर तुम्हारे पिता पहले की तरह राज कर रहे हैं, तो मैं तुम्हारी शादी उस लड़की के साथ करा दूँगी।”

परी ने तीन महीने तक शाहजादे को अपने यहाँ से नहीं जाने दिया। तीन महीनों में उसके बाल काफ़ी बढ़ गये, माया ढकने लगे और नाखून बहुत लंबे हो गये। इसके बाद ही परी उसे अपने तल्ल पर बिठाकर उसके शहर उड़ चली।

तल्ल को शहर के बाहर छोड़कर परी शाहजादे का हाथ पकड़कर उसे बादशाह के महल में ले आयी।

बादशाह उस समय अपने वज़ीर के साथ बातचीत कर रहा था।

“मुझे दुःख के सागर में गोते खाते हुए कितने महीने हो चुके हैं,” बादशाह शिकायत करने लगा। “चिड़िया ने एक बार भी नहीं गाया, घोड़ा एक बार भी नहीं हिनहिनाया और लड़की कुछ भी नहीं खा रही है।”

अचानक उसे अपने महल में एक जवान मुसाफ़िर दिखाई दिया।

“अरे, यहाँ आना!” बादशाह ने चिल्लाकर आवाज़ दी।

शाहजादे ने मुड़कर तल्ल की ओर देखा, तो अपने भाइयों को पिता के दोनों ओर बैठा पाया।

जैसे ही शाहजादे ने तल्ल की ओर कदम बढ़ाया कि बुलबुल इतनी मीठी आवाज़ में गा उठी कि दुनिया के सारे लोगों के दिल मोम की तरह पिघलने लगे।

शाहजादे ने दूसरा कदम बढ़ाया, तो अस्तबल में बंधा कारा काल्दीर्गाच बड़े जोर से हिनहिना उठा। उसने तीसरा कदम बढ़ाया, तो लड़की फौरन अपने सोने के संदूक से बाहर निकली और सोने का साज लेकर अपनी चालीस दासियों से घिरी नाचने लगी।

बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ।

“ऐ, मुसाफिर, तुमने हमारी खुशी वापस दिला दी!” बादशाह ने कहा और अशरफियों से भरा थाल उसके सिर के ऊपर बिखेर दिया।

तब छोटा शाहजादा बोला:

“मैं कोई मुसाफिर नहीं हूँ, आप मीठी आवाजवाली बुलबुल से पूछिये, वह आपको सब कुछ बता देगी।”

“तुमने कभी सुना है कि चिड़िया भी बोलती है?” बादशाह ने आश्चर्यचकित होकर कहा।

उसी क्षण मीठी आवाजवाली बुलबुल आदमी की आवाज में बोल उठी और उसने शुरू से लेकर आखिर तक सारी कहानी बादशाह को सुना दी।

तब बादशाह ने समझा कि उसके राज का आखिरी समय आ पहुँचा है, क्योंकि प्रजा को जब मालूम पड़ा कि किसने शहर को मुसीबतों और बरबादी से बचाया है, तो वह तुरन्त छोटे शाहजादे के पीछे चट्टान की तरह खड़ी हो गयी।

निर्दयी बादशाह अपने बड़े बेटों के साथ शहर से भाग निकला।

शाहजादे ने चालीस दिनों तक अपनी प्रजा को शादी की दावत खिलायी। और परी ने विदा लेते समय उससे कहा: “तुम जब भी मुझसे मिलना चाहो, मेरा बाल जलाना, मैं फौरन आ जाऊँगी।”

इस तरह प्रजा को बादशाह के अत्याचारों से मुक्ति मिली और शाहजादे की सारी इच्छाएं पूरी हुई।

मैंने भी शाहजादे की शादी में डटकर पुलाव खाया, मूँछें और दाढ़ी घी में तर कीं और खुशी-खुशी घर लौट आया।



# जहाँ चाह, वहाँ राह



बहुत समय पहले एक बूढ़ा रहता था। उसके पास सोने की तीन सौ अशरफियाँ थीं। एक बार उसने अपने बेटे से कहा,

“अलीजान, तुम बड़े हो गये हो और मैं बूढ़ा हो गया हूँ। खुदा जाने मैं कितने और दिन इस दुनिया में रहूँगा, लेकिन मरने से पहले मैं तुम्हें व्यापार करना सिखा देना चाहता हूँ। ये सौ अशरफियाँ लो और कल सौदागरों के क्राफिले के साथ रवाना हो जाओ। परदेस में पैसा कभी बेकार मत खर्च करना, उससे कुछ सौदा खरीदकर लाना।”

यह सीख देकर बूढ़े ने अपने बेटे को सौदागरों के साथ रवाना कर दिया।

लड़का कुछ दिन पहले ही अठारह साल का हुआ था। वह एक भला और समझदार लड़का था। उसे व्यापार करना बिल्कुल भी अच्छा न लगता था, बल्कि वह कोई हुनर सीखकर अपनी मेहनत से जीना चाहता था।

पर अपने पिता के साथ बहस करने की उसकी हिम्मत नहीं हुई और वह अशरफियाँ लेकर सौदागरों के साथ चल पड़ा।

कुछ दिनों में कारवां एक बड़े शहर में पहुँचा और वे सब एक सराय में ठहरे।

उस शहर में एक बड़ा बाग था। उसी दिन शाम को अलीजान घूमने के लिए बाग में गया। बाग में घुसते ही उसने देखा कि हजारों रोशनियों के जलने से वहाँ दिन की तरह उजाला हो रहा है। पेड़ों के बीच में जाली से घिरे संगमरमर के चबूतरे पर खुली छत खंभों पर टिकी हुई थी और उसके ऊपर रंग-बिरंगे बेलबूटे बने हुए थे। फर्श पर कालीन बिछे थे जिन पर सोने-चाँदी और हीरे-मोतियों की चौकियाँ रखी हुई थीं और उनके ऊपर हीरे-जवाहरात के मोहरे रखे हुए थे। एक-से कपड़े पहने हुए सौ से ज्यादा लड़के हर चौकी के पास दो-दो करके आमने-सामने बैठे हुए मोहरे चला रहे थे।

अलीजान भौचक्का हुआ जाली के सहारे खड़ा देखता रहा, वह किसी भी तरह इस अद्भुत खेल से अपनी नज़रें नहीं हटा पाया। वह इसी हालत में कई घंटों तक वहाँ खड़ा रहा।

बाग का एक नौकर उसे वहाँ खड़ा देखकर उसके पास आया और बोला,

“आप यहाँ क्यों मुँह बाये खड़े हैं?”

“ये लोग कौन हैं और क्या कर रहे हैं?” अलीजान ने घबराते हुए पूछा।

“ये सारे लड़के,” नौकर ने जवाब दिया, “एक महीने से शतरंज खेलना सीख रहे हैं।”

“मैं किस तरह यह खेल सीख सकता हूँ?” अलीजान ने पूछा।

“सौ अशरफियाँ देकर आप भी यह खेल सीख सकते हैं।”



अलीजान ने सौ अशरफियाँ देकर खेल सीखना शुरू कर दिया।

थोड़े दिनों में ही अलीजान शतरंज इतने अच्छे ढंग से खेलना सीख गया कि अपने उस्तादों को भी मात देने लगा।

एक साल बाद खेल की शिक्षा समाप्त हुई और लड़के अपने-अपने घर जाने लगे। अलीजान उदास होकर सोचने लगा: "बिना पैसों के मैं कहाँ जाऊँ?"

उसके उस्ताद को उस पर दया आयी और उसने एक अशरफी देकर वहाँ से गुजरनेवाले एक काफिले के साथ उसे भेज दिया। अलीजान खाली हाथ अपने पिता के पास पहुँचा। पिता बड़ा दुःखी हुआ। एक साल बीत गया। बूढ़े ने फिर अपने बेटे को बुलाकर काफ़ी हिदायतें दीं और अंततः सौ अशरफियाँ देकर सौदागरो के एक कारवाँ के साथ भेज दिया।

कारवाँ उसी बड़े शहर में पहुँचा।

"इस बार मैं बिल्कुल भी फ़िजूलखर्ची नहीं करूँगा," अलीजान ने निश्चय किया।

शाम को वह टहलने निकला।

बाग़ के पास पहुँचते ही उसे बहुत ही कर्णप्रिय संगीत सुनाई पड़ा। उसने देखा, उसी जगह जहाँ उसने शतरंज खेलना सीखा था, लड़के बैठे हुए तरह-तरह के वाद्ययंत्र बजाना सीख रहे हैं।

अलीजान अपने पिता की दी हुई सीख बिल्कुल भूल गया और सौ अशरफियाँ देकर संगीत सीखने लगा।

थोड़े समय में ही वह इतने अच्छे ढंग से गाना-बजाना सीख गया कि अपने उस्तादों को भी मात देने लगा।

एक साल में पढ़ाई समाप्त हो गयी। अलीजान उदास हो गया: "अब किस मुँह से मैं अपने पिता के पास जाऊँ?" उसके शिक्षक को उस पर दया आयी और उसने उसे दो अशरफियाँ देकर घर भेज दिया।

अलीजान अपने पिता के पास लौट आया। अपने बेटे के आने पर हालाँकि बूढ़ा खुश हुआ, पर उसने उसे पहले से भी ज्यादा डाँटा-फटकारा।

एक साल बीत गया। बूढ़े ने अपने बेटे को बुलाकर अन्तिम सौ अशरफियाँ उसके हाथों में रखीं और बोला:

"अगर तुमने ये अशरफियाँ भी बेकार खर्च कर दीं, तो हम लोग बेघर हो जायेंगे और भूखो मर जायेंगे।" उसने अपने बेटे से वचन लिया कि यह रकम वह केवल किसी सौदे को खरीदने में ही लगायेगा।

अलीजान फिर उसी बड़े शहर में पहुँचा। पहली वह हमाम में जाकर नहाया।

तरोताजा होकर हमाम से लौटते समय वह अपने जाने-पहचाने बाग़ के पास से गुज़रा, तो सोचने लगा, "एक मिनट भाँक लेने में क्या हर्ज है?"

सोचते-सोचते किस तरह वह बाग़ के अंदर पहुँचा, उसे कुछ याद नहीं रहा।

उसने देखा उसी संगमरमर के चबूतरे पर शिक्षक किताब में से कुछ पढ़ रहा है और लड़के बैठे अपनी कापियों में वे शब्द लिख रहे हैं।

अलीजान आश्चर्य में डूबा वहाँ काफी देर तक खड़ा रहा। अंत में उसने फैसला किया : "शतरंज खेलना मैं सीख चुका हूँ, संगीत भी सीख चुका हूँ, पर पढ़ना-लिखना मैंने अभी तक नहीं सीखा। चाहे मैं भिखारी ही क्यों न हो जाऊँ, पर पढ़ना-लिखना जरूर सीखूँगा।"

अलीजान ने सौ अशरफियाँ दीं और पढ़ना-लिखना सीखने लगा। पहले की तरह इस बार भी वह सबसे अच्छा साबित हुआ और थोड़े दिनों में ही पढ़ना-लिखना अच्छी तरह सीख गया।

फिर उसके पास घर वापस लौटने के लिए पैसा नहीं बचा। शिक्षक ने उसे तीन अशरफियाँ देकर घर भेजा। पर इस बार अलीजान को पिता के पास लौटने की हिम्मत नहीं हुई।

उसने एक दूर के शहर जानेवाले एक सौदागर के यहाँ नौकरी कर ली। सौदागर का सारा सामान ऊँटों पर लादा जा चुका था। सूरज निकलने के पहले ही कारवाँ रवाना हो गया।

कारवाँ कई दिन और कई रात तक रेगिस्तान में चलता रहा। उन्हें रास्ते में पानी के दर्शन कहीं नहीं हुए। अंत में वे एक कुएं के पास पहुँचे। कुआँ बहुत गहरा था और पानी उसके पेदे में ही था।

सौदागर ने अपने नये नौकर को कुएं में उतरने का आदेश दिया। अलीजान ने कुएं के पेदे में सही-सलामत पहुँचकर मशक में पानी भर लिया। अचानक उसे कुएं की दीवार में एक दरवाजा दिखाई पड़ा।

"इसका क्या मतलब हो सकता है?" यह सोचकर अलीजान ने दरवाजा थोड़ा-सा खोला। उसने देखा दरवाजे के पीछे एक बहुत बड़ा और रोशनीदार कमरा है और वहाँ कालीन के ऊपर एक देव सिर लटकाये उदास बैठा है। उसके हाथों में एक वायोलिन रखा था।

अलीजान डरा नहीं। उसने मशक दरवाजे के पास छोड़ दी और दबे कदमों से देव के पास पहुँचकर वायोलिन उठाकर बजाने लगा।

देव ने तारों की मधुर झंकार सुनकर आँखें खोली और चैन की साँस ली। उसने चारों ओर देखा, खड़ा हुआ और अलीजान के पास आकर उसके सिर पर हाथ फेरा।

"ऐ, आदमी, तुम यहाँ किस तरह पहुँचे?" देव ने पूछा।

अलीजान ने उसे सारी बात बता दी। फिर उसे कारवाँ की याद आयी और वह जल्दी से उठकर चलने लगा।

"तुम्हारी सबसे बड़ी इच्छा क्या है? उसे पूरा करने के लिए मैं सब कुछ करूँगा," देव ने कहा।

अलीजान ने आश्चर्यचकित होकर उसकी ओर देखा।

"मेरा इकलौता बेटा मर गया," देव कहने लगा। "उसे यह दुनिया छोड़कर गये हुए आज पाँचवाँ दिन है। मैं अकेला रह गया और इतना दुःखी हो चुका था कि मरने के लिए तैयार था। अपना दिल बहलाने के लिए मैंने वायोलिन उठाया, पर मुझे बजाना नहीं आता। अगर तुम कुछ घंटे बाद आये होते तो मुझे ज़िंदा न पाते। अपने जादूभरे संगीत से तुमने मुझे मौत

के मुँह में जाने से बचा लिया। तुम चाहो, तो मैं अपनी सारी धन-दौलत तुम्हें दे सकता हूँ।”

“इस कुए से निकलने में मेरी मदद कीजिये,” अलीजान बोला। “इस के सिवा मुझे कुछ और नहीं चाहिए।” और उसने फिर से वायोलिन बजाना शुरू कर दिया। देव ने उसे एक बोरी भरकर सोना दिया और बोला:

“अपनी आंखें मीच लो!”

अलीजान ने अपनी आंखें मीच लीं।

जब उसने आंखें खोलीं, तो अपने आपको कुएँ की जगह पर पाया। उसने चारों ओर देखा—कोई नहीं था, कारवाँ जा चुका था।

ऊँटों के पैरों के निशानों के सहारे-सहारे अलीजान कारवाँ से जा मिला। उसे देखकर सब अचभे में पड़ गये और पूछने लगे कि वह किस प्रकार कुएँ से बाहर निकला। अलीजान ने उन्हें सारा किस्सा सुनाया और देव की दी हुई सोने से भरी बोरी भी दिखायी।

जब काफ़िला आराम के लिए रुका, तो मालिक ने कागज़ के एक टुकड़े पर कुछ लिखा, उस पर अपनी मुहर लगाकर अलीजान को दिया और बोला:

“मेरी एक बहुत खूबसूरत बेटी है। मैं उसकी शादी तुम्हारे साथ कर दूँगा। तुम यह चिट्ठी लेकर कारवाँ से पहले मेरे घर पहुँचकर, शादी की सारी तैयारी कर लो, पर देखना, सोना गँवाना नहीं। तीन दिन में मैं भी घर पहुँच जाऊँगा।”

उसने अलीजान को एक तेज़ घोड़ा दिया और रास्ता भी समझा दिया।

अलीजान चलते-चलते सुस्ताने के लिए रुका। वह सोचने लगा: “मैंने सौ अशरफ़ियाँ खर्च करके पढ़ना-लिखना सीखा। ज़रा देख तो लूँ, इस चिट्ठी में क्या लिखा है।”

उसने चिट्ठी खोलकर पढ़ी और काँप उठा।

सौदागर ने अपनी पत्नी को लिखा था:

“मेरी प्यारी पत्नी, मैं इस नौकर के साथ तुम्हें सोना भेज रहा हूँ। मैंने इससे भूठ कहा है कि मैं अपनी बेटी की शादी इसके साथ कर दूँगा। मिलते ही इसका सिर काट देना।”

अलीजान ने दूसरा कागज़ लेकर उस पर यह लिखा:

“मेरी प्यारी पत्नी, इस आदरणीय अतिथि का अच्छी तरह स्वागत करना और अपनी लड़की की शादी इसके साथ कर देना। शादी पर मेरा इंतज़ार मत करना। तुम्हारा पति।”

चिट्ठी बंद करके अलीजान आगे चला।

शहर पहुँचकर उसने सौदागर के घर का पता लगाया और पत्र उसकी पत्नी को दे दिया। पत्र पढ़कर उसने अतिथि का हार्दिक स्वागत किया।

दूसरे दिन ही बहुत धूमधाम से अलीजान की शादी सौदागर की लड़की के साथ कर दी गयी। दावत दो दिन तक चली।

तीसरे दिन एक तेज़ घोड़े पर सवार होकर अलीजान ने नौकरों को हुक्म दिया

“मैं अपने व्यापार के काम से बाहर जा रहा हूँ। रात को दरवाज़ा किसी के लिए भी



मत खोलना, और अगर कोई दीवार पर चढ़ आये, तो उसे पकड़कर अच्छी तरह पीटना। यह तुम्हारे मालिक का हुक्म है।”

रात को सौदागर अपने काफिले के साथ घर पहुँचा और दरवाजा खटखटाने लगा। उसे खटखटाते, आवाज देते दो घंटे हो गये, पर किसी ने दरवाजा नहीं खोला। तब वह दीवार फाँदकर अहाते में घुसा। नौकरों ने उसे फौरन पकड़ लिया और पीट-पीटकर अधमरा कर दिया।

मालिक काफी देर तक बेहोश पड़ा रहा और होश आने पर बड़ी मुश्किल से अपने कमरे तक पहुँचा। पत्नी के साथ दुआ-सलाम के बाद उसने पूछा:

“बताओ, तुमने उस आदमी का क्या किया जिसे मैंने चिट्ठी देकर तुम्हें भेजा था?”

“आपने जो लिखा था, मैंने वही किया,” पत्नी ने जवाब दिया।

“और अशरफियाँ कहाँ रखीं?” सौदागर की आँखें लालच से चमक उठी।

“कौन-सी अशरफियाँ?” पत्नी भौचक्की रह गई।

“मैंने तुम्हें लिखा तो था कि चिट्ठी लेकर आनेवाले को मार डालना और अशरफियाँ निकालकर छिपा देना।”

“अरे, आपको हुआ क्या है? आपका दिमाग तो ठीक है? अपने दामाद को क्यों मार डालती?”

“कौन-सा दामाद?”

“अपनी बेटी का पति।”

“तुमने उसकी शादी कब कर डाली?”

“दो दिन हुए।”

मालिक ने अपना माथा ठोक लिया और अपनी पत्नी और नौकरों को कोसने लगा। “और वह खुद कहाँ है?” उसने दामाद के बारे में पूछा।

“सुबह घोड़े पर सवार होकर कहीं चला गया और दरवाजा खोलने के लिए मना कर गया। उसने कहा था कि अगर कोई दीवार फाँदकर घर में घुस आये, तो उसे पकड़कर पीटना,” नौकरों ने जवाब दिया।

सौदागर समझ गया कि उसे अपने किये का फल मिल गया, इस लिए उसने अपने दामाद के साथ मेल करने का फ़ैसला किया।

अच्छा, अब सौदागर और उसकी पत्नी को यहीं छोड़िये और अलीजान का हाल सुनिये।

अलीजान काफी देर तक घोड़ा दौड़ाता हुआ बड़े शहर में पहुँचा। उस दिन बाज़ार लगा हुआ था। मुनादी करनेवाला चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा था:

“खल्क खुदा की, मुल्क बादशाह का। कान खोलकर ध्यान से सुनिये। जो कोई अपने आपको शतरज का अच्छा खिलाड़ी समझता है, महल में आकर बादशाह के साथ खेले। जो लगातार तीन बाजियाँ जीत जायेगा, बादशाह उसे अपने तख्त पर बैठा देगा। और जो लगातार तीन बाजियाँ हार जायेगा उसका सिर कटवा दिया जायेगा।”

अलीजान बादशाह के महल में पहुँचकर बोला कि वह बादशाह के साथ शतरज की बाजी लगाना चाहता है।

खेल शुरू हुआ। पहली बाजी अलीजान हार गया, पर बाकी दोनों जीत गया। फिर खेल शुरू हुआ। बादशाह दो बाजी जीत गया और तीसरी हार गया। फिर बाजी शुरू हुई। इस बार अलीजान ने एक के बाद एक तीन मारें बादशाह को दे दीं।

बादशाह क्या करता, उसे अपना तख्त अलीजान को देना पड़ा। बादशाह अपने तख्त पर से उठा और सिर झुकाकर अलीजान से बोला:

“अब इस तख्त पर तुम बैठोगे।”

“मैं बादशाह नहीं बनना चाहता। मैं अपने शहर लौटकर अपने लोगों को पढ़ना-लिखना और संगीत सिखाना चाहता हूँ।”

अलीजान पहले अपनी पत्नी को लेने गया और फिर उसके साथ अपने शहर में पिता के पास पहुँचा।

सारा किस्सा सुनकर पिता ने उसकी बहुत तारीफ़ की और खुश होकर बोला:

“तुम वास्तव में बुद्धिमान हो! इतनी विद्याएँ सीखकर तुम कितनी बार मौत के मुँह में जाने से बचे!”

“आदमी के लिए सत्तर विद्याएँ सीखना भी कम है!” बेटे ने जवाब दिया।

## विद्वान गधा



एक बार एक गधा बाग में घुसा। उसने देखा—पेड़ों पर सेब लटक रहे हैं और पास के खेत में बेल की पतली-पतली शाखाओं पर कद्दू पक रहे हैं।

गधे ने एक बार फिर सेबों की ओर देखा, उसके बाद कद्दू की ओर और कान हिलाकर दुःखी स्वर में कहने लगा:

“कितने मूर्खतापूर्ण ढंग से बनाया गया है इस दुनिया को!”

पेड़ पर बैठी गौरैया ने पूछा:

“अच्छा, जनाब, यह बताइये कि आपको इस दुनिया के बनाने में किस चीज़ की कमी नज़र आ रही है?”

“क्या तुम खुद नहीं देख रही हो?” गधे ने जवाब दिया और पहले सेबों की ओर इशारा किया, फिर कद्दूओं की ओर। “यह देखो: इतने ऊँचे पेड़ पर बच्चे की मुट्ठी के बराबर के

मीठे फल लगे हैं और यहाँ पतली-पतली शाखाओं पर मेरे सिर जितने बड़े-बड़े बेस्वाद कट्टू जमीन पर पड़े हैं।”

“इसी मे तो सारी बुद्धिमानी है,” गौरैया ने विरोध किया।

‘भला, इसमे क्या बुद्धिमानी है?!” गधा चिल्लाया। “अगर सेब कट्टू जितना और कट्टू सेब जितना होता, तो मैं इसे बुद्धिमानी कहता।”

गधे ने सेब के पेड़ से अपना बदन रगड़ा और एक सेब टूटकर सीधा उसके सिर के ऊपर गिरा।

“हाय, मेरा सिर!” गधा रेंकने लगा।

गौरैया हँस पड़ी।

“अच्छा हुआ कि सेब कट्टू जितना बड़ा नहीं था, नहीं तो आपके सिर का कुछ भी न बचा होता।”

गधा हेचू-हेचू करता तुरंत सेब के पेड़ से दूर भाग गया।

## चतुर बेटी



बहुत समय पहले एक बूढ़ा अपनी बारह साल की लड़की के साथ रहता था। संपत्ति के नाम पर बूढ़े के पास एक ऊँट, एक धोड़ा और एक गधा ही थे। बूढ़ा पहाड़ से लकड़ी काटकर शहर में बेचता और उसकी बेटी घर सभालती।

एक बार बूढ़ा अपने ऊँट पर लकड़ी लादकर बाजार पहुँचा। एक मोटा जमींदार उसके पास आया और पूछने लगा:

“लकड़ी क्या भाव बेचोगे?”

बूढ़े ने तीन तंगा\* माँगे।

मोटा जमींदार बोला:

“तुम ‘सारे’ का दस तंगा लो और लकड़ी मेरे घर पहुँचा दो।”

बूढ़ा खुशी-खुशी लकड़ी लेकर मोटे जमींदार के घर पहुँचा।

बूढ़े को बायदे के अनुसार दस तंगा मिल गये। उसने लकड़ी जमीन पर डाली और जाने लगा।

अचानक मोटा जमींदार बोला:

\* तंगा — चांदी का सिक्का।



“ऊँट यहीं बाँध जाओ!”

बूढ़ा चक्कर में पड़ गया:

“ऊँट तो मेरा है।”

“नहीं,” मोटा जमींदार बोला। “मैंने सौदा ऊँट सहित ‘सारा’ खरीदा है। अगर ऐसा न होता, तो, भला, मैं तुम्हारे जैसे बेबकूफ को दस तंगा देता।”

वे लोग काफी समय तक बहस करते रहे और अंत में निर्णय के लिए क़ाज़ी के पास पहुँचे।

क़ाज़ी ने बूढ़े से पूछा:

“क्या यह सच है कि तुम ने ‘सारे’ माल का सौदा किया था?”

“हाँ, पर मेरे ऊँट की कीमत तो तीन सौ तंगा है।”

“अब मैं कुछ नहीं कर सकता। ग़लती तुम्हारी है, तुम्हें ‘सारे’ का सौदा नहीं करना चाहिए था।”

क़ाज़ी ने ऊँट मोटे जमींदार को दिसवा दिया और बेचारा बूढ़ा आँखों में आँसू भरे अपने घर पहुँचा। उसने अपनी बेटी को इस बारे में कुछ नहीं बताया।

दूसरे दिन बूढ़ा अपने घोड़े पर लकड़ी लादकर फिर बाज़ार आया। मोटा जमींदार भी वहीं मौजूद था।

“लकड़ी क्या भाव है?”

“तीन तंगा।”

मोटा जमींदार बोला:

“‘सारे’ माल का दस तंगा दूँगा।”

बूढ़ा कल की बात बिलकुल भूल गया और उसने सौदा मंज़ूर कर लिया।

बूढ़े को घोड़े से भी हाथ धोने पड़े।

वह बहुत दुःखी होकर घर पहुँचा, पर बेटी को उसने फिर भी कुछ नहीं बताया।

तीसरे दिन बूढ़ा अपने गधे पर लकड़ी लादकर बाज़ार खाना होनेवाला ही था कि बेटी बोली:

“पिता जी, कल आप बिना घोड़े के वापस लौटे थे और परसों बिना ऊँट के। आज लोग आपसे गधा भी छीन लेंगे। आज लकड़ी बेचने में जाऊँगी।”

बूढ़ा मान गया। लड़की लकड़ी गधे पर लादे बाज़ार पहुँची। मोटा जमींदार आया और पूछने लगा:

“लकड़ी क्या भाव है?”

लड़की ने तीन तंगा माँगे।

मोटा जमींदार बोला:

“‘सारे’ माल का पाँच तंगा दूँगा।”

लड़की बोली:

“आप क्या लकड़ी के बदले में ‘सारा’ एक साथ देंगे?”

“ठीक है, मुझे मजूर है। लकड़ी लेकर मेरे घर आओ।”

जमींदार के घर पहुँचकर लड़की ने लकड़ी जमीन पर डाल दी और पूछने लगी

“आपके गधे को कहाँ बाँधूँ?”

मोटे जमींदार ने उसे जगह बता दी।

लड़की ने गधा बाँधकर लकड़ी की कीमत माँगी।

मोटे जमींदार ने कीमत देने के लिए हाथ लड़की की ओर बढ़ाया ही था कि उसने फट से जमींदार का हाथ पकड़ लिया और कहने लगी:

“जब हमने सौदा तय किया था, तो आपने कहा था कि आप लकड़ी के बदले में ‘सारा’ एक साथ देंगे। अब मैं ऐसे आपके हाथ सहित लूँगी।”

उनमें बहस होने लगी। शोरगुल सुनकर पड़ोसी दौड़े आये और उन दोनों को लेकर क्राजी के पास पहुँचे।

क्राजी ने बहुत घुमा-फिराकर बात की, मोटे जमींदार को बचाने के लिए हजारों चाले चलीं, पर लड़की अपनी बात पर अड़ी ही रही।

लोग चिल्लाने लगे:

“लड़की सच कहती है! लड़की चतुर है!”

क्राजी ने काफ़ी देर सोचकर फ़ैसला किया:

“तुम अपना हाथ उसे दे दो।”

मोटा जमींदार रोने-चिल्लाने लगा:

“मैं बिना हाथ के जिंदा कैसे रहूँगा।”

“अच्छा, तो फिर हाथ के बदले में ५० अशरफ़ियाँ दो।”

मोटे जमींदार को गिनकर पचास अशरफ़ियाँ लड़की को देनी पड़ीं।

मोटे जमींदार से रहा नहीं गया और वह बोल उठा:

“अच्छा, आओ हम दोनों शर्त लगाते हैं। जो झूठ बोलने में बेहतर साबित होगा, हारनेवाला उसे पचास अशरफ़ियाँ और देगा।”

“ठीक है,” लड़की बोली, “पर जमींदार साहब, आप मुझसे उम्र में बड़े हैं इस लिए आप ही शुरू कीजिये।”

मोटा जमींदार आराम से बैठ गया, छाँसा और बोलने लगा “एक बार मैंने गेहूँ बोया। उस बार मेरी फसल इतनी अच्छी हुई कि जो भी मेरे खेत में ऊँट या घोड़े पर चढ़कर घुसता, तो दस दिन तक बाहर निकलने का रास्ता नहीं ढूँढ़ पाता। एक बार मेरे खेत में चालीस बकरे घुस आये और खो गये। जब गेहूँ पक गया, तो मैंने फसल काटने के लिए मजदूर लगाये। गेहूँ काटा गया, गाह लिया गया, पर बक़रों का कोई निशान भी नहीं मिला। एक बार मैंने अपनी पत्नी को रोटी पकाने के लिए कहा और खुद बैठकर कुरान पढ़ने लगा। जब रोटी पक गयी, तो मैंने एक टुकड़ा तोड़ा और खाने लगा। अचानक मेरे दाँतों के बीच में से ‘मे-मे’

की आवाज आयी। फिर मेरे मुंह में से एक बकरा निकलकर भागा और उसके बाद एक-एक करके बाकी बचे ३६ बकरे भी भाग निकले। बकरे इतने मोटे हो गये थे कि हर बकरा चार साल के साँड़ जैसा दिखाई देता था।”

लड़की ने ताली पीटी और हँसकर बोली :

“बहुत अच्छे ! आपने तो एक सच्चा किस्सा सुनाया। ऐसी घटनाएं तो दुनिया में रोजाना होती रहती हैं। अब आप मेरा किस्सा सुनिये। एक बार मैंने गाँव के बीचोबीच ज़मीन खोदी और उसमें कपास का सिर्फ़ एक बीज बो दिया। आपके ख़याल से क्या पैदा हुआ ? एक बहुत ही बड़ा पेड़, जिस की छाया गाँव के चारों ओर एक दिन के सफ़र के बराबर दूरी तक पड़ती थी। जब कपास पक गयी, तो मैंने उसको चुनने के लिए पाँच सौ हट्टी-कट्टी, फुर्तीली औरते लगायीं। साफ़ की हुई कपास बेचकर मैंने चालीस बड़े ऊँट खरीदे और उन पर कीमती कपड़ों के थान लादकर अपने दो भाइयों के साथ बुखारा भेजा। तीन साल से मुझे उनकी कोई ख़बर नहीं थी। अभी कुछ दिन पहले ही मुझे उनके मारे जाने का बुरा समाचार मिला है। अब आप लोग ही फ़ैसला करें,” उसने आस-पास खड़े लोगों से चिल्लाकर कहा। “इस मोटे ज़मींदार ने मेरे मंझले भाई का लबादा पहन रखा है, जिसे पहनकर वह बुखारा गया था। यानी, इसी ज़मींदार ने ही मेरे भाइयों की हत्या करके उनकी सारी चीज़ें और सारे ऊँट हथिया लिये !”

मोटा ज़मींदार दुविधा में पड़ गया। अगर वह लड़की की कहानी सच माने, तो उस पर हत्या का मुक़दमा चलाया जायेगा और उसका सिर काट दिया जायेगा, और अगर कहे कि उसकी बात झूठी है, तो शर्त के अनुसार उसे ५० अशरफ़ियाँ देनी होंगी।

उसने काफ़ी देर सोच-समझ लेने के बाद गिनकर पचास अशरफ़ियाँ लड़की को दे दीं, और बोला :

“मैं अपने जीवन में पहली बार बेवकूफ़ बना हूँ।”

और लड़की अपना ऊँट, घोड़ा और गध़ा लेकर हँसी-खुशी अपने पिता के पास चली गयी।





# ताहिर और जोहरा



पता नहीं सच है या भूठ, पर लोग कहते हैं कि बहुत समय पहले एक बादशाह राज करता था। उसके कोई सतान न थी।

एक बार जब वह उदास बैठा था, तो बड़ा वजीर उसके पास आया और पूछने लगा:

“सर्वशक्तिमान बादशाह, आपको क्या दुःख है? आपके पास धन-दौलत की कमी नहीं है, आपके सारे शहर और गाँव खुशहाल हैं, सब आपके अधीन हैं—फिर आपको क्या दुःख है?”

बादशाह बोला:

“मेरे बादशाह होने और मेरे पास धन-दौलत होने से क्या फायदा, मरना तो मुझे निःसंतान ही पड़ेगा।”

एक ठंडी साँस लेकर वजीर ने भी कहा कि उसके भी कोई संतान नहीं है। वे दोनों एक दूसरे को अपना दुखड़ा सुनाते रहे और अंत में दोनों ने ही यात्रा पर जाने का निश्चय किया।

कई दिनों की लंबी यात्रा के बाद वे एक बहुत खूबसूरत बाग के पास पहुँचे। वे दोनों काफी समय तक वीवार के सहारे भटकते रहे, पर उन्हें अंदर घुसने का रास्ता कहीं नहीं दिखाई दिया।

उस बाग में गुलाब के फूल खिले थे, बुलबुलें गा रही थीं, तरह-तरह के पौधों और फूलों की खुशबू चारों ओर महक रही थी। पेड़ों की छाया में घास के ऊपर मुलायम कालीन बिछे हुए थे और गुदगुदे तकिये लगे हुए थे। बाग ऐसा था कि उसमें घुसते ही आदमी अपना सारा दुःख-दर्द और चिंताएं भूल जाता।

अंत में उन्हें अंदर जाने का रास्ता दिखाई दिया और वे जाकर कालीन पर बैठ गये। अचानक एक सफेद दाढ़ीवाला फकीर बनावत का सफेद चोगा पहने उनके पास आया और पूछने लगा:

“बेटो, तुम्हें यहाँ किस काम से आना हुआ?”

बादशाह और वजीर उठ खड़े हुए और सिर नवाकर फकीर को सलाम किया।

आँखों ही आँखों में एक दूसरे से सलाह करके वे दोनों बताने लगे कि उनके कोई सतान नहीं है, इस लिए दुनिया के सारे सुख छोड़कर वे लोग सफ़र पर निकल पड़े हैं।

फकीर ने उनकी सारी राम-कहानी सुनी और फिर अपने चोगे में से दो लाल सेब निकालकर एक बादशाह को दिया, दूसरा वजीर को और बोला:

“मेरे बच्चो, ये फल लो! इन्हें तुम दोनों अपनी-अपनी सबसे प्यारी पत्नी के साथ खाना। जाओ और अपना काम करो, ईमानदारी से रहो, न्यायपूर्वक राज करो अपने देश

का खयाल रखना, प्रजा को दुःख मत देना। मेरी एक शर्त और है - तुममें से जिसके भी बेटा पैदा हो, वह उसका नाम ताहिर रखे और जिसके बेटी हो, वह उसका नाम जोहरा रखे। उन्हें बचपन में कभी अलग मत करना और जब बड़े हो जाये, तो उनकी शादी कर देना। इस बात को कभी मत भूलना।”

यह कहकर फकीर चला गया। वजीर और बादशाह आश्चर्यचकित होकर एक दूसरे को देखते रह गये और फिर दोनों बोले:

“जैसा फकीर ने चाहा है, वैसा ही होगा!”

अपने घर लौटकर दोनों ने जैसा फकीर ने कहा था, वैसा ही किया। एक दिन के बाद दूसरा और एक महीने के बाद दूसरा बीतने लगे। दोनों की पत्नियाँ गर्भवती हुईं। बादशाह और वजीर खुशी के मारे फूले न समाते, रात भर जागते रहते। वे बड़ी उत्सुकता से अपनी पहली संतान के जन्म की प्रतीक्षा करने लगे। एक बार वे दोनों शिकार करने निकले।

तीन दिन बाद वजीर की पत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया और बादशाह की पत्नी ने एक पुत्री को। एक हरकारा खुशखबरी सुनाने उनके पास भेजा गया।

“जहाँपनाह, मुझे इनाम दीजिये। आपकी पत्नी ने एक बेटी को जन्म दिया है!” हरकारे ने कहा।

फिर वह वजीर से बोला:

“और आप भी इनाम दीजिये। आपके बेटा पैदा हुआ है!”

बादशाह गुस्सा हो उठा। वह तो बेटा पैदा होने के सपने देख रहा था। गुस्से से पागल होकर उसने हरकारे के सामने एक सफ़ेद रुमाल फेंका और चिल्लाया।

“लड़की को फौरन जान से मार डालो और यह रुमाल उसके खून में भिगोकर, वापस लेकर आओ।”

और वजीर खुशी के मारे हवा में उड़ता हुआ-सा अपने घोड़े पर घर की ओर दौड़ा। ठीक घर के सामने ही उसके घोड़े को ठोकर लगी, वजीर सिर के बल पत्थर पर गिरा और वहीं मर गया।

वजीर की पत्नी के बुरे दिन आ गये। बेटा अपने पिता को कभी न देख पाया। माँ ने बड़ी कठिनाइयों का सामना करते हुए रोते-धोते किसी तरह अपने बेटे का पालन-पोषण किया। दिन बीतने लगे। लड़का बड़ा हुआ और घर के बाहर खेलने जाने लगा। एक दिन बादशाह ने उसे देख लिया।

“यह किसका लड़का है?” उसने अपने नये वजीर से पूछा। वजीर सिर झुकाकर बोला।

“जहाँपनाह, यह आपके स्वर्गीय वजीर का लड़का है। इसका नाम ताहिर है। अगर आपकी बेटी ज़िंदा होती, तो आज वह भी इतनी ही बड़ी होती।”

यह सुनकर बादशाह बड़ा पछताया और अपना माथा ठोक लिया।

“मैं कितना बदकिस्मत हूँ! मैंने क्यों उसे मार डालने का हुक्म दिया।” यह कहकर वह फूट-फूटकर रोने लगा।

वज़ीर ने बादशाह से कुछ नहीं कहा, पर उसी दिन वह ज़नानखाने में गया और वहाँ की एक नौकरानी को बुलाकर पूछा :

“बादशाह की लड़की का क्या हुआ?”

“आप बादशाह को कुछ मत बताइये,” नौकरानी बोली, “उनकी बेटी ज़िंदा है। वह अब बड़ी हो गयी है और खूबसूरत भी।”

वज़ीर भागा-भागा बादशाह के पास आया।

“जहाँपनाह, अगर मेरी जान बख़्शी जाये, तो मैं आपको एक खुशख़बरी दूँ।”

“बोलो!” बादशाह ने जवाब दिया।

“मेरे हुज़ूर, आप दुःखी न हों, आपकी बेटी ज़िंदा है।”

बादशाह बड़ा खुश हुआ और बोला :

“उसे फ़ौरन मेरे पास लेकर आओ!”

लड़की को तुरत बादशाह के पास लाया गया। बादशाह ने बेटी को सीने से लगा लिया और चालीस दिन और चालीस रात तक सब लोगों को दावत खिलाई।

इस बीच ताहिर बड़ा होता रहा। उसे दीन-दुनिया की कोई ख़बर न थी। एक बार वह आंगन में खेल रहा था। खेलते-खेलते उसने अपना डंडा उछाला और वह घूप में बैठी सूत कात-ती हुई बुढ़िया के चरखे में जा फंसा। बुढ़िया गुस्सा होकर बोली :

“अरे, बिनबाप के ताहिर! मेरे साथ खेलने से तो अच्छा होता कि तू अपनी मंगेतर जोहरा के साथ जाकर खेलता।”

ताहिर ने भागकर बुढ़िया का हाथ पकड़ लिया,

“दादी, आपने जोहरा का नाम लिया, वह कौन है?”

“अरे, अनाथ, मेरा हाथ छोड़ दे! हाथ छोड़, मैं बताती हूँ!”

“मेरी प्यारी दादी, बताओ ना।” ताहिर बुढ़िया को मनाने लगा।

“तू अपनी माँ से पूछ!”

ताहिर ने माँ के पास जाकर पूछा :

“मेरी मंगेतर कौन है? सच-सच बताओ!”

“हालाँकि तुझे बताना नहीं चाहिए था, पर अब मैं क्या करूँ, बता ही दूंगी।”

और माँ ने उसे सारी कहानी सुना दी कि किस तरह ताहिर के पिता और बादशाह बहुत दिनों तक निःसतान रहे। कैसे उन्होंने एक दूसरे के यहाँ बेटा और बेटी पैदा होने पर उनकी आपस में शादी कर देने का वायदा किया और कैसे ताहिर के पिता उसके पैदा होने के दिन ही घोड़े से गिरकर सिर फट जाने से मर गये।

“अब तुझे जोहरा कभी नहीं मिल सकेगी,” माँ बोली। “वह शहज़ादी है और तू अब एक अनाथ और गरीब लड़का है।”

“कोई बात नहीं, माँ, मैं बस यही जानना चाहता था।”

और उसी दिन से ताहिर जोहरा के साथ खेलने लगा।



दिन बीतते रहे। दोनों बड़े हुए और पढ़ने जाने लगे। पर पढ़ने के बजाय ताहिर सारे समय जोहरा से ही बात करता रहता।

शिक्षक ने जाकर बादशाह से शिकायत की:

“जहाँपनाह, क्या करूँ? ताहिर आपकी बेटी जोहरा को पढ़ने ही नहीं देता है।”

बादशाह बहुत गुस्सा हुआ और उसने हुक्म दिया:

“उन दोनों के बीच में एक दीवार खड़ी कर दो!”

शिक्षक ने बादशाह के हुक्म के अनुसार दीवार खड़ी कर दी। पर उसी दिन ताहिर ने खेदार में एक छेद कर दिया और जोहरा से फिर बातें करने लगा।

ताहिर और जोहरा एक दूसरे के बिना एक दिन भी न रह पाते थे। और जब वे बड़े हुए, तो दोनों के दिलों में प्यार की लौ भड़क उठी।

जब बादशाह को इस बात का पता चला, तो वह आग-बबूला हो गया। उसने कारीगरों को बुलाकर हुक्म दिया:

“एक संदूक बनाओ! और उस संदूक में ताहिर को बंद करके नदी में बहा दो!”

जोहरा को जब बादशाह के हुक्म का पता चला, तो वह एक थाल में सोना भरकर कारीगरों के पास आयी और आँखों में आँसू भरकर उन्हें मनाने लगी।

“यह सोना ले लो! कम लगे—और मांग लेना! पर संदूक इतना मजबूत बनाना कि उसमें पानी न जा सके और इतना बड़ा बनाना कि ताहिर साँस ले सके! कम-से-कम कुछ दिन तो बेचारा अनाथ जिंदा रह सके!”

कारीगरों को जोहरा पर दया आयी और वे उसे दिलासा दिलाने लगे।

“अगर संदूक उससे अच्छा नहीं बना, जैसा कि आप चाहती हैं, तो हम सारा सोना आपको वापस लौटा देगे।”

और वे वैसा ही संदूक बनाने लगे। थोड़े दिनों में उन्होंने बादशाह को खबर भिजवायी कि संदूक तैयार है। अपना चेहरा ढककर, जोहरा संदूक देखने आयी। और वास्तव में संदूक जैसा उसने चाहा था, उससे भी ज्यादा अच्छा और मजबूत बना था।

दूसरे दिन बादशाह ने सारे देश में मुनादो करवाकर शहरों और गाँवों के लोगों को बुलवाया। जब सब लोग इकट्ठे हो गये, तो बादशाह महल में से निकला और बोला:

“हमने ताहिर को मौत की सजा सुनायी है! आज उसे संदूक में बन्द करके नदी में फेंक दिया जायेगा। नदी जहाँ चाहे उसे बहा ले जाये!”

लोगों को ताहिर पर बड़ी दया आयी, पर किसी ने चूँ भी न की, क्योंकि सभी निर्दयी बादशाह से डरते थे।

मर्द और औरतें, बूढ़े और बच्चे—सभी नदी के किनारे जमा हो गये। मुसीबत की मारी ताहिर की माँ भी आयी। वह किनारे की रेत पर गिर गयी और उसकी आँखों से आँसुओं की धारें बहने लगी।

लोग घबरा उठे, भीड़ में से कुछ लोग चिल्लाने लगे:

“माँ की हाथ बादशाह को लगे!”

“आज तक किसी आदमी को किसी औरत से प्यार करने के लिए मौत की सजा नहीं दी गयी!”

“बादशाह का यह जुल्म कभी माफ़ नहीं किया जायेगा!”

अचानक मुनादी करनेवाले की आवाज गूँजी कि जल्लाद ताहिर को ला रहे हैं।

चीख-पुकार बढ़ हो गयी, लड़के को देखकर लोग बेजबान हो गये। सिर्फ़ अभागी माँ की दर्दभरी आवाज सुनाई पड़ी:

“मुझे कम-से-कम आखिरी बार तो अपने बेटे को देख लेने दो!”

हाथ-पैर बँधे हुए ताहिर को माँ के पास लाया गया। माँ ने आंसू बहाते हुए अपने बेटे को गले लगाया, उसके पैरों से लिपट गयी और एक चीख मारकर वहीं मर गयी।

भीड़ में से रोने-चिल्लाने की आवाजें आने लगीं। जल्लादों ने ताहिर को पकड़कर जल्दी से सन्दूक में बंद कर दिया। अपनी प्यारी जोहरा को वह चिल्लाकर बस इतना ही कह पाया:

“अगर मैं जिंदा रहा, तो तुम्हें प्यार करता रहूँगा! अगर मर गया, तो भी तुम्हें प्यार करता रहूँगा!”

जोहरा भी जवाब में केवल इतना ही कह पायी:

“मैं भी तुम्हे कभी नहीं भूलूँगी!”

उसी वक़्त सन्दूक बन्द करके नदी में बहा दिया गया।

सन्दूक कई दिनों तक नदी में बहता रहा। दिन के बाद रात आयी और रात के बाद दिन।

अंत में वह सन्दूक ख्वायज़म नाम के शहर के किनारे आ लगा।

ख्वायज़म के बादशाह की दो बेटियाँ थीं। उस दिन वे अपनी दासियों के साथ नदी में नहाने आयी थीं। उन्होंने सन्दूक को नदी में बहते देख लिया।

सन्दूक किनारे के और नज़दीक आ गया था। बादशाह की बड़ी बेटी ने पानी में घुसकर अपनी चोटियों में सन्दूक को बाँधने की कोशिश की, पर वह उसे बाँध नहीं पायी। उसके पीछे बादशाह की छोटी बेटी नदी में घुसी और अपनी लम्बी चोटियों में सन्दूक को बाँधकर किनारे पर घसीट लायी।

दोनों बहनों में बहस होने लगी कि अकस्मात् पायी हुई चीज़ किसे मिले।

काफ़ी देर तक बहस करने के बाद उन्होंने फ़ैसला किया कि बड़ी बहन सन्दूक लेगी और छोटी बहन उसमें रखी हुई चीज़ें।

उन्होंने सन्दूक खोला, तो इतने सुंदर युवक को उसमें पाया, जिसकी सुंदरता के आगे सूरज भी पानी भरता था। उसके घुंघराले बाल कंधों पर गिर रहे थे, भौंहे कमान की तरह तनी थीं और आँखें अंगारों की तरह चमक रही थीं। ऐसे सुंदर युवक को देखकर तो हर बादशाह की बेटी मर मिटती।

उसको देखकर दोनों बहनों में फिर बहस होने लगी:

“यह मेरा होगा!”

“नहीं, मेरा!”

छोटी बहन बोली:

“नहीं, क्योंकि यह संदूक के अन्दर था, यानी मेरा हुआ! मैं इसे किसी को भी नहीं दूंगी!”

इसी बीच नौकरानियाँ भागी-भागी बादशाह के पास पहुँची और उसे सारा किस्सा सुनाया।

“हुजूर, आपकी बेटियों को नदी में एक संदूक बहता हुआ मिला है। उस संदूक से एक इतना खूबसूरत लड़का निकला, जिसकी खूबसूरती के आगे सूरज भी फीका लगता है! आपकी छोटी बेटा उसके साथ शादी करना चाहती है। आपको उससे बेहतर दामाद कभी नहीं मिलेगा!”

बादशाह ने खुशखबरी के लिए अपने बकादार नौकरों को इनाम दिये और अपने बजीर के साथ भागा-भागा नदी के किनारे पहुँचा। उसने देखा, लड़का तो जितना बताया गया था, उससे भी ज्यादा सुंदर है। बादशाह ने ताहिर का अपने सगे बेटे की तरह स्वागत किया और कुछ दिनों बाद उसकी शादी अपनी छोटी लड़की के साथ कर दी। शादी की दाबत चालीस दिन और चालीस रात तक चली।

बादशाह की बेटा जोहरा से भी ज्यादा खूबसूरत थी। पर ताहिर अपनी मंगेतर को दिया हुआ वचन भूला नहीं था। उसे शाहजादी की खूबसूरती देखने की भी इच्छा नहीं हुई। वह उससे एक शब्द भी नहीं बोला।

बेचारी शाहजादी रात भर रोती रहती और बार-बार अपने से पूछती रहती:

“वह क्यों मुझे प्यार नहीं करता है? क्यों मुझसे एक शब्द भी नहीं कहता है?”

उसने ताहिर से पूछताछ करने की कोशिश भी की, पर ताहिर ने उसे कोई जवाब नहीं दिया।

इस तरह चालीस दिन बीत गये। इकतालीसवें दिन ताहिर शाहजादी से बोला:

“आप पिताजी से कह दीजिये कि मैं नदी के किनारे जाना चाहता हूँ।”

शाहजादी ने अपने पिता के पास दौड़कर खुशखबरी पहुँचाई, “ताहिर बोलने लगा। वह नदी के किनारे जाकर बैठना चाहता है!”

यह खबर सुनकर बादशाह बड़ा खुश हुआ। उसने नदी के किनारे जशन मनाने का हुक्म दिया। जशन में बहुत-से लोग आये। नदी के किनारे एक ऊँची जगह पर ताहिर के लिए मुलायम कालीन बिछवा दिये गये, तरह-तरह के पकवान परोसे गये।

थोड़ी देर बाद ताहिर वहाँ पहुँचा। उसके चेहरे पर उदासी छाई थी।

“जो भी सबसे पहले मेरे दामाद को हँसते हुए देखेगा, उसे मैं सिर से पैर तक सोने से ढक दूँगा!” बादशाह ने एलान कराया और अपने बजीरों के साथ महल वापस आ गया।

पर ताहिर उदास हुआ बैठा, खोयी-खोयी आँखों से नदी को ही देखता रहा।

उसे वहाँ बैठा छोड़कर अब जोहरा का हाल सुनिये।

ताहिर से जुदाई के बाद जोहरा रात-दिन उसकी याद में तड़पती रहती थी। कुछ दिनों



बाद उसके निर्दयी पिता ने एक बादशाह के बेटे कारा बातिर के साथ उसकी शादी कर दी। इसी दिन से जोहरा की जिंदगी में ग़म के बलावा और कुछ न रहा।

दिन बीतते गये। एक बार जोहरा को एक सपना दिखाई दिया।

सपने में जोहरा को लगा जैसे वह ताहिर के साथ एक खूबसूरत बाग़ में घूम रही है। जोहरा की नींद खुल गयी और वह फूट-फूटकर रो पड़ी।

“क्या मेरा प्रियतम जिंदा है? काश, कोई उसकी खबर लाकर मुझे देता!” सोचते-सोचते उसका दिल दुखी हो उठा।

दूसरे दिन जोहरा एक थाल पूरा सोने से भरकर सराय में पहुँची। सोना उसने कारवां के सरदार को दिया और उसकी मिन्नत करने लगी:

“आप तो सारी दुनिया में घूमते हैं, हर तरह के लोगों से मिलते हैं। आप ताहिर को ढूँढ़कर, उसकी खबर लाकर मुझे दीजिये! या कम-से-कम यही पता लगाइये कि वह जिंदा है या नहीं!”

“ठीक है!” सरदार मान गया। और वह अपने ऊंट पर सवार होकर ताहिर को ढूँढ़ने निकल पड़ा।

वह कई दिनों तक गाँव-गाँव, शहर-शहर में जाकर ताहिर को ढूँढ़ता रहा, पर उसे वह कहीं नहीं मिला।

एक दिन सरदार नदी के किनारे पहुँचा। उसने वहाँ एक खूबसूरत नौजवान को उदास बैठे देखा। उसके चारों ओर लोग सुशियाँ मना रहे थे।

“मैं एक गीत गाकर देखता हूँ! शायद, यही ताहिर हो,” सरदार ने अपने मन में सोचा और गाने लगा:

मैं सरदार कारवां का  
भटकता देश देश,  
ढूँढ़ता तुम्हें, ताहिरजान  
तुम कहाँ हो, ताहिरजान?

अपना नाम सुनकर ताहिर मुस्कराया और जवाब में बोला:

ऐ, मेरे कारवां के सरदार!  
कर दो मुखर स्वर फिर से  
वही एक बार।  
तुम्हारे सामने खुद बैठा है ताहिरजान।  
नज़र उठाकर देखो तो एक बार।

यह पता लगाने के लिए कि यह वही ताहिर है या और कोई, सरदार ने अपना गीत फिर छेड़ा

सुनकर नाम जोहरा का,  
गले से कौर उतर नहीं सकता।  
सामने दस्तरखान के ताहिरजान  
खामोश बैठ नहीं सकता।

जैसे ही सरदार ने जोहरा का नाम लेकर गीत गाया, ताहिर उठकर भागा और उसके ऊँट की गर्दन से लिपट गया और आँखों में आंसू भरकर मिश्रित करने लगा :

“मुझे जोहरा के पास से चलो। मैं उसे कम-से-कम एक बार तो देख लूँ!”

“जोहरा की शादी क़ारा बातिर के साथ कर दी गयी है,” सरदार ने जवाब दिया।  
“अब आपको उसे देखने से क्या फ़ायदा? और आप भी इतने दिन यहाँ रह चुके हैं, शायद, आपकी भी शादी हो गयी है। आप जाकर क्या करेंगे? बेहतर होगा, आप यहीं रहें! मुझे सिर्फ़ इतना मालूम करना था कि आप ज़िंदा हैं या नहीं।”

“यहाँ मेरी शादी बादशाह की बेटी के साथ कर दी गरी!” ताहिर ने जवाब दिया।  
“मेरी शादी हुए चालीस दिन हो चुके हैं, पर मैं एक बार भी अपनी पत्नी से न ही बोला हूँ, न ही मैंने उसकी ओर नज़र उठाकर देखा है। मुझे जोहरा के पास ले चलो।”

सरदार मान गया :

“ठीक है, मैं आपको ले चलता हूँ। पर पहले जाकर अपनी पत्नी से विदा लेकर आइये। आखिर, वह आपको प्यार करती है, इसी लिए तो उसने आपसे शादी की है। उसका दिल नहीं दुखाना चाहिए।”

ताहिर महल में पहुँचा और एक पैर देहरी के अन्दर और दूसरा बाहर रखे-रखे ही बोला :

“ऐ, शाहज़ादी! आपका बहुत-बहुत शुक्रिया, पर आज मुझे जोहरा की खबर मिली है और मैं अभी उसके पास जाना चाहता हूँ।”

शाहज़ादी ने पूछा :

“क्या नदी आपको मेरे पास बहाकर नहीं लायी थी? क्या इतनी दूर रहनेवाली जोहरा मुझसे ज्यादा सुंदर है?”

“इसमें कोई शक नहीं कि नदी मुझे बहाकर आपके पास लायी थी। आप बहुत सुन्दर हैं, पर जोहरा दूर रहकर भी मेरे दिल के ज्यादा करीब है!” ताहिर ने कहा और सिर झुकाकर वहाँ से निकल आया।

\* कारवाँ के सरदार के साथ ऊँट पर सवार होकर वे दोनों उसी वक्त वहाँ से चल दिये।

काफी देर तक चलते रहने के बाद वे ऐसी जगह पहुँचे, जहाँ रास्ता तीन दिशाओं में बंटता था। एक बड़ा पत्थर उनका रास्ता रोके हुआ था। उस पत्थर पर लिखा था, “दायीं

ओरवाले रास्ते पर जानेवाला वापस नहीं लौटेगा, बायीं ओर जानेवाले रास्ते का अंत नहीं है, सीधा जानेवाला रास्ता खतरनाक है।” सरदार सोचने लगा: “कौन-सा रास्ता चुनू?”

“सीधे जानेवाले रास्ते पर चलते हैं,” ताहिर बोला। “हालांकि यह रास्ता खतरनाक है, पर सीधे रास्ते से हम जोहरा के पास ज्यादा जल्दी पहुँच सकेंगे।”

और वे सीधे जानेवाले रास्ते पर चल पड़े। उनके रास्ते में एक शहर पड़ा। उस शहर के लोग थोड़ी देर पहले हिरासत से भागे हुए दो चोरों को बूढ़ रहे थे। ताहिर और कारवाँ के सरदार को देखते ही उन्होंने समझा ये ही वे चोर हैं और उन्हें बाँधकर काल-कोठरी में डाल दिया।

काल-कोठरी में बंद ताहिर रात-दिन तड़पता रहा। उसकी प्यारी जोहरा अब ज्यादा दूर नहीं थी, पर मजबूत दीवारें और लोहे के दरवाजे पार करके वह किस तरह उसके पास पहुँचता। सोचते-सोचते ताहिर को एक चाल सूझी: “मैं इस तरह गाऊँगा कि लोग मेरी आवाज़ सुन लें। शायद, कोई मुझे पहचान ले और मुझे क़ैद से छुटकारा दिला दे!”

और उसने गाना शुरू कर दिया:

रवि-शशि की बाँहे थामे  
मैं तुझसे मिलने आता था।  
लेकिन भाग्य ने उल्टा खेल खिलाया  
काल-कोठरी में जा पहुँचाया।  
बिन ताहिर के जोहरा तड़पे,  
इधर मैं भी तड़प रहा हूँ, हाय!\*

वह यही गीत रोज़ाना गाता रहा। एक दिन उसका गीत एक सौदागर को सुनाई पड़ा, जो बचपन में ताहिर के साथ एक ही शिक्षक के पास पढ़ने जाता था।

“अरे, यह तो ताहिर है!” सौदागर ने कहा। “जोहरा को इतने सालों तक न भूलनेवाला और कौन हो सकता है?!”

सौदागर पहरेदारों के पास पहुँचा और उन्हें अंजलि भर सोना देकर बोला:

“ताहिर को छोड़ दो! वह बेक्रसूर है। वह तो सिर्फ़ अपने प्यार के लिए जिंदा है।”

पहरेदारों ने ताहिर और कारवाँ के सरदार को छोड़ दिया और उनका ऊंट उन्हें वापस दे दिया। सौदागर का शुक्रिया अदा करके ताहिर उससे विदा हुआ और आगे चला।

काफ़ी लम्बे सफ़र के बाद एक दिन सुबह वे अपने शहर आ पहुँचे। सराय के पास पहुँचकर ताहिर अपने साथी से विदा हुआ और अकेला ही महल की ओर चल पड़ा।

---

\* पद्यानुवाद — मज़र सलीम।



बाग में घुसकर ताहिर जोहरा को ढूँढ़ने लगा। वह एक बेशकीमती कालीन पर गहरी नींद सोयी हुई थी। उसे जगाने के लिए ताहिर ने धीरे-से गीत छेड़ा :

जागो, जागो, कब से जगा रहा हूँ, जोहरा प्यारी !  
राह निहारते अंखिया धक गयीं, जोहरा प्यारी !  
सोयी कब से, जागो भी अब, जोहरा प्यारी !  
उठकर जल्दी गले लगा लो,  
जोहरा प्यारी !

जोहरा ने अपने प्रियतम की आवाज सुनी तो उसकी नींद खुल गयी और वह खुशी से भूम उठी। वह उठकर आँखों में आँसू भरे मुस्कराती हुई ताहिर से लिपट गयी। और इसी तरह एक दूसरे की बाँहों में बंधे हुए वे बाग के अन्दर चले गये।

एक दूसरे के साथ बातें करते-करते, एक दूसरे को निहारते वे बिलकुल भी नहीं थके। और उन अभागों को यह भी पता नहीं चला कि क़ारा बातिर की बहन ने उन्हें देख लिया है। वह अपने भाई के पास दौड़ी और बोली :

“ताहिर आ पहुँचा है।”

गुस्से में पागल क़ारा बातिर बादशाह के पास भागा और उसने सारा किस्सा उसे सुनाया। बादशाह ने अपने सिपाहियों को बाग में भेजा। उन्होंने ताहिर को पकड़कर एक गढ़े में फेंक दिया, जिसमें घुटनों तक कीचड़ था और ऊपर से पानी गिर रहा था।

दूसरे दिन बादशाह ने अपने दख्खीरों और सलाहकारों को बुलाया। काफी समय सोचने-विचारने के बाद उन्होंने फ़ैसला किया कि ताहिर के दो टुकड़े करके शहर के दरवाज़ों पर लटका दिये जायें।

मुनादी करनेवालों ने शहर में एलान करके लोगों को मृत्यु-दंड का नज़ारा देखने के लिए बुलाया। लोग भागकर शहर के मैदानों में इकट्ठे होने लगे। जोहरा भी आयी। सबको ताहिर के साथ सहानुभूति थी और बादशाह की निर्दयता पर गुस्सा आ रहा था।

“ताहिर वापस क्यों लौटकर आया?” कुछ लोग कहने लगे।

“ताहिर का प्यार उसे वापस खींच लाया,” दूसरों ने जवाब दिया।

“पर क्या इसीलिए बेचारे लड़के को मौत की सज़ा दी जा सकती है? इस खूनी बादशाह का सत्यानाश हो!”

सिपाही ताहिर को लेकर चबूतरे पर आये। जल्लाद ने अपनी तलवार की धार तेज़ की। लोग बादशाह को कोसने लगे, पर कुछ न कर पाये। जोहरा ने भी अपने बेरहम पिता की बहुत आरजू-मिन्नत की, पर वह पत्थरदिल ज़रा भी नहीं पिघला। और जब जोहरा ने ताहिर को जल्लाद के हाथों में देखा, तो उसकी आँखों के आगे अंधेरा छा गया और वह बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ी।

जल्लाद ने तलवार के वार से ताहिर के दो टुकड़े कर डाले।

लोग चीख उठे, चारों ओर से आहें और सिसकियां सुनाई देने लगीं। एक बुढ़िया भीड़ में से निकलकर आयी और गुस्सेभरे स्वर में बादशाह से बोली :

जालिम शहंशाह, तेरे तख्त से टपकता है  
जैसे किसी जल्लाद की तलवार से खून  
टपकता है।

मौत के घाट उतार दिया तुमने भले  
ही ताहिर को,  
बाल बांका भी नहीं कर पाओगे  
उसकी मुहब्बत को।

इसी बीच जल्लादों ने ताहिर के शरीर के दोनों टुकड़े शहर के दरवाजों पर लटका दिये।  
तब जोहरा ने सिर उठाया और अपनी आह रोककर बोली :

जालिम शहंशाह, जब तक भू पे  
क्राबिज तू रहेगा  
धरती पर इसाफ का निशान भी  
बाकी न रहेगा।  
न कभी सूरज आसमां पे रोशन होगा,  
न कभी पहाड़ों पर बर्फबारी का दामन होगा।  
सुनो, सुनो, लगी हैं ऊंटों की कतारें  
गूँज रहीं शहर की सारी दीवारें।  
गोश्त ताहिर का हो रहा नीलाम  
अब्बा-क़साई बोलियां लगाते-लगाते सरे-आम।

और बादशाह उसे कुछ भी जवाब न दे पाया।

ताहिर के मरने के बाद जोहरा ने काले कपड़े पहन लिये, चेहरे पर परदा डाल लिया  
और चालीस दिन और चालीस रात अपने प्रियतम के मरने का शोक मनाती रही।

इकतालीसवें दिन जोहरा ने बादशाह से ताहिर की कब्र पर जाने की इजाजत मांगी।  
बादशाह ने इजाजत दे दी, पर उसके साथ कई नौकरानियां लगा दी। तब जोहरा ने अपने  
रूमाल में बहुत-से मोती बांधे और एक कटार लेकर चल पड़ी।

महल से बाहर निकलते ही जोहरा ने रास्ते में मोती बिखेरने शुरू कर दिये। मोती देखकर  
दासियां रुक-रुककर उन्हें उठाने लगीं।

जोहरा उनसे दूर होती गयी। जब वे सब आंखों से ओझल हो गयीं, तो ताहिर की कब्र  
बहुत कम दूरी पर रह गयी थी। जोहरा ने बाकी बचे मोती फेंके, भागकर, ताहिर की कब्र  
पर पहुँची और अपने दिल में कटार भोंक ली।

दासियां सारे मोती चुनकर कुब पर पहुँचीं। उन्होंने देखा—जोहरा मरी पड़ी है। वे सब फूट-फूटकर रो पड़ीं, पर आँसू बहाने से क्या फायदा? दूसरे दिन जोहरा को ताहिर के पास ही दफनाया गया।

क्रारा बातिर को जब इस बात की खबर मिली, तो वह चिल्लाया—

“नहीं, मरने के बाद भी मैं जोहरा को ताहिर से प्यार नहीं करने दूँगा। मैं परलोक में भी उन्हें चैन से नहीं रहने दूँगा,” और गुस्से में उसने आत्महत्या कर ली।

“मेरा भाई उन्हें अकेले नहीं छोड़ना चाहता था,” क्रारा बातिर की बहन बोली। “उसे ताहिर और जोहरा के बीच में दफनाया जाये!”

“क्या अपनी जिन्दगी में उन्होंने कम कष्ट भेले! क्या मरने के बाद भी उन्हें चैन नहीं मिलेगा? उन्हें चैन से रहने दो, रहम करो!” लोग कहने लगे। पर उनकी एक न सुनी गयी।

जुल्मियों ने क्रारा बातिर को ताहिर और जोहरा के बीच में दफना दिया।

ताहिर की कुब में से लाल गुलाब उगा और जोहरा की कुब में से सफ़ेद गुलाब। उनके बीच में एक कंटोली भाड़ी उग आयी। पर दोनों गुलाब के पौधों की शाखाएँ कंटोली भाड़ी को पार करके एक दूसरे से लिपट गयीं। तब से आज तक वे दोनों हमेशा खिलते आये हैं, बिल्कुल वैसे ही जैसे ही ताहिर और जोहरा का अमर प्रेम...

## जादूई हीरा



बहुत समय पहले एक गांव में एक औरत अपने बेटे के साथ रहती थी।

“बेटे,” माँ ने एक बार कहा। “यह पैसे ले और बाज़ार से रोटी खरीद ला।”

लड़का पैसे लेकर घर से निकला।

चौराहे पर कुछ लड़के एक मरियल-से बिल्ली के बच्चे को सता रहे थे। लड़के को बिल्ली के बच्चे पर दया आयी। वह बोला:

“दोस्तो, बिल्ली का बच्चा मुझे बेच दो!”

“यह लो,” लड़के बोले।

“कितने पैसे दूँ?”

“जितने चाहो।”

“अच्छा, ये लो!”

लड़के ने पैसे दिये और बिल्ली के बच्चे को सीने से चिपटाये घर लौट आया।

“रोटी ले आया, बेटा?” माँ ने पूछा।



“मैं रोटी नहीं, यह बिल्ली का बच्चा ले आया,” बेटे ने जवाब दिया।

“बेटा, तू ने यह क्या किया?”

लड़के ने सारी बात माँ को बताकर कहा:

“कोई बात नहीं, माँ, हम एक दिन बिना रोटी के रह लेंगे।”

दूसरे दिन माँ ने लड़के को कुछ पैसे दिये और कसाई की दुकान से गोشت खरीदकर लाने को कहा।

लड़का पैसे लेकर बाजार जा रहा था कि उसने देखा—कुछ लड़के एक पिल्ले को चारों ओर से घेरकर उस पर पत्थर बरसा रहे हैं। लड़के को उस पर दया आ गयी।

“अरे, भई, मुझे यह पिल्ला बेच दो!”

“ये लो!”

“तुम्हे कितने पैसे दूँ इसके?”

“जितने चाहो।”

“अच्छा, ये लो।”

पिल्ले को लेकर वह लौट आया।

“क्या गोشت ले आया, बेटा?” माँ ने पूछा।

“आप नाराज न होना, आपने जो पैसे दिये थे, मैंने उनसे यह पिल्ला खरीद लिया।”

माँ बड़ी दुःखी हुई। “बेटा, हम गरीब लोग हैं। मैंने किसी तरह गोشت के लिए ये पैसे बचाये थे और तू गोشت के बजाय पिल्ला खरीद लाया। इसकी हमें क्या जरूरत है! इसे खिलाने के लिए हमारे पास क्या है?”

“कोई बात नहीं, माँ, हम एक दिन बिना गोشت के रह लेंगे।”

तीसरे दिन माँ ने बेटे को कुछ और पैसे दिये और उसे बाजार से कुछ चर्बी खरीदने भेजा।

लड़के ने बाजार जाते समय देखा—गली में कुछ लड़के चूहेदानी में फंसे एक चूहे के बच्चे को सता रहे हैं।

“अरे, भई, क्या यह चूहे का बच्चा मुझे बेचोगे?” लड़के ने पूछा।

“जरूर बेचेंगे!”

लड़के ने पैसे दिये और चूहे का बच्चा लेकर घर आ गया।

“क्यों, बेटा, चर्बी ले आया?” माँ ने पूछा।

“मुझे माफ करना, माँ,” लड़के ने जवाब दिया और चूहे के बच्चे को खरीदने का पूरा क्रिस्ता सुना दिया।

माँ बेटे को बहुत प्यार करती थी, इसलिए उसने इस बार भी बेटे को फटकारा नहीं।

दिन बीतने लगे। लड़का जवान हो गया। कुत्ते, बिल्ली और चूहे के बच्चे भी बड़े हो गये।

एक बार लड़के ने नदी में एक मछली पकड़ी। उसने मछली साफ करके अतड़ियां कुत्ते को डाल दीं। कुत्ता उनको चबाने लगा। चबाते-चबाते उसे अपने दांतों के बीच कुछ कठोर-सी चीज महसूस हुई। उसने उगला तो देखा—सूरज की तरह चमकता एक हीरा है।

हीरा देखकर लड़का खुशी से उछल पड़ा। उसे जादूई हीरा अहानरबा मिल गया था। लड़के ने हीरे को हथेली पर रखकर कहा:

“अहानरबा, मुझे खाना खिला!”

उसने यह कहा और आश्चर्य से उसका मुंह फटा रह गया: एक क्षण में ही उसके सामने एक बहुमूल्य दस्तरखान पर तरह-तरह के इतने स्वादिष्ट पकवान आ गये, जितने उसने कभी सपने में भी न देखे थे।

लड़का भागता हुआ अपनी माँ के पास पहुँचा और उसे वह करामाती हीरा दिखाया। माँ बहुत खुश हुई और उस दिन से उन लोगों को किसी चीज़ की तंगी महसूस नहीं हुई।

एक बार लड़के ने शहर में एक बहुत ही सुन्दर लड़की को देखा।

“मैं इससे ही शादी करूँगा!” लड़के ने सोचा और यह बात माँ को भी बता दी।

“अरे, बेटा,” माँ ने कहा, “क्या तुझे मालूम नहीं कि वह बादशाह की बेटी है और हम गरीब लोग हैं। कहाँ बादशाह और कहाँ गरीब। मैं तो उससे शादी की बात भी करने नहीं जाऊँगी!”

“माँ, बस इतना ही कर दो, बस बादशाह से जाकर कह दो,” लड़के ने जिद की।

माँ काफ़ी देर-तक मना करती रही, पर अंत में तैयार हो गयी।

“ठीक है,” माँ बोली, “जाती हूँ। पर यह बात याद रख — बादशाह के महल में जाकर कोई सुख से नहीं रह पाया है।”

वह रात को महल के पास पहुँची और दरवाज़े के सामने का रास्ता साफ़ करके लौट आयी।

अगले दिन जब बादशाह सुबह अपने महल से बाहर निकला, तो उसने देखा कि दरवाज़े के सामने बहुत सफ़ाई है। दूसरे दिन भी उसने देखा फिर उसके दरवाज़े के सामने का रास्ता साफ़-सुथरा है। बादशाह को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने दरवाज़े के बाहर पहरेदार खड़े कर दिये।

तीसरे दिन पहरेदार बुढ़िया को पकड़कर बादशाह के महल में ले आये।

“तुम महल के सामने सफ़ाई क्यों करती हो?” बादशाह ने बुढ़िया से पूछा।

“मैं अपने बेटे का रिश्ता आपकी बेटी से करने आयी हूँ। हम लोग गरीब हैं, इसलिए मैं सीधे आपके पास आने की हिम्मत न कर सकी। वैसे आपके पहरेदार भी मुझे आप तक पहुँचने नहीं देते।”

बादशाह ने गुस्से में औरत को मौत की सज़ा दिये जाने का हुक्म दे दिया, पर उसके दायें हाथ को बैठे वज़ीर ने उसे सलाह दी:

“आप क्यों इस बेचारी औरत को मौत की सज़ा देना चाहते हैं? इससे अच्छा यह होगा कि आप इससे कोई असंभव काम करने को कहें। फिर यह स्वयं ही महल के पास फटकने की हिम्मत नहीं कर सकेगी।”

वज़ीर की सलाह मानकर बादशाह ने औरत से कहा:

“जा, अपने बेटे से कह कि वह मुझे मेरी बेटी के बदले में सोने से लदे चालीस ऊँट दे।”

“इतना सोना हम लायेंगे कहाँ से!...” माँ सोच में पड़ गयी। घर पहुँचकर उसने बादशाह की शर्त बेटे को बतायी।

“फ़िक्र की कोई बात नहीं,” बेटा बोला।

उसने केवल एक बार जादूई हीरे अहानरबा से कहा और सुबह बुढ़िया की भोपड़ी के बाहर सोने से लदे चालीस ऊँट एक क़तार में आ खड़े हुए।

“माँ, अब आप इन ऊँटों को लेकर बादशाह के पास जाइये,” लड़का बोला। माँ ऊँटों को लेकर बादशाह के महल में पहुँची। बादशाह भौचक्का रह गया, पर उसने तुरन्त हुक्म दिया:

“अब अपने बेटे से कहो कि वह अपनी मंगेतर के लिए खालिस सोने का महल बनवाये। इसके बाद ही शादी के बारे में सोचा जा सकेगा।”

माँ बहुत चिंता में पड़ गयी और घर लौटकर उसने बादशाह की नयी शर्त अपने बेटे को बतायी। उसे सुनकर बेटा बोला:

“आप चिन्ता मत कीजिये, खालिस सोने का महल भी बन जायेगा।”

सुबह होते-होते नदी के किनारे खालिस सोने का एक सुंदर महल भी बनकर तैयार हो गया। इतना सुंदर महल दुनिया में किसी ने न देखा था।

माँ बादशाह के पास पहुँची और बोली:

“आपकी बेटी के लिए महल तैयार है। चलकर देख लीजिये!”

बादशाह अपने वज़ीरों के साथ आया। सोने का महल देखकर आश्चर्य के मारे उसका मुँह खुला का खुला रह गया।

अब बादशाह किसी तरह अपने वायदे से मुकर नहीं पाया और उसने अपनी बेटी की शादी बड़ी धूमधाम से उस औरत के बेटे के साथ कर दी।

बादशाह के महल में एक बूढ़ी चुड़ैल रहती थी। उसने यह पता लगाने का निश्चय किया कि एक रात में ही इस लड़के ने किस तरह इतना सुंदर महल बना लिया और वह भी खालिस सोने का।

चुड़ैल शाहजादी के पास आयी और उसे अपने पति से यह भेद उगलवाने के लिए मना लिया।

बादशाह की बेटी भी यह भेद जानने के लिए बड़ी उत्सुक थी। वह अपने पति से पूछने लगी।

लड़के ने उसे सारी बात बता दी।

“मेरे पास जादूई हीरा अहानरबा है। उससे मैं जो भी मांगूँ, मुझे फ़ौरन मिल जाता है।”

“तुम अहानरबा को कहाँ छिपाकर रखते हो?” पत्नी ने पूछा।

“मैं उसे अपने मुँह में जीभ के नीचे रखता हूँ,” लड़के ने बताया।

दूसरे दिन बादशाह की बेटी ने सारी बात चुड़ैल को बता दी।



चुड़ैल रात होने का इंतजार करती रही, जब लड़का गहरी नींद में सो गया, तो उसने उसके मुह में से जादूई हीरा निकाल लिया और बोली:

“ऐ, अहानरबा, शाहजादी सहित सोने के महल को उठाकर बादशाह के महल के पास रख दे! और इस गरीब लड़के को वहीं रहने दे, जहाँ यह पहले रह रहा था।”

पलक झपकते ही शाहजादी और सोने का महल बादशाह के महल के पास पहुँच गये।

लड़के की नींद खुली, तो उसने देखा—महल गायब है और वह अपनी टूटी-फूटी भोंपड़ी में पड़ा है। उसकी माँ उसके पास बैठी रो रही है और बिल्ली, कुत्ता और चूहा एक कोने में उदास बैठे उसकी ओर देख रहे हैं...

“हाय, मैं कितना बदनसीब हूँ!” लड़के ने एक आह भरी। “मेरा जादूई हीरा गायब हो गया। अब मैं क्या करूँ?...”

और वह ज़मीन पर गिरकर फूट-फूटकर रोने लगा।

कुत्ते, बिल्ली और चूहे को अपने मालिक पर बड़ी दया आयी।

“हमें कोई तरकीब सोचनी चाहिए, जिससे जादूई हीरा हमारे मालिक को वापस मिल जाये,” वे तीनों अपने मन में सोचने लगे।

कुत्ता भौंक उठा।

बिल्ली म्याऊँ-म्याऊँ करने लगी।

चूहा चीं-चीं करने लगा।

वे तीनों भोंपड़ी से बाहर भागे और आँखों से ओझल हो गये।

वे बिना दम लिये दिन भर भागते रहे और शाम ढलने तक बादशाह के बाग के पास पहुँचे। उन्होंने देखा दीवार के उस ओर लड़के का बनवाया हुआ सोने का महल चमचमा रहा है।

“हमें किसी तरह महल में घुसना चाहिए!” कुत्ते, बिल्ली और चूहे ने योजना बनायी।

महल के चारों ओर की दीवारें बहुत ऊँची थीं—उन्हें पार करना कठिन था और सारे दरवाजों पर मजबूत ताले लगे थे। क्या किया जाये?

वे लोग दीवार में छेद या दरार ढूँढ़ने लगे।

चूहे ने अपने पंजों से सुरंग खोदना शुरू कर दिया। बिल्ली और कुत्ते ने मिलकर छेद बड़ा किया। इस तरह तीनों ने मिलकर दीवार के आरपार छेद बना लिया।

पहले चूहा सुरंग में घुसा, उसके बाद बिल्ली। और कुत्ता वहीं रुककर पहरा देने लगा।

चूहे और बिल्ली ने सारा महल छान मारा। अन्त में वे एक कमरे में पहुँचे।

वहाँ बादशाह की बेटी सो रही थी और उसके पास ही चुड़ैल बैठी ऊँघ रही थी। चुड़ैल के होंठ बड़ी मजबूती से आपस में जुड़े हुए थे।

चतुर चूहा फौरन समझ गया कि चुड़ैल ने जादूई हीरा अहानरबा अपनी जीभ के नीचे छिपा रखा है। चूहा चुपचाप चुड़ैल के पास पहुँचा और उसने अपनी पूँछ सीधी करके उसकी नोक चुड़ैल की नाक में घुसेड़ दी।

“आक-छी !” चुड़ैल छीकी और उसका मुह मुबते ही अहानग्वा जमीन पर गिरा। बिल्ली फौरन उसे अपने मुह में दबाकर वहाँ से भाग निकली।

जब तक चुड़ैल को होश आये, तब तक चूहा और बिल्ली कुत्ते के पाम पहुँच चुके थे। बिल्ली से हीरा लेकर कुत्ते ने उसे अपने मुह में दबा लिया और तीनों वहाँ से भाग निकले।

बादशाह के महल में शोर मच गया।

“पकड़ो, पकड़ो !”

पर कौन सोच सकता था कि जादूई हीरा किसी आवाग कुत्ते के मुह में छिपा हो सकता है !

थोड़ी देर बाद कुत्ता, बिल्ली और चूहा नदी के किनारे पहुँचे।

बिल्ली बोली, “मैं हीरे को लेकर नदी पार करूँगी !”

“नहीं,” कुत्ता बोला। “तुम अच्छी तरह तैरना नहीं जानती, खुद तो डूबोगी ही और साथ में जादूई हीरे को भी ले, डूबोगी।”

चूहा भी चाहता था कि वह हीरे को लेकर नदी पार करे।

तीनों काफी समय तक बहस करते रहे। कुत्ता अपनी बात पर अड़ा रहा और हीरा उमने अपने पास ही रखा। तीनों नदी पार करने लगे। कुत्ते ने पानी में अपनी परछाई देखी और उसे दूसरा कुत्ता समझकर भौंकते ही जादूई हीरा पानी में गिर गया। उसी समय एक बहुत बड़ी मछली तैरती हुई आयी और जादूई हीरा निगलकर वहाँ से गायब हो गयी।

“मैंने कहा था न कि तुम्हें हीरा लेकर नदी पार नहीं करनी चाहिए थी !” बिल्ली बोली।

उनकी समझ में न आ रहा था कि क्या करें। वे अपने मालिक के पास बिना जादूई हीरा लिये नहीं जाना चाहते थे।

वहाँ से थोड़ी दूरी पर मछुओं की एक बस्ती थी। कुत्ता, बिल्ली और चूहा तीनों को बड़ी तेज भूख लगी और वे मछुओं की बस्ती की तरफ भागे।

उनके भाग्य से एक मछुए ने बड़ी मछली पकड़ ली। उसे साफ़ करके उमने उसकी अंतड़ियां फेंक दीं। कुत्ता, बिल्ली और चूहा उसे खाने लगे।

अचानक बिल्ली खुशी के मारे म्याऊँ-म्याऊँ बोल उठी : मछली की अंतड़ियों में उसे कुछ पत्थर जैसा महसूस हुआ। तीनों ने बड़े ध्यान से देखा और खुशी से नाच उठे यह वही जादूई हीरा अहानग्वा था !

कुत्ता, बिल्ली और चूहा फौरन अपने मालिक की भोंपड़ी की ओर भागे। लड़के की मा ने उन्हें देख लिया और बोली :

“बेटा, देख, तेरे कुत्ता, बिल्ली और चूहा लौट आये हैं।”

बिल्ली ने जादूई हीरा अपने मालिक के सामने रख दिया। लड़का खुश होकर बोला

“मैं तुम लोगो का अहसान ज़िंदगी भर नहीं भूलूँगा !”

“हम भी जब तक ज़िन्दा रहेंगे, तुम्हारी सेवा के लिए हमेशा तैयार रहेंगे, क्योंकि तुमने एक दिन हमें मौत से बचाया था,” कुत्ता, बिल्ली और चूहे ने एक स्वर में कहा।

लड़का बोला :

“ मैं अभी इस हीरे से सोने का महल यहाँ लाने के लिए कहता हूँ । ”

“ नहीं, हमें सोने का महल नहीं चाहिए, ” माँ ने उसे रोका ।

तब लड़के ने हीरे को हुक्म दिया :

“ महल गायब हो जाये ! ”

और फौरन बादशाह का महल गायब हो गया और बादशाह, शाहजादी और चुड़ैल का निशान भी बाक़ी न रहा ।

कहते हैं, बाद में लड़के ने एक ग़रीब माली की लड़की से शादी कर ली और वे सब लोग बहुत सुख-चैन से रहने लगे ।

## क्रूर बादशाह



बहुत समय पहले एक देश में क्रूर बादशाह राज करता था । एक बार पता नहीं क्यों उसने एक नया हुक्म जारी किया :

“ जिस आदमी के घर में कोई आदमी मरे उस घर का मालिक उसकी लाश उठाकर छत पर ले जाये और एक छत से दूसरी पर होकर ही क़ब्रिस्तान तक लेकर जाये । जो कोई इस आज्ञा का पालन नहीं करेगा, उसे मौत की सज़ा दी जायेगी । ”

उस देश में एक बहुत बूढ़ा कथक रहता था, जिसके सारे बाल पक चुके थे । वह बादशाह के पास गया ।

बादशाह ने पूछा :

“ तुम यहाँ किस लिए आये हो ? ”

कथक बोला :

“ क्या प्रजा भूख, ग़रीबी और तुम्हारे अत्याचारों से कम परेशान है, जो तुमने एक नया बेतुका हुक्म जारी किया है ? मरे हुए को दफ़नाने के लिए उसके रिश्तेदार पांच और कई बार तो दस-दस दिन तक परेशान होते हैं । तुम्हें इस में क्या आनंद आता है ? ”

बादशाह आग-बबूला हो उठा ।

“ लोग कहते हैं कि बूढ़े बुद्धिमान होते हैं, ” वह बोला । “ पर वास्तव में यह झूठ है कोई सिरफ़िरा बूढ़ा आकर मुझे सीख दे रहा है । इसे पकड़कर फ़ौरन फासी दे दो ! ” उसने जल्लादों को बुलाकर हुक्म दिया ।

इसके बाद बादशाह ने एक नया हुक्म निकाला :

“ सब सफ़ेद दाढ़ीवाले बूढ़ों के सिर घड़ से अलग कर दिये जायें । ”



जल्लाद हर घर में घुसकर सफेद दाढ़ीवाले बूढ़ों को पकड़कर उनके सिर काटने लगे। कुछ बूढ़ो ने भागकर अपनी जान बचाई, कुछ तहखानों और तलघरों में छिप गये। जिसे जहाँ जगह मिली, वह वही छिप गया, ताकि उसे कोई ढूँढ़ न पाये।

एक बार बादशाह ने तीस वर्ष तक की आयु के सैनिकों को कूच के लिए तैयार होने का हुक्म दिया। “और जिसे इकतीसवां वर्ष लग चुका है, उसे छोड़ दिया जाये ! ऐसे लोग कमजोर होते हैं,” उसको सूझी।

बादशाह का एक वजीर था। वह बादशाह को समझाने लगा :

“हुजूर, आपने क्यों ऐसा हुक्म निकाला ?”

पर बादशाह तो सहन ही नहीं कर पाता था कि कोई उसे रोके-टोके या सीख दे।

“अरे, बेवकूफ, तुम क्या समझोगे ?” वह वजीर पर दूट पड़ा।

“फिर कभी मुझे सीख देने की हिम्मत मत करना। अगर तुमने दूसरी बार ऐसा कहा, तो तुम्हारे मुँह में पिघला हुआ सीमा भरवा दूँगा।”

एक दिन बादशाह ने अपनी सेना के साथ कूच किया। बादशाह के सिपाहियों में जाकिर नाम का एक नौजवान था। उसका पिता अस्सी साल का बूढ़ा था। उन दिनों जब बादशाह के हुक्म से पैंतालीस वर्ष से ज्यादा उम्रवालों के सिर काटे जा रहे थे, जाकिर ने अपने पिता को छिपा दिया था।

बादशाह की फौज के कूच करने से पहले जाकिर अपने पिता से मिलने आया। बूढ़ा बोला :

“मेरे प्यारे बेटे, तुम जाओगे, तो वापस लौटकर आ सकोगे या नहीं, कोई नहीं जानता। तुम्हारे सिवा मेरा और कौन है जो मुझे खाना खिलाये और मेरा खयाल रखे। तुम्हारे जाने के बाद मैं किस तरह ज़िन्दा रह पाऊँगा ? तुम बादशाह के पास जाकर कह दो कि वह मुझे मार डाले। मुझे दफ़नाकर तुम बेफ़िक्र होकर चले जाना। या फिर मुझे अपने साथ ले चलो।”

जाकिर अपने पिता को ऐसी हालत में न छोड़ सका। उसने एक सन्दूक बनाया और उसमें अपने पिता को बन्द करके साथ ले गया।

बादशाह अपनी फौज के साथ बहुत दूर के एक देश पर चढ़ाई करने निकला। चलते-चलते वे लोग ऊँचे पहाड़ों के पास पहुँचे। पहाड़ों की तलहटी में एक बहुत बड़ी नदी बहती थी। उसका पानी बड़े शोर और गरज के साथ बह रहा था। बादशाह ने अपनी फौज को नदी के किनारे पड़ाव डालने का हुक्म दिया।

शाम को बादशाह ने एक आश्चर्यजनक प्रकाश देखा। नदी के तल में, रात के अंधेरे में जगमगाते तारों की तरह, दो बड़े हीरे चमक रहे थे।

बादशाह ने एक सिपाही को गोता मारकर नदी के तल में से हीरे निकाल लाने का हुक्म दिया।

सिपाही ने गहरे पानी में गोता लगाया, पर वह वापस न लौटा। बादशाह ने दूसरे सिपाहियों को बुलाया। उन सब ने एक-एक करके गोता लगाया, पर उनमें से कोई भी पानी के ऊपर वापस नहीं दिखाई दिया।

एक सिपाही ने बादशाह का विरोध करने का साहस किया।

“हुजूर,” वह बोला, “इतने गहरे पानी में नदी के तल तक पहुँच पाना असंभव है। हम लोग बेकार ही क्यों अपनी जान खोयें?”

“अरे, बेवकूफ,” बादशाह चिल्लाया, “अगर नदी गहरी होती, तो क्या उसके तल में पड़े हीरे दिखाई पड़ते? जबान खोलने के लिए तुम्हारा सिर काट डाला जायेगा। जल्लादों, यहाँ आओ!”

सिपाही का सिर काट डाला गया।

बादशाह ने दूसरे सिपाहियों को भी नदी में गोता लगाने के लिए मजबूर किया।

जब जाकिर की नदी में गोता लगाने की बारी आनेवाली थी, तो वह भागकर अपने खेमे में पहुँचा और सन्तूक खोलकर रोते हुए कहने लगा:

“अलविदा, अब्बाजान, मुझे माफ़ करना, मुझे बुरा मत समझना!”

“क्या हुआ, बेटा?” घबराये हुए पिता ने पुछा।

जाकिर ने अपने पिता को बादशाह के हुक्म के बारे में बताया और यह भी बताया कि अब तक कितने लोग मारे जा चुके हैं। थोड़ी देर सोचने के बाद बूढ़ा बोला:

“क्या, नदी के किनारे कोई पेड़ है?”

“जी, है।” बेटे ने जवाब दिया।

“तब हीरे नदी में नहीं, पेड़ पर हैं। पानी में सिर्फ़ उनकी परछाईं नज़र आ रही है। बेटा, तुम वह जगह अच्छी तरह देख लेना और जब तुम्हारी बारी आये, तो भागकर पेड़ के शिखर पर चढ़ जाना। हीरे चिड़िया के घोंसले में रखे हैं। उन्हें अपनी कमर में बांधकर तुम वहीं से नदी में छलांग लगाना और फिर किनारे पर आना।”

जाकिर पिता से विदा होकर बादशाह के पास आया। बादशाह ने उसे नदी में गोता लगाकर हीरे लाने का हुक्म दिया।

जाकिर पेड़ की तरफ़ भागा और उसके ऊपर चढ़ गया।

“तुम पेड़ पर क्यों चढ़े?” बादशाह चीखा।

“हुजूर, मैं ज्यादा गहरा गोता लगाने के लिए पेड़ के शिखर से कूदूँगा। हीरे अगर ज़मीन के नीचे भी छिपे हुए हों, तो भी मैं उन्हें निकालकर ले आऊँगा।”

पेड़ पर चढ़कर जाकिर ने देखा: चिड़िया के घोंसले में दो हीरे चादनी में झिलमिल रहे हैं। उसने फौरन उन्हें उठाकर अपनी कमर में बांध लिया और वहाँ से पानी में छलांग लगाकर गायब हो गया। जब जाकिर अपने पिता के पास था, तो बादशाह ने एलान किया था:

“जो कोई बिना हीरे लिये पानी से बाहर आयेगा, उसकी खाल उधेड़ दूँगा।”

थोड़ी देर में जाकिर पानी में से निकला और उसने दोनों हीरे बादशाह को दिये।

“शाबाश!” बादशाह ने उसकी तारीफ़ की और पीठ थपथपायी।

मुबह बादशाह की फौज नदी के किनारे-किनारे आगे बढ़ी। एक जगह उन लोगों को बहुत सारा चींटियाँ दिखाई पड़ीं।

“यहाँ चींटियाँ क्यों चल रही हैं? ये क्या कर रही हैं?” बादशाह ने पूछा।

पर कोई भी जवाब न दे पाया। बादशाह बोला:

“मैं रोजाना दो आदमियों से यह सवाल पूछूँगा! जिसका जवाब मुझे अच्छा लगेगा, उसे इनाम दूँगा और जिसका जवाब मुझे पसंद नहीं आयेगा, उसका सिर कटवा दूँगा।”

बादशाह का हुक्म सुनकर जाकिर फिर अपने पिता के पास आया और उन्हें यह बात बतायी।

बूढ़ा बोला:

“तुम बादशाह के पास जाओ और कहो कि तुम उसके सवाल का जवाब देना चाहते हो। कहो, ‘नदी के पेदे में घी का खाली बर्तन पड़ा है, इसलिए यहाँ चींटियाँ इकट्ठी हो रही हैं।’ और अगर बादशाह बर्तन निकालकर लाने को कहे तो कहना, ‘अभी लेकर आता हूँ।’ इसके बाद पेड़ पर चढ़कर, निशाना लगाकर, बादशाह पर तीर चलाना। निशाना ऐसा लगाना कि तीर सीधा उसके मुँह में लगे और वह फौरन मर जाये। इस एक आदमी के कारण कितने आदमी बेकार ही मारे गये!”

जाकिर बादशाह के पास पहुँचकर बोला:

“मैं आपके सवाल का जवाब दूँगा। हुजूर, नदी के पेदे में घी का एक खाली बर्तन पड़ा है, इसलिए चींटियाँ यहाँ मंडरा रही हैं।”

बादशाह आग-बबूला हो उठा।

“घी का खाली बर्तन पानी में पड़ा है, फिर चींटियाँ यहाँ क्यों चक्कर लगा रही हैं? जवाब हमें पसंद नहीं!” बादशाह ने कहा और जल्लादों को बुलाकर जाकिर का सिर काटने का हुक्म दिया।

जाकिर ने मन्नत की:

“हुजूर, अगर आप इजाजत दें तो मैं पानी में से घी का खाली बर्तन लाकर आपको दिखाऊँ?”

“ठीक है, लाकर हमें दिखाओ।”

जाकिर फौरन भागकर पेड़ पर चढ़ गया और एक मजबूत डाल पर बैठकर, उसने बादशाह के मुँह का निशाना लगाकर तीर छोड़ा। तीर सीधा बादशाह के मुँह में लगा और आरपार हो गया।

बादशाह डेर हो गया।

जब जाकिर पेड़ पर से उतरा, तो सारे सिपाहियों ने भागकर उसे अपने गले लगा लिया और खुशी से बोले:

“तुमने बहुत ही अच्छा किया!”

जाकिर बोला:



यह मैंने नहीं मेरे अब्बाजान ने किया है। बड़े अफसोस की बात है कि इस क्रूर बादशाह के कारण इतने लोग मारे गये।”

सारे सिपाही बुद्धिमान बूढ़े के पास पहुँचे और उन्हें क्रूर बादशाह से छुटकारा दिलवाने के लिए धन्यवाद दिया और बड़ी इच्छा के साथ अपना बादशाह बना लिया।

## हुस्नाबाद



बहुत दिन हुए एक बेरहम बादशाह राज करता था। उसकी एक बेटी थी। उसका नाम हुस्नाबाद था। हुस्नाबाद अद्वितीय सुंदरी थी; उसे चांद कहा जा सकता था, पर चांद पर भी दाग होते हैं, उसे सूरज भी कहा जा सकता था, पर सूरज में भी आग होती है।

बहुत-से देशों के शाहजादे शादी का प्रस्ताव लेकर आये, पर बादशाह ने सबको इनकार कर दिया।

हुस्नाबाद की माँ एक गरीब परिवार से थी। बादशाह अक्सर उसका तिरस्कार करता रहता था।

“तुम बादशाह की पत्नी हो, इसलिए तुम्हें अच्छा खाने और पहनने को मिल रहा है। अगर तुम्हारी शादी किसी गरीब से हुई होती, तो तुम रोटी की जगह आज मिट्टी खा रही होती।”

हुस्नाबाद की माँ रोती रहती और हुस्नाबाद उसका यह हाल देखकर कहती:

“मेरी शादी किसी गरीब के साथ कीजिये। अगर मेरे भाग्य में हुआ, तो मैं स्वयं अपने पति को बादशाह बनाकर अपने पिता के तल्ल पर बिठा दूंगी। फिर सब गरीब लोग चैन से जी सकेंगे।”

एक दिन की बात है। बादशाह तल्ल पर बैठा था। अचानक एक कौवा उड़कर आया और खिडकी के सामने के पेड़ पर बैठकर बोलने लगा:

“कांव ! कांव ! कांव !”

बादशाह ने अपने चार सौ सलाहकारों को बुलाया।

“कौवा क्या कह रहा है?” उसने उनसे पूछा।

सलाहकारों ने काफी देर तक सोचकर जवाब दिया:

“हम नहीं जान सकते। वह कौवा है और हम हैं—आदमी। शायद, खुश होकर कांव-कांव कर रहा है।”

बादशाह क्रोधित होकर चिल्लाया :

“जल्लादी, यहां आओ!”

फौरन चौदह काले भुजंग जल्लाद अपनी तेज धारवाली तलवारें लिये बादशाह के सामने आ खड़े हुए।

“किसकी मौत आयी है? हम फौरन उसका सिर घड़ से अलग कर देगे।”

“इन सब सलाहकारों को ले जाओ और इनके सिर काट दो!” बादशाह ने हुक्म दिया।

हुस्नाबाद बादशाह के पैरों में गिरकर बोली :

“अब्बाजान” “अगर मैं आपके सवाल का जवाब दूं, तो क्या आप उन्हें माफ़ कर देगे?”

“अगर जवाब दे पाओगी, तो इन्हें माफ़ करूंगा,” बादशाह बोला।

“कौवा अपनी बोली में कह रहा है, ‘पति का भाग्य बनानेवाली भी पत्नी है और बिगाड़नेवाली भी बही’ है।”

बादशाह गुस्से के मारे पागल हो उठा।

“बेशर्म! इसका मतलब यह है कि मैं तुम्हारी मां, एक गरीब की बेटी, के कारण बादशाह बना हूं! बकवास बंद करो! मैं तुम्हें काल-कोठरी में डलवा दूंगा और सात साल बाद तुम्हारी लाश में भूसा भरवाकर मैदान में लटकवा दूंगा! इससे उन सब लड़कियों को सबक मिल जायेगा, जो अपने पिता के खिलाफ़ जाती हैं!”

बादशाह ने हुस्नाबाद को काल-कोठरी में डलवा दिया और सलाहकारों को छोड़ दिया। इसके बाद बादशाह एक हफ्ते तक मुंह लटकाये उदास बैठा रहा और महल से बाहर ही न निकला।

“आप महल के अंदर उदास न बैठे रहिये,” बादशाह के बड़े वज़ीर ने कहा। “चलिये, शिकार पर चलते हैं, इससे कुछ दिल बहल जायेगा!”

बादशाह अपने साथ चार सौ सलाहकारों और चत्वारसीस वज़ीरों को लेकर शिकार पर निकला। पूरे सात दिनों तक वे लोग शिकार की तलाश में जंगलों और पहाड़ों, मैदानों में भटकते रहे, पर उन्हें एक बूढ़ा भी न मिला।

बादशाह बड़ा उदास हुआ। अचानक दूर उन्हें एक नदी दिखाई दी। वे उसी नदी की तरफ़ गये। नदी के किनारे पहुंचकर उन्होंने देखा—एक सफ़ेद दाढ़ीवाला बूढ़ा नदी में से कंकड़-पत्थर निकालकर, उन पर कुछ लिखकर, वापस नदी में फेंक रहा है।

“ऐ, बूढ़े, तुम यहां क्या कर रहे हो?” बादशाह ने पूछा।

“मैं फ़कीर हूं। मैं, भला, बादशाह से बात करने की हिम्मत कर सकता हूं?”

“जवाब दो, नहीं तो तुम्हारे टुकड़े कर दूंगा!” बादशाह चिल्लाया।

“मैं लोगो का भाग्य लिख रहा हूं,” बूढ़े ने जवाब दिया।

“अच्छा, तब मुझे बताओ, मेरी जिद्दी लड़की के भाग्य में क्या बदा है?”

बूढ़े ने पानी में हाथ डालकर मुट्ठी भर कंकड़ निकाले।

“शहरे-जुरजां के राज्य में एक बहादुर नौजवान रहता है। वह एक गरीब चरवाहे का

लड़का है। इसी नौजवान के साथ तुम्हारी बेटी की शादी होगी,” बूढ़े ने कहा।

गुस्से के मारे बादशाह का चेहरा काला पड़ गया।

“यहाँ से उस देश तक कितने दिन का रास्ता है?” बादशाह ने पूछा।

“अगर घोड़ा तेज़ हो, तो अठारह महीने लगेंगे।”

बादशाह अपने महल में लौट आया और तीन दिन तक सोचता रहा। “एक मामूली गड़रिये से अपनी बेटी की शादी न हो पाये, इसके लिए मुझे क्या करना चाहिए? क्यों न उसे काल-कोठरी में भूखा मार दूँ, या उसके टुकड़े करवा दूँ?”

बड़े वज़ीर को बादशाह के इरादे का पता चल गया। उसे शाहजादी पर बड़ी दया आयी। वह रात को उसे काल-कोठरी से निकालकर अपने घर ले आया।

फिर उसने बड़ई को बुलवाकर उसे पैसा दिया और एक ऐसा मजबूत संदूक बनाने को कहा, जिसमें पानी न घुस पाये।

जब संदूक बन गया, तो बड़े वज़ीर ने लड़की से कहा:

“हुस्नाबाद, तुम संदूक में लेट जाओ। मैं तुम्हारे लिए चालीस दिन का खाना रखकर संदूक को नदी में बहा दूँगा। अगर तुम्हारे भाग्य में लिखा हो, तो तुम ज़िंदा रहोगी। बादशाह की तलवार से मारे जाने से तो स्तेपी में भेड़ें चराना बेहतर है।”

“आप ठीक कहते हैं!” हुस्नाबाद मान गयी और संदूक में घुस गयी।

आधी रात को बड़े वज़ीर ने संदूक को नदी में बहा दिया।

संदूक तीन महीने तक नदी में बहता रहा। हुस्नाबाद ने एक दिन का खाना चार दिन चलाने की कोशिश की।

एक दूर के देश में क़ारा शाह नाम का बादशाह राज करता था। एक बार उसने महल में सूखी लकड़ियाँ मंगवाई।

“मैं लाऊंगा!” एक बूढ़े ने कहा। “मेरा घर पोते-पोतियों से भरा है और खाने को कुछ नहीं है। अगर आप मुझे कुछ मजदूरी दें, तो हम खाने-पीने को कोई चीज़ खरीद सकेंगे।”

अपने कंधे पर कुल्हाड़ी रख और कमर में रस्सी बांध बूढ़ा स्तेपी की ओर चल पड़ा। उसने सूखी लकड़ी का गट्टर बांधा। बूढ़ा वापस लौटने ही वाला था कि अचानक उसे प्यास लगी। “नदी के पास जाकर पानी पी लूँ,” बूढ़े ने सोचा और चल पड़ा। नदी के किनारे पहुँचकर उसने देखा—किनारे के बिल्कुल करीब पानी में एक सदूक बह रहा है।

बूढ़ा फौरन अपने कपड़े उतारकर नदी में कूदा और संदूक को घसीटकर किनारे पर ले आया। वह संदूक को चारों ओर से देखने लगा, पर उसे खोल नहीं सका। तब उसने कुल्हाड़ी से संदूक में एक छोटा-सा छेद किया और उसमें झाँककर देखा—अन्दर एक अत्यन्त सुंदर लड़की लेटी थी।

बूढ़ा किकर्तव्यविमूढ़ हो गया। “शायद, किसी सौदागर की लड़की है,” उसने सोचा। “अपने पिता के साथ सफ़र पर निकली होगी, जहाज़ डूब गया और यह संदूक बच गया।”

“लड़की, तुम ज़िंदा तो हो?” बूढ़े ने आवाज़ दी।



“जिन्दा हूँ।” हुस्नाबाद ने जवाब दिया और सिर उठाकर बैठ गयी।

“अब मैं क्या करूँ?” बूढ़े ने सोचा। “अगर मैं बादशाह के पास लकड़ियाँ लेकर जाऊँ, तो वह मुझे एक तगा देगा, और अगर लड़की ले जाऊँ—तो कुछ भी न देगा। इस लिए यही ठीक होगा कि इस संदूक को शहर में ले जाकर बेच दूँ। भला, किसी को क्या पता लगेगा कि इसमें क्या है।”

बाज़ार पहुँचते ही बूढ़े को कारा शाह मिल गया।

“लकड़ी कहाँ है? मैंने तुम्हें लकड़ियाँ लेने भेजा था और तू किसी के घर में से संदूक चुराकर ले आया!”

कारा शाह ने अपनी तलवार से बूढ़े के दो टुकड़े कर डाले और संदूक अपने महल में पहुँचा देने का आदेश दिया। जब संदूक तोड़ा गया, तो उसमें से हुस्नाबाद निकल आयी। लड़की की सुंदरता पर मोहित हो कारा शाह बोल उठा:

“मेरे साथ शादी करोगी?”

हुस्नाबाद रो पड़ी। “मैंने एक गरीब आदमी के साथ शादी करने का निश्चय किया था, अब मैं क्या करूँ?” उसने सोचा।

“मुझे चालीस दिन की मोहलत दीजिये,” हुस्नाबाद बोली। “मैं तीन महीने संदूक के अंदर घुटती रही, अब आराम करके लड़कियों के साथ जी बहलाना चाहती हूँ।”

“अगर तुमने इसी वक्त मेरे साथ शादी नहीं की, तो मैं तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा!” कारा शाह ने धमकी दी।

हुस्नाबाद रो-रोकर कहने लगी:

“कम-से-कम तीन दिन की मोहलत तो मुझे दीजिये। मैं लड़कियों के साथ थोड़ा घूम-फिर लूँ, उसके बाद—जैसी आपकी मर्जी हो, कीजिये।”

“जी बहलाने के लिए एक दिन काफी होगा!” कारा शाह ने कड़े स्वर में कहा और चालीस लड़कियों को उस पर निगाह रखने का हुक्म देकर उसे छोड़ दिया।

हुस्नाबाद लड़कियों के साथ बाग में पहुँची। बाग के पीछे एक नदी बहती थी।

“लड़कियो, चलो नदी में नहाये!” हुस्नाबाद लड़कियों के साथ नदी के किनारे आयी। वह पानी में घुसी ही थी कि एक बहुत बड़ी दैत्याकार मछली आयी और उसे निगल गयी।

लड़कियाँ भागी-भागी कारा शाह के पास पहुँची और उन्होंने उसे इस दुर्घटना के बारे में रो-रोकर बताया।

कारा शाह आह भर उठा। उसने अपना ताज और सोने की पेटी उतारकर फेंक दी और फ़कीरों के कपड़े पहनकर रेगिस्तान में चला गया।

अब दूसरे देश शहरे-जुरजाँ का हाल सुनिये।

नदी के किनारे एक जवान चरवाहा ढोर चरा रहा था। उससे थोड़ी दूरी पर मछुओं ने नदी में जाल फेंक रखे थे।

चरवाहा मछुओं के पास आकर बोला:

“ मेरे पिताजी बीमार हैं और रोटि खरीदने शहर नहीं जा सकते हैं। मैं स्वयं भी ढोर छोड़कर जा नहीं सकता। आप मुझे अपने पिता को खिलाने के लिए एक मछली दे दीजिये। ”

“ ठीक है, इस बार हम जो भी मछली पकड़ेंगे, तुम्हें दे देंगे ! ” मछुओ ने कहा और जाल खींचा। उन्होंने देखा—एक बहुत बड़ी मछली फंसी है।

“ इसे ले लो, चरवाहे ! ”

मछली इतनी बड़ी और भारी थी कि चरवाहा उसे उठा नहीं पाया। उसने पांच बैल गाड़ी में जोते और किसी तरह मछली घर ले आया। मछली पिता के लिए छोड़कर वह ढोर के पास लौट गया।

चरवाहे का पिता बहुत खुश हुआ। उसने मछली का पेट चीरा, तो देखा—एक लड़की पड़ी है। बूढ़े ने उसके मुंह में कुछ बूंद पानी डाला।

हुस्नाबाद को होश आया और उसने खड़े होकर बूढ़े को सिर झुकाकर सलाम किया।

“ पिताजी, मैं भूखी हूँ, मुझे कुछ खाने को दीजिये, ” उसने कहा।

बूढ़े ने मछली का एक टुकड़ा तलकर उसे दिया।

“ पिताजी, आप क्या काम करते हैं ? ” हुस्नाबाद ने पूछा।

“ मैं गाये चराता था। बूढ़ा हो गया हूँ, अब मेरी जगह मेरा बेटा गाये चराता है। ”

हुस्नाबाद प्रफुल्लित हो उठी।

“ मेरी इच्छा पूरी हो गयी ! ” उसने कहा। “ अगर आप चाहें, तो मैं आपके बेटे की बहू बनकर रहूँ। मेरी माँ भी एक गरीब परिवार से थी। ”

“ हम लोगों के पास शादी के लिए एक कौड़ी भी नहीं है। ”

“ मैं जब अपनी मर्जी से शादी कर रही हूँ, तो हमें शादी की दावत देने की कोई जरूरत नहीं है, ” हुस्नाबाद बोली।

बूढ़े ने अपने लड़के का विवाह हुस्नाबाद के साथ कर दिया।

शादी के दूसरे दिन ही हुस्नाबाद ने अपने बालों पर रुमाल बांधा और खाना पकाने देग के पास आयी। उसने देखा—देग की सतह पर इतनी गंदगी जमा हो गयी है कि लगता था उसके दोनों कुंदे मिलकर एक हो जायेंगे। दूसरे बर्तन भी साफ़ न थे। हुस्नाबाद ने धो-रगड़कर सारे बर्तन चमका दिये। बूढ़ा लुशी के भारे फूला न समाया। वह उठकर बहू के पास आया।

“ बेटा ! ” वह बोला। “ मैं बूढ़ा हूँ और घर संभालना मेरे लिए मुश्किल है। बेटा पौ फटते ही चला जाता है और अंधेरा होने पर लौटता है। यह अच्छा हुआ कि तुम हमारे घर आ गयी। तुम बहुत मेहनती हो। मैं भी तुम्हारी मदद करना चाहता हूँ। बताओ, मैं क्या काम करूँ ! ”

हुस्नाबाद ने अपने दाये कान से बाली उतारकर बूढ़े को दी।

“ आप इसे लेकर बाजार जाइये। जब कोई इसका दाम पूछे, तो आप कहिये, ‘ आप ईमानदारी से जो चाहें दे दीजिये। ’ और जितनी कीमत लगे, उतने में ही बेच दीजिये। ”

बूढ़ा बाली लेकर बाजार पहुँचा। संयोग से उसी दिन कुछ सौदागर भी बाजार में खरी-

दारी कर रहे थे। उनमें से एक ने बूढ़े के हाथों में एक बहुत ही खूबसूरत बाली देखी।

“इसकी क्या कीमत है?” सौदागर ने पूछा।

“आप खुद ईमानदारी से जो चाहें दे दीजिये।”

सौदागर ने एक हाथ लंबा और एक हाथ चौड़ा संदूक सोने से भरकर बूढ़े को दे दिया।

“यह ठीक है या कम है?”

“मैंने कहा न, ईमानदारी से जो चाहें दे दीजिये।”

सौदागर ने उसे एक बोरी सोने से भरकर और दी।

“यह घर ले जाइये!” सौदागर ने कहा और सोना ढोने के लिए एक गधा भी साथ में दे दिया।

बूढ़े को गुस्सा आया: “क्या यह मेरा मज्जाक उड़ा रहा है? मेरा क्या जाता है, आओ, सारा सोना उठाकर ले जाऊं, बाद में देखा जायेगा!” यह सोचकर वह गधे को हांकता हुआ घर चल दिया।

उधर सौदागर अपने मन में कहता रहा: ‘अगर मुझे इसके साथ की एक बाली और मिल जाये, तो मैं इन्हें अपने बादशाह को सारी दुनिया पर लगाये गये महसूल के बदले में दे दूंगा।’

घर पहुंचकर बूढ़े ने सारा सोना अपनी बहू को दे दिया।

अगले सप्ताह हुस्नाबाद ने अपने बायें कान की बाली उतारकर ससुर को दी और उसे बाजार में बेचने को कहा।

बूढ़ा फिर बाजार पहुंचा। वही सौदागर बूढ़े के पास आकर पूछने लगा:

“इस बाली का क्या दाम है?”

“मैं तुम्हें नहीं बेचूंगा!” बूढ़े ने कहा। “तुमने पिछली बार मेरा मज्जाक उड़ाया था।”

“अच्छा, मेरे साथ चलो!” सौदागर बोला और बूढ़े को अपने घर ले आया।

उसने बूढ़े को सोने से भरे दो संदूक दिये, उसे अतलस का घोड़ा पहनाया और दो गधे भी भेंट किये।

“आप कहाँ रहते हैं, बाबा?” सौदागर ने पूछा।

“अगर मैं इसे बता दूँ, तो यह सारा सोना छीन लेगा,” बूढ़े ने सोचा।

“मेरा घर नहीं है,” उसने उत्तर दिया।

जब बूढ़ा बाजार से घर लौटा, तो हुस्नाबाद ने सारा सोना छुपाकर रख दिया और अपने ससुर और पति से बोली:

“आप बीस कारीगरों को बुलाइये, हम एक शहर बनवायेगे।”

वे लोग कारीगरों को बुला लाये।

“आप लोग अपने परिवारों को भी यहां ले आइये!” हुस्नाबाद ने कारीगरों से कहा।

सब कारीगर अपने परिवार भी ले आये।

हुस्नाबाद के हुक्म के अनुसार कारीगरों ने एक ऊंची और लंबी दीवार बनानी शुरू की।



उन सबको रोज़ाना रोटी, पैसा और गरम-गरम खाना दिया जाने लगा। उन्हें पहनने के लिए भी अच्छा कपड़ा मिलने लगा। जब दूसरे कारीगरों ने हुस्नाबाद के बारे में सुना, तो वे भी जगह-जगह से वहाँ पहुँचने लगे। हुस्नाबाद ने सब का स्वागत किया, उन्हें खिलाया, पिलाया और अच्छे कपड़े पहनने को दिये।

वहाँ से गुज़रनेवाले मुसाफ़िर पूछते:

“यह दीवार कौन बनवा रहा है?”

“चरबाहे की पत्नी,” कारीगर जवाब देते। “अगर आप काम करना चाहें, तो आप भी यहाँ आ सकते हैं। यहाँ खाने-पीने को अच्छा मिलता है और मज़दूरी भी अच्छी मिलती है।”

पंद्रह दिनों में ही वहाँ पाँच हजार परिवार इकट्ठे हो गये। उन लोगों ने तीन महीने में ही दस दिन के सफ़र जितनी लंबी और चौड़ी ज़मीन के चारों ओर दीवार खड़ी कर दी।

दीवार में बारह दरवाज़े बनाये गये। सब दरवाज़ों के ऊपर हुस्नाबाद की तस्वीरें लगा दी गयीं और लिख दिया गया: “इस शहर का नाम हुस्नाबाद है। जिस किसी को रोटी और गरम-गरम खाना चाहिए—यहाँ आकर काम करे।”

एक साल में ही वहाँ पचहत्तर हजार परिवार जमा हो गये।

हुस्नाबाद ने हर परिवार के लिए अच्छा घर बनवाया और साथ में सायबान भी। शहर की दीवार के हर दरवाज़े पर उसने पच्चीस पहरेदार बिठा दिये और उन्हें हुक्म दिया:

“जो कोई मेरी तस्वीर को देर तक ताकता रहे, उसे मेरे पास ले आओ।”

शहरे-जुरजां के बादशाह को जब नये शहर के बारे में पता चला, तो वह गुस्से के मारे पागल हो उठा।

“किसने हमारी बादशाहत पर हमला करने की हिम्मत की है? हमारी ही ज़मीन पर शहर बनानेवाला वह कौन है? हम उसका सिर काट डालेंगे!” बादशाह हुस्नाबाद पहुँचा और दरवाज़े पर खड़े पहरेदारों से पूछने लगा:

“यह शहर किसने बनाया है?”

“उसने, जिसकी तस्वीर यहाँ लगी है,” पहरेदारों ने जवाब दिया। “जब हम आपकी फ़ौज में थे, तो आप हमें और हमारे घरवालों को भी भूखों मारते रहे। हमारी हुस्नाबाद हमें अच्छी तरह खिलाती-पिलाती हैं। उन्हें हमें रोटी देने का अफ़सोस नहीं होता और हमारे बच्चों को भी पढ़ाती हैं। बहुत-से लोग तरह-तरह के हुनर सीख गये हैं।”

बादशाह ने हुस्नाबाद की तस्वीर की ओर देखा और उस पर मोहित हो गया। शहर में घुसकर वह महल में पहुँचा।

“शहरे-जुरजां का बादशाह आपको अपनी पत्नी बनाना चाहता है,” हुस्नाबाद के आदमियों ने उसे बादशाह का यह संदेश पहुँचाया।

यह सुनकर हुस्नाबाद गुस्सा हो उठी। उसने बादशाह को लाने का हुक्म दिया।

“ऐ, बादशाह! तुम्हारी कितनी पत्नियाँ हैं?” उसने पूछा।

“मेरी चालीस पत्नियां हैं...”

“क्या तुम्हे चालीस पत्नियां भी कम लगती हैं?”

बादशाह आग-बबूला हो उठा:

“ऐ, नाचीज़, मेरा अपमान करने की तेरी हिम्मत कैसे हुई? अभी तुझे इसका मज़ा चखाता हूँ!”

और उसने म्यान से तलवार निकाल ली। पर हुस्नाबाद के अंगरक्षकों ने उसे फौरन पकड़ लिया, हाथों में हथकड़ी, पैरों में बेड़ियां डाल दीं और काल-कोठरी में बंद कर दिया।

प्रजा की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा।

“बहुत अच्छा हुआ! अब बादशाह को खूब जेल की हवा खिलायी जाये जबकि हुस्नाबाद को हम तख्त पर बिठायेगे।”

प्रजा के दूत हुस्नाबाद के पास आये और उससे शहरे-जुरजां पर राज करने की प्रार्थना की।

कई महीने बीते। एक दिन एक भिखारी दरवाजे के पास आया और हुस्नाबाद की तस्वीर देखकर रोने लगा। पहरेदार उसे पकड़कर हुस्नाबाद के पास ले आये। उसने खिड़की में से देखा और फौरन भिखारी के वेष में कारा शाह को पहचान गयी। हुस्नाबाद ने तख्त पर बैठकर अपने चेहरे पर नक्राब डाल लिया।

“ऐ, भिखारी! तुम क्यों रो रहे हो?” उसने पूछा।

“अगर मेरी जान बख्शी, तो बताऊँ!” कारा शाह ने जवाब दिया।

“बोलो! हमने तुम्हारी जान बख्शी।”

“मैं एक लड़की से प्यार करता था जिसका नाम हुस्नाबाद था। इस शहर के दरवाजों पर मैंने उसकी तस्वीर देखी।”

“और वह लड़की कहाँ है?”

“वह नदी में नहाने गयी थी और वहीं डूब गयी थी। मुझको यही बताया गया था। और अगर उसने दासियों को रिश्वत देकर मुझे यह भूठी खबर भिजवाई है, तो बस वह मेरे हाथ आ जाये! मैं उसे जंगली घोड़े की पूँछ से बंधवाकर स्टेपी में घिसटवाऊंगा, जिससे हर कांटे पर उसका गोشت लग जाये।”

“इसमें उसका कोई कसूर नहीं है। तुम उस पर नाराज़ मत होओ।”

“क्या यही मेरी हुस्नाबाद है?” कारा शाह ने सोचा और अपने कपड़ों में छिपी तलवार निकालकर हुस्नाबाद के सिर पर आ खड़ा हुआ।

“अपना नक्राब हटाओ! मैं देखना चाहता हूँ, तुम कौन हो!” वह चिल्लाकर बोला।

पर हुस्नाबाद के अंगरक्षकों ने कारा शाह को पकड़ लिया और काल-कोठरी में डाल दिया।

हुस्नाबाद ने अपने बड़े वज़ीर को बुलाकर पूछा:

“जरा, गिनकर बताओ, हमारी फ़ौज में कितने सिपाही हैं?”

वज़ीर ने गिनती की। फ़ौज में सात लाख घुड़सवार और पैदल थे।

“फौज को चढ़ाई के लिए तैयार करो!” हुस्नाबाद ने हुक्म दिया।

फौज को चढ़ाई के लिए तैयार करने में चालीस दिन लगे। इसके बाद स्वयं हुस्नाबाद अपने पति के साथ फौज की कमान संभाले हुए अपने पिता के शहर की ओर चली।

हुस्नाबाद की फौज रास्ते में मैदान, रेगिस्तान, भीलें पार करती हुई हसी-खुशी आगे बढ़ती रही।

अब फौज को आगे बढ़ती छोड़कर हुस्नाबाद के क्रूर पिता का हाल सुनिये।

एक बार उसने सपने में देखा कि एक उक्काब उसे अपने पंजों में दबोचकर काफी ऊंचाई पर ले गया और वहां अधर में लटकाकर बोला, “तू मेरा गुलाम बनेगा? नहीं तो तेरा सिर काट डालूंगा!” बादशाह गिड़गिड़ाने लगा, “मैं अपना शहर और खजाना तुम्हें सौंप दूंगा, मेरा सब कुछ ले लो, पर मुझे छोड़ दो!” “मुझे तेरी धन-दौलत नहीं, तेरी बेटी हुस्नाबाद का खून चाहिए,” उक्काब बोला। बेटी का नाम सुनते ही बादशाह रो पड़ा। अचानक पहाड़ों के पीछे से हुस्नाबाद दिखाई दी। उसके एक हाथ में नंगी तलवार थी और दूसरे हाथ में हंस के गोشت से बने सीखकबाबों की सीख। हुस्नाबाद ने अपनी तलवार से उक्काब को मारकर उसके दो टुकड़े कर दिये और पिता को कमर से उठाकर सावधानी से जमीन पर रख दिया। फिर उसने उसे सीखकबाब दिये और बोली, “पिताजी, अगर मुझसे कोई गलती हुई हो, तो माफ़ कर दीजिये!” बादशाह की चीख निकल गयी और उसकी नींद खुल गयी।

सुबह उसने अपने चार सौ सलाहकारों और चवालीस वज़ीरों को बुलाया और उन्हें अपने सपने का मतलब बताने को कहा। सब चुप रहे।

बादशाह ने धमकी दी:

“अगर तुम लोगों ने मेरे सपने का मतलब नहीं बताया, तो तुममें से किसी को भी जिंदा नहीं छोड़ूंगा!”

बड़ा वज़ीर खड़ा होकर बोला:

“अगर आप मेरी जान बख्शें, तो मैं आपके सपने का मतलब बताऊँ।”

“बोली!”

“आपके सिर को पकड़कर उठा ले जानेवाला उक्काब कोई दुश्मन होता चाहिए। जब वह हमारे देश पर कब्ज़ा करके आपको जेल में डाल देगा, तो आपकी बेटी आकर आपको बचायेगी। पर आपका ताज दूसरे को मिल जायेगा।”

“भूठा कहीं का!” बादशाह चिल्लाया। “मेरी बेटी को मरे हुए कितने साल बीत चुके हैं। तुम ऐसा मुझको दुःखी करने और डराने के लिए कह रहे हो। तुम्हें कैद कर दूंगा! फिर तुम्हारी हड्डियां भी मेरी बेटी की हड्डियों के साथ सड़ती रहेंगी।”

और बादशाह ने बड़े वज़ीर को कैद करवा दिया।

पर उस दिन से बादशाह रात को चैन की नींद न सो सका, सरकड़ो में फसे घायल जंगली सूअर की तरह छटपटाता रहा। एक सप्ताह बाद एक हरकारा आया।

“शहरे-जुरजां का बादशाह अपनी फौज के साथ तुम्हारे ऊपर चढ़ाई करने आ रहा है,”



हरकारा कहने लगा, "अपना सिर भुकाये और सीने पर हाथ रखे उसके पास जाओ। अगर तुमने अपना राज उसे सौंप दिया, तो ठीक होगा। नहीं तो देखना क्या होता है। हमारे बादशाह का यही पैगाम है। साथ ही उन्होंने तुम्हें सलाम भेजा है, यह लो!"

हरकारा बादशाह के पास पहुंचा और उस की गरदन पर एक घूसा मारा। डर के मारे कांपते हुए और माफ़ करने की मिन्नत करते हुए बादशाह सिंहासन के पीछे छिप गया।

हरकारे के जाने के बाद बादशाह ने अपने वज़ीरों से कहा: "अगर इस बादशाह के हरकारे ही ऐसे हैं, तो पता नहीं, उसके सिपाही कैसे होंगे? अब हमें क्या करना चाहिए?"

"हम अब तुमको कोई सलाह नहीं दे सकते," वज़ीरों ने एक स्वर में जवाब दिया। "अगर हम अच्छा कहें, तो तुम हमें मार डालोगे, बुरा कहें—तो भी मार डालोगे। बड़े वज़ीर को क़ैद में से छुड़ा दो और खाने और तोहफ़ों के साथ उसे शहरे-जुरजा के बादशाह के पास भेजो। आगे देखा जायेगा।"

बादशाह ने बड़े वज़ीर को आज़ाद कर दिया और बोला:

"शहरे-जुरजा के बादशाह के पास जाकर सलाम करना। अगर वह मेरा शहर मांगे तो दे देना। कल की चोट से मेरी गर्दन अभी तक दुख रही है। और अगर वह मेरा खून मांगे, तो मैं लाठी लेकर शहर से निकल जाऊंगा। ऐसा दूसरा घूसा सहने की और ताक़त मुझमें नहीं है।"

वज़ीर हंसने लगा:

"जब मैंने तुम्हें तुम्हारे सपने का मतलब बताया था, तब तुम गुस्से से पागल हो उठे थे। किसकी बात सही निकली? दुश्मन आकर तुम्हें घोंड़े की पूंछ से बांधकर तुम्हें स्टेपी में कांटों पर घिसटवायेगा और तुम कुत्ते की मीत मारे जाओगे!"

बादशाह ने दलदल में फंसे गधे की तरह गर्दन लटका ली।

बड़ा वज़ीर कीमती तोहफ़े लेकर शहरे-जुरजा के बादशाह के यहाँ गया।

उसने रास्ते में शहरे-जुरजा के बादशाह के नाम एक पत्र लिखा और दस्तख़त करके एक दूत को दिया।

पत्र पाकर हुस्नाबाद ने बड़े वज़ीर को बुलवाया।

बड़े वज़ीर ने नीचे झुककर सलाम किया और बैठ गया। उसने चारों ओर देखा—उसके सामने बादशाह बैठा था (यह हुस्नाबाद का पति था)। तल्ल के चारों ओर अपने सीनों पर हाथ रखे चालीस अंगरक्षक तैयार खड़े थे। तल्ल के पास कोई अपने चेहरे पर नक्राब डाले बैठा था।

"बड़े वज़ीर," नक्राबपोश बोला, "तुम्हें अकेले हमारे पास आने में डर नहीं लगा? तुम्हें बचानेवाला कोई नहीं है। क्या हो, अगर मैं तुम्हें मार डालूँ?"

बड़ा वज़ीर हुस्नाबाद की आवाज़ पहचान गया।

"जिसकी जान बचाई हो, उससे क्या डरना?"

तब हुस्नाबाद ने अपने चेहरे पर से नक्राब हटा दिया और बड़े वज़ीर के पास आकर बोली

“ऐ, मेरे प्यारे पिता! आपके ही कारण मैं अभी तक जिंदा हूँ। अगर मैं अपने पिता का देश आपको सौंप दूँ, तो क्या आप न्यायपूर्वक राज करेंगे?”

वज़ीर सिर झुकाकर बोला:

“बेटी, मैं बूढ़ा हो चुका हूँ! तुमने अपने पिता का देश मुझे सौंपा, मैं उसे मेरे सामने तख्त पर बैठे बादशाह को सौंपता हूँ।”

हुस्नाबाद अपनी फौज के साथ शहर में घुसी।

बादशाह को ढूँढ़ा गया, पर वह कहीं न मिला। वह डर के मारे उसी दिन भाग गया था और फिर उसको किसी ने नहीं देखा।

हुस्नाबाद अपने पति के साथ राज करने लगी और उसने सब बेकसूर लोगों को जेल से मुक्त कर दिया। उनमें से कुछ को उसने अपने शहरों का शासन सौंप दिया।

इस प्रकार हुस्नाबाद की इच्छा पूरी हुई।

## गरीब की बेटी



अजम देश के बादशाह के एक ही बेटा था और वह भी बिल्कुल मूर्ख। उसकी सैतानियों के कारण प्रजा की नाक में दम था। एक दिन लोगों के धैर्य का बाँध टूट गया और वे बादशाह के पास शिकायत करने गये।

शिकायत सुनकर बादशाह गुस्सा हो उठा। उसने उन सबको महल से बाहर निकलवा दिया और जल्लादों को उनका पीछा करके मारने का हुक्म दे दिया। वज़ीर से न रहा गया, वह बोला:

“हुजूर, गुस्सा थूक दीजिये और जल्लादों को रोकिये। आपका बेटा बारह साल का हो गया है। उसे आप पढ़ने भेजिये, वह ठीक हो जायेगा।”

बादशाह ने अपने कूढ़-मरझ बेटे को पढ़ने भेजा।

सनकी शाहजादा किताब देखते ही रोने-बिल्लाने लगा:

“मैं नहीं पढ़ूँगा! मैं तो शाहजादा हूँ! जो मेरे जी में आयेगा, वही करूँगा। मुझको अपना सिर छपाने की क्या जरूरत है?”

उसका शिक्षक घबराकर सोचने लगा:

“अगर मैंने शाहजादे को डांटा-फटकारा और पढ़ने के लिए मजबूर किया, तो यह अपने पिता के पास जाकर मेरी शिकायत करेगा। मुझे अपनी जान प्यारी है। यह जो चाहे, करता रहे।”

शाहजादा तीन साल तक मकतब में पढ़ता रहा। सारे तीन साल उसने अपने दोस्तों के साथ पासा खेलने में ही गुजारे और कुछ भी नहीं सीखा।

एक दिन बादशाह को अपने बेटे की याद आयी। उसने उसे बुलवाया और लंबी दाढ़ी-वाले चार सौ विद्वानों से कहा:

“आप लोग देखिये, मेरा बेटा कितना पढ़ गया है और कौन-कौन-सी किताबें उसे याद हैं?”

कूढ़-मर्ज शाहजादा बादशाह और उसके चार सौ विद्वानों के सामने आया।

“बेटे, तुमने स्कूल में क्या सीखा?”

मूर्ख शाहजादे ने अपनी जेब में से पासे निकालकर हथेली पर रखे और बोला:

“यह!”

बादशाह आग-बबूला हो उठा। उसने शिक्षक को जान से मार डालने का हुक्म दिया। बेचारे शिक्षक के सात बच्चे अनाथ रह गये।

बादशाह ने सारे शहर में मुनादी करवायी:

“जो कोई शाहजादे को चालीस दिन में पढ़ना-लिखना सिखा देगा, उसे इनाम दिया जायेगा। और अगर उसे पढ़ाने के लिए कोई आगे नहीं आया, तो सारा शहर तुम लोगों समेत जलाकर राख कर दूंगा।”

उस शहर में एक गरीब आदमी रहता था, जिसकी नौ साल की एक लड़की थी। वह बूढ़ी सूत कात रही थी। अचानक उसके पिता रोते हुए आये।

“पिता जी, आप क्यों रो रहे हैं?” बेटी ने पूछा।

“हाय, अब क्या करें! अगर बादशाह के कूढ़-मर्ज बेटे को चालीस दिन में लिखना-पढ़ना नहीं सिखाया गया, तो बादशाह सबको जलाकर राख कर देगा।”

“आप उसे लाइये, मैं पढ़ना-लिखना सिखा दूंगी।”

गरीब आदमी को अपनी बेटी के कहे पर विश्वास नहीं हुआ, पर मजबूर होकर वह बादशाह के पास गया और बोला:

“अगर आप हुक्म दें, तो मेरी बेटी शाहजादे को पढ़ाने के लिए तैयार है।”

“ठीक है,” बादशाह बोला और उसने अपने मूर्ख बेटे को गरीब की बेटी के पास पढ़ने के लिए भेज दिया।

बादशाह के दरबारी कूढ़-मर्ज शाहजादे को गरीब के घर लेकर आये।

जब मूर्ख शाहजादे ने देखा कि गरीब की बेटी छोटी-सी है, तो उसने सोचा, “इसके एक थप्पड़ मारूंगा और यह मुझे पढ़ाना भूल जायेगी।”

पर लड़की बड़ी होशियार थी। शाहजादे के उस पर हाथ उठाते ही, उसने उसके गाल पर कसकर एक चांटा मारा।

कूढ़-मर्ज शाहजादे को अपनी जिंदगी में कभी मार नहीं पड़ी थी और इसके अलावा वह था भी बड़ा डरपोक। इस लिए वह इतना डर गया कि लड़की अगर भीहि भी सिकोडती,



तो उसकी ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की सांस नीचे रह जाती। अपनी शैतानियों के कारण उसे रोजाना थप्पड़ खाने पड़ते। शरीब की लड़की उसे पढ़ाती रही और उसकी कोशिशें व्यर्थ नहीं गयीं—शाहजादा पढ़ना-लिखना सीख ही गया।

चालीस दिन बाद बादशाह को अपने कूढ़-मरज बेटे की याद आयी। उसने अपने चार सौ विद्वानों को बुलाया और बोला:

“अच्छा, अब शाहजादे को भी लाओ। देखता हूँ, लड़की ने मेरे बेटे को क्या सिखाया है, और अगर कुछ नहीं सिखाया है, तो इसी वक्त सारे शहर को जलाकर राख कर दूंगा और लड़की को जंगली घोड़ों की पूंछ से बांध कर घिसटवाऊंगा।”

कूढ़-मरज शाहजादे को लाया गया।

“अच्छा, बेटे, हमें पढ़कर सुनाओ।”

वह रुक-रुककर पढ़ने लगा। लेकिन आखिर पढ़ना तो सीख ही गया था।

बादशाह और उसके लंबी दाढ़ीवाले विद्वानों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

“क्यों, कैसा है मेरा बेटा?” बादशाह ने पूछा।

“शाहजादा बहुत काबिल है!” सलाहकारों ने अपनी दाढ़ियां हिलाते हुए कहा।

बादशाह बहुत खुश हुआ। उसने अपने बेटे को जूरी का नया चोगा पहनाया, बेशक्रीमती चीजें तोहफ़े में दीं, दरबार के सब लोगों को दावत दी और शरीब से कहा:

“चल, चल। तुम्हें और तेरी बेटी को शेखी बघारने की कोई जरूरत नहीं। अल्लाह का शुक्रिया अदा कर कि उसने तुम्हें मौत के मुंह से बचा लिया।”

सारी प्रजा भी खुश थी कि बादशाह अब शहर को जलाकर राख नहीं करेगा और वे लोग ज़िंदा रह सकेंगे। उन्हें यहां खुशियां मनाने दीजिये, आइये अब हम शाहजादे का हाल देखें।

कूढ़-मरज शाहजादा दावत के फ़ौरन बाद गीली ज़मीन पर लेट गया और चालीस दिन तक बिना कुछ खाये-पिये पड़ा रहा।

बादशाह बड़ा दुखी हुआ। उसने शहर में भुनादी करवायी:

“जो कोई मेरे बेटे को बुलवा सकेगा, उसे सिर से पैर तक सोने से ढक दूंगा और काले-काले बालोंवाली खूबसूरत लड़की इनाम में दूंगा। और अगर कोई भी आदमी ऐसा न कर सका, तो शहर उजाड़ दूंगा और किसी की राख भी बाकी न छोड़ूंगा।”

उसी शहर में एक गरीब पोपली बुढ़िया रहती थी। उसने अपने मुंह में एक सूखी खूबानी डाली और उसका रस चूसते हुए बोली: “ठीक है, मैं जाकर देखती हूँ।”

महल में आकर बुढ़िया ने मूर्ख शाहजादे की पीठ पर हाथ फेरकर पूछा:

“बेटे! तेरे पिता बादशाह हैं और उनके पास खाने-पीने की कोई कमी नहीं है, फिर तू क्यों भूखा और चुपचाप पड़ा है?”

शाहजादा बोला:

“अगर मेरे पिता मेरी शादी उसी लड़की से कर दें, जिसने मुझे पढ़ाया था, तब तो मैं बोलने लगूंगा, नहीं तो मरने तक यहीं लेटा रहूंगा।”

बादशाह ने अपने बेटे की बात सुन ली और अपने लंबी दाढ़ियोंवाले चार सौ विद्वानों को बुलाकर कहा-

“जरा मजहबी किताबों में देखकर बताओ, क्या मेरे प्यारे बेटे की शादी उस गरीब लड़की से हो सकती है?”

लंबी दाढ़ियोंवाले काफी देर तक मजहबी किताबों के पन्ने उलटते रहे, पर उन्हें इस बारे में कुछ नहीं मिला।

वे बादशाह के पास आये और बोले:

“नहीं, ऐसी शादी नहीं हो सकती!”

और शाहजादा बिना खाये-पिये पड़ा रहा।

बादशाह गुस्से से पागल हो उठा। उसने जल्लादों को बुलाया।

सात जल्लाद सीने पर हाथ रखे आये और झुककर सलाम करके बोले:

“हमारी तलवारों की धार तेज है, हाथों में बहुत ताकत है, जिसकी मौत आयी है, पलक झपकते ही हम उसका सिर घड़ से अलग कर देंगे।”

जल्लादों ने चार सौ लंबी दाढ़ियोंवालों के हाथ पीछे बांध दिये और उनके सिर काटने के लिए चबूतरे पर ला खड़ा किया।

उस शहर में एक नाकामयाब वकील भी रहता था।

“किसी तरह इन चार सौ विद्वानों की जान बचानी चाहिए,” उसने अपने मन में सोचा और बादशाह के पास आकर बोला:

“बादशाह सलामत, एक मजहबी किताब में साफ़-साफ़ लिखा है कि आपकी मर्जी हो, तो आप अपने बेटे की शादी गरीब की लड़की के साथ कर सकते हैं, न चाहें तो नहीं, इससे आपका कुछ नहीं बिगड़ेगा।”

बादशाह बहुत खुश हुआ। उसने अपने लोगों को गरीब की लड़की को पकड़कर महल में लाने का हुक्म दिया। उन लोगों ने जाकर लड़की को पकड़ लिया और बिना उसकी सहमति लिये जबरदस्ती उसकी शादी कूढ़-मरज शाहजादे के साथ कर दी।

शादी के दूसरे दिन ही कूढ़-मरज शाहजादे ने एक गढ़ा खुदवाया। गरीब की बेटी को गढ़े के पास लाकर उसने उसकी चालीस चोटियों में गांठ लगायी, एक थप्पड़ उसके दाये गाल पर मारा, दूसरा बायें पर और उसकी चोटी से बांधकर उसे लटका दिया।

“कगली, ले अब, शाहजादे को पीटने का मजा चख।” यह कहकर वह अपने घोड़े पर सवार हो गया और शिकार करने चल दिया। शाम को वापस आकर उसने लड़की को गढ़े से निकाला और सुबह फिर चोटी से लटका दिया। इस तरह चालीस दिन बीत गये। इकतालीसवे दिन लड़की ने अपनी आंखों में आंसू भरकर कूढ़-मरज शाहजादे की बहुत आरजू-मिन्नत की

“मैं बहुत कमजोर हो गयी हूँ। मुझे बस आज अपने मां-बाप से मिल आने दो, पता नहीं मैं उन्हें फिर देख भी पाऊंगी या नहीं।”

“जा, पर फौरन लौटकर आना। अगर ज़रा भी देर की, तो सिर कटवा दूंगा और लाश में भूसा भरवाकर महल की दीवार पर लटकवा दूंगा, जिससे पति का कहना न मानने-वाली पत्नियों को शिक्षा मिले।”

गरीब की बेटी बड़ी खुश हुई। उसने जल्दी-जल्दी जूते पहने, बुर्का ओढ़ा और मक्के की दो रोटियां उठाकर मायके भागी।

अपनी बेटी का उतरा हुआ चेहरा देखकर मां रोने-बिलखने लगी:

“मेरी बेटी, क्या हुआ है तुम्हें? तू बिल्कुल पीली पड़ गयी है, सूख गयी है। क्या तू बहुत परेशान है?”

“मां, शाहजादा मुझे पूरे चालीस दिनों से सता रहा है। न मुझे रोटी का टुकड़ा खाने को देता है, न पानी का घूंट पीने को, सिर्फ़ चांटे ही चांटे। मुझे दिन भर गढ़े में चोटी से लटकाये रखता है।”

मां का दिल भर आया। उसने बेटी का मुंह धुलाया, बालों में कंघी की और तरह-तरह के पकवान बनाकर खिलाये। और जब बेटी ने खा-पी लिया और खुश नज़र आने लगी, तो उसने अपने संदूक में से एक तसवीर निकालकर बेटी को दी और बोली:

“जब तेरा पति तुम्हें पीटने लगे, तू मुस्कराने लगना, जब वह और मारे, तो हंस पड़ना। अगर वह पूछे कि तू रोने के बजाय हंस क्यों रही है, तो कहना तुम्हारी मार मेरे लिए सेंवई की तरह है और तुम्हारी गालियाँ-पुलाव की तरह। तुम्हारा जो जी चाहे करो, पर जिस लड़की की यह तसवीर है, उसे दूसरी पत्नी मत बनाना। इसके बाद खिलखिलाकर हंस पड़ना।”

अपने पति के घर पहुँचकर गरीब की बेटी ने वैसा ही किया, जैसा मां ने कहा था।

जब क्रूढ़-मरज शाहजादे ने उस बेहद खूबसूरत लड़की की तसवीर देखी, तो वह उसके पीछे पागल हो उठा।

“यह किस की तसवीर है?” क्रूढ़-मरज शाहजादे ने चिल्लाकर पूछा। “मैं इससे शादी करना चाहता हूँ। यह कहाँ रहती है?”

गरीब की बेटी ने वही कहा, जो उसकी मां ने उसे बताया था।

“कुछ भी हो इसे अपनी दूसरी पत्नी मत बनाना।”

क्रूढ़-मरज शाहजादा जोर-जोर से चिल्लाता हुआ गरीब की बेटी को पीटने लगा।

तब गरीब की बेटी बोली:

“एराम नाम का जन्नत का एक बाग़ है। वहाँ पहुँचने में तुम्हें छ' महीने लगेंगे। एराम के बादशाह की आक़बीलाक नाम की लड़की है। वह अपने चेहरे पर सत्तर पारदर्शक नक्काब डाले रहती है। अगर एक भी नक्काब उठाया जाये, तो चारों ओर ऐसी रोशनी फैल जायेगी, जैसे बत्तीस तेज़ दीप जल रहे हों। आक़बीलाक ने एलान करवा रखा है: 'जो कोई मुझे तीन



बार बोलने के लिए मजबूर करेगा, उसी से मैं शादी कर लूंगी। और जो असफल रहेगा — उसका सिर कटवा दूंगी।”

कूढ़-मरज शाहजादे ने फौरन चालीस खन्चरों पर सोना लदवाया और अपने साथ चालीस हथियारबन्द पिछलग्गुओं को लेकर एराम खोजने निकल पड़ा। “मैं शाहजादा हूँ,” उसने सोचा, “सब मुझसे डरते हैं, मैं जो चाहूँ, कर सकता हूँ, आक्रबीलाक को जबर्दस्ती अपनी पत्नी बना लूंगा, चाहे वह इसके लिए तैयार हो या नहीं — मुझे इससे कोई मतलब नहीं।”

बहुत-सी भीलें, नदियाँ, पहाड़, रेगिस्तान पार करता हुआ वह बहुत दिनों तक सफ़र करता रहा।

मूर्ख शाहजादा अपने पिछलग्गुओं के साथ चलते-चलते अन्त में बग़दाद के चांदी के नक्का-शीदार दरवाजों तक आ पहुँचा। दरवाजों के पीछे एक बहुत सुंदर बाग़ था, जिसमें गुलाब और द्यूलिप के फूल खिले हुए थे, बुलबुलें और तरह-तरह की चिड़ियाँ चहक रही थीं। वहाँ सोने का एक तल्लत रखा था, जिस पर अतलस के गद्दे बिछे हुए थे। सोने के हाँज में पानी की जगह दूध के फ़ौवारे चल रहे थे।

दरबान दौड़कर आया और बोला:

“आइये, आइये, प्यारे मेहमानो! आप कहां से तशरीफ़ ला रहे हैं?”

मूर्ख शाहजादा उफ़न पड़ा:

“गुलाम कहीं का!”

तलवार म्यान से निकालकर उसने उसके दो टुकड़े कर दिये।

मूर्ख शाहजादा बाग़ में घुसकर ऊँची मढ़ी पर बैठ गया, ताज उतारकर एक तरफ़ रख दिया और अपने पिछलग्गुओं से चिल्लाकर बोला:

“घोड़ों को चरने के लिए छोड़ दो और मेरे लिए खाना बनाओ!”

घोड़े फूल रौंदने और खाने लगे, पिछलग्गू अनार और अंजीर के पेड़ लकड़ी जलाने के लिए काटने लगे।

उसी समय तीन फ़ाल्ताएं उड़कर सोने के तल्लत पर आ बैठीं और कलावाजी खाकर तीन खूबसूरत परियाँ बन गयीं।

उन्होंने मूर्ख शाहजादे की ओर देखा भी नहीं और एक सद्रूकची में से मोहरे निकालकर शतरंज खेलने लगीं।

उनमें से एक परी बेईमानी करने लगी, तो बाक़ी दोनों परियाँ कहने लगीं:

“बेईमानी सिर्फ़ आदमी करते हैं, परियाँ नहीं।”

मूर्ख शाहजादा गुस्सा हो उठा,

“परियाँ बेईमान होती हैं, न कि आदमी!” वह बोला। “मैं बिना बेईमानी किये ही तुम्हें हरा सकता हूँ।”

“ज़रा, हमारे साथ खेलकर देखो!” सबसे सुंदर परी ने इठलाते हुए कहा।

“ठीक है!”

और पलक भपकते ही मूर्ख शाहजादा अपने चालीस खन्वर, उन पर लदा सोना और चालीस पिछलग्गू भी हार गया। जब खेल समाप्त हुआ, तो वह बिलकुल कंगाल हो चुका था।

“मैं अभी तुम्हे मजा चखाता हूँ,” वह अपनी तलवार निकालकर चिल्लाया।

एक परी उठ खड़ी हुई।

“यहाँ से चले जाओ!” उसने मृदु स्वर में कहा। “यह जगह तुम्हारे लिए नहीं है।”

और उसने मूर्ख शाहजादे के एक ऐसी लात मारी कि वह कलाबाजिया खाता हुआ और तरबूज की तरह लुढ़कता हुआ मुह के बल मिट्टी में जा गिरा। परियाँ हंसने लगीं। उनकी आँखें उस बिल्ली की आँखों की तरह चमक रही थीं, जिसने अभी-अभी मक्खन चखा हो।

इस तरह मूर्ख शाहजादे ने अकेले ही अपना रास्ता पकड़ा।

कई दिनों के बाद वह एक ऐसी जगह पहुँचा, जहाँ सात अधबनी मीनारें खड़ी थीं।

“यह कौन-सी मसजिद है?” मूर्ख शाहजादे ने वहाँ से गुज़र रहे गड़रिये से पूछा।

गड़रिये ने जवाब दिया:

“दोस्त, यह मसजिद नहीं, महल है। इसमें बादशाह अपनी बेटी आक्रबीलाक के साथ रहता है। आक्रबीलाक ने एलान करवा रखा है कि वह उसीसे शादी करेगी, जो उसे तीन बार बोलने के लिए मजबूर कर देगा। अभी तक कोई उसकी शर्त पूरी नहीं कर पाया है और जो असफल रहे हैं, उनकी छोपड़ियाँ इन मीनारों में ईंटों की जगह लगायी जा रही हैं।”

मूर्ख शाहजादा महल में घुसा, तो उसने देखा कि शाहजादी आक्रबीलाक, जितना उसे बताया गया था, उससे भी सौ गुना सुंदर है। वह भीचक्का रह गया और दलदल में फंसे गधे की तरह सिर झुकाकर खड़ा हो गया।

आक्रबीलाक ने अपनी आँखों से उसे शतरंज और पासों की तरफ इशारा किया। मूर्ख शाहजादा शतरंज खेलने से डरता था, इस लिए उसने पासे खेलने का निश्चय किया। उसने सोचा, “मेरे पास कुछ भी नहीं है। तो क्या हुआ, मैं अपने आपको ही दांव पर लगा दूंगा। हर हालत में मुझे ही जीतना है। कितने सालों से यह खेल खेलता जो आया हूँ।”

खेल शुरू हुआ। थोड़ी देर में ही फ़ैसला हो गया। मूर्ख शाहजादा फिर हार गया।

आक्रबीलाक ने इशारे से जल्लाद को बुलाया।

शाहजादी के दायें ओर खड़ा वज़ीर सिर झुकाकर बोला:

“मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ। आप इस बेवकूफ़ को मुझे सौंप दीजिये। मैं इसे खूब सता-सताकर मारूँगा। इसके बाद कोई खाली जेब खेलने नहीं आयेगा।”

वज़ीर मूर्ख शाहजादे को पकड़कर अपने साथ ले गया।

“मेरे घर पर तेल पेरने का कोल्हू है, जिस पर एक बूढ़ा गुलाम काम कर रहा है। उसका सिर कटकर मीनार पर जायेगा और उसकी जगह तुम तेल पेरोगे,” उसने शाहजादे से कहा।

कोल्हू पर मूर्ख शाहजादा दिन-रात काम करता, तीन कनस्तर तेल निकालता, सूखी घास पर सोता, मूंग की दाल खाता और गोबर की बू सूंघता रहता।

एक बार वहाँ से सौदागरों का एक काफ़िला गुज़रा।

“आप लोग कहाँ जा रहे हैं?” मूर्ख शाहजादे ने क्राफिले के सरदार से पूछा।

“अजम देश ।”

“वहाँ के बादशाह के नाम मेरी एक चिट्ठी ले जाओगे?”

“ठीक है,” कारवाँ का सरदार बोला।

मूर्ख शाहजादे ने एक कागज लेकर चिट्ठी लिखी:

मूर्ख शाहजादे ने एक कागज लेकर चिट्ठा लिखा।  
 "आदरणीय पिता जी, आपकी आँखों का नूर, आपका बेटा, एराम पहुँच गया है।  
 मैंने आकबीलाक परो को अपनी पत्नी बनाना चाहा था, पर एक जाल में फँस गया हूँ।  
 साल से कोल्हू पेर रहा हूँ। पिता जी, आप अजम के बादशाह हैं। मेरी सारी मुसीबतों  
 जड़ वह गरीब की बेटा है, जिसके बाल मैंने उखाड़ दिये थे। पत्र मिलते ही सात से तेज  
 सत्तर साल तक के उसके सारे रिश्तेदारों के टुकड़े-टुकड़े करवा दीजिये। अगर आपने ऐसा  
 नहीं किया, तो मैं इस दुनिया में ही नहीं, परलोक में भी आपसे नाराज़ रहूँगा।"

मूर्ख शाहजादे ने चिट्ठी बन्द करके कारवाँ के सरदार को दे दी।

मूर्ख शाहजादे ने चिट्ठी बन्द करके कारवां के सरदार को दे दी।  
कारवां का सरदार उस गरीब का पड़ोसी था, जिसकी बेटी मूर्ख शाहजादे की पत्नी  
थी। अजम लौटकर उसने अपने पड़ोसी को इस चिट्ठी के बारे में बताया। यह बात पास के  
कमरे में बैठी गरीब की बेटी ने सुन ली:

कमरे में बैठी गरीब की घेटी ने सुन लाः  
 "यह चिट्ठी, शायद, मेरे पति की ही है," उसने सोचा। और अपने पिता के हाथों  
 में से चिट्ठी छीनकर वह बाग़ में भाग गयी।

गरीब की बेटी ने देखा कि मामला खराब है। उसने वह चिट्ठी जला दी और एक और कागज पर नयी चिट्ठी लिखी।

“आदरणीय पिता जी !

“आदरणीय पिता जी !  
आपकी आंखों का नूर, आपका बेटा, एराम पहुँच गया है। मैंने परी आक़बीलाक से शादी कर ली और अब मैं सारी दुनिया का बादशाह हो गया हूँ। देव, परिया, जिन और आदमी सब मेरे अधीन हैं। पत्र पाते ही मेरी पत्नी और उसके घरवालों की सातवीं पीढ़ी तक के रिश्तेदारों को नये कपड़े पहना दीजिये और सिर से पैर तक सोने से ढक दीजिये। अगर ऐसा नहीं किया, तो मैं आकर आपके टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा। मैं तीन महीने के अंदर-अंदर अपनी सात लाख फ़ौज लेकर आ रहा हूँ। और आकर मैं आपकी अच्छी तरह भरममत करूँगा आपका बेटा।”

गरीब की बेटी ने यह चिट्ठी अपने पिता को दे दी, जो उसे बादशाह के पास ले गया। बादशाह ने डर के मारे काँपते हुए यह चिट्ठी पढ़कर अपने चार सौ विद्वानों को सुनाई। चिट्ठी में जैसा लिखा था, वैसा ही किया गया।

चिट्ठी में जैसा लिखा था, वसा ही किया गया।  
गरीब सिर से पाँव तक सोने से लदा घर आया, खुशी के मारे उसके कदम जमीन पर  
नहीं पड़ रहे थे।

पड रहे थे।  
रात को गरीब की लड़की महल में घुसकर वह तेज घोड़ा चुरा लाई, जिस पर सबा



होकर उसका पति शिकार करने जाता था। घोड़े पर काठी कसकर उसने मदों के कपड़े पहने, सिर पर पोस्तीन की टोपी पहनी और कमर में इस्फ़हान में बनी तलवार बाध ली।

गरीब की लड़की लपककर घोड़े पर सवार हुई और उसे इतने जोर से चाबुक मारे कि उसकी हड्डियों पर भी निशान पड़ गये। घोड़ा कान हिलाता, पूछ उठाये पूरी रफ़्तार से भागा।

गरीब की बेटी उसी बाग़ में रुकी, जहाँ तीन साल पहले उसका पति परियों के साथ शतरंज खेला था। उसने दरबान का शिष्टतापूर्वक अभिवादन किया और अपने घोड़े को खूँटे से बाधने को कहा, ताकि वे फूलों को न खा सकें।

उसने अभी चाय का एक प्याला भी न पिया था कि पहले की तरह तीन फ़ास्ताएँ उड़कर आयी और परी बनकर शतरंज खेलने लगीं। एक परी ने खेल में बेईमानी की, तो दूसरी बोली:

“बेईमानी केवल आदमी करता है।”

“नहीं, परियाँ बेईमानी करती हैं,” गरीब की बेटी ने उनको टोका। परियों में से एक ने उसकी ओर देखकर पूछा:

“क्या आप भी शतरंज खेलते हैं?”

“हां,” गरीब की बेटी ने कहा और उसने थोड़ी ही देर में तीनों परियों को मात देकर उनका सब कुछ जीत लिया।

इसके बाद गरीब की बेटी ने मोहरा चलते हुए कहा:

“अगर इस बार मैं फिर जीत गया, तो तुम तीनों मेरी गुलाम हो जाओगी।”

उसने चाल चली और परियाँ फिर मात खा गयीं।

परियाँ थर-थर कांपने और रोने लगीं।

“हमें माफ़ कर दीजिये! हम आकबीलाक की दासियाँ हैं। अगर उसे मालूम पड़ गया कि हम अपने आपको हार गयी हैं, तो वह हमारे माता-पिताओं को भी ज़िंदा नहीं छोड़ेगी। हमें छोड़ दीजिये। आपकी जो भी इच्छा हो, उसे हम फ़ौरन पूरा कर देंगी।”

गरीब की लड़की बहुत खुश हुई।

“मेरा एक काम करो,” वह बोली। “आकबीलाक को तीन बार बोलने के लिए मजबूर कर दो, फिर मैं तुम्हें छोड़ दूंगा।”

तीनों परियों ने एक ठंडी सास ली।

“आकबीलाक बड़ी क्रूर, निर्दयी और जिद्दी तानाशाह है,” बड़ी परी बोली। “वह अठारह साल की हो गयी है, पर अभी तक उसने एक बार भी अपने माता-पिता का कहना नहीं माना है। अच्छा, आप जैसा चाहते हैं, हम वैसा ही कर देंगी। हम आपको तीन पर देती हैं। फिर हम जैसा कहें, जैसा सिखायें, वैसा ही करिये। शाहज़ादी के कमरे में तीन पलंग हैं। एक पन्ने का बना है, दूसरा नीलम का और तीसरा—माणिक का। जब शाहज़ादी पन्ने के पलंग पर बैठे, तो आप दीये की लौ से एक पर जलाना और मैं फ़ौरन उस पलंग

के नीचे घुस जाऊँगी। आप पलंग को कुछ सुनाने के लिए कहना। मैं कुछ सुनाने लगूँगी और शाहजादी आक्रबीलाक सोचेगी कि पलंग बोल रहा है। इसके बाद आक्रबीलाक नीलम के पलंग पर जा बैठेगी, आप फिर पलंग को कुछ सुनाने के लिए कहना। जब वह माणिक के पलंग पर बैठे, तब भी यही करना। पर हम जो भी आपसे कहें, आप उसका उल्टा बोलना। आपकी बातों का कोई मतलब नहीं निकलना चाहिए।”

तीनों परियों ने अपना एक-एक पर गरीब की बेटी को दे दिया और फ़ास्ताएं बनकर उड़ गयीं।

गरीब की बेटी छोड़ा सरपट दौड़ाती हुई एराम पहुँची और महल में गयी।

शाहजादी आक्रबीलाक अपने चेहरे पर रेशम के सत्तर बारीक नकाब डाले बैठी थी। उसकी चाँद-से चेहरेवाली, काले-काले बालोंवाली चालीस दासियाँ हंसती-खेलती नखरे के साथ अपने नाखून कुतर रही थीं। गरीब की लड़की ने इतने अच्छे ढंग से मर्दाने कपड़े पहन रखे थे कि उनमें से किसी को पता नहीं चला कि सुगठित शरीरवाला यह लड़का वास्तव में लड़की है।

“पत्थरदिल लड़की!” गरीब की बेटी चिल्लाई। “तू कब तक बेकसूर आदमियों की हत्या करती रहेगी, उनके खून से ज़मीन साल करती रहेगी? तू कब तक केवल इसी लिए अदंडित रहेगी, क्योंकि तेरे पिता बादशाह हैं? फ़ौरन उठकर मेरे पैरों में गिर, वरना मैं तलवार से तेरे टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा और तेरा सिर अपनी काठी के आगे लटकवा दूँगा। पर मुझे तेरी खूबसूरती पर रहम आता है। तुझे मैं यहाँ से उठाकर ले जाऊँगा और नौकरानी बनाकर मेरे चालीस हजार सैनिकों को चाय पिलाने का काम करवाऊँगा।”

शाहजादी आक्रबीलाक क्रोधित हो उठी। उसने अपने चेहरे से नकाब उतार फेंके। उसका मुह खुला का खुला रह गया, माथे पर बल पड़ गये।

शाहजादी ने वज़ीर को इशारा किया।

“ऐ, जाहिल!” वज़ीर चिल्लाया। “तेरे घर में मेहमान को खिलाने के लिए भी कुछ नहीं है और तू इतनी बकवास कर रहा है। अभी जल्लाद को बुलाकर तेरा सिर कटवाता हूँ।”

जवाब में गरीब की लड़की हंसकर बोली:

“तुम मुझे डरा नहीं सकते। आओ, हम पास से खेलकर देखे, कौन जीतता है।”

शाहजादी आक्रबीलाक ने चाँदी की गोटियाँ और सोने के पासे निकाले।

“ठहर, बेशर्म शाहजादी,” गरीब की लड़की बोली, “तू सब आनेवालों से बेईमानी से जीतकर उन्हें मरवा देती है, पर तू मुझे छोड़ा नहीं दे सकती। पासे मुझे दे।”

शाहजादी आक्रबीलाक गुस्से से लाल हो उठी, पर उसने पासे दे दिये।

पलक झपकते ही गरीब की बेटी ने आक्रबीलाक का सब कुछ जीत लिया।

निराशा और गुस्से में भरकर आक्रबीलाक ने अपने सिर के बाल नोच लिये और पन्ने के पलंग पर जा बैठी।

गरीब की बेटी ने परियों का दिया हुआ एक पर जलाया। परी आयी और पलंग के नीचे छिप गयी। शाहजादी आकबीलाक को कुछ भी पता न चला।

“ऐ, पलंग,” गरीब की बेटी बोली, “मैं छः महीने से सफ़र कर रहा हूँ और बहुत थक चुका हूँ। मुझे कुछ सुना, जिससे मेरे दिल को चैन आये।”

परी बोलने लगी:

“आपको क्या सुनाऊँ?”

“सुनायेगा तू, मैं तो सुनूँगा,” गरीब की बेटी बोली।

परी सुनाने लगी।

### पहली परी की कहानी

बहुत समय पहले एक बड़ई रहता था। कुछ पैसा जोड़कर वह यात्रा पर निकला। बड़ई का एक दोस्त था जो सोने के जेवर बहुत सुंदर बनाता था। सुनार बोला, “मैं भी चलूँगा।” और सुनार का दोस्त एक दर्जी था। दर्जी बोला, “मैं भी तुम लोगों के साथ चलूँगा।” दर्जी का भी एक दोस्त था, जो जादू-टोना करना जानता था। वह बोला: “मैं भी चलूँगा।”

वे चारों चल पड़े। चलते-चलते रात हो गयी, सब सो गये और बड़ई पहरा देने लगा। नींद न आये, इस लिए उसने लकड़ी के टुकड़े से एक गुड़िया बनानी शुरू की। गुड़िया बनाकर उसने चिराग के पास रख दी और सो गया। अब सुनार पहरा देने लगा। उसने गुड़िया देखकर सोचा: “बड़ई ने यही बनायी है, मैं उससे भी अच्छा काम करूँगा।” उसने आग में चांदी का सिक्का पिघलाया और उससे गुड़िया के चांदी के नाखून, दांत और आँखें बना दीं। अपना काम खत्म करके वह सो गया। अब दर्जी की बारी आयी। उसने गुड़िया को देखकर सोचा: “मेरे दोस्तों ने यह काम किया है, मुझे भी कुछ करना चाहिए।” उसने कपड़े का एक टुकड़ा लेकर बहुत सुन्दर पोशाक बनायी और गुड़िया को पहनाकर सो गया। जादूगर उठा। गुड़िया को देखकर उसने मंत्र पढ़ा और गुड़िया में जान पड़ गयी। “उठो,” जादूगर चिल्लाया। सबने सिर उठाकर देखा—उनके सामने एक बहुत खूबसूरत लड़की खड़ी है। उसकी सुंदरता के आगे चांद और सूरत फीके पड़ रहे थे। उसके मुक़ाबले में शाहजादी आकबीलाक एक बदसूरत मेंढकी से भी गयी-गुजरी है।

“ऐ, लड़के,” पलंग के नीचे छिपी परी बोली, “अगर तू अपने आपको विद्वान समझता है, तो बता, उस लड़की को किसने बनाया? बड़ई ने, सुनार ने, दर्जी ने या जादूगर ने?”

गरीब की लड़की बोली:

“अगर दर्जी ने कपड़े नहीं सिये होते, तो क्या वह आदमी बन सकती थी?”

वही हुआ, जो होना था। आकबीलाक अपनी गुस्सा नहीं रोक पाई और चिल्ला उठी

“तुम मूर्ख हो। क्या इतना भी तुम्हारी समझ में नहीं आता कि कपड़े पहने हुए भी मैं शाहजादी हूँ और कपड़े न पहने हुए भी शाहजादी रहूँगी।”



शहनाइयां गूज उठीं, ढोल बजने लगे और लोग खुशी से चिल्ला उठे

“शाहजादी पहली बार बोल उठी!”

शाहजादी आकबीलाक उस बिल्ली की तरह गुस्सा हो उठी, जिसके मुह से चूहा छीन लिया गया हो और नीलम के पलंग पर जा बैठी। गरीब की लड़की ने दूसरा पर जलाया और बोली “ऐ, नीलम के पलंग, कुछ सुना, जिससे मेरा दिल बहल जाये।”

नीलम के पलंग के नीचे छिपी दूसरी परी बोली:

“तुम्हे क्या सुनाऊ? पन्ने के पलंग की कहानी तक तो तुम्हारी समझ में आयी नहीं। अच्छा, सुनो।”

### दूसरी परी की कहानी

बहुत समय पहले एक अमीर रहता था। वह कितना ही धनवान क्यों न था, पर उसकी पीठ पर डेढ़ मन मेल जमा रहती थी।

उस अमीर के तीन बेटे थे। एक दिन बड़ा बेटा बोला:

“पिता जी, मुझे एक सौ अशरफियाँ दीजिये, मैं ताशक़न्द जाकर मोटी-मोटी भेड़ें खरीदूँगा।”

अमीर आदमी ने अपने बेटे को सौ अशरफियाँ दे दीं। वह बाहर निकला, तो देखा—एक लड़का फटी हुई टोपी कभी लगाता है तो कभी उतारता है।

“तू इस फटी-पुरानी टोपी को बार-बार क्यों लगा और उतार रहा है?” अमीर आदमी के बेटे ने उस लड़के से पूछा।

“यह जादूई टोपी है, इस टोपी को सिर पर रखकर आँखें मीचिये और फिर खोलकर देखिये, तो मालूम पड़ेगा कि आप पश्चिम से पूर्व पहुँच गये हैं।”

अमीर आदमी के बेटे ने फौरन सौ अशरफियाँ देकर टोपी खरीद ली और घर ले आया। पिता फटी टोपी को देखते ही चिल्ला पड़ा:

“तुमने यही खरीदारी की है!”

मंझला बेटा बोला:

“पिता जी, आप मुझे एक सौ अशरफियाँ दीजिये, मैं उज्जैन जाकर पिस्ते जितने बड़े दानेवाला चावल खरीदूँगा।”

अमीर ने उसे सौ अशरफियाँ दे दीं। मंझला लड़का बाहर निकला, उसने देखा—कुछ लड़के शीशे के टुकड़े से खेल रहे हैं और चिल्ला रहे हैं:

“जादूई शीशा! इसमें देखने पर समरक़न्द से ही बुखारा दिखाई देगा!”

मंझले बेटे ने सौ अशरफियाँ देकर शीशे का टुकड़ा खरीद लिया।

“बेवकूफ़।” अमीर आदमी चिल्लाया।

तब सबसे छोटे बेटे ने उससे सौ अशरफियाँ मांगीं।

“मैं बाजार में दुकान लगाऊँगा। छोटी-मोटी चीजें बेचूँगा,” छोटा लड़का बोला।

अमीर ने उसे भी सौ अशरफियाँ दे दीं। वह घर से बाहर निकला, तो देखा—कुछ लड़के छेददार परात में बैठकर पहाड़ी से नीचे फिसल रहे हैं।

“कमाल है,” छोटे बेटे ने सोचा, “न कुछ खाती है, न पीती है और इतना तेज़ भागती है।”

उसने सौ अशरफियाँ देकर छेददार परात खरीद ली और घर लौट आया। अमीर परात को देखते ही गुस्से से पागल हो उठा, उसने डंडा उठाया और तीनों बेटों को मारने लगा। संभले बेटे की जेब में से शीशे का टुकड़ा गिर पड़ा। छोटे बेटे ने मार से बचने के लिए छेददार परात से सिर ढक लिया। अचानक उसकी नज़र शीशे के टुकड़े पर पड़ी। उसने शीशे में देखा—पश्चिम के किसी बादशाह की बेटी मर गयी है और लोग उसके ताबूत के चारों ओर खड़े रो रहे हैं। छोटे बेटे ने फटी टोपी उठाकर ओढ़ ली और आँखें बंद कर लीं। आँखें खोलते ही उसने देखा—वह ताबूत के पास खड़ा है। उसने छेददार परात में पानी भरकर मृत शाहजादी के सिर पर डाला। अचानक वह उठ खड़ी हुई। वह इतनी खूबसूरत थी कि उसके आगे शाहजादी आक़बीलाक मेंढकी जैसी लगती है। अच्छा अब तुम फ़ैसला करो: “शाहजादी को किस चीज़ ने जिलाया—टोपी ने, शीशे के टुकड़े ने या परात ने?”

ग़रीब की बेटी बोली:

“अगर छोटे बेटे ने मृत शाहजादी को शीशे में न देखा होता, तो कुछ भी न हुआ होता।”

आक़बीलाक से न रहा गया और वह बोल उठी:

“बिल्कुल बेवकूफ़ हो। मेरे मरने के बाद मुझे लाखों आदमी देखें, तो क्या मैं जी उठूँगी?”

यह कहते ही उसने अपनी ज़बान काट ली। शहनाइयाँ गूँज उठीं, ढोल बजने लगे। लोग चिल्लाने लगे:

“आक़बीलाक दूसरी बार बोल उठी!”

आक़बीलाक गुस्सा होकर माणिक के पलंग पर जा बैठी। ग़रीब की बेटी ने तीसरा पर जलाकर कहा:

“ऐ माणिक के पलंग, तू भी कुछ सुना।”

तीसरी परी माणिक के पलंग के नीचे आकर छिप गयी और कहानी सुनाने लगी।

### तीसरी परी की कहानी

बहुत समय पहले एक बादशाह राज करता था। उसके पास एक तोता था। बादशाह तोते को बड़े प्यार से खिलाता-पिलाता था और उसका बहुत ख्याल रखता था।

एक बार तोते ने सोचा:

“मेरी ज़िंदगी में तो बादशाह मुझे बहुत प्यार करता है, पर मेरे मरने के बाद क्या करेगा?” यह सोचकर वह अपने पिंजरे में ऐसे पड़ गया, जैसे मर गया हो।

बादशाह आया और पिंजरे की ओर देखकर नौकरों से बोला :

“ इस मरी हुई चिड़िया को बाहर फेंक दो। ”

तोता फौरन उठ खड़ा हुआ और बोला :

“ तुम बहुत खराब बादशाह हो। मैं मरा नहीं हूँ ! मुझे अब हिन्दुस्तान जाने दो। मैंने चालीस सालों से अपने घरवालों को नहीं देखा है। ”

“ ठीक है, ” बादशाह बोला, “ पर तुझे वापस मेरे पास आना होगा। ”

तोता अपने देश जाकर वापस आ गया और बादशाह के लिए एक फल लेकर आया। वह फल देखने में सेब या आड़ू जैसा लगता था, पर था इतना सुंदर कि देखते ही मुंह में पानी आने लगता था।

बादशाह अपनी घुड़साल में तोते को कंधे पर बिठाये अपने चहेते घोड़े को थपथपा रहा था। तोते का लाया हुआ फल सोने की तश्तरी में रखकर बादशाह को दिया गया। बादशाह फल का एक टुकड़ा उठाकर मुंह में रखनेवाला ही था कि अचानक घोड़े ने मुंह बढ़ाकर सारा फल खा लिया।

“ ठहर, ठहर, ” बादशाह चिल्लाया।

घोड़ा ज़मीन पर गिरकर तड़पने लगा और मर गया। बादशाह गुस्से से पागल हो उठा और उसने तोते की गर्दन मरोड़ दी।

“ बताओ, गलती किसकी थी ? बादशाह की, घोड़े की या तोते की ? ”

गरीब की बेटी भूली नहीं थी कि परियों ने उसे बिल्कुल उल्टा जवाब देने को कहा है, इस लिए वह बोली :

“ गलती घोड़े की थी, उसे वह फल खाना ही नहीं चाहिए था। ”

शाहजादी आकबीलाक से फिर न रहा गया, और वह चिल्लाकर कह उठी :

“ अरे बेवकूफ, क्या घोड़ा वह फल हिन्दुस्तान से लेकर आया था ... ”

उसने फिर अपनी जीभ काट ली, पर अब देर हो चुकी थी।

शाहनाइयाँ और ढोल बजने लगे। लोग चिल्लाने लगे :

“ शाहजादी तीसरी बार बोल उठी। अब वह दूल्हों के सिर नहीं कटवा सकेगी। ”

आकबीलाक उदास होकर बोली :

“ हाय, मैंने क्या कर दिया ! अब मुझे तेरी पत्नी बनना पड़ेगा। मेरी वजह से कितने ही शाहजादे आकर अपने सिर कटा गये। तेरे न मूँछें हैं, न दाढ़ी, पर तूने मुझे बेवकूफ बना दिया। खैर, अब मैं कुछ नहीं कर सकती, मुझे तेरी पत्नी बनना ही पड़ेगा। ”

गरीब की बेटी ने म्यान से तलवार निकाल ली और बोली :

“ बेरहम शाहजादी ! देखती है, यह क्या है ? तेरे नखरों की वजह से कितने लोगों ने अपने सिर कटाये हैं ! अब तेरी मौत आ गयी ! ”

आकबीलाक रो पड़ी :

“ हाय, मैं कितनी बदकिस्मत हूँ ! मेरा कोई कसूर नहीं। एक दुष्ट जादूगर ने मेरे पैदा



होते ही मुझ पर जादू कर दिया था। तूने वह जादू उतार दिया। अब मेरे साथ तेरा जो जी चाहे कर।”

गरीब की बेटी ने शाहजादी आकबीलाक की बातों में आकर उसे अपनी आपबीती सुनायी और मूर्ख शाहजादे को हूँककर गद्दारी की सजा देने के लिए कहा।

आकबीलाक ने मुनादी करवाई:

“अजम का शाहजादा जहाँ भी हो, फौरन महल में पहुँचे!”

मूर्ख शाहजादे को बहुत हूँका गया, पर वह कहीं न मिला। गरीब की बेटी अपने देश लौटने की तैयारी करने लगी। उसे यहीं छोड़कर, आइये, अब मूर्ख शाहजादे का हाल सुनिये। जब तीसरी बार नगाड़े बजे, तो बजीर भागता हुआ कोल्हू पेर रहे मूर्ख शाहजादे के पास आया और बोला:

“शाहजादे, अपनी जान बचाओ! जिस शाहजादे ने आकबीलाक को तीन बार बोलने के लिए मजबूर कर दिया था, वह तुम्हारी पत्नी है और वह तुम्हारा सिर काटना चाहती है। तुम फौरन कहीं छुप जाओ।”

डर के मारे मूर्ख शाहजादा कूड़े के गढ़े में छिप गया और तब तक वहीं बैठा रहा, जब तक कि गरीब की बेटी एराम छोड़कर न चली गयी।

तब बजीर मूर्ख शाहजादे को शाहजादी आकबीलाक के पास लेकर आया।

“इसे मेरे तख्त से दूर खड़ा करो,” आकबीलाक ने नाक सिकोड़ते हुए बजीर से कहा: “इस शाहजादे के बदन से बहुत तेज बदबू आ रही है। अगर तुम अजम के बादशाह के लड़के हो, तब तो तुम्हें माफ़ कर दूंगी, नहीं तो तुम्हारा सिर कटवा दूंगी।”

मूर्ख शाहजादा घुटनों के बल गिर पड़ा और बोला:

“शाहजादी, मेरे पिता वास्तव में अजम के बादशाह हैं। मैंने उन्हें चिट्ठी लिखी थी कि वह मेरी पत्नी, गरीब की लड़की के, जिसके बाल मैंने उखाड़ दिये हैं, टुकड़े-टुकड़े करवा दें। पर वह सबको बेवकूफ बनाकर और भेष बदलकर मुझे मारने यहाँ आ पहुँची। मेरी पत्नी नागिन से भी ज्यादा चालाक है। एराम की शाहजादी, कोई भिखारिन आकर आपको धोखा दे गयी और बोलने के लिए मजबूर कर गयी। आपको उससे बदला लेना चाहिए।”

आकबीलाक का चेहरा गुस्से से लाल हो उठा।

“तुम मेरे चालीस हजार सैनिकों को लेकर अपने देश जाओ। उस चालाक लड़की को पकड़कर यहाँ लाओ। मैं खुद उसके खून का रंग देखना चाहती हूँ।”

“आपका हुक्म सिर आँखों पर,” मूर्ख शाहजादा बोला और कूच की तैयारी करने दौड़ पड़ा। वह इतनी जल्दी में था कि सीढ़ियों से उतरते समय सात बार ठोकर खाकर लुढ़का और उसके हाथों और पैरों की छाल सात जगह से छिल गयी।

कुछ दिन बाद मूर्ख शाहजादा चालीस हजार सैनिकों के साथ अजम के लिए कूच कर गया।

अजम की सीमा के पास पहुँचते-पहुँचते उसने एक हरकारे को चिट्ठी देकर अपने पिता के पास भेजा:

“मैं तीन दिन बाद अजम पहुँच रहा हूँ। मैं अब सारी दुनिया का बादशाह हूँ, अगर आप अपना तख्त छोड़कर मुझसे मिलने नहीं आये, तो मैं आपके देश को जलाकर साक कर दूंगा।”

चिट्ठी मिलते ही अजम के बादशाह ने अपने चार सौ लंबी दाढ़ियोवाले विद्वानों को बुलाकर कहा :

“मेरा प्यारा बेटा बहुत नजदीक पहुँच चुका है और उसने चिट्ठी भेजी है, जिस में लिखा है कि सारी दुनिया में उसका डंका बजता है। अगर उसने ऐसा लिखा है, तो सच ही होना चाहिए। अगर मैं उससे मिलने नहीं गया, तो वह नासमझ जो मन मे आये, कर डालेगा।”

चार सौ लंबी दाढ़ियोवालों ने जवाब में केवल अपने सिर और दाढ़ियाँ हिलाईं। बादशाह ने अपने सारे बजीरों और लंबी दाढ़ियोंवालों को रास्ते के दोनों ओर खड़ा कर दिया और स्वयं धूलभरी सड़क के बीचोंबीच खड़ा हो गया। सबने अपनी-अपनी तलवार निकालकर गरदन पर लटका ली।

मूर्ख शाहजादा नाक फुलाता, नथुने सिकोड़ता, मूँछों पर ताव देता आया और पिता के बजीरों और विद्वानों की ओर नज़र किये बिना थोड़ा रोककर अपने पिता से बोला :

“मैंने आपको चिट्ठी में लिखा था कि आप मेरी पत्नी की सातवीं पीढ़ी तक के सारे लोगों को मार डालें। पर आपने क्या किया? मैं आपको हुक्म देता हूँ कि आप अस्सी हाथ ऊँचा फाँसी का तख्ता लगवाये और मेरी पत्नी को उस पर लटका दें। फिर मैं उसके मुँह का निशाना लगाकर तीर छोड़ूँगा, जो आरपार निकल जायेगा।”

बादशाह डर गया। उसके हाथ-पैर काँपने लगे। वह मुँह के बल धूल में गिर पड़ा। और मूर्ख शाहजादे ने बजीरों और विद्वानों के सिर काटने शुरू कर दिये।

मूर्ख शाहजादे को यहीं छोड़कर अब गरीब की बेटी का हाल सुनिये।

उसने जब सुना कि उसका पति—मूर्ख शाहजादा चालीस हजार सैनिकों के साथ अजम देश में घुस आया है, तो वह सैनिक का भेष धर, एक हाथ में तलवार और दूसरे में ढाल संभालकर अपने पिता से बोली :

“मैं अपने पति को अच्छी तरह जानती हूँ। डरपोक के सामने वह बहादुर बनता है और बहादुर के सामने—डरपोक।”

गरीब की बेटी एराम की फौज के सामने आ खड़ी हुई और चिल्लाकर बोली :

“यहाँ कौन डींग हाँक रहा है और बेकसूर लोगों को मार रहा है?”

मूर्ख शाहजादा गरीब की बेटी को सैनिक के भेष में तलवार और ढाल लिये देखते ही काँपने लगा। उसके हाथ से तलवार गिर गयी और वह घोड़े पर से सीधा गोबर के ढेर में जा गिरा। एराम की फौज ने जब मूर्ख शाहजादे का यह हाल देखा, तो सारे चालीस हजार सैनिक सिर पर पैर रखकर भागे।

गरीब की बेटी मूर्ख शाहजादे के पैरों में फंदा डालकर उसे गोबर के ढेर में से शहर के मैदान में घसीट लायी। मूर्ख शाहजादे को वही फाँसी पर लटका दिया गया।

अजम के बादशाह का कुछ पता नहीं चला। वह कहाँ गया, उसका क्या हुआ - कोई नहीं जानता।

अजम की प्रजा ने गरीब की बेटी को सम्मान के साथ बादशाह के तख्त पर बिठा दिया।

## सींगोंवाला सिकंदर



पुराने समय में सिकंदर नाम का एक बादशाह राज करता था। उससे सारे नाई डरते थे, क्योंकि वह अपने बाल कटवाने के बाद नाई को मरवा देता था। बहुत-से नाइयों ने अपने प्राण गंवाये, पर कोई भी यह राज न जान पाया कि आखिर सिकंदर नाइयों को मरवाता क्यों है। एक दिन सिकंदर समरकंद आया। वहाँ भी उसने बहुत-से नाइयों को जान से मरवा डाला। कुछ नाई अपने प्राण बचाकर भाग निकले। शहर में एक भी नाई न रहा। बहुत

हूँढ़ने के बाद एक बूढ़ा मिला जो कभी युवावस्था में बाल काटने का काम किया करता था। वजीर ने उसे महल में बुलाकर हुक्म दिया:

“तुम्हें बादशाह के बाल काटने होंगे।”

“बड़ी खुशी से काटूंगा,” बूढ़ा बोला। उसे मालूम न था कि बादशाह सिकंदर अपने बाल कटवाने के बाद नाई को ज़िंदा नहीं छोड़ता था।

बूढ़ा सिकंदर के बाल काटने लगा, तो अचानक उसने देखा कि बादशाह के सिर में सींग हैं।

बूढ़ा चुप रहा। अपना काम खत्म करके वह जानेवाला ही था कि अचानक सिकंदर ने आवाज़ दी:

“जल्लाद!”

“गरीबपरवर, मुझ पर रहम कीजिये! मेरे बहुत-से बेटे-पोते हैं, आप मेरी जान लेकर क्या करोगे?”

सिकंदर को बूढ़े पर दया आ गयी, पर उसने उससे वचन ले लिया कि वह कभी भी किसी को नहीं बतायेगा कि सिकंदर के सिर में सींग हैं।

बहुत दिन बीत गये। अपना दिया हुआ वचन याद करके बूढ़ा चुप रहा। पर इस राज को छिपाये रखने के कारण उसको नींद नहीं आती थी। वह हमेशा परेशान रहने लगा और उसका पेट भी फूलने लगा - पहले एक तरबूज जितना हुआ, फिर एक बड़े घड़े जितना और उसके बाद एक ढोल जितना।

बूढ़े के लिए अब राज और ज्यादा देर छिपाये रखना असंभव हो गया। वह शहर से भागकर पहाड़ पर चला गया। पहाड़ में एक सुनसान जगह में एक सूखा कुआँ था। बूढ़ा कुएँ के पास पहुँचा और चारों ओर देखने लगा। जब उसने देखा कि वहाँ पानी की तलाश में कोई नहीं आ रहा है तो वह कुएँ में मुँह करके तीन बार चिल्लाया,

“सिकंदर के दो सींग हैं!”

“सिकंदर के दो सींग हैं!”

“सिकंदर के दो सींग हैं!”

बूढ़े ने इतना ही कहा कि उसका पेट ठीक हो गया और उसकी सारी परेशानी खत्म हो गयी।

बूढ़ा खुशी-खुशी अपने घर लौट आया।

थोड़े दिनों के बाद उस सूखे कुएँ में से बहुत सुंदर और ऊँचा नरकल उग आया।

पहाड़ों में भेड़ें चरानेवाले गड़रिये को वहाँ से गुजरते समय वह नरकल दिखाई दे गया। गड़रिया बहुत खुश हुआ। उसने नरकल के डंठल से एक बांसुरी बनायी। गड़रिये ने बांसुरी पर अपने प्यारे गाने की धुन बजानी चाही। उसने कितनी ही कोशिश क्यों न की, पर बांसुरी में से हर बार तरह-तरह के सुर में एक ही आवाज निकलती:

“सिकंदर के दो सींग हैं!”

एक पल में यह गूँजती हुई आवाज अपने तख्त पर बैठे बादशाह सिकंदर के कानों में भी पड़ी। उसने बूढ़े नाई को फौरन पकड़कर लाने का हुक्म दिया।

डर के मारे काँपते हुए बूढ़े को घसीटकर दरबार में लाया गया। उसी समय फिर पहाड़ की तरफ से आवाज आती सुनाई दी:

“सिकंदर के दो सींग हैं!”

सिकंदर ने सोचा:

“मेरे देश में दुश्मन की फ़ौज घुस आयी है और वे लोग ही मेरा नाम बिगाड़ रहे हैं।”

उसने अपनी फ़ौज को पहाड़ों में भेजा।

सिकंदर के सैनिकों ने गड़रिये को पकड़ लिया और उसे उठाकर दरबार में ले आये।

अपना कोई दोष न देखकर गड़रिये ने सोचा: “शायद, बादशाह मेरा संगीत सुनना चाहता है!” और वह गुस्से से पागल हो रहे बादशाह के सामने चुपचाप खड़ा रहा।

“बता,” सिकंदर ने बूढ़े से कहा, “क़सम तोड़ने की तेरी हिम्मत कैसे हुई?”

“अगर आप मेरी जान बख़्शें तो बताऊँ!” बूढ़ा गिड़गिड़ाकर बोला।

“ठीक है, बता!” बादशाह बोला।

बूढ़े ने पूरा किस्सा बादशाह को सुना दिया। उसके बाद गड़रिये की बारी आयी।

गड़रिये ने बताया किस प्रकार वह पहाड़ में सूखे कुएँ के पास पहुँचा, किस प्रकार उसने उसमें नरकल देखकर उसके डंठल से बांसुरी बनायी और किस प्रकार उसकी हर कोशिश के बावजूद बांसुरी में से एक ही स्वर निकलता रहा।



सिकंदर ने बाँसुरी के टुकड़े-टुकड़े कर दिये और बूढ़े और गड़रिये को अपने देश से निकाल दिया। पर एक आदमी ने यह बात दूसरे के कान में कही, दूसरे ने तीसरे के कान में। इस तरह पीढ़ी दर पीढ़ी लोगों को मालूम होता रहा कि सिकंदर के सींग थे।

इस कहानी को पढ़कर आपको भी मालूम हो गया कि सिकंदर के सींग थे।

## मरता क्या न करता



बहुत समय पहले एक बूढ़ा रहता था। एक बार बूढ़े की पत्नी नहाने के लिए हमाम में गयी। पर अपनी बारी आने पर भी वह नहा न सकी। बादशाह का नौकर आकर बोला :

“अभी बादशाह के प्रधान ज्योतिषी की पत्नी आकर नहायेगी, इसलिए हमाम इसी वक्त खाली कर दो !”

घर आकर बूढ़े की पत्नी बोली :

“बादशाह के ज्योतिषी का पद बहुत ऊँचा होता है, वह बहुत महत्वपूर्ण आदमी होता है, सब पर उसका रोब रहता है। तुम भी भविष्य बताना सीखकर ज्योतिषी बन जाओ, नहीं तो मैं तुम्हें छोड़कर चली जाऊंगी।”

बूढ़े को भविष्य बताना बिल्कुल भी नहीं आता था। पर मरता क्या न करता। उसने लकड़ी का एक चौकोर टुकड़ा लेकर एक तरफ से उस पर लाल रंग फेरा, दूसरी ओर से — काला, तीसरी ओर से — सफ़ेद, चौथी ओर से — नीला, पांचवीं ओर से — पीला और छठी ओर से — हरा। लकड़ी के चौकोर टुकड़े और एक धिसे-पिसे कागज को धीले में डालकर वह बाजार में एक ऐसी जगह बैठ गया, जहाँ भीड़ ज्यादा रहती थी। जब कोई आदमी उसके पास अपना भविष्य पूछने आता, तो वह लकड़ी का रंगबिरंगा पासा फेककर उसकी ओर देखते हुए जो जी में आता कह देता। कुछ ही दिनों में नये “ज्योतिषी” की ख्याति सारे शहर में फैल गयी।

उन दिनों बादशाह के लगान उगाहनेवाले इकट्ठा हुआ सोना खच्चरों पर लादकर शहर में लाये थे। एक सोने से लदा खच्चर लापता हो गया।

बादशाह ने अपने सारे ज्योतिषियों को बुलाकर पूछा, पर उनमें से कोई भी न बता सका कि खोया हुआ खच्चर कहाँ मिल सकता है। बादशाह का एक दरबारी बोला :

“हुजूर, अभी कुछ दिनों से एक नया ज्योतिषी बाजार में बैठ रहा है। वह बिल्कुल सही बात बताता है और उसका बताया हुआ कभी गलत नहीं होता।”

बूढ़े को दरबार में लाया गया। बादशाह बोला :

“ मेरा सोने से लदा एक खच्चर गायब हो गया है। तुम बताओ, वह कहाँ है। अगर नहीं बताया, तो तुम्हारा सिर काट डालूँगा। ”

बूढ़े ने थैले में से अपना रंगबिरंगा पासा निकालकर फेंका और उसकी ओर देखकर लगान उगाहनेवालों से पूछा :

“ शहर के पास पहुंचते-पहुंचते आप कहीं रुके तो नहीं थे ? ”

“ हां, हम खच्चरों को चराने के लिए पेड़ों के एक झुंड़ के पास रुके थे। ”

बूढ़े ने सोचा “ आराम करने के बाद इन लोगों ने खच्चरों की गिनती नहीं की होगी और एक खच्चर पेड़ों के झुंड़ में ही रह गया होगा। ”

बूढ़ा बादशाह की ओर देखकर बोला :

“ आपका खोया हुआ खच्चर झुंड़ में है। आप किसी आदमी को वही भेज दीजिये। ”

बादशाह ने अपने आदमी भेजे। बूढ़े की बतायी हुई बात बिल्कुल ठीक निकली। खोया हुआ खच्चर मिल गया। बादशाह ने बूढ़े को सिर से लेकर पैर तक बेशक्रीमती तोहफों से लाद दिया और उसे अपने दरबार में ही रख लिया।

एक बार बादशाह के खजाने में चोरी हो गयी। चोर सोने का एक बोरा उठा ले गये। बादशाह ने अपने चालीसों ज्योतिषियों को बुलाकर कहा :

“ सोने की चोरी का पता लगाओ ! अगर पता नहीं लगा, तो सबको जान से मार डालूँगा। ”

बूढ़े ने चालीस दिन की मोहलत मांगी।

“ अगर चालीस दिन में हम चोर और माल का पता न लगा पाये, तो आप हमें मार दीजिये ! ” बूढ़ा बोला।

बूढ़े “ ज्योतिषी ” ने बाजार से चालीस सूखी खूबानियाँ खरीदी। घर आकर वह पत्नी से बोला :

“ तुम चाहती थीं कि मैं मर जाऊँ। अगर चालीस दिन के अंदर-अंदर मैंने चोरों और माल का पता नहीं लगाया, तो बादशाह मुझे मार डालेगा। मैं नहीं कह सकता कि सोना कहाँ है। तुमने ही ज्योतिषी बनने के लिए मुझे मजबूर किया था, पर मैं तुम्हें माफ़ करता हूँ। अब मुझे चालीस दिन ही जिंदा रहना है, इसलिए तुम मेरे साथ अच्छा व्यवहार करना और प्यार से रहना। ”

अब चोरों और सोने के बोरे का हाल सुनिये।

सोने का बोरा चालीस चोरों ने चुराया था। उनका सरदार लंगड़ा था।

चोरों को पता लगा कि एक नया ज्योतिषी आया है और वह चालीस दिन में चोर और माल दोनों का पता लगा लेगा।

सरदार ने शाम को अपने दल के एक आदमी को हुकम दिया :

“ जाकर देखो, वह बूढ़ा ज्योतिषी क्या कर रहा है। ”

चोर बूढ़े के घर में छुपकर सुनने लगा। बूढ़ा उस समय पहली खूबानी खाकर पत्नी से कह रहा था

“ देखो, चालीस थे, उनमें से एक यहाँ पहुँच गया,” बूढ़े ने अपने पेट की ओर इशारा किया।

चोर घबराया: “ इसे मालूम है कि हम चालीस हैं, और मैं इसके घर में छुपा हूँ। ”

वह भागा-भागा अपने साथियों के पास पहुँचा और बोला:

“ जैसे ही मैं बूढ़े ज्योतिषी के घर में घुसा वह कहने लगा: ‘ चालीस में से एक चोर यहाँ है। ’ अगर हमने उसके साथ समझौता नहीं किया, तो हम सब पकड़े जायेंगे। ”

“ डरपोक कहीं का! ” सरदार गुस्सा हो उठा। “ उसने किसी और चीज़ के बारे में कहा होगा और तूने अपने बारे में समझ लिया। कल किसी को साथ लेकर जाना! ”

दूसरे दिन दो चोर बूढ़े के घर में घुसे और छुपकर सुनने लगे।

बूढ़े ने उसी समय एक और खूबानी खायी थी और वह पेट की ओर इशारा करते हुए अपनी पत्नी से कह रहा था:

“ देखो चालीस में से दो अब यहाँ पहुँच गये। ”

“ हमारे बारे में ही कह रहा है,” चोरों ने सोचा और वहाँ से भाग निकले।

तीसरे दिन चोरों का सरदार अपने दो आदमियों के साथ स्वयं आया।

उसी समय बूढ़े ने एक और खूबानी खायी थी। वह खूबानी खराब थी, इसलिए बूढ़ा अधखायी खूबानी पत्नी को दिखाकर कह रहा था:

“ देखो, अब तीन यहाँ पहुँच गये हैं, पर इन में से एक में कुछ खोट है। ”

“ सचमुच, यह तो हमारे बारे में ही कह रहे हैं! इसे तो हमारे लंगड़े सरदार का भी पता लग गया! ” चोरों ने सोचा। सरदार ने फौरन एक आदमी को घर से सोने की बोरी लाने के लिए भेजा। जब सोने की बोरी आ गयी, तो सरदार ने ज्योतिषी का किबाड़ खटखटाया।

बूढ़े ने पूछा:

“ कौन है? ”

“ आपको तो मालूम ही है कि हम लोगों ने खजाने से सोने का बोरा चुराया था। लेकिन हमने इसमें से एक भी अशरफ़ी नहीं निकाली है। वह बोरा हमने एक सुरक्षित जगह में, चिमनी के अन्दर छुपा दिया है और सोने की यह बोरी आपको भेट कर रहे हैं। हमें मुसीबत से बचाइये, हमारे बारे में बादशाह को कुछ भी न बताइये,” सरदार बोला।

“ मैं तो उसी दिन जान गया था कि खजाने में चोरी तुम्हीं लोगों ने की है,” बूढ़े ने डींग हाकी, “ पर मुझे तुम पर दया आ गयी। मैंने सोचा, तुम लोग खुद ही आकर बता दोगे। इसी लिए तो मैंने चालीस दिन की मोहलत ली थी। तुम सोने की बोरी यहाँ छोड़ो और अपने-अपने घर जाओ। ”

दूसरे दिन ही बूढ़ा बादशाह के पास पहुँचा।

“हुजूर, मैंने आपके सोने का पता लगा लिया है। पर चोर हाथ नहीं आ सके, वे लोग किसी दूसरे शहर में भागकर छुप गये हैं।” बूढ़े ने वह जगह भी बता दी जहाँ सोना छुपा हुआ था। “आप अपने वफ़ादार नौकरों को उसे लेने भेज दीजिये,” उसने बादशाह को सलाह दी।

बादशाह ने फ़ौरन अपने आदमी दीड़ाये। उन्हें बूढ़े की बतायी हुई जगह में सोना मिल गया। बादशाह ने उसी समय अपने प्रधान ज्योतिषी को बुलाकर चालीस कोड़े लगवाये और उसे हटाकर बूढ़े को अपना प्रधान ज्योतिषी बना दिया।

बूढ़ा घर आकर पत्नी से बोला:

“लो, तुम जो चाहती थीं, वही हो गया है। बादशाह ने मुझे अपना प्रधान ज्योतिषी बना दिया है। जिस दिन मेरी मौत आयेगी मर जाऊंगा, पर तब तक के लिए तो मैं बड़ा आदमी बन ही गया।”

एक बार बूढ़ा हमाम में नहाने गया। वह अपने सिर में दही मलकर धोने लगा। नहाते-नहाते वह सोचने लगा:

“क्या करूँ? किस तरह बादशाह से पीछा छुड़ाऊँ? ठीक है, मैं पागल होने का ढोंग रचता हूँ। यहाँ से नंगा भागकर बादशाह का शरैबान पकड़ लूंगा और उसे बाहर खींच लाऊंगा। जब वह देखेगा कि मैं पागल हो गया हूँ, तो वह मुझे निकाल देगा। इसके अलावा अब कोई दूसरा चारा नहीं रहा।”

बूढ़ा हमाम से नंगा निकलकर महल की ओर भागा। बादशाह बरामदे में बैठा था। बूढ़े ने जाकर बादशाह का शरैबान पकड़ लिया। बादशाह और उसके अंगरक्षक भौचक्के रह गये। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें। बूढ़ा बादशाह को घसीटता हुआ बाहर ले आया।

संयोग से उसी समय भूकंप आया और बरामदे की छत टूटकर नीचे गिर पड़ी।

बादशाह को काटो तो खून नहीं। फिर जब उसे होश आया तो उसने पूछा:

“तुम्हें इसका पता कैसे चला?”

“मैं हमाम में बैठा नहा रहा था। अचानक मुझे पता लगा कि आप पर मुसीबत आनेवाली है। आपके प्राण बचाने के लिए मैं बिना कपड़े पहने, शर्म-हया छोड़कर नंगा ही भागा आया। इस लिए मैंने आपको ज़बरदस्ती बरामदे से उठाया और यहाँ खींच लाया।”

बादशाह बूढ़े की ओर भी ज्यादा इज्जत करने लगा, उसे बहुत कीमती इनाम दिये और हमेशा अपने साथ रखने लगा।

“मैंने कभी तुम जैसा ज्योतिषी नहीं देखा!” बादशाह कहता रहता।

एक बार बादशाह खेत में घूम रहा था। उसने एक टूटी टांगवाला टिड्डा पकड़कर हाथ में बन्द कर लिया। “ज्योतिषी से पूछकर देखता हूँ, वह बता सकता है या नहीं कि मेरे हाथ में क्या है।” बादशाह ने मन में सोचा और बूढ़े से पूछा:

“अच्छा, बताओ, मेरे हाथ में क्या है?”



बूढ़ा घबरा गया। उसकी समझ में नहीं आया कि क्या कहे। “अब मैं कैसे जान बचाऊँ?” उसने सोचा और जोर-जोर से अपने बारे में बोलने लगा:

“पहली बार फंसते-फंसते बचा। दूसरी बार फिर फंसते-फंसते बचा, पर तीसरी बार बुरी तरह फस गया।”

“शाबाश! तुमने बिल्कुल ठीक बताया!” बादशाह ने मुट्ठी खोलकर उसे टिड्डा दिखाया। कुछ दिन बाद बूढ़ा बादशाह के पास आकर बोला:

“हुजूर, मैं आपसे एकांत में कुछ कहना चाहता हूँ।”

बादशाह ने बाकी सब लोगों को बाहर भेज दिया।

“बोलो, क्या कहना चाहते हो!”

“हुजूर, मैं ज्योतिषी नहीं हूँ। मैंने मुसीबत में पड़ जाने पर ही भविष्य बताना शुरू किया था।”

बूढ़े ने बादशाह को अपनी पूरी कहानी सुना दी। बादशाह सुनकर बहुत देर तक हसता रहा। फिर उसने बूढ़े को प्रधान ज्योतिषी के पद से मुक्त करके वापस घर जाने की इजाजत दे दी।

## शाहजादा माहेसितारा



किसी समय बगदाद में आदिल नाम का बादशाह राज करता था। आदिल अपनी विद्वता और न्यायप्रियता के लिए प्रसिद्ध था। उसकी तीन पत्नियाँ थीं। काफी लंबे अर्से तक उनमें से किसी के भी कोई संतान नहीं हुई। अंत में आदिल की सब से छोटी पत्नी दिलारा ने एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम शौकत रखा गया। नवजात शाहजादे को अतलस और जरी के कपड़े पहनाये गये। उसके लिए बहुत-सी नौकरानियाँ और धायें रखी गयीं।

शाहजादा चाँद-सा सुंदर था। इतने दिनों बाद एक पुत्र का पिता बनने पर बादशाह आदिल की खुशी की कोई सीमा न रही। उसने अपनी सारी प्रजा को बुलाकर कई दिनों तक दावतें दी, खुशियाँ मनाई और दूर-दूर से आये गरीब लोगों को दिल खोलकर दान दिया।

समय बीतता रहा, शाहजादा शौकत सात बरस का हो गया। बादशाह आदिल ने बगदाद के जाने-माने मौलवियों को बुलाकर उन्हें शाहजादे शौकत को शिक्षा देने की जिम्मेदारी सौंपी। लड़का असाधारण रूप से प्रतिभाशाली और योग्य निकला। उसके शिक्षक उससे बहुत खुश थे, क्योंकि शाहजादे ने बहुत आसानी से और बहुत ही कम समय में सब विद्याएं उनसे सीख लीं।

पिता के महल में मौलवी लोगों की देख-रेख में शाहजादे की शिक्षा-दीक्षा उसके पन्द्रह साल के होने तक चली। अब कोई भी ऐसी विद्या न बची थी, जिसमें शाहजादा दक्ष न हो। इन सब विद्याओं के अलावा उसने गायन और वाद्य-वादन भी सीखा तथा युद्ध-कौशल भी। शौकत के पिता की खुशी की कोई सीमा न थी।

जब शाहजादा सत्तरह साल का हुआ, तो उसे तीन हजार सैनिकों का सेनानायक बना दिया गया।

एक बार शाहजादा शौकत अपने सैनिकों के साथ शिकार पर गया। कई दिनों की यात्रा के बाद वे एक बहुत चौड़ी घाटी में पहुंचे, जिसके दोनों ओर अगम्य पहाड़ खड़े थे, जहाँ अभी तक आदमी का कदम न पड़ा था। इस घाटी में हरे-भरे घने जंगल थे और कई नदियाँ बहती थीं, इसके अलावा तरह-तरह के शिकार की भी कोई कमी न थी।

शाहजादे के सैनिकों ने अपने खेमे उस घाटी में गाड़ दिये। घाटी में आराम करते हुए उन्हें शिकार करने में बड़ा आनन्द आता रहा। शिकार के गोشت के वे सीख-कबाब बनाकर खाते रहे और उनका समय बहुत ही खुशी-खुशी बीतने लगा। चौथे दिन, जब शौकत अपने तेज़ निशानेबाज़ शिकारियों के साथ घाटी में शिकार कर रहा था, अचानक उसके सामने से एक बहुत ही सुंदर हिरण बड़ी तेज़ी से भागकर निकल गया। हालाँकि हिरण शाहजादे को केवल एक क्षण के लिए ही नज़र आया होगा, पर उसने देख लिया कि हिरण के चारों छुर मोतियों के थे, उसके हर पैर पर एक-एक जोड़ा सोने के कड़ों का था। हिरण के सींगों पर भी सोने-चाँदी और हीरे-मोतियों का बहुत ही सुंदर काम था। उसकी रेशम जैसी खाल भी तरह-तरह के लगभग बत्तीस किस्मों के रंगों में झिलमिला रही थी। शाहजादा सम्मोहित-सा खड़ा था कि अचानक वह हिरण फिर उसके सामने आकर अत्यन्त आकर्षक ढंग से अपना नृत्य-कौशल दिखाने लगा। उसके पैरों में पड़े सोने के कड़ों की मधुर आवाज़ शाहजादे के कानों में गूँजने लगी, उसकी रंग-बिरंगी खाल झिलमिलाती रही। शाहजादा होश में आने पर अनायास ही कह उठा:

“अपने जीवन में मैंने पहली बार इतना आश्चर्यजनक दृश्य देखा है!” फिर वह अपने शिकारियों से बोला, “इस हिरण को ज़िंदा ही पकड़कर लाओ!”

शिकारी काफ़ी देर तक अपने छोड़े उस हिरण के पीछे दौड़ाते रहे, पर वह उनके हाथ न आया। अपने सब सैनिकों पर नाराज़ होकर शाहजादे ने खुद ही हिरण का पीछा किया, पर उसे भी सफलता न मिली। तब उन लोगों ने हिरण को घेरने का फैसला किया। शौकत ने अपने शिकारियों को कड़ी चेतावनी दी:

“देखना, हिरण बचकर न निकल जाये। अगर तुममें से किसी ने भी गलती की, तो उसे ज़िंदा नहीं छोड़ूंगा!”

शिकारी हिरण को चारों ओर से घेरकर धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ने लगे, पर हिरण निडर होकर पहले के समान आकर्षक ढंग से नाचता रहा, जैसे उसे अपने ऊपर आनेवाले खतरे का ख्याल ही न हो। इस बीच घेरा इतना तंग हो चुका था कि बहुत-से शिकारियों को पीछे

रह जाना पड़ा। जब कुछ तेज शिकारियों का अगला घेरा सावधानीपूर्वक बढ़ता हुआ हिरण के बहुत करीब पहुँच गया, तो हिरण अचानक कूदा और शाहजादे के घोड़े के पुट्टे पर अपने अगले खुर मारकर तीर की तरह पहाड़ों की ओर भाग निकला। क्योंकि हिरण को खुद शाहजादा ही नहीं पकड़ पाया, इस लिए अब वह किसी और को दोष भी नहीं दे सकता था। अपनी असफलता पर शर्मिंदा होकर शाहजादा अपने सैनिकों से बोला कि वह स्वयं ही हिरण को पकड़ेगा और अपने घोड़े पर तीर की तरह पहाड़ों की ओर उड़ चला।

शाहजादे का घोड़ा उसके देश के सब से तेज दौड़नेवाले घोड़ों में से था और हवा से ऐसे बातें कर रहा था, जैसे उसके पंख निकल आये हों। शाहजादा अपनी ओर दौड़कर आते हुए हिरण का रास्ता काटकर अपने घोड़े को उससे लगभग तीस कदम की दूरी तक ले आया। पर हिरण भागते-भागते एकदम तीर की तरह पलटकर दूसरी ओर भागा। ऐसा न जाने कितनी बार हुआ। अंत में जब शाहजादे ने समझ लिया कि वह हिरण को किसी तरह नहीं पकड़ पायेगा, तो उसने उसको तीर मारकर घायल करने की सोची। उसने घोड़े से उतरकर एक चट्टान का सहारा लिया और निशाना साधकर एक तीर छोड़ा। पर तीर हिरण के नहीं लगा। उसने दुबारा एक तीर चलाया, पर निशाना फिर झूक गया। उसने एक-के-बाद-एक न जाने कितने तीर चलाये, पर उनमें से एक भी निशाने पर नहीं लगा। शाहजादे को अपने आप पर गुस्सा आने लगा और वह अधाधुंध तीर चलाने लगा, पर हिरण पहले की तरह नाचता रहा, मानो उसे चिढ़ा रहा हो। शाहजादे के पास पाँच सौ तीर थे, सारे खत्म हो चुके थे और उनमें से एक भी हिरण के न लग पाया था। हिरण जैसे जान गया था कि शाहजादे के सारे तीर खत्म हो चुके हैं और बड़ी शान से पहाड़ों की ओर चल दिया। शाहजादा उसके पीछे भागा। अब हिरण एक चट्टान से दूसरी पर कूदता हुआ ऊँचे पहाड़ पर चढ़ने लगा। शाहजादा भी उसका पीछा करता हुआ अपने घोड़े को एक चट्टान से दूसरी पर कुदाने लगा। पहाड़ की चोटी पर पहुँचकर हिरण फिर शाहजादे को दिखाकर नाचने लगा और वहाँ से उतरकर कुलाँबें मारता हुआ पहलेवाले पहाड़ से भी ज्यादा ऊँचे पहाड़ पर चढ़ने लगा। शाहजादे ने फिर अपना घोड़ा हिरण के पीछे दौड़ाया। उसका घोड़ा भी असाधारण रूप से फुर्तीला और मजबूत था और बड़ी तेजी से ढलान से उतरकर दूसरे पहाड़ की चोटी की ओर उड़ा चला जा रहा था। हिरण दूसरे पहाड़ की चोटी पर पहुँचकर एकदम आँखों से ओझल हो गया। शाहजादा पूरी तरह इसी सपने में खोया हुआ था कि वह उस हिरण को ज़िंदा या मरा पकड़ ही लेगा। अंत में जब शीकत पहाड़ की चोटी पर पहुँचा, तो उसने देखा—एक ओर घास का असीम मैदान है और दूसरी ओर हरा-भरा घना जंगल। वह हिरण दूर जाकर खड़ा हो गया और जैसे ही शाहजादे की नज़र उसके ऊपर पड़ी, फिर नाचने लगा। शाहजादा हिरण के नाच की सराहना किये बिना न रह सका, पर उसे अब अपने आप पर और भी ज्यादा गुस्सा आने लगा।

शीकत अपने घोड़े की गरदन से चिपटे हुए बड़ी होशियारी के साथ चट्टानों पर से उतरता हुआ घाटी में पहुँच गया। बीच-बीच में उसे कई बार घोड़े से उतरकर पैदल भी चलना पड़ा। जैसे ही शाहजादा हिरण के नज़दीक पहुँचता, वह फिर दूर भाग खड़ा होता। शाहजादा हिरण

का तब तक पीछा करता रहा, जब तक कि वह घने जंगल में घुसकर आँखों से ओभल न हो गया।

शौकत भी अपने घोड़े पर बैठा जंगल में घुसा। वहाँ तरह-तरह के इतने सुंदर पेड़ थे, जो शाहजादे ने पहले कभी नहीं देखे थे। चारों ओर सुंदर फूलों की मवादक गंध फैली हुई थी। हर तरफ़ से तरह-तरह की चिड़ियाओं का सुखद कलरव और गान सुनाई दे रहा था। शाहजादा काफी देर तक हिरण को खोजता रहा, पर वह उसे कहीं नज़र नहीं आया। शाम होने लगी। पर शाहजादा खाली हाथ लौटने को तैयार नहीं था, इस लिए उसने रात जंगल में ही बिताने और सुबह फिर से हिरण को खोजने का फैसला किया। थोड़ी देर बाद वह एक खुले मैदान में पहुँचा। उसने अपने घोड़े पर से काठी उतार दी और लगाम उसकी गर्दन पर डालकर बोला, "जा, अब तू भी थोड़ी देर आराम कर और हरी-भरी घास चर से!"

शाहजादे को नींद आने ही वाली थी कि वह किसी जंगली जानवर की दहाड़ सुनकर हड़बड़ाकर उठ बैठा। थोड़ी देर बाद ही जंगल की हर दिशा से डरावनी आवाज़ें सुनाई पड़ने लगीं। यह स्पष्ट हो गया कि इस जंगल में कई तरह के खतरनाक जानवर हैं, जो रात होते ही शिकार की खोज में अपनी माँदों से निकल पड़े हैं। शौकत उनकी आवाज़ें सुनकर समझ गया कि चारों ओर शेर, चीते, रीछ और भेड़िये मंडरा रहे हैं।

"इनसे बचना ही है!" शाहजादे ने अपने मन में सोचा। उसे अब नींद से ज्यादा अपनी जान की फ़िक्र लगी थी। वह बड़ी फुर्ती से एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ गया। यह कदम बेकार साबित नहीं हुआ, क्योंकि उसी पेड़ के नीचे थोड़ी देर बाद शेर, चीते, बघेरे, रीछ, भेड़िये और तरह-तरह के जंगली जानवर मंडराने लगे। पेड़ पर बैठे-बैठे भी शौकत सारी रात जागता रहा। सुबह होने पर वह पेड़ से नीचे उतरा। वह यह सोचकर डर रहा था कि पता नहीं उसका घोड़ा ज़िंदा बचा या नहीं। वह अपने घोड़े को ढूँढ़ने लगा। उसकी किस्मत से उसका घोड़ा खतरा महसूस करके एक सुरक्षित जगह में छुपा हुआ था। घोड़े को सही-सलामत पाकर शाहजादा बहुत खुश हुआ। घोड़े को प्यार से थपथपाते हुए वह उसे पेड़ के पास लाया और उस पर काठी कसकर फिर से हिरण को ढूँढ़ने निकल पड़ा। शौकत उसे काफी देर तक ढूँढ़ता रहा। दोपहर हो चुकी थी। उसने अपने आपको जंगल के किनारे एक तंग रास्ते में पाया। हिरण को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते शाम हो गयी, पर उसे हिरण के पैरों के निशान नहीं मिले।

"अब मैं क्या करूँ, क्या वापस लौट जाऊँ?" शाहजादे ने सोचा, पर जंगल में से बाहर निकलने के लिए किस दिशा में जाये, इसका उसे कोई ज्ञान न रहा। इस लिए उसे दूसरी रात भी जंगल में ही बितानी पड़ी। उसका घोड़ा पहले की तरह नीचे सुरक्षित जगह में जा छुपा और वह स्वयं पेड़ पर चढ़ गया। यह रात पिछली रात से भी ज्यादा खतरनाक रही।

सुबह शाहजादा पेड़ पर से उतरा और सुरक्षित जगह में छुपे अपने समझदार घोड़े पर सवार होकर जंगल से बाहर निकलने का रास्ता ढूँढ़ने लगा। लगभग चार घंटे भटकने के बाद वह एक मैदान में पहुँचा, जहाँ से थोड़ी दूरी पर एक छोटी पहाड़ी के नीचे दायीं ओर उसे एक छोटा-सा आबाद इलाका दिखाई दिया।



“वहा के लोगों से ही रास्ता पूछ लूंगा,” शौकत ने सोचा और उस ओर चल पड़ा। पहाड़ी की तलहटी में पहुँचकर सुरक्षा की दृष्टि से उसने ऊपर चढ़कर चारो ओर अच्छी तरह देख लेना उचित समझा। उसे घाटी में एक छोटी नदी बहती दिखाई दी। नदी के दोनो किनारों के सहारे पेड़ थे और वह इलाका नदी के किनारे पर बसा हुआ था। शौकत ढलान से नीचे उतरकर नदी के किनारे पहुँचा। नदी में कलकल करता दूध जैसा सफ़ेद ठंडा पानी बह रहा था। और करीब पहुँचने पर शौकत को आश्चर्य हुआ, क्योंकि इलाका मामूली नहीं था। उसके चारों ओर नीले सगमरमर की ऊंची दीवारें खड़ी थीं। दीवारों के कंगूरे सोने से मढ़े थे। ऊँचे दरवाजे के ऊपर सोने-चाँदी और मोतियों का सुंदर काम था। और सबसे बड़े आश्चर्य की बात तो यह थी कि दरवाजा पूरा खुला था।

शौकत जब दरवाजे में घुसा, तो उसने देखा—सारी इमारतें हरी, लाल, पीली, नीली और गुलाबी चीनी-मिट्टी की बनी थीं। इलाके के बीचोंबीच एक बहुत बड़ा हौज़ था जिसके किनारे सगमरमर के थे। इस हौज़ में बहकर आने और निकलनेवाला पानी भी दूध-सा सफ़ेद और साफ़ था। हौज़ के चारो कोनों पर चार इतने सुंदर और आश्चर्यजनक पेड़ थे, जैसे शौकत ने अपनी ज़िंदगी में पहले कभी न देखे थे। दरवाजे के एक ओर दीवार के सहारे-सहारे बना अस्तबल भी सगमरमर का था, घोड़ों की नाँद भी सगमरमर की थी और उसमें जौ और तरह-तरह का बढ़िया किस्म का दाना भरा था।

पूरे आँगन में एक भी आदमी नज़र नहीं आ रहा था। शौकत हैरान होकर सोचने लगा : “यहाँ थोड़ी देर सुस्ता लेता हूँ, अगर कोई यहाँ हुआ, तो वह जरूर बाहर आयेगा और अगर यहाँ कोई भी नहीं रहता है या सब कहीं गये हुए हैं, तो थोड़ी देर आराम करके चला जाऊंगा।”

उसने घोड़े से उतरकर काठी खोल दी और उसे अस्तबल के पास ले जाकर बोला :

“भई, तू भी भूख से मरा जा रहा होगा, जा, पेट भर के जौ और चारा खा ले !”

शौकत स्वयं भी थककर चूर हो चुका था, इस लिए भूल बिछाकर और काठी का सिरहाना लगाकर फ़ौरन सो गया। उसे पता नहीं चला कि वह कितनी देर तक सोता रहा, उसकी नींद किसी शोर से ही खुली। उसने धीरे-से सिर उठाकर देखा—एक कमरे का दरवाजा खुला और उसमें से सफ़ेद रेशमी कपड़े पहने, सुडौल बदन, गोरे चेहरे, काली-काली भाँहें और आकर्षक आँखोंवाली अठारह बरस की एक लड़की सोने की सुराही लिये बाहर निकली। लड़की ने चुपचाप हौज़ के पास पहुँचकर सुराही में पानी भरा और वैसे ही चुपचाप वापस लौट गयी। उसने न तो शौकत की ओर देखा और न ही उससे कुछ कहा। शौकत सोचने लगा

“आखिर बात क्या है, यह लड़की बाहर आयी, इसने मुझे देखा भी, पर न तो मुझसे नज़र मिलायी और न ही कुछ बोली ?”

लड़की बहुत सुंदर थी और उसे देखते ही शौकत का दिल जोर से धड़क उठा था। अभी दस मिनट भी नहीं गुजरे कि किस दरवाजे में घुसकर लड़की गायब हो गयी थी, उसीमे से लगभग पचपन साल का एक आदमी निकला, जिसकी दाढ़ी खिचड़ी थी। यह आदमी इतना

मुंदर था कि उसके चेहरे से प्रकाश फूटा पड़ रहा था। उसने शौकत की ओर हाथ बढ़ाकर स्नेहपूर्वक कहा

“हमारे प्यारे मेहमान, आपका स्वागत है!”

शौकत ने खड़े होकर उस आदमी से सादर हाथ मिलाया और थोड़ा पीछे हटकर खड़ा हो गया। उस आदमी ने पूछा:

“हमारे मेहमान, हम आपकी क्या सेवा कर सकते हैं?”

“मैं सफ़र से थककर चूर हो चुका हूँ। आपके इलाक़े में छाया और ठंडक व्याप्त देखकर मैंने यहाँ थोड़ी देर आराम करना चाहा। मैं आपसे माफ़ी चाहता हूँ कि मैं बिना आपकी इजाज़त के आपके इलाक़े में घुस आया,” शौकत ने जवाब दिया।

वह आदमी शौकत की बात ध्यान से सुनकर बड़े स्नेहपूर्ण स्वर में बोला:

“आप इस छोटी-सी बात पर बिल्कुल भी शर्मिंदा मत होइये। आपको तो इससे ज्यादा अच्छी जगह पर आराम करना चाहिए। आइये, मेरे साथ चलिये।”

“यह आदमी मुझे कहाँ और क्यों ले जा रहा है? अब मैं क्या करूँ? अंदर जाऊँ या नहीं?” शौकत दुविधा में पड़ गया और उसने पूछ लेना उचित समझा।

“माफ़ कीजिये, हमें कहाँ जाना है?”

“अगर आपको अपने घोड़े की फ़िक्र हो रही है तो बेकार परेशान मत होइये,” उस आदमी ने शौकत को विश्वास दिलाया और उसी दरवाज़े की ओर बढ़ा, जिसमें से वह बाहर निकला था। शाहजादा भी विवश होकर उसके पीछे चल दिया। दरवाज़े में घुसते ही उसने अपने आपको शानदार चौक में पाया। उस जगह भी इतने सुंदर मकान थे, जैसे शौकत ने अपने पिता के राज में भी नहीं देखे थे। चारों ओर तरह-तरह के खुशबूदार फूल महक रहे थे, फलदार पेड़ों की डालियाँ फलों के बोझ से झुकी जा रही थीं। इतने फल देखकर शौकत के मुँह में पानी आ गया। चलते-चलते उसने एक फल तोड़ने के लिए हाथ बढ़ाया; पर उसे महसूस हुआ कि फल असाधारण रूप से कठोर है और वह उसे किसी तरह तोड़ नहीं सकता। ध्यान से देखने पर शाहजादा समझ गया कि वे फलदार पेड़ साधारण नहीं बल्कि उन पर सोने-चाँदी और हीरे-मोतियों के फल आते हैं। चौक में एक ओर संगमरमर का चबूतरा बना था, जिसके रेलिंग सोने के थे। चबूतरे में लाल रंग के कालीन के ऊपर मखमल के गद्दे बिछे थे। उस आदमी ने शौकत को चबूतरे पर बैठने के लिए कहा। चबूतरे की सीढ़ियों के पास एक औरत खड़ी थी, जिसने झुककर शौकत को सलाम किया। बूढ़ा चबूतरे पर चढ़ा, उसके बाद शौकत। और वे दोनों रेशमी गद्दों पर आराम से बैठ गये। फिर उस औरत ने आकर सादर पूछा:

“हमारे प्यारे मेहमान, आपकी तबीयत कैसी है?”

“शुक्रिया, मैं बिल्कुल ठीक हूँ,” शाहजादे ने जवाब दिया।

यह औरत कोई तीस-पैंतीस साल की होगी। वह इतनी आकर्षक थी कि उससे तज़रे हटाना असंभव था। उसका बदन सुडौल था, गाल सेब-से लाल थे, उसकी कमान-सी तनी भौंहें,

बरौनियाँ, खूबसूरत आँखें, गुलाबी होंठ किसी भी आदमी को सम्मोहित कर सकते थे। उसके लंबे-लंबे काले बालों की दो चोटियाँ उसकी एड़ियाँ छू रही थीं। दोनों गालों पर बिखरी लटें उसकी सुन्दरता में चार चांद लगा रही थीं। वह औरत भी आकर बूढ़े के पास बैठ गयी। थोड़ी देर बाद वह लड़की भी आयी, जो सोने की सुराही में पानी भरने बाहर निकली थी। उसने भी कई बार शौकत को भुक्कर सलाम किया और पूछा:

“हमारे प्यारे मेहमान, आपकी तबीयत कैसी है?”

शाहजादे ने उसका शुक्रिया अदा दिया। औरत उस लड़की से बोली:

“जाओ, दस्तरखान लगाओ!”

लड़की सिर भुकाकर चली गयी। थोड़ी देर बाद एक और लड़की आयी, जो सूरत-शक्ल में तो पहली लड़की जैसी ही थी, पर उससे भी ज्यादा खूबसूरत और आकर्षक थी। मेहमान के प्रति पूर्ण आदरभाव दिखाते हुए वह उसके पास आयी और भुक्कर बोली:

“हमारे प्यारे मेहमान, आपके आने से हमें बहुत खुशी हुई!”

शौकत ने भी खड़े होकर सिर भुकाकर उसका अभिवादन स्वीकार किया। इसके बाद लड़की फौरन घर के अंदर चली गयी, थोड़ी देर बाद ही दस्तरखान लेकर आयी और उसे मेहमान के सामने बिछा दिया। दस्तरखान जरी का था और उस पर सोने के सुंदर बेल-बूटे कढ़े थे। उसके बाद एक और लड़की आयी और अपना सिर भुकाने के जवाब में शुक्रगुजारी की अभिव्यक्ति देखकर वापस घर के अंदर चली गयी। कुछ ही मिनट बाद लड़कियाँ तरह-तरह के स्वादिष्ट खाने ले आयीं और दस्तरखान पर परोसने लगीं—मालपुए, क्रीमे की कचौड़ियाँ, तंदूरी मुर्गे, पिस्ता, अखरोट, शहद, मिठाइयाँ, तरह-तरह के मुरब्बे... जब लड़कियों ने सारा खाना दस्तरखान पर लगा दिया, तो बूढ़े के साथ बैठी खूबसूरत औरत ने रोटी का पहला टुकड़ा तोड़कर मेहमान को खाना शुरू करने के लिए कहा। इस बीच लड़की सोने के सामोवार में उबलता पानी लेकर आयी। उसने चाय की पहली प्याली भरकर मेहमान को दी, उसके बाद बूढ़े और औरत को। वह भी उन्हीं के साथ बैठकर खाना खाने लगी। खाने और चाय के बाद इधर-उधर की बातें होने लगीं। थोड़ी देर बाद बूढ़ा आदमी लड़कियों से बोला:

“हमारे मेहमान लंबे सफ़र के बाद थक चुके होंगे। इनका बिस्तर लगा दो। अब इन्हें चाहिए कि अच्छी तरह आराम कर लें!”

लड़कियों ने हीज के किनारे पेड़ों की छाया में सोने का पलंग बिछाकर उस पर अतलस और रेशम का बिस्तर और गुदगुदे तकिये लगा दिये। बूढ़े के कहने पर शौकत पलंग पर लेट गया और फौरन सो गया। नींद खुलने पर उसने देखा कि दो लड़कियाँ दोनों ओर बैठी हुई बारी-बारी से उस पर पंखा झल रही हैं। शौकत की आँखें खुलते ही लड़कियाँ सोने की सुराहियों में पानी लेकर आयीं, उसके हाथ-मुँह धुलाये और सफ़ेद रेशमी तौलियों से पोछे। बूढ़ा और उसकी पत्नी शौकत के पास आये।

“हमारे प्यारे मेहमान, आपको नींद कैसी आयी?” बूढ़े ने पूछा।

मेहमान ने उनका शुक्रिया अदा किया। उसी समय एक लड़की उनके पास आकर बोली कि शाम का खाना तैयार है। बूढ़ा, उसकी पत्नी, शौकत और उनके पीछे-पीछे वे सुंदर लड़कियाँ चबूतरे पर जाकर बैठ गये। दस्तरखान लगाने के बाद खाना परोसा गया। इस बार खाने में तरह-तरह की भुनी हुई चिड़ियाएँ थीं। खाना उतना ही स्वादिष्ट था और खाने के लिए उतना ही उत्साह पैदा कर रहा था, जितना कि उसे पकानेवाली लड़कियाँ। खाना शुरू होने के पहले एक लड़की सोने की सुराही में अंगूरी शराब लेकर आयी और सोने की प्यालियों में उसे ढालकर सबको देने के बाद बोली:

“हम सब यह जाम हमारे प्यारे मेहमान के आने की खुशी में पियेंगे!”

खाना काफी देर चला और बीच-बीच में अंगूरी शराब के जाम भी। जब सब पर थोड़ा सुरूर चढ़ गया, तो उसी कमरे में से पतली-पतली कमरवाली सत्तरह-अठारह साल की लड़कियों का एक झुंड निकला। काली-काली भौंहों और आँखोंवाली ये लड़कियाँ रेशम के पारदर्शक कपड़े पहने थीं, उनकी गोरी-गोरी गर्दनो में मोतियों की मालाएँ पड़ी थीं, कानों में सोने की बालियाँ थीं और सब एक ही क्रद की थीं। लड़कियों ने शौकत के पास आकर झुककर सलाम किया और उसके पास बैठ गयी। हर एक को कोई-न-कोई साज लाकर दिया गया—किसी को हार्प, किसी को तन्बूरा, किसी को दुतार\*, किसी को सिजाक\*\*, किसी को बाँसुरी, किसी को भाँक, किसी को डफली। सधे हुए हाथों से बजाते और खूबसूरती से नाचते हुए लड़कियाँ मेहमान का दिल बहलाने लगीं। उस दिन काफी रात गये तक दावत और हंसी-खुशी का ऐसा दौर चला कि सब थककर जहाँ बैठे थे, वहीं सो गये। सुबह नींद खुलते ही शौकत के चारों ओर लड़कियाँ मंडराती हुई उसकी सेवा करने लगी—एक सोने की सुराही में पानी लेकर आयी, दूसरी ने उसके हाथों पर पानी डाला, तीसरी ने मुलायम सफ़ेद तैलियों से उसके हाथ और मुँह पोछे। इसके बाद नाश्ते का बुलावा आया। तरह-तरह के पकवान परोसे गये। सब पकवान इतने स्वादिष्ट थे कि शौकत ने मन-ही-मन स्वीकार किया:

“ये सब लाजवाब हैं और इस तरह का खाना तो मैंने कभी अपने पिता के महल में भी नहीं खाया था!”

इसके अलावा उसके चारों ओर सुंदर लड़कियाँ भी बैठी थीं, जिनकी वजह से उसे खाने और पीने में पहले से भी ज्यादा आनंद आ रहा था।

नाश्ते के बाद बूढ़े, उसकी पत्नी और खूबसूरत लड़कियों ने शाहजादे को बाग में टहलने के लिए कहा। सब दरवाजे में से साथ निकलकर बाग में चले। बाग इतना सुंदर था कि किसी भी आदमी का दिल खुश हो जाये। चारों तरफ तरह-तरह के फूलों की मीठी सुगंध व्याप्त थी, चिड़ियाँ चहक रही थीं, फूलों की सुंदरता पर मोहित होकर बुलबुलें गा रही थीं। बाग

\* दुतार—एक प्रकार का उजबेक लोगों का राष्ट्रीय बाजा।

\*\* सिजाक—एक प्रकार का बायोलीन।



की खूबसूरती से सम्मोहित हुए शाहजादे को वहाँ काफी देर तक घुमाया गया। दोपहर भी न जाने कब बीत गयी। खबर मिली कि खाना भी तैयार है। बाग़ से सब लोग साथ निकले और फिर दावत शुरू हो गयी। हंसी-खुशी में पता भी न चला कि कब शाम हो गयी और शाम की दावत भी शुरू हो गयी। इस बार भी लड़कियों ने इतने आकर्षक ढंग से साज बजाये, नाच दिखाये और गाने गाये कि वे दिल के तारों को छूकर आश्चर्यजनक सपने जगाते रहे। दावत काफी रात गये तक चलती रही और जो जहाँ बैठा था, वहीं सो गया। सुबह हुई। शाहजादा हाथ-मुंह धोकर तैयार हो गया। सब लोग नाश्ता करने बैठे। बूढ़े ने नाश्ते के बाद सब लड़कियों को कुछ-न-कुछ काम बताकर वहाँ से बाहर भेज दिया। दस्तरखान के सामने अब केवल तीन आदमी थे - बूढ़ा, उसकी पत्नी और शौकत। बूढ़ा शौकत की ओर देखकर बोला :

“हमारे प्यारे मेहमान, आपको हमारे यहाँ आये दो दिन हो चुके हैं। आपके आने के पहले ही दिन आपसे यह पूछना कि आप कौन हैं और कहाँ से आये हैं, हमारे लिए एक अच्छी बात न होती। जहाँ तक हम सोचते हैं, अब आप अच्छी तरह आराम कर चुके हैं। इस लिए हम आपसे अपने बारे में बताने की प्रार्थना करते हैं।”

शाहजादे को अब तक पूरा विश्वास हो चुका था कि यह आदमी बहुत ही नेक और मेहमाननवाज है, इस लिए वह उसे अपनी कहानी सुनाने लगा।

इसी बीच सामने के कमरे का दरवाजा खुला और उसके खुलते ही चारों ओर प्रकाश की तेज किरणें फैल गयीं। पर यह प्रकाश नहीं था, बल्कि सूरज के समान दमकते चेहरेवाली एक सोलह बरस की लड़की थी। उसकी आँखें काली थीं, खूबसूरत पतली भौंहें कमान की तरह तनी हुई थीं, घुंघराले बालों की लंबी चोटियाँ उसकी एडियाँ छू रही थीं, होठ गुलाबी थे, गाल अनारों जैसे लाल थे और दाँत मोतियों की तरह चमक रहे थे। वह जन्नत की पतली कमरवाली परी की तरह खिलखिलाती हुई, शाहजादे पर एक शरारतभरी नज़र डालकर, जिस दरवाजे में से आयी थी, उसी में गायब हो गयी। बूढ़े ने हंसते हुए उसको उंगली से धमकी दी और स्नेहपूर्ण स्वर में बोला : “तू बड़ी नटखट है !”

उस लड़की को देखते ही शाहजादा उस पर मोहित हो गया। अचानक उसकी कहानी की कड़ी बीच में ही टूट गयी, सोचने-समझने की शक्ति जाती रही और कुछ क्षण के लिए शब्द उसके मुँह में ही अटके रह गये। अंत में बूढ़े को कहना ही पड़ा :

“अच्छा, शौकतबेग, अपनी कहानी आगे सुनाइये ..”

शाहजादा अपनी घबराहट छुपा न पाया, पर किसी तरह अपने पर काबू पाकर बोला :

“हिरण की खोज में मैं जंगल में घुसा और शाम हुए तक उसे ढूँढ़ता रहा, पर वह न मिला। उस रात मैं जंगल में ही सोया और दूसरे दिन काफी देर तक भटकने के बाद ही जंगल से निकलकर सरकंडों के भुरमुट में पहुँचा। अब तक मैं अच्छी तरह समझ गया था कि हिरण मेरी पकड़ में न आ सकेगा, इस लिए मैंने वापस लौटने का फैसला किया। पर लौटता कैसे? मैं रास्ता भूल चुका था। मैं इधर-उधर भटकता रास्ता खोजता हुआ आपके यहाँ आ पहुँचा।”

उसी क्षण वही दरवाजा फिर से खुला और उसमें से वही अद्वितीय सुदरी हवा के भोके की तरह भागकर निकली। उसकी खिलखिलाहट शाहजादे के कानों में पहाड़ी नदी के कलकल करते हुए पानी की तरह गूंज उठी। पर पिता के शब्द “नटखट लड़की, तू फिर आ गयी।” सुनकर वह फिर उसी दरवाजे में घुसकर गायब हो गयी। शाहजादा उस लड़की को देखते ही फिर होश खो बैठा। होश में आने पर वह बूढ़े आदमी से बोला:

“अब तो आप जान ही गये हैं कि मैं कौन हूँ, अब आप अपने बारे में मुझे बताइये।”

“हम अपने बारे में आपको कभी भी बता सकते हैं, पर इस वक्त तो हमें थोड़ी देर दिल बहला लेना चाहिए,” बूढ़े ने जवाब दिया। उसने लड़कियों को बुलाया और सब उसी बारा में घूमने निकल पड़े। पहली बार लड़कियों के साथ घूमते समय शाहजादा हसता-बोलता, मजाक करता रहा था, पर इस बार वह बहुत व्याकुल और उदास दिखाई दे रहा था। लड़कियों ने शाहजादे में यह परिवर्तन देखकर उसका दिल बहलाने की कोशिश की। वे उसे अपने मनोहर नाच दिखाने लगीं और बड़े प्यार से बातें करने लगीं। पर साफ़ दिखाई दे रहा था कि शाहजादे का मन कहीं और था। वह एकांत की खोज में था और इस हंसी-खुशी के वातावरण में हिस्सा लेते हुए भी बीच-बीच में कुछ क्षणों के लिए उदास और चुप हो उठता था। उसी सोलह बरस की लड़की ने उसका दिल चुरा लिया था।

एक बार शाहजादे ने बड़े आग्रहपूर्वक बूढ़े से कहा:

“अब मेरे ख्याल में यह बताने का समय आ गया है कि आप कौन हैं और क्यों ऐसी एकांत जगह में रह रहे हैं?”

बूढ़े ने टालने की बहुत कोशिश की, पर शाहजादे ने भी ज़िद कर ली। तब बूढ़ा अपना किस्सा सुनाने लगा:

“मैं हिरात शहर का रहनेवाला हूँ। मेरे पिता बहुत बड़े सौदागर थे। उनके पास ऊंट ही कई हजार थे। उन ऊंटों पर माल लादकर हिरात से दूसरे शहरों में ले जाकर बेचा जाता था और वहाँ से माल खरीदकर हिरात लाया जाता था। मेरे पिता बूढ़े हो गये। एक दिन वे मुझे बुलाकर बोले:

‘बेटे सादिक! तुम जवान हो गये हो और समझदार भी। कोई भी काम ऐसा नहीं रहा जो तुम नहीं कर सकते हो। अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ और कारवाँ के साथ दूसरे शहरों और देशों में नहीं जा सकता। अब यह ज़िम्मेदारी मैं तुम्हें सौंपता हूँ। तुम दूसरे शहरों और देशों में जाकर हमारी दौलत बढ़ाओ।’

मैं पिता की बात सुनकर आदरपूर्वक बोला:

‘पिता जी, जैसा आप चाहेगे, वैसा ही करूँगा। मैं दिल लगाकर यह काम करूँगा और आप मुझ पर भरोसा रख सकते हैं। मैं आपकी इच्छा पूरी करने में कोई कसर नहीं छोड़ूँगा।’

कुछ ही दिनों बाद हमारे शहर से कई कारवाँ हिन्दुस्तान के लिए रवाना होनेवाले थे। मेरे पिता ने मेरे लिए एक हजार ऊंटों पर माल लदवा दिया। मैं जानता था कि हिन्दुस्तान के लोगो में उन चीज़ों की बड़ी मांग थी। हर ऊंट पर माल लादकर, ऊपर से रेशमी या ज़री

की चादर डाल दी गयी थी। आखिर हम लोग रवाना हुए। मैं कभी घोड़े पर सवार होता, कभी ऊट पर और कभी-कभी पैदल भी चलता। कई गाँव और शहर पार करने के बाद रेगिस्तान शुरू हुआ। रेगिस्तान की तपती रेत में हम कई दिनों तक चलते रहे। अंत में हम हिन्दुस्तान के एक बड़े शहर में पहुँचे। सारे काफ़िले सरायों में ठहरे। मैं सराय के एक छोटे-से कमरे में ठहरा। दूसरे दिन उस शहर के सौदागर लोग हमारा माल देखने आये और मोल-भाव करने लगे। हमारा सारा माल उन्हें अच्छा लगा, उसकी बहुत मांग थी और वह हाथों हाथ बिकने लगा। शाम हो गयी। खाने के बाद हम सौदागर दोस्तों के साथ अपने कमरे में इकट्ठे होकर काफी देर तक गपशप करते रहे। दोस्तों के जाने के बाद मैं सो गया। सुबह उठकर मैंने हाथ-मुँह धोये और मसजिद गया। नमाज़ के बाद लोग उठकर बाहर भागने लगे। सबके साथ मैं भी बाहर निकला। मैं यह देखकर हैरत में पड़ गया कि सारा रास्ता लोगों की भीड़ से भरा है। मुझे लगा कि अब एक भी आदमी किसी तरह यहाँ से निकल नहीं पायेगा।

मैंने चारों ओर नज़र दौड़ाई, पर भीड़ का अंत ही नज़र नहीं आ रहा था। मैं काफी देर तक सबके साथ चलता रहा और अंत में मैंने देखा—सब शहर के बाहर एक बड़े दरवाज़े की ओर भागे जा रहे हैं।

दरवाज़े के दोनों ओर खौफ़नाक चेहरे और बड़ी-बड़ी मूँछोंवाले हथियारबंद पहरेदार खड़े थे। भीड़ के साथ-साथ मैं भी दरवाज़े में घुसा। अंदर पहुँचने पर एक बड़ा मैदान दिखाई दिया, जिसके तीन ओर जंगल था और चौथी ओर लंबी और ऊँची दीवार थी, जिसके सहारे-सहारे घुड़सवार खड़े थे। हर घोड़े पर अठारह-उन्नीस वर्ष के अत्यन्त सुंदर जवान बैठे थे, जिनपर जरी और रेशम की एक-सी पोशाक सूब फब रही थी। सबसे आगे सबसे ऊँचे और सुंदर तगड़े घोड़े पर एक अठारह बरस का नौजवान सवार था। नौजवान जरी के काम की पोशाक और लाल रंग का पतलून पहने था, उसकी कमर में सोने की पेटी बंधी थी और सिर पर सोने का ताज था। सुगठित बदन, काली-काली आँखें, भौंहें और सेब जैसे लाल गाल। वह नौजवान वास्तव में बहुत ही आकर्षक था।

लोग काफी देर तक आकर मैदान में जमा होते रहे। आखिर मैदान पूरा भर गया। मैंने अपनी ज़िंदगी में एक ही जगह में इतने लोगों को इकट्ठे होते हुए कभी नहीं देखा था। सबकी नज़रें लाल कपड़े पहने और सबसे आगेवाले सुंदर घोड़े पर सवार नौजवान पर टिकी थी।

भीड़ में सब लोगों के चेहरों पर मायूसी छायी हुई थी। कोई बोला, 'हाय, कितना सुंदर नौजवान है! कितने अफ़सोस की बात है!' भीड़ में से और बहुत-से लोग भी अफ़सोस जाहिर करते हुए बोल उठे: 'हाय, कितना सुंदर नौजवान है! क्या यह बेचारा भी मारा जायेगा?' बहुत-से बूढ़े और बुढ़ियाएँ नौजवान को देख-देखकर रोने लगे। मैंने लोगो के उदास चेहरों और अफ़सोसभरी आवाज़ों से महसूस कर लिया कि ज़रूर कोई बुरी और दर्दनाक घटना होनेवाली है। कुछ देर बाद लाल कपड़े पहने यह सुंदर नौजवान अपने घोड़े पर कुछ आगे बढ़ा और दो खंभों के पास पहुँचकर रुक गया, जिनके बीच में एक बहुत बड़ा नगाड़ा लटका हुआ था। नौजवान ने खंभे से लटका डंका उठाकर तीन-चार चोटें नगाड़े पर मारीं। नगाड़ा

बजते ही कुछ घुड़सवार इधर-उधर सरक गये और दीवार में दो छोटे दरवाजे नज़र आये। एक छोटे दरवाजे के ऊपर की दीवार पर आदमियों के कटे मिर् टगे हुए थे। नगाडा बजने ही उस दरवाजे का फाटक पूरा खुल गया और उसमें से उन्नीस-बीस बग्ग की दम खूबसूरत लड़कियाँ मुस्कराती हुई भागकर बाहर निकली। वे बड़े नगाड़े के पाम पहुँची और मुंदर नौजवान को अपने साथ ले गयीं। दरवाजा तुरत बंद हो गया। पता नहीं क्यों उसी वक्त लोगों में घबराहट फैलने लगी। लोग डरे-डरे-से एक दूसरे में फुसफुसाकर बातें करने लगे। इसके बाद उसी दीवार के पीछे से कहीं से तुरही और शहनाई बजने की आवाज़ आयी और दरवाजा खुल गया। एक इरावने और क्रूर चेहरेवाला आदमी बाहर आया, जिसके मागे कपडों पर खून के बड़े-बड़े धब्बे पड़े थे। उसके दायें हाथ में खून में मनी तलवार थी और बायें हाथ में कान से लटका, थोड़ी देर पहले अंदर घुसे, उसी नौजवान का मिर् था। उसने कटा मिर् उठाकर लोगों को दिखाया और दीवार में पहले से टगे सिरो की कनार में उसे भी कील में गाड़ दिया।

बहुत-से लोग फूट-फूटकर रोने लगे। कुछ हाय-हाय करते हुए ज़मीन पर गिर पड़े। चारों ओर से 'हाय, कितना सुंदर नौजवान मारा गया!' की दर्दभरी आवाज़ें ही मुनाई पड़ने लगीं। जल्लाद चला गया और दरवाजा फौरन बंद हो गया। इसके बाद लोग अपने आँसू पोछते और आहें भरते वापस लौटने लगे।

अगले दिन तक मेरे साथियों ने अपना सारा माल बेच दिया था। अब हमें वहाँ से माल खरीदना था। एक बार जब मैं बाज़ार में घूम रहा था, तो मैंने एक बुढ़िया को एक पोटली लिये बैठे देखा। पता नहीं क्यों उस बुढ़िया ने मेरा ध्यान आकर्षित कर लिया। मैंने उसके पास जाकर पूछा कि उसकी पोटली में क्या है और क्या वह उसे बेचना चाहती है।

'हाँ, बेच दूंगी, अगर दस हजार अशरफियाँ दोगे तो,' बुढ़िया ने मुझे जवाब दिया।

'पर इस पोटली में ऐसी क्या चीज़ है?' मैंने पूछा।

'इसके बिकने तक खरीददार के लिए यह एक राज ही रहेगा। कीमत इसकी दस हजार अशरफियाँ जो है। खरीदने पर अगर घर ले जाकर देखोगे, तो शायद इस पोटली की मदद से तुम्हारी तकदीर खुल जाये।' बुढ़िया ने ऐसा रहस्यपूर्ण जवाब दिया।

मैंने उसकी बात में आकर दस हजार अशरफियाँ दे दी और पोटली लेकर अपने कमरे में आ गया। मैंने पोटली खोली, तो उसमें औरतों की एक पोशाक पायी। पर पोशाक थी नाजवाब! सोने और चाँदी के मिक्कों से बनी थी और वास्तव में बहुत ही सुंदर थी। मुझे विश्वास नहीं हुआ कि दुनिया का कोई दर्जी इतनी सुंदर पोशाक सी सकता है। पोशाक को उलट-पुलटकर देखते समय मुझे उसके सीने पर सोने के तारों से बनी एक लड़की की तस्वीर दिखाई दी, जिसके नीचे 'शाहजादी माहेसितारा' कड़ा हुआ था। हाय, अल्लाह, तुम्हें क्या बताऊँ यह चेहरा कितना खूबसूरत था! मैं उसकी खूबसूरती को शब्दों में बयान नहीं कर सकता। मुझे फौरन नशा-सा चढ़ गया और मैं बेहोश हो गया।

होश आने पर मैंने जब आँखें खोलीं, तो अपने को काफ़िले के लोगों से घिरा पाया, उन सबके चेहरों पर चिंता झलक रही थी। मेरी आँखें खुलते ही उनमें से एक चिल्ला उठा



‘इसने आँखें खोल दीं ! होश में आ गया ! या , अल्लाह , यह ज़िदा है !’

बाद में मुझे पता चला कि पहले मुझे उन्होंने सोता समझकर जगाना ठीक नहीं समझा। फिर उन्होंने सोचा कि शायद मैं अब तक अच्छी तरह सो चुका हूँ , इस लिए वे मुझे जगाने लगे। उन्होंने मेरे चेहरे पर पानी के छीटे भी मारे , पर उसका मुझ पर कोई असर नहीं हुआ। तीन दिन बाद जब मुझे होश आया तो उन्होंने सबसे पहले पूछा कि मेरी तबीयत कैसी है। मैं कुछ देर तक तीन दिन पहले जो कुछ हुआ था याद करता हुआ चुप रहा और फिर अपने दिल की असली हालत उन्हें न.मालूम पड़े , इस लिए बोला :

‘मैं बहुत देर तक तपती धूप में घूमता रहा था , शायद यह उसी का असर है।’

मेरे साथी मुझे होश में आया देखकर खुशी-खुशी अपनी-अपनी कोठरियों में लौट गये। पर फिर मेरी इच्छा सुंदरी माहेसितारा का चेहरा एक बार और देख लेने की हुई। मैंने वह पोशाक निकाली और माहेसितारा के चेहरे पर नज़र पड़ते ही फिर बेहोश हो गया। इस बार भी मैं तीन दिन और तीन रात तक बेहोश रहा। होश आया , तो मैंने देखा — मेरे साथी पहले की तरह चिंता में डूबे मेरे मिरहाने खड़े हैं। इस बार भी मैंने उन्हें असली कारण नहीं बताया। मेरे साथ आये हुए क्राफ़िले के सौदागर वहाँ से माल खरीदकर वापस लौटने की तैयारी कर रहे थे। वे लोग मेरे पास बार-बार आकर मुझे भी जल्दी करने के लिए कहने लगे। पर मुझे अब किसी तरह की दौलत की ज़रूरत नहीं रह गयी थी , मुझे सपनों में और वैसे भी सिर्फ़ शाहज़ादी माहेसितारा ही दिखाई देती थी। कुछ दिन और बीते। मेरे साथी पूरी तैयारी करके दूसरे दिन सुबह वहाँ से रवाना होने के बारे में मुझसे इजाज़त लेने आये। उस समय मैं पीला पड़ा और कमज़ोर हुआ अपनी कोठरी में लेटे-लेटे शाहज़ादी माहेसितारा के बारे में सोच रहा था। मेरे दोस्त आकर पूछने लगे :

‘कल दिन निकलने के पहले ही हम लोगों को यहाँ से चल पड़ना चाहिए या नहीं ?’

‘आप लोग रवाना हो जाइये और मैं यहीं ठहरूंगा !’ मैंने उन्हें जवाब दिया।

दोस्तों को बड़ा आश्चर्य हुआ और वे मुझसे मेरे रुके रहने का कारण पूछने लगे। लेकिन मैं चुप रहा। तब उनमें से एक ने बाक़ी सबको बाहर भेज दिया और गहरी सहानुभूति के साथ मुझसे मेरे रुकने का कारण पूछने लगा। उस आदमी की नेकनीयती मेरे दिल को छू गयी और मैंने उसे पूरा क़िस्सा सुना दिया। अपनी बात समाप्त करते हुए मैंने कहा :

‘मैंने भी माहेसितारा के महल में जाने और उसकी सारी शर्तें पूरी करने का निश्चय किया है।’

मेरी बात ध्यान से सुनकर वह समझदार आदमी बोला :

‘अरे , मेरे भाई ! तुम और मैं भले ही कितने ही बड़े सौदागर क्यों न हों , पर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम परदेस में हैं। हमें सही-सलामत अपने देश लौटना चाहिए। तुम माहेसितारा का विचार तज दो ! इस खूबसूरत और निर्दयी शाहज़ादी के कारनामों के बारे में हम लोग भी सुन चुके हैं। उसके प्यार में पागल हुए नौजवान उसकी कोई भी शर्त पूरी नहीं कर पाते हैं और मौत के घाट उतर जाते हैं। मैं नहीं चाहता कि तुम भी उसके शिकार बनो ! होश में आओ !’

‘अगर मेरे सौ सिर होते, तो भी मैं उन्हें माहेसितारा के लिए कटवा देता। मैं उसकी सारी शर्तें पूरी कर सकूँ या नहीं, पर मैं मरने से पहले उसे एक नज़र देखना जरूर चाहता हूँ मैं हर बात के लिए तैयार हूँ।’ मैंने जवाब दिया।

वह दुनिया देखा हुआ आदमी मुझे फिर समझाने और अपने साथ जाने के लिए मनाने लगा और जब उसने देखा कि उसकी सलाह का मुझ पर कोई असर नहीं हो रहा है, तो बोला

‘माना तुम्हें दौलत और अपने ऊंटों की कोई फ़िक्र नहीं है, पर कम-से-कम तुम्हें अपने लोगों के बारे में तो सोचना चाहिए, जो तुम्हारे हाथों में अपनी किस्मत सौंपकर तुम्हारे साथ इतनी दूर आये हैं। इस लिए मैं तुमसे एक बार और कहता हूँ—जल्दी से जल्दी यहाँ से माल खरीदो और हमारे साथ चलने की तैयारी करो। इसके अलावा अपने पिता का भी ख्याल करो, जिनकी तुम बहुत इज्जत करते हो और जिन्हें प्यार करते हो। माल बेचने के बाद पैसे उन्हें दे दो। फिर तुम अपनी माहेसितारा के प्यार में पागल होकर अपना सिर कटाने लौट सकते हो ...’

अपने दोस्त की सलाह से मुझे होश आया और मैं उनके साथ वापस लौट चलने को तैयार हो गया। उस नेक आदमी ने बाक़ी सौदागरों को दो दिन और ठहरने के लिए मना लिया, जिससे कि मैं जरूरी माल खरीद सकूँ और सफ़र की तैयारी कर सकूँ। कई दिनों के सफ़र के बाद हम फिर उसी रेगिस्तान में पहुँचे। बहुत ज्यादा थक जाने के कारण हम लोगों की रफ़्तार बहुत धीमी रही और हम अक्सर बीच-बीच में रुकते हुए चलने लगे। एक रात को बहुत तेज़ आँधी चलने लगी और हर चीज़ रेत से ढक गयी। काफ़िला रुक गया, ऊंटवानों ने टटोल-टटोलकर ऊंटों पर से माल उतार लिये। फिर हम सब, जो मिला, उससे अपने सिर ढककर लेट गये। साँस लेना दूभर हो गया था। तूफ़ान और ज्यादा तेज़ होता जा रहा था, हमें लग रहा था कि रेत हमारे पैरों के नीचे से उड़ी चली जा रही है। हम सब जानते थे कि अब तूफ़ान रेत उड़ाकर टीलों से हमारा सारा रास्ता ढक देगा। इन रास्तों से पहले भी सफ़र कर चुके ऊंटवान घबराये हुए आपस में सलाह-मशविरा करने लगे। उन्हें डर था कि बगूले हमें भी अपने साथ उड़ा ले जायेंगे। अचानक कहीं दूर से चीखने-चिल्लाने की एक ख़ौफ़नाक आवाज़ सुनाई दी। हम समझ गये कि अब रेत का बगूला आसमान में लंबी मीनार जितनी ऊँचाई पर चक्कर काट रहा है। उसी क्षण यह बगूला हमारे पास से गुज़रा और मुझे अपने साथ घसीटता हुआ न जाने कहाँ ले गया ... मैं बेहोश हो गया। मुझे जब होश आया, तो मैंने देखा—मैं बारा में इस चबूतरे पर लेटा हूँ और मुझे चारों ओर से खूबसूरत लड़कियाँ घेरे खड़ी हैं। मैंने पहले तो सोचा कि सुंदर लड़कियों के रूप में मुझे बुरी रूहों ने घेर लिया है, पर अचानक उनमें से एक मुझसे बोली—

‘आप हमसे बिल्कुल भी मत डरिये, खड़े हो जाइये, हाथ-मुह धो लीजिये।’

मैं दिल में डरते-डरते खड़ा हुआ। लड़कियों ने मेरे हाथ, पैर, मुह धुलवाने में मेरी मदद की और मुझे सफ़ेद कपड़े पहनाकर अकेला छोड़ गयी। थोड़ी देर बाद एक बहुत ही खूबसूरत लड़की मुस्कराती हुई आयी। उसने मेरा हाथ पकड़कर मुझे सोने की कुर्सी पर बिठा दिया।

वह मेरा विश्वास पाने के लिए बड़े मधुर स्वर में बातें करती रही। पर मैं डर और घबराहट के मारे कुछ समझ नहीं पा रहा था कि मैं कहां आ पहुंचा हूं। शुरू में मैं कुछ बोल न पाया, पर किसी तरह अपने पर काबू पाकर मैंने उससे पूछा :

‘मैं कहां हूँ?’

वह लड़की खिलखिलाकर हंस पड़ी और मेरे पास आ खड़ी हुई। मैं उसकी दृष्टि से सम्मोहित-सा हुआ उठ खड़ा हुआ। उसने मेरा सिर अपने सीने पर रख दिया और कोमल हाथों से मेरा चेहरा सहलाते हुए बोली :

‘ऐ, खूबसूरत नौजवान ! मैं परियों के देश की सुंदरी हूँ। मेरा नाम सनोबर है। मेरी एक गलती के कारण परियों की रानी ने मुझे अपने देश से निकालकर यहाँ भेज दिया था। मुझे अब यहाँ साठ साल बिताने हैं। मेरे लिए यह घर परियों की रानी ने ही बनवाया है। और ये सब लड़कियाँ, जिन्हें तुम देख रहे हो, मेरी सेवा करती हैं। अपनी रानी की आज्ञा के अनुसार मैं कोई भी आदमी ढूँढ़कर उसके साथ शादी कर सकती हूँ। मेरे यहाँ आने के दिन से ही मैंने हर जगह ढूँढ़ा, पर अपने मनपसंद आदमी को अभी तक ढूँढ़ नहीं पायी हूँ। आज, जब हम लोग रेगिस्तान के ऊपर उड़ती हुई जा रही थीं, तो मैंने तुम्हें देखा और रेत का बगूला बनकर तुम्हें यहाँ ले आयी। तुम्हारा सामान और दौलत, जो रेगिस्तान में पड़ी रह गयी है, तुम उसकी कोई फ़िक्र मत करो। तुम्हारे साथी सारा सामान ले जाकर तुम्हारे पिता को दे देंगे। हमें उसकी कोई ज़रूरत नहीं है, क्योंकि हमारे पास बहुत ज्यादा दौलत है। मेरी सारी बातों का मतलब केवल यही है कि तुम्हें मुझसे शादी करनी होगी। हम दोनों पति-पत्नी की तरह यहाँ सुख-चैन से जियेंगे।’

लड़की की यह बात सुनकर मैंने अपने आप पर नियंत्रण किया, मेरी हिम्मत बढ़ी और मैंने सोचा :

‘अब मुझे क्या करना चाहिए?’

लड़की मुझसे लिपट गयी, मैं समझ गया था कि वह किसी भी कीमत पर मुझसे अपनी बात मनवाना चाहती है। सारी परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए मैं मन ही मन कहता रहा :

‘हाँ, मैं माहेसितारा को प्यार करता हूँ। सिर्फ़ उसी के सपनों में डूबा रहता हूँ, पर अब उसके पास लौटकर जाना अपनी ज़िंदगी को खतरे में डालना होगा। अगर मेरी तकदीर अच्छी निकली, तो सब ठीक हो जायेगा, और अगर नहीं तो मैं मर जाऊंगा। पूनम के चाँद-सी सुंदर परी इस समय मेरे पास है, वह किसी बादशाह की भी किस्मत बना सकती है। इतनी दूर और हाथ न आनेवाली माहेसितारा के पास लौटने से तो अच्छा है कि मैं यहाँ इस परी के साथ सुख-चैन से रहूँ।’

मैंने सुंदरी का प्रस्ताव स्वीकार किया। वह बहुत खुश हुई और यह खुशखबरी अपनी सहेलियों को सुनाने चली गयी।

पहले दिन उन्होंने सबसे प्यारे मेहमान की तरह मेरा स्वागत किया, खूब खिलाया-पिलाया।

दूसरे दिन मेरी और सनोबर की शादी हो गयी। शादी के बाद हमारा जीवन सुख-चैन से बीतने लगा। तब से मैं यहीं रह रहा हूँ।” उसने अपने पास बैठी हुई खूबसूरत औरत की ओर इशारा करते हुए कहा कि यही वह सनोबर है। और उस औरत ने भी मुस्कराकर नज़रे झुका ली। बूढ़ा बोला

“हमारी एक ही बेटी है!”

उसी क्षण वही दरवाज़ा खुला और फिर वही सोलह साल की सुंदरी पहले की तरह खिलखिलाती, मुस्कराती हुई निकली और तुरंत गायब हो गयी। बूढ़ा उसके जाते-जाते बड़े प्यारभरे स्वर में बोला:

“यही मेरी लड़की है। बहुत ही खुशमिज़ाज और नटखट है। अल्लाह ने इसे सारी खूबियाँ दी हैं। अगर यह चाहे, तो फूल बन सकती है, चाहे तो उसी फूल पर गाती-चहकती बुलबुल भी। कभी यह कबूतर बनकर आसमान में उड़ने लगती है, कभी मछली की तरह नदियों में तैरने लगती है। पर अक्सर यह हिरनी के रूप में पहाड़ों और जंगलों में कूलाँचें भरती है। शिकार के समय आपको जो हिरन दिखाई दिया था, वह मेरी बेटी ही थी। उसको आपसे प्यार हो गया है, इस लिए वह आपको यहाँ खींच लायी है। यहाँ से आपका शहर करीब डेढ़ महीने के सफ़र की दूरी पर है।”

वही लड़की फिर बाहर आयी और इस बार शौकत ने शर्माकर आँखें झुका लीं। लड़की के पिता ने उसे प्यारभरे स्वर में झिड़कते हुए कहा:

“तू बड़ी नटखट है! तूने बेकार ही इस बेचारे नौजवान को तंग किया, तू इसको सीधे यहाँ ला सकती थी!”

लड़की फौरन वहाँ से भाग गयी। बूढ़ा शौकत से बोला:

“बेटे, तुम्हारी तकदीर में यहाँ आना बदा था। हम दोनों चाहते हैं कि तुम हमारी बेटी से शादी करके हमारे दामाद बन जाओ। हम सब यहाँ सुख-चैन से रहने लगेगे!”

बूढ़े की जिंदगी की कहानी और उसकी आपबीती सुनकर शौकत मन-ही-मन उसकी प्रशंसा कर उठा। उसे इस बात पर भी बहुत खुशी हो रही थी कि बूढ़े की सुंदर बेटी उसपर मुग्ध होकर, हिरन का रूप धारण करके खुद ही उसे यहाँ खींच लायी। पर फिर भी उसने बूढ़े के सुझाव पर अपनी ओर से कोई स्पष्ट जवाब नहीं दिया।

उसी वक़्त लड़कियों ने आकर कहा कि खाना तैयार है। शाहजादा, बूढ़ा, उसकी पत्नी सनोबर और सब लड़कियाँ साथ खाना खाने बैठे। बूढ़े ने एक लड़की से कहा:

‘सय्यारा से जाकर कहो कि वह अपने होनेवाले पति से शरमाये नहीं और यहाँ आ जाये।’

सनोबर ने टोका:

“नहीं, इसकी कोई ज़रूरत नहीं, वह बेचारी फिर भी शरमायेगी!”

शाहजादे को बूढ़े की पत्नी की बात पर मन-ही-मन गुस्सा आने लगा। उसे इच्छा हुई कि वह किसी लड़की से कह दे:



“जाओ, उसे यहाँ ले आओ!”

पर ऐसा करना अनुचित था इस लिए वह चुप रहा। इतने में एक लड़की ने हिम्मत करके उसके मन की बात कह ही दी:

“हमें चाहिए कि हम उसका संकोच दूर करने में उसकी मदद करें। वह भी आकर हमारे साथ बैठे। उसे यहाँ ले ही आना चाहिए!”

जिस दरवाजे में से वह सुंदरी कई बार भागती हुई निकली थी, वह दूसरे आँगन के बगीचे में खुलता था, जो बाहरवाले आँगन से छोटा तो था, पर उससे बहुत ज्यादा सुन्दर था। इस आँगन में “हिरनी”, सुंदरी सय्यारा के लिए एक भव्य महल बनवाया गया था। वह उसमें रहती थी और अपनी सखियों और दासियों के साथ हंसी-मजाक करती रहती थी। उस लड़की ने सय्यारा को सब के साथ आकर खाना खाने के लिए कहा। “हिरनी” सुंदरी बोली कि उसे शर्म आती है, इस लिए वह नहीं आयेगी। दूसरी लड़कियाँ उसे मनाने लगी, अंत में वह मान गयी और दरवाजे की ओर बढ़ी। उस समय सब लोग आँगन में बैठे खाना खाते हुए आपस में जोर-शोर से बातें कर रहे थे, केवल शाहजादा ही “हिरनी” सुंदरी के बारे में सोच रहा था और बार-बार उसकी नज़र दरवाजे की ओर उठ जाती थी। सय्यारा शर्म से लाल हुई, मिर झुकाये और इतनी सकुचाती हुई उनकी तरफ आ रही थी, जैसे उसका बस चला, तो वह कबूतर बनकर वहाँ से आसमान में उड़ जाये। किसी तरह वह शाहजादे के पास तक पहुँची।

“सलाम!” उसने सकुचाते हुए कहा और दूसरी लड़कियों के बीच में बैठ गयी। तरह-तरह के पकवान परोसे जाने लगे और सब बड़े मजे से खाने लगे। वह क्षण शाहजादे को इतना मधुर प्रतीत हो रहा था, मानो उसके साथ प्रकृति भी खुश होकर कह रही हो:

“बधाई हो!”

लगता था जैसे बुलबुलें, तोते, फ्रास्ताई भी खुशी से शादी के गीत गाने-चहकने लगे थे। खुशी का यह वातावरण शाहजादे और सय्यारा पर भी अपना असर दिखाने लगा और वे लोग एक दूसरे से नज़रें लड़ाते हुए कल्पना में मधुर एवं प्रगाढ़ चुंबन लेने लगे। खाने के बाद सय्यारा ने आँखों ही आँखों में शाहजादे से विदा ली और अपने महल में लौट गयी। परी सनोबर भी शाहजादे और सय्यारा के बीच बढ़ते प्रेमपूर्ण संबंधों को देखकर मन-ही-मन बहुत प्रसन्न हुई। बूढ़ा और शाहजादा बैठे आपस में वार्तालाप करते रहे। शाहजादे ने बूढ़े से पूछा:

‘आपने उस पोशाक का क्या किया?’

“मैंने उसे सभालकर रखा है।” बूढ़े ने जवाब दिया।

तब शाहजादे ने कम-से-कम एक नज़र उस पोशाक को देख लेने की इच्छा प्रकट की। बूढ़े ने अपनी पत्नी सनोबर की ओर देखा, जिसने होठ भीचकर और भौहों के इशारे से इसके लिए मना किया।

बेटे, तुम्हारे लिए यही बेहतर होगा कि तुम उस पोशाक को न देखो।” बूढ़ा बोला। शाहजादा उनके यहाँ कई दिनों तक रहा। वह रोज सय्यारा की सहेलियों के साथ मिलता

रहा और सय्यारा से तो वह एक क्षण के लिए भी अलग नहीं हुआ। चाँद-सी सुंदर सय्यारा की मीठी-मीठी बातों और उसके भले व्यवहार ने शाहजादे को इतना सम्मोहित कर लिया था कि वह स्वयं भी सय्यारा के साथ अपना भावी जीवन बिताने के लिए तैयार हो गया। बूढ़े और उसकी पत्नी को भी इस बारे में अब कोई संदेह नहीं रह गया था, इस लिए वे शादी की तैयारियों में लग गये। एक बार सनोबर और उसकी सहेलियाँ कबूतरों का रूप धारण करके आस-पास के स्थानों का भ्रमण करने उड़ गयीं। बूढ़ा अकेला रह गया। शाहजादे ने इस मौके का फायदा उठाकर बूढ़े से वह पोशाक दिखाने का आग्रह किया। बूढ़े ने बहुत टालमटोल की, पर शाहजादा उसको मनाता रहा और अंत में बूढ़ा मान ही गया। बूढ़ा घर के अंदर से एक पोटली लेकर आया और शाहजादे के सामने रख दी। शाहजादे ने उसे फौरन खोल डाला और वह पोशाक निकालकर देखने लगा। पोशाक वास्तव में बेशकीमती थी और बहुत ही सुंदर ढंग से सिली हुई थी।

“मैं सय्यारा को यह पोशाक पहनाकर देखूँगा,” शीकत ने अपने मन में सोचा। पोशाक को उलट-पुलटकर देखते समय अचानक शाहजादे की नज़र उस पोशाक के सीने के हिस्से पर बनी शाहजादी माहेसितारा की तस्वीर पर पड़ गयी। वह वास्तव में इतनी खूबसूरत थी कि उसकी खूबसूरती के आगे सय्यारा की खूबसूरती भी शाहजादे को फीकी लगने लगी। अगर माहेसितारा अपने तेज प्रकाश से सारे कमरे को रोशन करनेवाली मशाल थी, तो सय्यारा उसके सामने टिमटिमाता हुआ चिराग़ लग रही थी। शाहजादे को माहेसितारा की खूबसूरती का इतना नशा चढ़ा कि वह बेहोश हो गया। उसे जब होश आया, तो अपने चारों ओर बूढ़े, उसकी पत्नी और लड़कियों के उदास चेहरे नज़र आये। उसने परी सनोबर को बूढ़े से गुस्से में कहते सुना

“मैंने इसे यह पोशाक दिखाने को मना किया था। अब देखिये, आपने क्या कर दिया है?!”

बूढ़ा फिक्र में डूबा नज़र आ रहा था। सबसे ज्यादा दुखी सय्यारा थी, वह बेचारी तो रोने लगी।

शाहजादे को आँखें खोलते देख सब बेहद खुश हुए, पर अफसोस, यह खुशी थोड़ी देर ही रह सकी। आखिर माहेसितारा ने शाहजादे का दिल हमेशा-हमेशा के लिए जीत लिया था। इस लिए अब उसे सय्यारा की ओर देखने तक की भी इच्छा नहीं रही थी, उसके प्रति तो वह इतना उदासीन हो गया कि उसके सामने ही वही पोशाक एक बार और दिखाने का हठ करने लगा। अलबत्ता इस बार उसकी बात नहीं मानी गयी। पर इस तरह शाहजादे का रुख बदलना असंभव हो चुका था। वह दुःख के सागर में खोया गुमसुम रहने लगा। उसकी यह हालत देखकर सब घबरा उठे। सबसे बड़ी ठेस बेचारी सय्यारा को पहुँची थी।

कुछ दिन बाद शाहजादा बूढ़े से बोला:

“मेरा घोड़ा मुझे दीजिये! मैं जाऊँगा ..”

बूढ़े ने एक बार फिर उसकी विनती अस्वीकार कर दी और उसे मनाने की हर कोशिश

करने लगा। सनोबर भी बहुत दुःखी थी। कई बार तो वह अपना गुस्सा रोक न पायी और बूढ़े को उस गलती के लिए भिड़कती रही। कुछ दिन और गुजरे। शाहजादा अब जाने के लिए पहले से भी ज्यादा उतावला हो गया था। सय्यारा ने उसका दिल बहलाने की हर कोशिश की, मनाती और रोती रही, पर शाहजादे का दिल अब उसमें कहाँ रह गया था। उसके दिल में तो शाहजादी माहेसितारा बसी थी। एक बार शाहजादे ने जाने का पक्का निश्चय करके अपना घोड़ा माँगा। जब उसे घोड़ा देने के लिए मना कर दिया गया, तो वह बोला कि वह बिना घोड़े के भी चला जायेगा। बूढ़ा समझ गया कि अब शाहजादे को और ज्यादा देर रोकना असंभव है, इस लिए उसने घोड़ा लाकर उसकी लगाम शाहजादे के हाथ में थमा दी। शाहजादे ने बड़े प्यार से अपने घोड़े को थपथपाया, उस पर काठी कसी और बूढ़े से बोला:

“आपने ही वह पोशाक मुझे दिखाई थी। मैं जानता हूँ कि इस पोशाक की वजह से आप किसी समय कितनी मुसीबतें उठा चुके हैं। और इसमें मेरी कोई गलती नहीं कि शाहजादी माहेसितारा की तस्वीर देखते ही मैं भी उसके प्यार में पागल हो गया हूँ। मुझे अब उसके पास जाना है। इसलिए आप कृपा करके मुझे यहाँ पहुँचने का रास्ता समझा दीजिये।”

बूढ़ा बोला:

“बेटे! तुम शायद ही वहाँ तक पहुँच सकोगे... वह देश बहुत दूर है, रास्ते बहुत खतरनाक हैं। इस लिए मैं तुमसे एक बार फिर कहता हूँ कि तुम अपना इरादा बदल दो।”

शाहजादा अपने निश्चय पर उटा रहा:

“ठीक है, अगर आप मुझे वहाँ जाने का रास्ता नहीं बताना चाहते, तो मैं खुद ही ढूँढ़ लूँगा!”

बूढ़े ने सोचा:

“अगर मैं इसे माहेसितारा के देश का रास्ता नहीं बताता हूँ, तो वह किसी मुसीबत में पड़कर अपनी जान गवा बैठेगा।”

इस लिए उसने उसे हिन्दुस्तान पहुँचने का ऐसा रास्ता समझाया, जो कम खतरनाक था। शाहजादे ने मार्मिक शब्दों में बूढ़े, सनोबर और सब लड़कियों को अतिथि-सत्कार और उनके प्यारभरे व्यवहार के लिए धन्यवाद दिया और सफर पर चल पड़ा।

वह बहुत दिनों तक चलता ही रहा। रास्ते में उसे पानी की एक बूंद भी न मिली, और तो और एक दिन घोड़े से भी हाथ धोना पड़ गया।

एक दिन अचानक मौसम बिगड़ गया। आकाश में काले बादल छा गये, तेज़ हवा चलने लगी और तूफान आ गया। चारों ओर गहरा अंधेरा छा गया। कुछ घंटों के बाद अंधेरा धीरे-धीरे छटने लगा, पर अचानक दूर आसमान में रेत के चार बगूले उठते दिखाई दिये। वे शाहजादे की ओर ही बढ़ रहे थे। पेड़ों के झुरमुट के पास आकर बगूले जादू की तरह गायब हो गये और उनमें से चार देव निकले। हर देव का सिर बादलों को छू रहा था और उनके

नथने गुफाओ जैसे थे, शाहजादा डर के मारे पेड़ के शिखर पर चढ़ गया। देव चश्मे के पास पहुँचकर आराम करने के लिए लेट गये। नौजवान, कोई आवाज न हो, इस लिए एक मोटी डाल से चिपटा बैठा रहा। अचानक एक देव बोला:

“भाइयो, हमे किसी तरह फ़ैसला कर लेना चाहिए।”

दूसरे देव ने टोका:

“मुझे तो यह असंभव-सा दिखाई देता है।”

“क्यों?”

“इस लिए कि जो मैं लेना चाहता हूँ, उसे तुम ले लेना चाहते हो और उसी चीज को बाकी दोनों भी अपने लिए रखना चाहते हैं। ऐसे में हम सहमत हो ही कैसे सकते हैं?”

पहला देव कुछ देर चुप रहकर बोला:

“ऐसी हालत में हमें एक ऐसे निष्पक्ष आदमी की जरूरत है, जो हमारी दलीले सुनकर खुद हमें यह कहकर बाँट दे: यह तेरा है, यह दूसरे का, यह तीसरे का और यह चौथे का। जिसे जो दिया जाये, उसे बिना कोई विरोध किये ले लेना पड़ेगा।”

यह सुभाव घाक्री देवों को भी पसंद आया, इस लिए उनमें से एक बोला:

“यह तो बहुत ही अच्छा सुभाव है, पर ऐसा निष्पक्ष आदमी हम कहाँ ढूँढ़ पायेंगे?”

“ऐसा आदमी ढूँढ़ना बहुत ही आसान काम है, हम अभी ढूँढ़ लेते हैं।” और वह पेड़ के शिखर की ओर मुह उठाकर चिल्लाया:

“ऐ, आदमी, उतरकर हमारे पास आओ।”

शाहजादे को काटो तो खून नहीं। देव थोड़ी देर बाद फिर बोला:

“हम तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचायेंगे। तुम उतरकर हमारा बंटवारा कर दो, फिर हम सब तुम्हारी मदद करेंगे।”

शाहजादा उतरता तो क्या, डर के मारे उसकी ज़बान ही सुख हो गयी थी। देव इन्तज़ार करते-करते ऊब गये, तो उनमें से एक ने लेटे-लेटे ही हाथ बढ़ाकर शाहजादे को पकड़ लिया और ज़मीन पर लाकर रख दिया। देवों ने उसके साथ न बुरा व्यवहार किया, न कोई धमकी दी, बल्कि बड़ी नम्रता से उससे बातें करते रहे। इससे खुश होकर शाहजादे ने उनसे पूछा:

“मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ?”

एक देव बोला:

“हम चार भाई हैं। हमारे पिता हमें वसीयत में एक टोपी, एक कालीन, एक तीर-कमान और एक सोने की चिलमची छोड़ गये हैं। हम चार साल से आपस में बहस कर रहे हैं, पर किसी तरह इन चीजों को बाँट नहीं पा रहे हैं। इस लिए अब यह काम तुम करो।”

शाहजादे को बड़ा आश्चर्य हुआ कि ये देव इतनी मामूली चीजें भी आपस में बाँट नहीं पा रहे हैं। उसकी हैरानी देखकर एक देव बोला:

“ये सब चीजें मामूली नहीं, जादूई हैं। जो यह टोपी सिर पर रखेगा, वह दूसरो को दिखाई नहीं देगा। और कोई अगर इस कालीन पर बैठकर कहे, ‘उड़ो!’ तो यह कालीन



उसे उड़ाकर सारी दुनिया का चक्कर लगा सकता है। अगर कोई इस चिलमची में पानी डालकर किसी चीज की इच्छा करे, तो वह चाहे जैसी भी क्यों न हो, फौरन उसके सामने आ जायेगी। यह तीर इस कमान में छोड़े जाने पर तुम जहाँ चाहो वहाँ जाकर लगेगा और जिस चीज में लगेगा, वह लाकर तुम्हें दे देगा।”

इन चीजों को चारों भाइयों के बीच में कैसे बाँटे, शाहजादा बहुत देर तक सोचता रहा और अंत में बोला:

“मैं ये चारों चीजें ईमानदारी से आपके बीच में बाँटे देता हूँ। मैं टोपी को एक नबर पर रखता हूँ कालीन को—दूसरे, चिलमची को—तीसरे और तीर-कमान को—चौथे नबर पर रखता हूँ। मैं इस कमान में चार तीर छोड़ूँगा। आप चारों एक साथ उनके पीछे भागे। जो कोई तीर लेकर मेरे पास सबसे पहले आयेगा—उसे मैं टोपी दे दूँगा। दूसरा तीर लेकर आनेवाले को—कालीन, तीसरा तीर लेकर आनेवाले को—मोने की चिलमची और चौथा तीर लेकर आनेवाले को—मैं तीर-कमान दे दूँगा।”

चारों देवों को यह सुभाव बहुत पसंद आया। शाहजादा चार तीर लेकर एक ओर खड़ा हो गया।

“सुनो, मेरे तीरों, तुम चारों उड़कर दूर चले जाओ और तुममें से एक भी इन देवों के हाथ नहीं आना। जब तक ये देव थककर ज़मीन पर न गिर पड़ें, तुम उड़ते ही जाना, उड़ते ही जाना।” शाहजादा बहुत धीमी आवाज़ में बोला और एक के बाद एक उसने चारों तीर चारों दिशाओं में छोड़ दिये। देव तीरों के पीछे भागे। सारी जादूई चीजें शाहजादे के पास ही रह गयीं। हर क्षण का मूल्य समझते हुए शाहजादे ने तुरंत कालीन बिछाया और उस पर बैठकर बोला:

“मुझे शाहजादी माहेसितारा के शहर उड़ा ले चल!”

कालीन शाहजादे और उसके सामान के साथ उड़ चला। कुछ देर बाद जादूई कालीन एक शहर में उतरा। शाहजादे ने कालीन को लपेटकर अपनी बगल में दबा लिया। शहर को अच्छी तरह देख लेने के बाद शाहजादे ने सराय में एक कोठरी किराये पर ली। कमान और टोपी उसने एक कील पर टाँग दिये, कालीन और चिलमची आले पर रख दिये। शाहजादे ने क़ाफ़ी समय से मुह में रोटी का एक टुकड़ा भी न डाला था, न ही घर का बना हुआ कुछ खाना खाया था। वह सूखकर काँटा हो गया था और भूख के मारे उसका दम निकला जा रहा था। वह पेट भर के खाना चाहता था, पर उसकी जेब में एक फूटी कौड़ी भी नहीं थी। कुछ देर बाद वह चिलमची लेकर बाहर आँगन में आ बैठा। आँगन के बीचोबीच बने हाँड़ में से चिलमची में पानी भरकर वह कोठरी में घुसा और पानी की ओर देखकर बोला:

“मुझे फौरन सोने की अशरफ़ियों से भरी एक बोरी चाहिए।”

पलक भपकते ही उसके पैरों के पास अशरफ़ियों से भरी बोरी आ गिरी। शाहजादे ने दिल खोलकर खर्च किया—कई दिनों तक अच्छी तरह खाया-पिया और आराम किया। उसने ठाठदार कपड़े बनवाये और अच्छे हकीमों से इलाज कराकर बिल्कुल ठीक हो गया।

एक बार जब शौकत अपनी कोठरी में सो रहा था, उसे नींद में कोई संगीत सुनाई दिया। नींद पूरी खुलने पर उसने ध्यान से सुना—तुरहियाँ और शहनाइयाँ बजने की आवाज़ें आ रही थीं। “रात को तुरहियों और शहनाइयों की क्या जरूरत पड़ी? शायद ही इस वक्त किसी को अपना त्योहार मनाने की सूझी हो?” शाहजादे ने सोचा। वह उठ खड़ा हुआ और कपड़े पहनकर बाहर निकल आया। उसने देखा—सराय की छत पर बैठे बाजा बजानेवाले एक साथ चालीस तुरहियाँ, चालीस शहनाइयाँ, चालीस नगाड़े और चालीस नक्कारे बजा रहे हैं। संगीत का शोर दसियों मीलो तक गूँज रहा था, पर आस-पास कोई खड़ा नज़र न आ रहा था। उस कान फाड़ देनेवाले संगीत से बचने के लिए शाहजादा अपनी कोठरी में जाकर लेट गया, पर उसे नींद न आयी। मुल्ला ने सुबह की नमाज़ की अज्ञान दी। शाहजादा भी वज्र के बाद मसजिद में पहुँच गया। उसने सबके साथ नमाज़ पढ़ी। इमाम रोज़ सुबह नमाज़ियों को देर तक धार्मिक पुस्तकों में से पढ़कर उपदेश सुनाया करता था। पर आज वह जल्दी से आमीन कहकर बाहर भागा। नमाज़ी भी उसके पीछे-पीछे भागे। सब मसजिद से बाहर आ गये और उनके साथ-साथ शाहजादा भी। क्या बूढ़े और क्या जवान, सारी भीड़ इतनी तेज़ी से एक ही दिशा में भाग रही थी, मानो उन्हें बाज़ार को देर हो रही हो। मसजिद से निकलनेवाले लोग भी इस भीड़ में शामिल हो गये। उनके साथ-साथ शाहजादा भी चलने लगा। लोगों की बातों से मालूम पड़ा कि कल एक और बहादुर नौजवान शाहजादी माहेसितारा के साथ शादी करने की इच्छा से आया है। अब उसे माहेसितारा की शर्तें पूरी करनी थीं। बाजों का शोर बढ़ने लगा। बादशाह इस नौजवान की दर्दनाक मौत अपनी प्रजा को दिखाकर एक सबक सिखाने का इरादा रखता था। इसी लिए लोगो की भीड़ बादशाह के महल की ओर बढ़ी चली जा रही थी। दरवाज़े खुले और सारी भीड़ मैदान में भर गयी।

कुछ देर बाद अठारह-उन्नीस साल का एक सुंदर नौजवान निकलकर मैदान के बीच में लटके नगाड़े के पास पहुँचा और वही रखे डके से उसने उस पर कई बार चोट की। उसी समय दीवार पर टंगे कटे सिरों के नीचेवाला दरवाज़ा खुला और उसमें से सफ़ेद रेशमी कपड़ों में लिपटी कई सुंदर लड़कियाँ निकलीं। वे उस सुंदर नौजवान को घेरकर अपने साथ ले गयीं। दरवाज़ा फिर बंद हो गया और लोग बेचैनी से नौजवान के भाग्य के निर्णय की प्रतीक्षा करने लगे। एक घंटे बाद दरवाज़ा खुला और उसमें से एक जल्लाद उसी लड़के का सिर हाथ में लटकाये निकला। लोगों को दिखाते हुए उसने वह कटा सिर ऊपर उठाया और दीवार पर कील से टाँग दिया। लोगों के रोने-बिलखने की आवाज़ों से आसमान गूँज उठा, बहुत-से बूढ़े-बुढ़ियाँ इस दर्दनाक घटना को देखकर बेहोश हो गये। लोग काफी देर तक वही खड़े रहे और फिर वापस लौटने लगे। शौकत अपनी आँखों से यह दर्दनाक घटना देखने के बाद और यह विश्वास हो जाने के बाद कि माहेसितारा का महल यहीं है, अपनी सराय लौट आया। अच्छी तरह हर बात का भला-बुरा सोचते हुए, अपना स्वास्थ्य और आत्मबल बढ़ाते हुए शौकत कई दिनों तक इसी कोठरी में रहा। अंत में उसने शाहजादी माहेसितारा के महल में जाकर नगाड़े पर चोट करके अपनी किस्मत आजमाने का निश्चय किया। दोपहर की नमाज़ के बाद वह

अपनी कोठरी में आया और अपनी कमान गले में लटका ली। चिलमची, टोपी और कालीन लपेटकर उसने अपनी बगल में दबा लिये और माहेसितारा के महल की ओर चल पड़ा। महल के पास पहुँचकर वह दरवाजे में धुसा। पर उस मैदान में, जहाँ पिछली बार दसियों हजार लोग जमा थे, इस वक्त उसको छोड़कर कोई न था। शाहजादा नगाड़े के पास पहुँचा और डंका उठाकर उस पर चोट करने लगा। उस समय माहेसितारा अपनी चालीस खूबसूरत सहेलियों के साथ महल में नाच-गाने और हंसी-मजाक में व्यस्त थी। माहेसितारा के पिता सोच में डूबे हुए अपने महल में लेटे हुए थे। सहसा नगाड़े की आवाज गूँज उठी।

“और कौन मरने आ पहुँचा है?” माहेसितारा ने गर्वपूर्वक हंसते हुए पूछा।

“किसी अभागे बाप का बेटा ही होगा,” बादशाह बेचैन हो उठा।

सारे महल में तहलका मच गया। अंत में माहेसितारा के महल में से एक आदमी दरवाजा खोलकर मैदान में आया। वहाँ कोई आदमी लगातार नगाड़े पर चोट किये जा रहा था।

“अरे, भई! तुम नगाड़ा क्यों बजा रहे हो?” माहेसितारा के नौकर ने पूछा।

शाहजादा बोला:

“मैं शाहजादी माहेसितारा को प्यार करता हूँ और उनसे मिलकर बात करना चाहता हूँ!”

वह नौकर महल में माहेसितारा के पास जाकर बोला:

“शाहजादी साहबा! मैदान में एक भिखारी आया हुआ है। उसकी गरदन में कमान लटकी है और काँख में पुराने कपड़ों की पोटली दबी है। वह बोला: ‘मैं शाहजादी माहेसितारा को प्यार करता हूँ और उनसे मिलकर बात करना चाहता हूँ’!”

शाहजादी माहेसितारा ने कहा:

“मुझे ऐसे लोगों से नफरत है! जाओ, अपना काम करो!”

शाहजादा नगाड़े के पास खड़ा इंतजार करता रहा। क्योंकि वह आदमी फिर बाहर आता दिखाई नहीं दिया, उसने फिर नगाड़ा बजाना शुरू कर दिया। माहेसितारा ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया, पर उसके पिता ने अपनी बेटी से प्यार करने की हिम्मत करनेवाले आदमी को लिबाने के लिए अपने एक नौकर को भेजा। नौकर बाहर साधारण कपड़े पहने हुए एक आदमी को देखकर मजाकिया ढंग से हंसा और उसे महल के अंदर ले आया।

दरवाजे में से होकर वे लोग विशाल मैदान में आये, जहाँ हर चीज संगमरमर की बनी थी। चारों ओर नक्काशी का बहुत सुंदर और बारीक काम हो रहा था। नौकर शाहजादे को सामने कुछ ऊँचाई पर बने हुए महल की ओर ले आया। उस महल के दरवाजे के दोनों ओर तगड़े और खौफनाक पहरेदार खड़े थे। दरवाजा खुला और वे एक विशाल कक्ष में धुसे। कक्ष के फर्श पर लाल कालीन बिछे थे और दीवारों पर चमकीले रंगों में शेर, चीते, बघेरे और कई उरावने अजदहे बने हुए थे। इस जगह भी खौफनाक पहरेदार खड़े थे। कक्ष के दायी ओर के दरवाजे में से नौकर शाहजादे को एक गलियारे में ले आया। इस लंबे गलियारे में भी दोनों ओर हथियारबंद पहरेदारों की कतार खड़ी थी। गलियारे के अंत में जरी का पर्दा लटका

हुआ था, जिसे उठाकर पहले नौकर अंदर घुसा और फिर इजाजत मिलने पर शाहजादे को भी अंदर ले गया। यह बादशाह का स्वागत-कक्ष था, जो बड़े शानदान ढंग से सजा था। सामने सोने के तख्त पर एक आदमी बैठा था, जिसकी दाढ़ी खिचड़ी थी। उसने शाहजादे को बैठने के लिए इशारा किया और बड़े नम्र स्वर में बोला :

“आइये, बैठिये !”

शाहजादे ने अदाज लगाया कि यह आदमी माहेसितारा का पिता ही हो सकता है, इस लिए उसे बताया गयी जगह पर नहीं बैठा। उसने पहले वहीं खड़े-खड़े आदरपूर्वक सिर झुकाया। सिर ऊँचा करके वह दो कदम आगे बढ़ा और फिर सिर झुकाया। इस तरह जब तक शाहजादा बादशाह सलाम के पास न पहुँचा, हर दो कदम बाद रुककर सात बार सिर झुकाता रहा और फिर बादशाह का हाथ चूमकर सात बार झुका और अपनी पहलीवाली जगह पर जा खड़ा हुआ। बादशाह के दुबारा कहने पर ही वह उसकी बताया हुई जगह पर जाकर बैठा। बादशाह सलाम शाहजादे की शिष्टता और विनम्रता से बहुत प्रभावित हुआ और अपने तख्त पर से उठकर उसके पास आ बैठा। उसके बाद बादशाह ने नौकरों को दस्तरखान लगाने के लिए कहा। दस्तरखान पर तरह-तरह के स्वादिष्ट खाने और पकवान परोसे गये। बादशाह नौजवान का अतिथि-सत्कार करने लगा। खाना खा चुकने और दस्तरखान हटाये जाने के बाद बादशाह ने उससे पूछा कि वह कौन है और किस लिए आया है। शाहजादे ने संक्षेप में अपना परिचय दिया और मुख्य कारण बताने से पहले बोला :

“ऐ बादशाह, अगर आप मुझे पर नाराज न हों तो मैं अपने दिल का राज आपको बताऊँ !”

बादशाह की इजाजत मिलने पर शाहजादा आगे बोला :

“सच्चा प्यार करनेवाले लोग बादशाहों को अपने दिल की बात निडर और निस्संकोच होकर बता देते हैं। अल्लाह ने आपको एक ऐसी बेटी दी है, जिसकी खूबसूरती की धूम सारी दुनिया में मची हुई है। और दुनिया के हर कोने से उसके प्यार में डूबे बहादुर नौजवान उसके साथ शादी करने की तमन्ना से यहाँ आ रहे हैं। मैं भी ऐसे ही प्रेमियों में से एक हूँ। मैं शाहजादी माहेसितारा की हर शर्त पूरी करने और आपका दामाद बनने की इच्छा रखता हूँ।”

बादशाह सलाम बोला :

“मेरे बेटे ! अल्लाह ने मुझे बेटी नहीं, एक मुसीबत दी है। तुम एक खूबसूरत नौजवान हो और मैं नहीं चाहता कि तुम भी इस मुसीबत के शिकार बनो। वह लड़की नहीं, जल्लाद है, जो प्यार-मोहब्बत के बारे में कुछ समझना भी नहीं चाहती। अगर तुम शादी ही करना चाहते हो, तो मैं माहेसितारा से भी ज्यादा सुंदर लड़की तुम्हारे लिए ढूँढ सकता हूँ। तुम्हारे लिए माहेसितारा से न मिलना ही अच्छा रहेगा !”

शाहजादा माहेसितारा के पिता के मुँह से यह बात सुनकर सोच में पड़ गया। “भला,



कोई बाप अपनी सगी बेटी के बारे में ऐसी बात कह सकता है, यह शायद मेरा इम्तिहान ले रहा है।” फिर वह बादशाह से बोला:

“सारी दुनिया शाहजादी माहेसितारा की खूबसूरती की ही नहीं, उनके दिल की भी तारीफ करती है। लगता है, आप ऐसी बातों से मेरे प्यार की आग को बुझा देना चाहते हैं!”

इस पर बादशाह ने जवाब दिया:

“नहीं, मुझे गलत मत समझो, मेरे मेहमान! अल्लाह ने उसे खूबसूरती जरूर दी है, पर उसे दिल नहीं दिया। उसे कोई भी तो पसंद नहीं आता है। दुनिया के हर कोने से बड़े-बड़े शाहजादे, राजकुमार और सेनापति उसके प्यार में पागल होकर यहाँ आ चुके हैं। उन सबको मैंने मनाने और उनका इरादा बदलने की कोशिश की, पर कोई भी नहीं माना। और वे सब माहेसितारा की शर्तें पूरी न कर पाने के कारण अपने प्राण खो बैठे। वे सब मेरे दिल पर अपनी छाप छोड़ गये हैं और मुझे अक्सर सपनों में भी दिखाई देते हैं। कुछ दिन पहले ही एक और शाहजादा भी मौत का शिकार हुआ। उसको मिलाकर दीवार पर टंगे सिरों की संख्या दो हजार तक पहुँच चुकी है। या, अल्लाह, आखिर इसका अंजाम क्या होगा! देर-सबेर अल्लाह भी इस खूबसूरती पर जरूर नाराज हो उठेगा। यह जल्लाद लड़की या तो जल्दी से जल्दी किसी से शादी कर ले, नहीं तो अच्छा होगा कि खुद ही मर जाए!”

इस तरह बादशाह ने शाहजादे को कितना ही क्यों न मनाया, पर वह अपनी बात पर अड़ा ही रहा और बोला:

“सच्चा प्यार करनेवाले के लिए मौत कोई मायने नहीं रखती है! मैं चाहे उसकी शर्तें पूरी कर सकूँ या नहीं, पर कम-से-कम मरने के पहले उसे एक नजर देख जरूर लेना चाहता हूँ। उसके बाद मैं खुशी से मरने को तैयार हूँ।”

अतः मैं जब बादशाह समझ गया कि प्रेमी उसकी कोई भी दलील मानने को तैयार नहीं है, तो उसने उसे माहेसितारा के पास ले जाने का हुक्म दिया। लेकिन लड़कियों ने आकर माहेसितारा का यह जवाब सुनाया: “मेरे पास भिखारियों से बात करने के लिए समय नहीं है!”

“मोहब्बत की गिरफ्त में पड़े बादशाह और भिखारी में कोई अंतर नहीं होता!” बादशाह ने जवाब दिया और नौजवान को माहेसितारा के पास ले जाने को कहा।

लड़कियों ने सिर झुकाकर बादशाह का हुक्म स्वीकार किया। वे शीकत को पहले एक बहुत बड़े कक्ष में से ले गयी, जिसके अंत में एक दरवाजा था। दरवाजे में से निकलकर वे एक लंबे गलियारे में घुसे, जिस में दोनों ओर हथियारबंद लड़कियाँ खड़ी थीं। गलियारे के दाये दरवाजे से होकर वे लोग एक बड़े कमरे में घुसे, जिसमें कई दरवाजे थे। लड़कियों की मुखिया इनमें से एक दरवाजे में घुसी और अंदर आने की इजाजत मिलने पर वापस आकर बोली:

“आइये, मेहमान, अंदर चलिये!”

उस समय अंधेरा होने लगा था। शाहजादा कक्ष के अंदर पहुँचा। कक्ष की दीवारों पर

बहुत ही भव्य काम हो रहा था, फर्श पर लाल रंग के कालीन बिछे थे और उन पर अतलम और ज़री के गाव-तकिये लगे हुए थे। कक्ष के बीचोंबीच कई रेशमी पर्दे लटके हुए थे और उनके पीछे से निकल रही तेज़ रोशनी से सारे कक्ष में उजाला हो रहा था। थोड़ी देर बाद पर्दों के पीछे से आवाज़ आयी।

“आपका स्वागत है, मेहमान! आइये, बैठिये!”

शाहज़ादा अत्यंत शिष्टतापूर्वक धन्यवाद देते हुए बैठ गया। इसके बाद लड़कियों ने उसके आगे दस्तरखान बिछाया और उस पर तरह-तरह के खाने परोसकर शाहज़ादे को खिलाया। दस्तरखान हटा लेने के बाद एक बार फिर पर्दों के पीछे से आवाज़ आयी। यह शाहज़ादी माहेसितारा ही थी। अब मालूम पड़ा कि कक्ष में व्याप्त तेज़ प्रकाश की किरणें उसके चेहरे से ही फूटी पड़ रही थी, जो इतनी प्रखर थीं कि अंदर घुसनेवाले किसी भी आदमी की आँखें चौंधिया सकती थीं। इसी कारण हर अंदर आनेवाले आदमी और शाहज़ादी के बीच में सात पर्दे पड़े थे। माहेसितारा बोली:

“प्यारे मेहमान, आपको तशरीफ़-आदरी का सबब क्या है?”

शाहज़ादे ने जवाब दिया:

“प्यारी माहेसितारा! क्या मैं आप ही की आवाज़ सुन रहा हूँ। मेरा सपना सच हो गया। मैं सिर्फ़ इस आवाज़ पर ही कुर्बान होने के लिए तैयार हूँ! मैं आपको प्यार करता हूँ। या तो आप मेरी हो जाइये, या फिर मेरी जान ले लीजिये!”

इस तरह का प्रणय-निवेदन सुनकर माहेसितारा बोली:

“प्यारे मेहमान, आप जवान भी हैं और खूबसूरत भी। मैं आपको सलाह दूंगी कि आप मुझसे शादी करने का ह्याल छोड़ दें, क्योंकि ऐसी इच्छा रखनेवाले हर आदमी को मेरी एक शर्त पूरी करनी होती है। अगर मेरी शर्त पूरी हुई, तो मैं शादी कर लूंगी, नहीं हुई – तो उस आदमी का सिर कटवा दूंगी। और मेरी शर्त पूरी करना बच्चों का खेल नहीं है, मुझे डर है कि आप भी यह शर्त पूरी नहीं कर पायेंगे और बेकार ही मारे जायेंगे!”

शाहज़ादा बोला:

“ऐ, मेरे दिल की मलिका, माहेसितारा! अगर मेरे एक नहीं, हजार सिर होते, तो भी मैं बड़ी खुशी से उन्हें तुम्हारे लिए कटवा देता।”

“नहीं!” माहेसितारा ने टोका। “अगर आप शादी ही करना चाहते हैं, तो मैं आपके योग्य सुन्दर लड़की ढूँढ़ सकती हूँ!”

“पर प्रेमी तो तितली नहीं होता, जो एक फूल से उड़कर दूसरे पर बैठ जाये, और अगर ऐसा हो भी, तो फिर उसका प्यार क्या प्यार कहा जा सकता है?! मुझे आपसे सच्चा प्यार है और हमेशा रहेगा।”

माहेसितारा ने शाहज़ादे का इरादा बदलवाने की कितनी ही कोशिश क्यो न की, पर वह अपने निश्चय से डिगा नहीं। अंततः माहेसितारा बोली:

“ठीक है, आज रात आप महल में ही आराम करेंगे। कल शहर के सारे लोग इकट्ठे

हो जायेंगे। आप उन सबके सामने जाकर नगाड़ा बजायेंगे और फिर आपको महल के अंदर लाया जायेगा। आपको एक रात की मोहलत दी जायेगी, अगर इस बीच आप मुझे बोलने के लिए मजबूर कर सके, तो मैं आपकी हो जाऊंगी!”

शाहजादे ने यह बात मान ली और रात को महल में रहा। दूसरे दिन नक्कारखाने में बाजे बजने की आवाज से लोगों को पता चल गया कि शाहजादी से शादी का इच्छुक एक और नौजवान आ गया है। सब लोग मैदान में इकट्ठे हो गये। थोड़ी देर बाद मैदान के बीच में फटे-पुराने कपड़े पहने एक नौजवान आता दिखाई दिया, जिसने काँख में एक गाँठ दबा रखी थी। और उन लोगो में से किसी के दिमाग में यह बात आ भी नहीं सकती थी कि यह नौजवान एक शाहजादा है। नौजवान नगाड़े के पास पहुँचा और उस पर डके से चोट की। लोग हैरत-भरी नज़रो से उस गरीब आदमी की ओर देख रहे थे। फिर उनकी आवाज़ें सुनाई देने लगीं।

“क्या माहेसितारा ऐसे दीवाने से शादी करेगी?” एक आदमी बोला।

दूसरे ने हाँ में हाँ मिलायी, “माहेसितारा इस दीवाने को अपने पास भी नहीं फटकने देगी, इसे भगा देगी।”

एक आदमी, जो शायद कुछ सूक्ष्मदर्शी था, बोला:

“यह दीवाने के भेष में कोई सच्चा प्रेमी है।”

एक और आदमी सहानुभूतिपूर्ण स्वर में कह उठा:

“हाय कितना कमसिन है, पर बेकार ही अपनी जान गवा रहा है...”

दरवाज़ा खुला, उसमें से लड़कियाँ भागकर बाहर आयीं और शाहजादे को घेरकर महल के अंदर ले गयीं। लोगों से कहा गया कि वे दूसरे दिन सुबह आयें और सब लोग अपने-अपने घर लौट गये। शाहजादा पहले बादशाह सलाम के सामने रुका और उसे सिर झुकाकर सलाम किया, इसके बाद उसे माहेसितारा के पास ले जाया गया। शाहजादा अपनी कलवाली जगह पर पहुँचकर बैठ गया। सुंदरी माहेसितारा पर्दों के पीछे बैठी थी और शाहजादे को दिखाई नहीं दे रही थी। उसने शाहजादे का बहुत ही विनम्र और प्रेमपूर्ण शब्दों से स्वागत किया। शाहजादी की मीठी-मीठी बातें सुनते हुए शाहजादे को पता भी न चला कि समय कैसे बीता जा रहा है। आधी रात हो गयी।

“मेरी शर्त पूरी करने को तैयार रहिये, मैं मुँह बंद करती हूँ और आप मेरा मुँह खुलवाने को मजबूर कीजिये,” शाहजादी ने कहा और चुप होकर लेट गयी। शाहजादे ने माहेसितारा का मुँह खुलवाने के लिए उससे तरह-तरह के सवाल पूछने शुरू किये, पर वह तो जैसे सुन ही नहीं रही थी। शाहजादे ने रोचक कहानियाँ सुनानी शुरू की पर शाहजादी के चेहरे पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। इसके बाद वह चटपटे चुटकुले सुनाने लगा, अगर कोई और होता, तो हसते-हंसते उसके पेट में बल पड़ गये होते, पर शाहजादी की तो भौंहे भी न फड़की। शाहजादे ने क्या-क्या न किया – बाज़ीगरी के खेल दिखाये, मसखरे की तरह मुँह बनाया और अंत में नाचा और गाया भी। पर शाहजादी माहेसितारा चुप लेटी रही।

“कहीं यह सो तो नहीं गयी?” शाहजादे ने मन में सोचा और ध्यान से सुनने लगा।

कुछ सुनाई नहीं दे रहा था। मालूम पड़ा कि वह सोयी नहीं है।

“ ठीक है, अगर तुम सो नहीं रही हो, सिर्फ सोने का बहाना कर रही हो, तो मैं भी कम नहीं हूँ,” शाहजादे ने मन-ही-मन कहा और पैर फैलाकर लेट गया। थोड़ी देर बाद माहेसितारा उठी और पर्दा हटाकर चुपके से भाँकी — शाहजादा आँखें बंद किये लेटा और उसकी सास समान गति से चल रही थी।

“ बेचारा, यो ही डींग मार रहा था ! यह तेरे बस का काम नहीं है, कल तुझे मरना ही पड़ेगा और तेरा कटा सिर दीवार की शोभा बढ़ायेगा !” शाहजादी ने सोचा। शाहजादे ने आँखों को थोड़ा-सा खोलकर शाहजादी की ओर देखा ... हाय, वह इतनी सुंदर और आकर्षक थी, बिल्कुल परियो जैसी, कि शाहजादा बड़ी मुश्किल से बेहोश होते-होते बचा। इस बीच माहेसितारा ने पर्दा गिरा दिया और सामनेवाले दरवाजे में से होकर दूसरे कमरे में चली गयी। उसके जाते ही कक्ष में अंधेरा छा गया। पहले तो शाहजादा हैरत में पड़ गया, पर एक क्षण बाद ही उसने होश सभाला और उठ खड़ा हुआ। उसने जादूई टोपी पहन ली और बाक़ी चीज़ें काँख में दबाकर, पर्दा हटाकर उसी दरवाजे में घुस गया, जिसमें से होकर माहेसितारा गयी थी। पूनम के चाँद-सा प्रकाश फैलाते हुए जहाँ-जहाँ माहेसितारा गयी — शाहजादा भी बड़ी आसानी से उसके पीछे-पीछे चलता रहा। अंत में वह एक कक्ष में पहुँचा जिसकी दीवारों पर तरह-तरह के अस्त्र-शस्त्र टंगे हुए थे। माहेसितारा ने यहाँ अपने ऊपरी कपड़े उतारकर योद्धा के कपड़े पहने और काँटेदार कमंद लेकर बाहर निकल गयी। उसके पीछे-पीछे शाहजादा भी परछाई की तरह चल रहा था। थोड़ी देर बाद उसने अपने को एक बहुत बड़े बारा में पाया। माहेसितारा पेड़ों के बीच में से होती हुई बारा की ऊंची दीवार के पास पहुँची। कमंद दीवार पर फेंककर वह उसे पार कर गयी।

शाहजादे ने अपना जादूई कालीन खोला और पलक झपकते ही दीवार पार कर गया। उसने देखा कि माहेसितारा पवन गति से उड़ती जा रही है, उसका एक कदम सौ मील के बराबर था। इस तरह वह लगभग एक घंटे तक उड़ती रही। इसके बाद उसने बड़ी तेज़ी से किसी अहाते की दीवार फाँदी। शाहजादा भी उड़कर दीवार पार कर गया और उसने कालीन को लपेटकर फ़ौरन काँख में दबा लिया। जिस ओर माहेसितारा गयी थी, वहाँ एक घर में दीया टिमटिमाता हुआ नज़र आ रहा था। शाहजादा दूसरों के लिए अदृश्य था, इस लिए वह बड़ी आसानी से माहेसितारा का पीछा करता रहा। माहेसितारा दरवाज़ा खोलकर अंदर घुसी। कोई बुढ़िया बोली :

‘ अच्छा, तुम आ गयी, मेरी बेटी माहेसितारा, तुम्हारी सहेलियाँ इंतज़ार करते-करते तग आ चुकी हैं। ’

माहेसितारा ने बुढ़िया को सलाम किया और कपड़े बंदलकर सिगार करने के बाद भीतरी कक्ष में गयी, जो बहुत ही कीमती चीज़ों से सजा था। इस कक्ष में पूनम के चाँद-सी सुंदर दो लड़कियाँ बैठी थीं। उन दोनों ने माहेसितारा के पास पहुँचकर उसका अभिवादन किया। उनमें से एक ने उलाहना देते हुए कहा :



“बता, सहेली, आज इतनी देर से क्यों आयी?”

माहेसितारा मुस्कराकर बोली:

“सुनो, सहेलियो, मेरे पास महल में एक दीवाना आया और कहने लगा ‘मैं तुम्हें बेहद प्यार करता हूँ!’ कल से वह मेरा सिर खपा रहा है। उसे सुलाकर मैं तुम्हारे पास आयी हूँ। कल उसका सिर काट दिया जायेगा। तुम भी कल आकर नज़ारा देखना।”

“बेचारा!” एक लड़की कह उठी और हंसने लगी। बुढ़िया इस बीच पूछ बैठी

“पुलाव तैयार है, परोसूँ क्या?”

“हाँ, जल्दी से, नहीं तो हमें वैसे ही देर हो रही है!” एक लड़की बोली।

बुढ़िया पानी लेकर आयी और उसने सब लड़कियों के हाथ धुलाये, इसके बाद वह एक बड़ी तश्तरी में घी में तर पुलाव, जिसमें ढेर सारा माँस डाला हुआ था, लेकर आयी। बुढ़िया भी दस्तरखान के सामने बैठ गयी और उसके बाद उनके लिए अदृश्य शाहजादा भी बैठ गया। सब पुलाव खाने लगे। शाहजादा उत्तेजित और खुश था। वह मन-ही-मन सोच रहा था, मानो वह अपनी पत्नी के साथ बैठा खाना खा रहा है। शायद इसीलिए वह पुलाव पर दूट पड़ा। हर गस्सा, उसकी उंगलियाँ छूते ही, अदृश्य हो जाता था। पुलाव इतनी तेजी से खत्म होने पर एक लड़की बोल उठी:

“माँ, पता नहीं क्यों, हमारा पेट ही नहीं भरा, क्या आज तुमने पुलाव कम बनाया था?”

“नहीं, बेटा! मैंने आज उतने ही चावल चढ़ाये थे, जितने रोज पकाती हूँ। वैसे पेट तो मेरा भी नहीं भरा। शायद तुम बहुत ज्यादा भूखी थीं, इस लिए पुलाव पर उस दीवाने की तरह दूट पड़ी थीं, जिसने तीन दिन से कुछ न खाया हो!”

लड़कियाँ खिलखिलाकर हंस पड़ीं। बुढ़िया ने दस्तरखान हटाया और चाय लेकर आयी। अभी सब एक-एक प्याली चाय पी भी न पायी कि माहेसितारा बोल उठी:

“हमें फ़ौरन चलना चाहिए, हमारी मलिका इंतज़ार करते-करते ऊब गयी होगी!”

सब लड़कियाँ उठकर बाहर निकलीं और एक स्वर्ण खटोले पर बैठ गयीं। उनमें से एक ने चक्का घुमाया और खटोला धीरे-धीरे उठने लगा और फिर बहुत तेजी से आसमान में उड़ चला। शाहजादी का पीछा करते-करते शाहजादा अब हर बात का आदी हो चुका था। उसने भी फ़ौरन अपना कालीन खोला ओर उसपर बैठकर उड़ते हुए लड़कियों का पीछा करने लगा। थोड़ी देर बाद लड़कियों का उड़न-खटोला नीचे उतरने लगा और शाहजादा भी उनके पीछे-पीछे नीचे उतरने लगा। उत्सुकतावश उसने नीचे झाँककर देखा तो उसे एक जगह काफ़ी तेज रोशनी दिखाई दी। लड़कियों ने अपना उड़न-खटोला उधर घुमाया और वहाँ पहुँचकर उतर गयीं। शाहजादा भी उसी जगह उतरा। शाहजादे ने चारों ओर नज़र घुमाकर देखा और अपने को एक बहुत बड़े बाग़ में पाया, रोशनी भी वहीं से आती दिखाई दे रही थी। लड़कियाँ उड़न-खटोला वहीं छोड़कर तेज कदमों से बाग़ के अंदर घुस गयीं। शाहजादे ने अपना कालीन लपेटकर काँख में दबाया और जादूई टोपी की वजह से किसी को दिखाई दिये बग़ैर

लड़कियों के पीछे चल पड़ा। इस बाग की खूबसूरती में संगमरमर की इमारतें, जिनके गुब्बे और कगूरे सोने से मढ़े थे, चार चाँद लगा रही थीं। बाग में से कई दिशाओं में रास्ते जा रहे थे। बाग के बीच में दो नहरें थीं, जिनमें से एक में दूध-सा सफ़ेद पानी एक दिशा में बह रहा था और दूसरी में उसकी विपरीत दिशा में हर पचास कदमों की दूरी पर संगमरमर के खंभे खड़े थे, जिनके ऊपरी सिरे पर मोतियों जैसा प्रकाश चारों ओर फैल रहा था। लगता था सारा बाग बहुत तेज़ रोशनी से दमक रहा है। नहरों के किनारे-किनारे तरह-तरह के सुंदर फूल खिले हुए थे और उन पर बैठी बुलबुलें और तरह-तरह की सुंदर चिड़ियाएँ गा-चहक रही थीं। उस बाग की खूबसूरती में अत्यंत विलक्षण पेड़ भी चार चाँद लगा रहे थे। बाग के रास्ते पर चलते-चलते लड़कियाँ एक खुले मैदान में पहुँचीं। वहाँ फ़र्श अत्यंत सुंदर संगमरमर का था, चारों ओर सोने की कुर्सियाँ पड़ी थीं और एक ओर सोने का सिंहासन था। कुछ क्षण बाद सहसा सुंदरियों का एक झुंड पेड़ों के पीछे से निकला और वे सब कुर्सियों पर जा बैठीं। उनमें से जो सबसे सुंदर थी वह सोने के सिंहासन पर जा बैठी।

“अरे, माहेसितारा भी अपनी सहेलियों के साथ यहाँ आयी है!” एक लड़की कह उठी।

लड़कियों ने पहले बहुत नीचे सिर झुकाकर सोने के सिंहासन पर बैठी मलिका का अभिवादन किया और इसके बाद चारों ओर बैठी सुंदरियों का। मलिका और लड़कियाँ भी थोड़ी देर चुप रही, उसके बाद मलिका ने पूछा:

“प्यारी बहन माहेसितारा, आज तुम्हें देर कैसे हुई? आज तुमने हमें बहुत इंतज़ार कराया ...”

माहेसितारा बोली:

“यह सच है, कि हम लोग देर से पहुँचे, पर अगर आप इजाज़त दें, तो मैं बजह बताऊँ। एक दीवाना मेरे प्यार में पागल हो गया है। कहता है: ‘मैं तुम्हें बेहद प्यार करता हूँ, तुम्हारे बिना मैं मर जाऊँगा!’ मुझे उसे सुलाने के लिए चाल चलनी पड़ी। कल आप उसकी मौत का नज़ारा देख सकती हैं।”

मलिका उत्तर से संतुष्ट होकर मुस्करा दी। इसके बाद माहेसितारा और उसकी खूबसूरत सहेलियाँ भी सोने की कुर्सियों पर बैठ गयीं। लड़कियाँ आपस में हंसी-मजाक करती गपशप करने लगीं। थोड़ी देर बाद मलिका की इजाज़त से उन्होंने नाचने का खेल खेलना शुरू किया। यह बाग परियों के इस देश के बादशाह की सुंदर बेटी बादिया का था और यहाँ सिर्फ परियाँ रहती थीं। काली-काली आँखों और बादाम-सी पलकोंवाली जो सुंदरी सोने के सिंहासन पर बैठी थी, वही बादिया परी थी।

लड़कियों के एक दल ने तरह-तरह के वाद्यों पर मधुर धुन छोड़ी और सब आनन्द से सुनने लगीं। संगीत के बाद लड़कियों ने गाने गाये और नाचीं। उसके बाद कुछ देर का मध्यांतर हुआ। दो-दो, तीन-तीन करके लड़कियाँ बाग में घूमने निकलीं। केवल माहेसितारा ने ही घूमने जाने से इनकार कर दिया।

“सहेलियो! मैं बहुत थक गयी हूँ, थोड़ी देर सुस्ताना चाहती हूँ। तुम लोग बाग में

“हलो, उतनी देर मैं पलंग पर हो लूंगी!” यह कहकर माहेसितारा बाग से चल दी। अपने पलंग के पास पहुँचकर वह उस पर लेट गयी। शाहजादा भी वहाँ पहुँच गया। वह जादूई चिलमची में पानी भरकर लाया और उसमें देखते हुए बोला:

“मेरी रूह माहेसितारा के बदन में चली जाये और उसकी रूह मेरे बदन में आ जाये।” उसने जो कहा, वही हुआ। शाहजादा माहेसितारा का रूप धारण करके बाग में वापस पहुँच गया। इस समय तक मध्यांतर समाप्त हो चुका था और सब लड़कियाँ वहाँ इकट्ठी हो गयी थी। माहेसितारा रूपी शाहजादा उसकी कुर्सी पर बैठ गया। फिर से नाच-गाना शुरू हुआ।

“अच्छा, अब माहेसितारा नाचेगी!” एक लड़की बोली। सबने तालियाँ बजायीं। माहेसितारा रूपी शाहजादा बहुत सुंदर ढंग से नाचने लगा। लड़कियों में से किसी ने भी इससे पहले अपने देश में इतना सुंदर और आकर्षक नाच नहीं देखा था। जब नाच खत्म हुआ, तो सब देर तक तालियाँ बजाती रहीं। इसके बाद कोई बोल उठी:

“अच्छा, अब माहेसितारा एक गाना भी सुनायेगी!”

“माहेसितारा” ने फौरन आगे निकलकर गाना शुरू कर दिया। और उसने गाना भी इतनी सुंदर और आकर्षक आवाज़ में गाया कि लड़कियाँ सब कुछ भूलकर उसका गाना सुनती रही। सब संगीत की लहर में डूब गये। लड़कियाँ खुशी से तालियाँ पीटते हुए “माहेसितारा” से बार-बार गाने का अनुरोध करने लगीं। अंत में मलिका ने “माहेसितारा” को अपने पास बुलाया और बोली:

“माहेसितारा, तुम इतना सुंदर नाचती और गाती हो, तुम्हारी आवाज़ इतनी मधुर और आकर्षक है और तुम अभी तक चुप रहती थीं, अपनी प्रतिभा हमसे छिपाये हुए थीं। मैं तुम्हारे नाच और गानों से इतनी खुश हूँ कि तुम्हें इसी वक्त सिर से पैर तक सोने से ढक देना चाहती हूँ। पर, अफसोस, मेरा खजाना यहाँ से दूर है। मेरी प्यारी बहन, फिर भी मैं तुम्हें कुछ इनाम देना चाहती हूँ। लो यह नयी पोशाक, जो मैंने आज ही सिलवायी है, मैं, इसे तुम्हें इनाम में देती हूँ।”

यह कहकर मलिका ने अपनी बेशकीमती पोशाक “माहेसितारा” को पहना दी और उसके माथे को चूम लिया। सब मलिका की उदारता से बड़े प्रभावित हुई और ताली बजा उठी। उसके बाद फिर मध्यांतर हुआ। शाहजादा जल्दी से बाग में से निकलकर पलंग के पास पहुँचा और चिलमची में पानी भरकर बोला:

“मेरी रूह मेरे बदन में आ जाये और माहेसितारा की रूह माहेसितारा के बदन में और वह जाग उठे!” शाहजादा अभी अपने सिर पर जादूई टोपी रखकर अदृश्य हुआ ही था कि उसकी कही हुई बात पूरी हो गयी। माहेसितारा उसी क्षण उठ खड़ी हुई।

“अरे, यह क्या हुआ! मैं इतनी देर तक सोती रही, जल्दी से भागना चाहिए।” उसके मुह से निकला और वह उठकर बाग की ओर भागी। मालूम पड़ा, बाग में अभी तक मध्यांतर चल रहा है और सब लड़कियाँ बाग में घूम रही हैं। यह देखकर माहेसितारा बहुत खुश हुई।

“बहुत अच्छा हुआ, मुझे देर नहीं हुई,” उसने मन में सोचा और मध्यांतर के बाद

सब लड़कियों के साथ अपनी जगह पर जाकर बैठ गयी। मनोरंजन कार्यक्रम शुरू होने के पहले एक लड़की बोल उठी :

“ माहेसितारा अब एक नाच और दिखाओ ! ” फौरन सब तालियाँ बजाने लगी। माहेसितारा कहने ही वाली थी कि उसे नाचना नहीं आता कि मलिका उसे मनाते हुए बड़े प्यारभरे स्वर में बोली :

“ इसका मतलब है, बहन, तुम्हें नाचना नहीं आता था, तब तो तुमने हमें ऐसा नाच दिखाया, अब नाचकर दिखाओ कि वास्तव में तुम कैसा नाच सकती हो ! खूब मजा आयेगा ! ”

माहेसितारा को उठकर आगे आना और नाचना पड़ा, पर इस बार किसी कारण से उसके नाच में कोई आकर्षण नहीं दिखाई दिया, इसके अलावा वह भौंड़ा भी लग रहा था। तब लड़कियाँ कहने लगी :

“ अच्छा तुम अब नाचना छोड़ो और गाना सुनाओ ! ”

माहेसितारा ने गाना शुरू किया, तो उसकी आवाज फटने लगी, इसमें कोई सदेह नहीं रहा कि उसका गाना भी किसी को पसंद नहीं आया। मलिका सदाशयता दिखाते हुए बोली :

“ प्यारी बहन, माहेसितारा ! अभी थोड़ी देर पहले तो तुमने इतना सुंदर नाच दिखाया और इतना सुंदर गाया था ! लगता है मध्यांतर के दौरान घूमते समय तुम्हें ठंड लग गयी है, तुम्हारा गला भी बैठ गया हुआ लग रहा है। पता नहीं इस बार तुम्हारा नाच भी अच्छा नहीं रहा .. ”

माहेसितारा आश्चर्यचकित रह गयी और बोली :

“ दीदी, मैं खुद नहीं जानती कि यह क्या हो रहा है । ”

इसके बाद दूसरी लड़कियों ने गाया और नाच दिखाया। जब रात समाप्त होनेवाली थी और हर तरफ से चिड़ियों के चहचहाने की आवाजें आने लगीं, तो सब लड़कियों को अपने-अपने घर लौटने की इजाजत मिली। माहेसितारा तथा उसकी दोनों सहेलियाँ और लड़कियों से विदा लेकर बाग से बाहर निकलीं। वे तीनों अपने उड़न-खटोले पर बैठीं और उड़ चलीं। उनके पीछे शाहजादा भी अपने जादूई कालीन पर उड़ने लगा। लड़कियाँ बुढ़िया के घर पहुँचीं और उड़न-खटोला वहीं छोड़ बुढ़िया से विदा लेकर अपने-अपने घर खाना हो गयीं। शाहजादा फिर माहेसितारा का पीछा करने लगा। वे दोनों अब महल के नजदीक पहुँच रहे थे।

शाहजादा माहेसितारा से पहले महल में घुस गया और अपनी जगह पर जाकर लेट गया और जैसे गहरी नींद सो रहा हो, खरटे भरने लगा। माहेसितारा ने एक कमरे में जाकर मर्दाने कपड़े उतारकर घर के कपड़े पहन लिये। उसने देखा नौजवान गहरी नींद में सो रहा है। वह काफी देर तक उसको अफसोसभरी नज़रों से देखती रही।

“ आह ! मेरे अभागे दीवाने प्रेमी ! तू कितना भोला और लाचार है, मुझे तुझ पर तरस आता है ! तुझे अपने सिर कटवानेवालों के साथ होड़ नहीं करनी चाहिए थी। कल तू भी मारा जायेगा ! ” माहेसितारा ने कहा और जाकर अपने बिस्तर में लेट गयी।

थोड़ी देर बाद शाहजादे ने आँखें खोलीं, अंगड़ाई ली और गहरी साँस खींचकर छीका



जैसे उसकी नींद अभी-अभी खुली हो। इसके बाद वह उठ खड़ा हुआ और अपनी प्रियतमा की ओर देखकर कहने लगा। माहेसितारा को अभी नींद नहीं आयी थी और वह मन-ही-मन अभागे प्रेमी पर हस रही थी, उसका इरादा बाद में उसकी खूब हंसी उड़ाने का था। इस बीच शाहजादा बोला :

“ऐ, मेरी जिंदगी, मेरी प्यारी, मेरी खूबसूरत माहेसितारा ! मैंने कितना आश्चर्यजनक सपना देखा।” और उसने अभी-अभी माहेसितारा के साथ हुई सारी बातों के बारे में विस्तार-पूर्वक सुनाना शुरू कर दिया ...

माहेसितारा शाहजादे के सपने का किस्सा सुनकर समझ गयी कि इस बार उसका पाला एक ऐसे आदमी से पड़ा है, जो दूरदर्शी है और पहले से ही उसके विचारों का पता लगाकर उनके बारे में बताने और उसके साथ प्रतिद्वंद्विता करने की क्षमता रखता है। ऐसे आदमी को धोखा देना और सजा देने का खयाल भी मन में लाना उसके स्वयं के लिए खतरनाक हो सकता है। इस लिए वह पर्दा हटाकर शाहजादे के पास आयी और बोली :

“ऐ, मेरे खूबसूरत बहादुर नौजवान, तुम्हारी आवाज में अजीब आकर्षण और मिठास है ! बहुत-से खूबसूरत नौजवान मेरे प्यार में पागल होकर मेरे पास अपने सिर कटाने आये और मैं अपनी सुंदरता के कारण खूनी शाहजादी के नाम से मशहूर हो गयी। अपने सारे प्रेमियों को मैंने अपनी खूबसूरती पर हमला करनेवाला समझा और उन सबके सिर कटवा दिये। इस महल में कदम रखनेवालों में से कोई भी मेरी शर्त पूरी न कर सका और कोई भी यहाँ से जिंदा वापस नहीं गया। तुम भी प्रेमी हो। पर अगर मैं खूबसूरती की शाहजादी हूँ, तो तुम प्रेमियों के बादशाह हो और हमारे बीच हुए मुकाबले में जीत प्रेमियों के बादशाह की हुई ... ऐ मेरे बादशाह, मेरे बहादुर प्रेमी, तुमने मेरा दिल जीत लिया !”

शाहजादी और शौकन प्रगाढ़ आलिंगन में बद्ध हो गये।

इस तरह शाहजादे ने माहेसितारा की शर्त पूरी करके अपना सपना सच्चा कर लिया। आकाँक्षाओं की कलियाँ खिलकर फूल बन गयी और उनका अभिनंदन करते हुए बुलबुलें, तोते और फाल्ताएं गा उठीं। माहेसितारा अपने सोने के पलंग पर सो रही थी, पर अकेली नहीं।

हमेशा जब भी कोई प्रेमी सुंदरी माहेसितारा की शर्तें सुनकर उन्हें पूरा करने की कोशिश करता था तो सारे शहर और महल के लोगो के दिल दहल उठते थे। सब अपने मन में दर्द छिपाये प्रेमी की किस्मत के फैसले का इंतजार करते रहते थे। इस बार भी ऐसा ही हुआ। जैसे ही शाहजादा शौकत महल के अंदर घुसा, लोग घबरा उठे।

“बेचारा, पता नहीं कल तुम्ह पर क्या बीतेगी !” यह बात उन हजारों लोगो के मुह से बरबस निकल गयी, जो अपनी नींद और चैन खो बैठे थे। सबसे ज्यादा दुःख महल के नौकरों को हो रहा था, जो कटे सिर देखते-देखते उकता चुके थे और सहानुभूति के साथ शाहजादे की जीत की दुआ माँग रहे थे। दिन निकला। जल्ताद भी जाग चुका था। वह बड़ी शान से टहल रहा था और बार-बार खून में सनी तलवार निकालकर बड़े मजे से उसकी

धार तेज करके म्यान में डाल लेता था। यह धिनौने चेहरेवाला जल्लाद बड़ी उत्सुकता से सुबह होने का इंतजार कर रहा था और उसे यह सोचकर बड़ा आनंद आ रहा था कि वह डरे हुए शिकार की गर्दन कैसे काटेगा।

महल के सामने का चौक लोगों से भर गया था। माहेसितारा के प्रेमी का महल से बाहर निकलने का समय हो गया, पर वह अभी तक दिखाई नहीं दे रहा था। लोग आपस में काना-फूसी करने लगे:

“अगर उस नौजवान ने शाहजादी माहेसितारा की शर्तें पूरी कर दी होती, तो वह अब तक जीत की खुशी में चिल्लाता हुआ बाहर आ गया होता। यानी वह शर्तें पूरी नहीं कर सका है और अंतिम क्षणों में उन्हें पूरी करने की कोशिश कर रहा है। पर वह शायद ही ऐसा कर पाये। इसका मतलब है कि आज उसका कटा सिर भी दीवार पर ठोक दिया जायेगा।”

सब बुरे अजाम का ही इंतजार कर रहे थे। आंगन में काम करनेवाली लड़कियाँ रोने लगी थी, उन्हें लग रहा था कि कुछ ही क्षणों में शाहजादे का कटा हुआ सिर उन्हें दिखाई पड़नेवाला है... पर अभी तक ऐसा कुछ भी नहीं हुआ था। इस अजीब बात की सूचना लड़कियों ने बादशाह को दी, वह भी हैरत में पड़ गया। कुछ समय और बीता, पर न शाहजादा दिखाई दिया और न ही उसका कटा सिर जल्लाद भी खड़ा-खड़ा उकता चुका था। उसका दिल जोर से धड़कने लगा, आँखों में खून उतर आया और वह खूंखार जानवर की तरह अपने शिकार पर झपटने के लिए दाँत पीसने लगा। लोगों ने शाहजादे को ज़िंदा बाहर निकलते देखने की उम्मीद छोड़ दी थी, वे यही सोच रहे थे कि अभी नहीं तो थोड़ी देर बाद जल्लाद कटा सिर लेकर बाहर निकलनेवाला है। समय बीतता जा रहा था, न शाहजादे की कोई खबर थी और न ही माहेसितारा की। बादशाह वास्तव में घबरा उठा। अंत में वह धैर्य खो बैठा और उसने लड़कियों को माहेसितारा के कक्ष में, उसकी इजाजत के बिना ही, जाकर पता लगाने का हुक्म दिया कि वहाँ क्या हो रहा है। ऐसा ही किया गया। लड़कियाँ धीरे-से दरवाज़ा खोलकर माहेसितारा के कक्ष में घुसीं। नौजवान अपनी जगह पर नहीं था। उन्होंने जल्दी से पर्दा हटाकर देखा, तो शाहजादे और माहेसितारा को एक दूसरे की बाँहों में लिपटे पाया।

“शाहजादी माहेसितारा के प्रेमी ने उसकी शर्तें पूरी कर दी!” सब लड़कियाँ खुशी से चिल्ला उठीं। एक लड़की फौरन भागकर बादशाह सलाम के पास पहुँची और उसे यह खुश-खबरी दी। बादशाह की प्रसन्नता की सीमा न रही, उसने फौरन अपने खज्वांची को बुलवाकर उस लड़की को सिर से पैर तक सोने से ढकने का हुक्म दिया। तुरंत महल में और फिर सारे शहर में शहनाइयाँ बज उठीं, लोग खुशी से पागल हो उठे। खुशी की यह लहर महल के चौक से शुरू हुई, जहाँ लोग शाहजादे की किस्मत के फ़ैसले का इंतजार कर रहे थे। शहनाइयों और बाजों की आवाज़ सुनकर वे दंग रह गये, पर थोड़ी देर बाद ही कारण समझ में आने पर सच्चे दिल से खुशी मनाने लगे। सब शाहजादे शौकत और शाहजादी माहेसितारा की तारीफ़ करते हुए अपने-अपने घर लौट गये। सिर्फ़ अकेले जल्लाद को ही इस खुशखबरी से खुशी नहीं

हुई। शहनाइयो और बाजों की आवाजों से माहेसितारा और शौकत की नींद खुल गयी। बादशाह सलाम ने सबसे पहले नवविवाहितों को बधाई दी, बेशक्रीमती कपड़े शाहजादे को पहनाये और उसके बाद अपने देश के सारे लोगों को माहेसितारा और शौकत की शादी की खुशी में चालीस दिन की दावत दी, खजाना खोलकर अपना सारा सोना-चाँदी प्रजा में बाँटना शुरू कर दिया।

पति-पत्नी के रूप में शौकत और माहेसितारा का जीवन सुख-चैन से बीता।

## पिता की अंतिम इच्छा



एक आदमी के तीन बेटे थे। जब उसका अंतिम समय निकट आया, तो उसने बड़े बेटे को बुलाया और बोला:

“बेटा, मेरे मरने के बाद क्या तुम तीन रात मेरी कब्र के पास गुजार सकते हो?”

“नहीं, मैं कब्र के पास नहीं सो सकता,” बड़े बेटे ने जवाब दिया।

उस आदमी ने अपने मंझले बेटे को बुलाकर यही सवाल किया, पर उसने भी ऐसा करने से इकार कर दिया। तब उस आदमी ने सबसे छोटे बेटे को बुलाकर पूछा:

“बेटा, क्या तुम मेरे मरने के बाद तीन रात मेरी कब्र के पास सो सकते हो?”

छोटा बेटा बोला:

“पिता जी, अगर आप चाहें, तो मैं तीन नहीं सौ रातें आपकी कब्र के पास गुजार सकता हूँ।”

अपने बेटे के ये शब्द सुनकर पिता ने शांति से आँखें मूंद ली और यह ससार छोड़ दिया। पिता को दफनाने के बाद छोटा बेटा शोक मनाता हुआ कब्र के पास ही बैठा रहा। आधी रात बीते वहाँ एक सफेद घोड़ा आसमान से उतरकर आया। घोड़े पर पूरा साज था और सब तरह के हथियार उस पर बंधे थे। घोड़े ने सरपट दौड़ते हुए कब्र के तीन चक्कर लगाये। छोटे बेटे की नींद खुल गयी। वह घोड़े को पकड़कर पूछने लगा:

“तुमने सरपट दौड़ते हुए मेरे पिता की कब्र के तीन चक्कर क्यों लगाये?”

“मैं कभी तुम्हारे पिता का वफादार घोड़ा था और इस समय तुम्हारे पिता को श्रद्धाजलि अर्पित करने के लिए आसमान से उतरकर आया हूँ,” घोड़े ने जवाब दिया और वहाँ से वापस आसमान में गायब होने से पहले उसने अपनी अयाल के कुछ बाल अपने दातो से तोड़कर लड्डके को दे दिये।

“अगर तुम्हारे ऊपर कोई मुसीबत आये, तो तुम मेरा एक बाल जलाना और मैं फौरन तुम्हारे पास आ जाऊँगा,” घोड़ा जाते-जाते बोला। दूसरी रात भी छोटा बेटा अपने पिता की कब्र के पास बैठा रहा। ठीक आधी रात के समय तक काला घोड़ा आसमान से उतरा और उसने भी सरपट दौड़ते हुए कब्र के तीन चक्कर लगाये। लड़के ने काले घोड़े को पकड़कर पूछा :

“तुम आसमान से क्यों उतरे और तुमने मेरे पिता की कब्र के तीन चक्कर क्यों लगाये?”

“मैं कभी तुम्हारे पिता का बफ़ादार घोड़ा था और मुझ पर सवारी करने में उन्हें बड़ा मज़ा आता था। उनके मरने के बाद मैं आसमान से अपना फ़र्ज पूरा करने के लिए उतरा हूँ, तुम भी मुझे याद रखना,” घोड़े ने कहा और अपनी लंबी अयाल के कुछ बाल अपने दांतों से तोड़कर लड़के को दिये और जाते-जाते बोला :

“अगर तुम पर कोई मुसीबत आये, तो मेरा एक बाल जलाना, उसी क्षण मैं तुम्हारे पास पहुँच जाऊँगा।”

छोटा लड़का तीसरी रात भी पिता की कब्र के पास बैठा रहा। ठीक आधी रात के समय एक लाखी रंग का घोड़ा, जिस पर पूरा साज और हथियार थे, आसमान से उतरकर आया और सरपट दौड़ते हुए उसके पिता की कब्र के तीन चक्कर लगा गया। लड़के ने घोड़े से पूछा :

“तुमने क्यों सरपट दौड़ते हुए मेरे पिता की कब्र के तीन चक्कर लगाये?”

“मैं तुम्हारे पिता की सेवा कर चुका हूँ। जहाँ भी वे जाना चाहते थे, उन्हें फ़ौरन वहाँ पहुँचाने के लिए मैं हमेशा तैयार रहता था। अब वे इस दुनिया में नहीं रहे, इस लिए मैं अपना आखिरी फ़र्ज पूरा करने के लिए आसमान से उतरकर आया हूँ,” यह कहकर घोड़े ने अपनी अयाल के कुछ बाल अपने दांतों से तोड़कर लड़के को दिये और गायब हो गया।

लड़का चौथी रात भी अपने पिता की कब्र के पास बैठा रहा। पर उस रात कोई नहीं आया। अपने पिता की अंतिम इच्छा का असली मतलब समझकर छोटा लड़का कब्र के पास से उठकर घर आ गया। पिता जो कुछ छोड़ गये थे, उसे तीनों भाइयों ने आपस में बाँट लिया। पर यह सब ज्यादा दिन न चला, इसलिए तीनों चरवाहे का काम करने लगे। छोटा बेटा ईमानदारी से अपना काम करता था, पर उसके दोनों बड़े भाई अक्सर दूसरों के जानवर बेच देते थे, पैसा खा-पी जाते थे, या उन्हें काटकर खा जाते थे। अंत में जब लोगों को गुस्सा आया तो उन्होंने तीनों भाइयों को अपने गांव से निकाल दिया। तीनों भाई वहाँ से निकलकर दूसरे गांव में चरवाहे का काम करने लगे। एक बार छोटा भाई ढोर चरा रहा था, तो बाकी दोनों भाई घूमने के लिए शहर चले गये। उन्होंने शहर में एक अत्यंत आकर्षक और दिलचस्प बात देखी। वहाँ के बादशाह के हुक्म से शहर की सबसे बड़ी मेहराब के सहारे एक चालीस सीढ़ियोंवाली चौड़ी नसीनी लगा दी गयी और उसकी सबसे ऊपरी सीढ़ी के पास बादशाह की बेटी के बैठने के लिए तबू तान दिया गया और सारे शहर में यह एलान करवा दिया गया :

“जो कोई घोड़े, गधे या ऊंट पर बैठकर इस नसीनी की सबसे ऊपरी सीढ़ी तक चढ़ जायेगा और शाहजादी के हाथ से पानी का प्याला पीकर, उसकी अगूठी लेकर नीचे उतर



आयेगा, उसके साथ शाहजादी की शादी कर दी जायेगी। बादशाह सलामत इस बहादुरी के कारनामे और शादी की खुशी में चालीस दिन की दावत देंगे।”

यह खबर बिजली की तरह सारे देश में फैल गयी। हजारों लोग अपने-अपने घोड़ों, ऊंटों और गधों पर सवार होकर शहर पहुँचने लगे। और बहुत-से बहादुर नौजवान चालीस सीढ़ियों-वाली नसीनी पर चढ़ने की कोशिश करने लगे। पर उनमें से कोई भी सबसे ऊपर की सीढ़ी तक न पहुँच पाया और कई तो गिरकर मर भी गये। दोनों बड़े भाइयों ने जी भरकर यह नजारा देखा और घर आकर अपने छोटे भाई को सुनाने लगे:

“अहा! आज शहर में हमने कितना मजेदार नजारा देखा!”

‘आपने ऐसा कौन-सा मजेदार नजारा देखा, मुझे भी बताइये,’ छोटा भाई पूछने लगा।

“बादशाह के हुक्म से चालीस सीढ़ियोंवाली एक नसीनी लगायी गयी है। अगर कोई अपने घोड़े पर बैठकर आखिरी सीढ़ी तक चढ़ जायेगा और शाहजादी के हाथ से पानी का प्याला पीकर और उसकी अंगूठी लेकर नीचे उतर आयेगा, तो बादशाह उसके इस बहादुरी के कारनामे की खुशी में दावत देगा और अपनी बेटी की शादी उस बहादुर के साथ कर देगा। बहुत-से बहादुर नौजवान घोड़ों, ऊंटों और गधों पर सवार होकर ऊपरी सीढ़ी तक पहुँचने की कोशिश कर रहे हैं, पर सफलता अभी तक किसी के हाथ नहीं लगी और कई तो गिरकर मर चुके हैं या अपाहिज हो गये हैं। कितना मजेदार तमाशा देखा हमने!”

“अच्छा तो कल आप लोग जानवर चराना और मैं शहर जाकर यह नजारा देखूँगा,” छोटा भाई बोला। और बड़े भाइयों ने जवाब दिया:

“नहीं, अगर तू चला गया तो हम लोग भूखे रह जायेंगे।”

दूसरे दिन भी दोनों बड़े भाई नजारा देखने गये। उनका छोटा भाई शाम होने तक जानवर चराता रहा। उसके बाद उसने उन्हें पोपलर के एक बड़े पेड़ के नीचे जमा कर दिया और सफ़ेद घोड़े का एक बाल जलाया। फ़ौरन पूरे साज और हथियार से लैस सफ़ेद घोड़ा आसमान से उतरकर उसके सामने आ खड़ा हुआ। छोटा भाई घुड़सवार के कपड़े पहन और हथियार बांधकर सफ़ेद घोड़े पर सवार हो गया और शहर की ओर सरपट भाग चला। घोड़े को सीधे उस नसीनी के पास ले जाकर वह जोर से चिल्लाया: “छू!” घोड़ा बड़ी तेज़ी से अड़तीसवीं सीढ़ी तक पहुँच गया, पर घुड़सवार ने घोड़े को मोड़ लिया और वापस उतर आया। वहाँ जमा लोगों की भीड़ में से कुछ ने आवाज़ दी: “अरे, नौजवान, एक बार ‘छू’ और कहो और तुम ऊपरी सीढ़ी तक पहुँच जाओगे!” पर तब तक वह जा चुका था। स्टेपी में लौटकर वह फिर से जानवर चराने लगा, जैसे कुछ हुआ ही न हो। दोनों बड़े भाई घर आकर बड़े जोश से उसे शहर में देखा किस्सा सुनाने लगे:

“आज एक स्टेपी के घुड़सवार ने नसीनी पर घोड़ा चढ़ाने की कोशिश की। कितनी फुर्ती से अड़तीसवीं सीढ़ी तक चढ़ गया वह! पर जब दो सीढ़ियाँ ही बाक़ी रह गयी, तो उसने घोड़ा मोड़ लिया और नीचे उतर आया।”

“अरे, भई, अब तुम मुझे भी कम-से-कम एक बार तो शहर जाकर यह तमाशा देख लेने दो,” छोटा भाई गिड़गिड़ाया, पर बड़े भाई फिर बोले:

“वाह रे वाह, अगर तुझे जाने दें, तो हमें खाना कौन खिलायेगा?”

रात बीत गयी। सुबह होते ही बड़े भाई फिर तमाशा देखने के लिए शहर चल दिये। छोटे भाई ने भरपेट चराने के बाद जानवरों को पोपलर के बड़े पेड़ के नीचे बाँध दिया। इसके बाद उसने काले घोड़े का एक बाल जलाया और पूरे साज और हथियारों से लदा काला घोड़ा आसमान से उतरकर फौरन सामने आ खड़ा हुआ। छोटे भाई ने कपड़े बदले और हथियार बाँधकर काले घोड़े पर शहर की ओर दौड़ चला। लोगों ने देखा कि आज यह नौजवान जिस घोड़े पर सवार है, वह उसके कलवाले घोड़े से चालीस गुना बेहतर है। छोटे भाई ने नसीनी के पास घोड़े को लाकर एड़ लगायी और ‘छू’ कहा। घोड़ा पलक भपकते ही उनतालीसवीं सीढ़ी तक चढ़ गया, पर सवार ने वहाँ से घोड़ा मोड़ लिया और उस पर बैठा सीढ़ी से नीचे उतर आया। लोग चिल्लाने लगे, “अरे, भई, एक बार और ‘छू’ कहो और तुम्हारा घोड़ा तंबू तक पहुँच जायेगा!” शाम ढलने लगी थी, लोगों ने सोचा कि अब इससे ज्यादा मजेदार तमाशा देखने को नहीं मिलेगा और सब वहाँ से अपने-अपने घर लौट गये। दोनों बड़े भाई घर लौटकर अपने छोटे भाई को बड़े जोश के साथ आज के नजारे के बारे में बताने लगे:

“आजवाला घोड़ा कलवाले से कहीं ज्यादा अच्छा था। सवार के ‘छू’ कहने की देर थी कि वह पलक भपकते ही उनतालीसवीं सीढ़ी तक जा पहुँचा, पर उस बहादुर नौजवान ने खुद ही घोड़े को वहाँ से मोड़ लिया और नीचे उतर आया।”

छोटा भाई फिर अपने बड़े भाइयों की आरजू-मिन्नत करने लगा:

“आज तो कम-से-कम तुम लोग जानवर चरा लो, मैं भी शहर जाकर यह मजेदार तमाशा देखना चाहता हूँ।”

“अगर तू चला गया, तो हम लोग खायेगे क्या?” बड़े भाई बोले और उसे शहर नहीं जाने दिया।

रात बीती और फिर सुबह हुई। दोनों बड़े भाई फिर शहर चले गये। छोटे भाई ने फिर जानवरों को भरपेट चराया और उन्हें पोपलर के घने पेड़ के नीचे बाँध दिया। इस दिन उसने लाखी रंग के घोड़े का बाल जलाया और वह फौरन पूरे साज-सामान और हथियारों से लदा आसमान से उतरकर सामने आ खड़ा हुआ। लड़के ने कपड़े बदले, हथियार बाँधे और घोड़े पर सवार होकर शहर की ओर दौड़ चला। नसीनी का एक चक्कर लगाकर उसने कहा “छू!” और पलक भपकते ही घोड़ा चालीसवीं सीढ़ी पार करके शाहजादी के तंबू के सामने आ खड़ा हुआ। लड़के ने शाहजादी के हाथों से पानी का प्याला पिया, उसकी उंगली से अंगूठी उतारी और घोड़े पर बैठे-बैठे ही नीचे उतर आया। दोनों बड़े भाई लौटकर अपने छोटे भाई को पूरा हिसाब देकर सुनाने लगे कि कितने ऊँट, घोड़े और गधे उस नसीनी पर से गिरकर मर गये।

“पहला घोड़ा दूसरे घोड़े के मुकाबले में कुछ भी नहीं था, पर आज हमने उसका तीसरा

घोड़ा देखा, जो दूसरे से भी कई गुना बेहतर था। उसने सब लोगों के सामने अपने घोड़े पर सवार होकर नसीनी का एक चक्कर लगाया और उसके एड़ लगाकर 'छू' कहते ही घोड़ा बिजली की तरह दौड़ा और चालीसों सीढ़िया पार कर गया। घुड़सवार घोड़े से उतरा, शाहजादी के हाथों से पानी का प्याला पिया और उसकी उंगली से अंगूठी उतारकर घोड़े पर बैठा नीचे उतर आया।"

छोटा भाई फिर बड़े भाइयों को मनाने लगा

"आप लोगो ने कितना मजेदार तमाशा देखा, मुझे भी कम-से-कम एक दिन के लिए तो छोड़ देते, ताकि मैं भी एक बार ऐसा मजेदार नजारा देख लेता।"

भाई कहने लगे कि बादशाह सब लोगों को दावत दे चुका है और अब और कोई तमाशा नहीं होगा। तीनों भाई पहले की तरह ढोर चराने लगे। एक दिन उन्होंने यह एलान सुना:

"जिस नौजवान ने शाहजादी के हाथों से पानी का प्याला पिया और उसकी उंगली से अंगूठी उतारी है, वह फौरन महल में बादशाह के सामने हाज़िर हो जाये। बादशाह सलामत अपनी बेटो की शादी उसके साथ कर देंगे और बहुत शानदार दावत देंगे।"

पर महल में कोई नहीं आया। तब बादशाह ने फिर एक बहुत बड़ी दावत दी और एलान किया:

"दावत में हर आनेवाला जब हाथ धोयेगा, तो मेरे आदमी उसके हाथों को बड़े ध्यान से देखेंगे और शाहजादी की अंगूठी नज़र आते ही मुझे खबर करेंगे।"

बादशाह ने तीस दिनों तक अपनी प्रजा को खूब शानदार दावत दी और उन्हें भरपेट खिलाया और पिलाया। जब लोग हाथ धोते, तो बादशाह के आदमी बड़े ध्यान से उनके हाथ देखते, पर शाहजादी की अंगूठी पहने कोई आदमी वहाँ नहीं आया।

"और कोई बाक़ी तो नहीं रह गया?" बादशाह ने पूछा।

"बचे हैं तो सिर्फ़ स्तेपी के चरवाहे," वज़ीर ने जवाब दिया।

बादशाह ने फौरन उन्हें भी बुलाकर खिलाने-पिलाने का हुक्म दिया। एक वज़ीर चरवाहों को बुलाने गया। और जब वे हाथ धोकर महल में घुसने लगे, तो बादशाह के आदमी ने छोटे भाई की उंगली में शाहजादी की अंगूठी पहचान ली। दोनों बड़े भाई आश्चर्यचकित रह गये।

"शाहजादी की अंगूठी हमारे छोटे भाई के पास कैसे पहुँची?"

तब छोटे भाई ने उन तीनों रातों का किम्सा सुनाया, जो उसने अपने पिता की कब्र के पास गुज़ारी थी। बड़े भाई बहुत पछताये और कहने लगे कि अपने पिता की आखिरी इच्छा पर कोई ध्यान न देने के कारण हमें यह सज़ा मिल रही है। उन्हें बस इतने पर ही सतोष करना पड़ा कि उन्होंने अपने छोटे भाई की शादी की दावत खायी।

चालीस दिनों तक दावत चलती रही और उसके बाद बादशाह ने अपनी बेटो की शादी उस चरवाहे के साथ कर दी।

एक महीना बीता कि अचानक बादशाह मर गया। प्रजा ने बादशाह के दामाद को अपना

बादशाह बना दिया। दोनों बड़े भाई यह देखकर फिर पछताने लगे :

‘हमारी तो किस्मत फूटी है। हर उस आदमी का भी यही हाल होगा जो अपने पिता की अंतिम इच्छा पूरी नहीं करेगा।’

छोटे भाई की सारी आकांक्षाएँ पूरी हुईं और वह सुख-चैन से राज करता रहा।

## सुनहले देश का महावीर



किसी समय एक बूढ़ा रहता था। उसका इकलौता बेटा दस साल का था। बूढ़ा बहुत गरीब था, अधपेट खाकर और कपड़ों के नाम पर चिथड़े पहनकर गुजारा करता था। एक बार वह अपने बेटे को लेकर अपने धनवान पड़ोसी सलीमबाय के पास आया और रोता हुआ बोला :

“जमींदार साहब, हमारी मदद कीजिये। मैं और मेरा बेटा, आप जो भी हुक्म दे, करने को तैयार हैं। हम पर रहम कीजिये।”

सलीमबाय ने बूढ़े को सिर से पैर तक देखकर जवाब दिया :

“मेरे पास मुफ्त का खाना नहीं है। तू पहले अपना पिछला कर्ज चुका। अगर तू आजकल में मर गया, तो मेरा पैसा भी मारा जायेगा। जहाँ तक तेरे बेटे का सवाल है, तो वह किसी काम का नहीं है।”

बूढ़ा भौचक्का रह गया। उसने कांपते हुए पूछा :

“जमींदार साहब, मैंने आपसे कौन-सा कर्ज लिया था? आपने तो मुझे कभी कुछ नहीं दिया!”

सलीमबाय बूढ़े को खा जानेवाली नज़र से देखते हुए बोला :

‘बकवास बंद कर, धोखेबाज़ बूढ़े! तू मुझे धोखा देना चाहता है?’ सलीमबाय चिल्ला उठा और बूढ़े को कोड़े मारने लगा। बूढ़ा मार न सह पाया और ज़मीन पर गिर पड़ा। उसकी आँखों से आंसुओं की धारे फूट निकलीं। छोटा-सा रुस्तम कुछ समझ न पाया और अपने पिता से लिपटकर फूट-फूटकर रोने लगा। थोड़ी देर बाद होश आने पर बूढ़ा गिड़गिड़ाता हुआ बोला :

“अगर मैं भूल गया हूँ, तो मुझे समझाइये कि मैंने कब और कितना कर्ज आपसे लिया था और अब मुझे कितना चुकाना है।”

रुस्तम अपने पिता की छाती से चिपटा पड़ा था। सलीमबाय ने लड़के को खींचकर एक ओर धक्का दे दिया और बूढ़े का गरेबान पकड़कर कड़े स्वर में बोला, “कान खोलकर सुन



ले, धोखेबाज बूढ़े ! जब तेरी पत्नी मरी थी, तो लाश नहलानेवाली को पैसे किसने दिये थे ? किसकी गाड़ी में तू बुजुर्गों को कब्रिस्तान ले गया था ? चेहलुम के दिन सैकड़ों आदमियों को पुलाव किसने खिलाया था ? तू भूल गया क्या कि तू और तेरा बेटा पुलाव पर कैसे टूट पड़े थे ? ”

लालची सलीमबाय के सफ़ेद भूँठ पर बूढ़े को बहुत गुस्सा आया ।

पर अपने बुढ़ापे और भूख के कारण वह कुछ भी न कर पाया । उसमें तो उठकर खड़े होने की ताकत भी नहीं रह गयी थी । इसलिए वह फिर गिड़गिड़ाने लगा :

“ ज़मींदार साहब, आपने ही तो कहा था, ‘चेहलुम के दिन पुलाव मैं बनवाऊँगा, तू और तेरा बेटा भी आकर खा लेना ।’ हमारे ऊपर रहम कीजिये और मेरे बेटे रुस्तमज़ान को मत सताइये ... ”

बूढ़ा यह कह ही रहा था कि वहाँ का इमाम दरवाज़ा खोलकर अंदर आया । सलीमबाय इमाम की ओर देखकर बोला :

“ अगर तुझको विश्वास न हो तो, इनसे भी पूछकर देख ले । ”

इमाम ने जो-हुजूरी के स्वर में सलीमबाय से पूछा :

“ क्या मामला है ? आप मुझसे क्या पूछना चाहते हैं ? ”

इस पर सलीमबाय बोला :

“ पिछले साल ईद के मौके पर हमने मुहल्ले को जो पुलाव खिलाया था, उस दिन आपने इस बूढ़े की पत्नी के लिए दुआ मांगी थी या नहीं ? ”

इमाम सलीमबाय की बात का असली मतलब समझ गया और बड़े आत्मविश्वास के साथ बोला :

“ बिल्कुल ऐसा ही हुआ था । हमने इस दावत में बूढ़े की पत्नी के लिए फ़ातिहा पढ़ा था । ”

सलीमबाय बूढ़े को घूरते हुए कहने लगा :

“ सुना तूने ? एक पड़ोसी की तरह मैंने तुझ पर रहम खाकर अपना पैसा खर्च किया, एक नैक काम किया, और तू, धोखेबाज बूढ़े, इस सबसे इनकार करता है ! ”

इमाम भी सलीमबाय की हाँ में हाँ मिलाते हुए नसीहत देने लगा :

“ तुम ऐसी गुस्ताखी कभी मत करना, तुम्हें तो सलीमबाय का शुक्रगुज़ार होना चाहिए ! चेहलुम के पुलाव का सारा खर्चा तुम्हें अपने ऊपर ले लेना चाहिए । ”

बूढ़ा रो पड़ा ।

“ हम पर क्या पहले ही कम मुसीबत पड़ी थी ! हमें रोटी का एक टुकड़ा तक तो मिलता नहीं, कभी पेट भर नहीं पाते और इस पर यह इतना बड़ा क़र्ज़ हमारे सिर पर लद गया, ” बूढ़ा बोला और रोते हुए रुस्तम को सीने से चिपटा लिया । “ मेरे ग़रीब बेटे, मैं बूढ़ा हो गया, मेरी ज़िंदगी तो कट गयी, पर अब तेरा क्या होगा ... ”

इमाम बूढ़े को घूरते हुए बोला :

“अरे बेवकूफ, रोता क्यों है? ज़मींदार साहब तुम्हसे यह तो नहीं कह रहे हैं कि तू इसी वक्त कर्ज चुका। जब तेरे पास पैसा हो जाये, तब दे देना। बस इनकार मत करना। कुछ दिनों में तेरा बेटा बड़ा हो जायेगा, कोई काम सीखकर कमाने लगेगा, तब तू कर्ज चुका देना।”

कर्ज चुकाने के लिए इतना लंबा समय मिलने पर बूढ़ा आश्चर्यचकित हो गया, पर “हां” कहने के अलावा उसके पास कोई चारा न रहा।

इमाम ने बूढ़े की ओर देखकर कहा:

“पर ‘हां’ कहना ही काफी नहीं होगा। पहले सलीमबाय से सुन ले कि तुम्हें उनका कितना कर्ज चुकाना है और उसे अच्छी तरह याद कर ले।”

बूढ़ा पसोपेश में पड़ा चुपचाप सुनता रहा।

इमाम ने कागज़ और कलम लेकर कुछ लिखा और शिष्टतापूर्वक ज़मींदार से बोला:

“जनाब, बूढ़े ने आपसे कितना कर्ज लिया था?”

“पन्द्रह अशरफियाँ,” सलीमबाय ने जवाब दिया।

बूढ़े ने अपने जीवन में कभी एक अशरफ़ी को हाथ से छुआ तक नहीं था। इसलिए “पन्द्रह अशरफ़ियाँ” सुनकर ही बेचारा धबरा उठा। इमाम ने पन्द्रह अशरफ़ियों का कर्ज-पत्र बनाकर बूढ़े से अंगूठा लगाने को कहा। बूढ़ा “हां” पहले ही कह चुका था, इसलिए उसे कर्ज-पत्र पर अंगूठा लगाना ही पड़ा। इमाम के जोर देने पर रुस्तम को भी यही करना पड़ा।

“अब तुम लोग जा सकते हो। तेरा बेटा बड़ा होकर कमाने लगेगा, तो चुका देगा,” इमाम ने कटाक्षपूर्ण स्वर में कहा।

बूढ़ा और उसका बेटा सलीमबाय से रोटी का एक टुकड़ा मांगने आये थे, पर वहाँ से वे लौटे पन्द्रह अशरफ़ियों के कर्जदार होकर।

घर की ओर जाते समय बूढ़े को उसका पड़ोसी सिद्दीक मोची मिला। सिद्दीक को अपनी मुसीबत का हाल सुनाकर बूढ़े ने पूछा:

“अब मैं किससे इंसान मांगूँ?”

पड़ोसी एक गहरी सांस लेकर निराशापूर्ण स्वर में बोला:

“तुम जाल में फस गये हो, अब कुछ नहीं किया जा सकता। इस शहर का हाकिम इस नीच सलीमबाय का दामाद है। अब तो बस एक ही रास्ता रह गया है कि तुम जो कुछ हो गया है, उसे मान लो!”

बूढ़ा अपने बेटे रुस्तम को सीने से चिपकाये रात भर सोचता रहा। तरह-तरह के विचार बूढ़े के दिमाग में आते रहे और इसके साथ-साथ भूखे बेटे की सिसकियाँ भी सुनाई देती रही। इतना दुख बूढ़े के बर्दाश्त के बाहर था।

आधी रात हो चुकी थी, सब मीठी नींद सो रहे थे, पर बेचारा बूढ़ा आँखें भरता हुआ तडप रहा था। उसी समय फाटक ठेलकर तीन आदमी बूढ़े के सिरहाने आ खड़े हुए। उनमें से एक बूढ़े के लात मारकर बोला: “उठ, धोखेबाज।” बूढ़ा उतना डर से नहीं चौंका, जितना

इन्. "बिनबुलाये मेहमानों" के अप्रत्याशित व्यवहार से और कह उठा.

"आप लोगो को मुझसे क्या चाहिए?"

"घर खाली कर! इसी वक्त!" वह आदमी चिल्लाकर बोला।

बूढ़े को अब भी अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ और वह घबराकर बोला

"आपको शायद गलतफहमी हो गयी है, यह घर तो मेरा है।"

तब दूसरा "बिनबुलाया मेहमान" बड़े कड़े स्वर में बोला.

"तू हमें धोखा नहीं दे सकता। हम शहर के हाकिम के नौकर हैं। तूने एक साल पहले यह मकान सलीमबाय को पन्द्रह अशरफियों में बेचकर रकम नकद ले ली थी। जमींदार नेक हैं और अभी तक यही सोचकर इंतजार कर रहे थे कि तू मकान बिना कहे अपने आप खाली कर देगा, पर तू धोखेबाज निकला।"

बूढ़े ने अपने सिर पर एक नयी मुसीबत आती महसूस करके रोते हुए कहा

"मैंने मकान कभी नहीं बेचा और न ही बेचूंगा।" इस पर तीसरे आदमी ने एक कासज दिखाकर द्वेषपूर्ण स्वर में कहा.

"तू कहता है 'मैंने मकान नहीं बेचा'? और यह रसीद किस बात की है? इस पर तेरे और तेरे बेटे के अंगूठों के निशान हैं। हाकिम ने बहुत नाराज होकर कहा है, 'अगर वे लोग खुद न जाना चाहें और ज़िद करे, तो उन्हें घसीटकर मकान से बाहर निकाल देना और काल-कोठरी में कैद कर देना'!"

यह हुक्म सुनकर बूढ़े के पैरों तले जमीन खिसक गयी। अपने बेटे रुस्तम को सीने से चिपटाये हुए उसे वह घर छोड़ देना पड़ा जिसमें वह पैदा हुआ, इतने सालों से रहा और बूढ़ा भी हुआ था। बूढ़े का रोना-धोना सुनकर उसका पड़ोसी सिद्दीक और उसका सारा परिवार भी जाग गया। वे भागे-भागे बाहर आये। बूढ़े पर आयी नयी मुसीबत को देखकर उनकी आंखों में आंसू भर आये और अनायास ही उनके मुंह से एक ठंडी सांस निकल गयी। सिद्दीक की पत्नी ने बूढ़े को मक्का की एक रोटी दी और बोली. "अल्लाह आपको हर समय रोटी देता रहे।" बूढ़ा रुस्तम को पीठ पर लादकर पहाड़ों की ओर चल दिया।

बूढ़ा काफी समय तक पहाड़ी रास्तों में भटकता रहा... चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ था, जो कभी-कभी रुस्तम के सवाल से टूट जाता था: "पिताजी, हम कहाँ जा रहे हैं?" बूढ़ा अपने बेटे को जवाब में कुछ नहीं कह पाता, क्योंकि उसे स्वयं मालूम नहीं था कि वह कहाँ जा रहा है। थका-हारा वह आर्चा के भुरमुट में रुका। आर्चा के एक छोटे पेड़ के तने का सहारा लेकर वह बैठ गया और आंखें बंद करके कुछ सोचने लगा। जब उसने आंखें खोली, तो हक्का-बक्का रह गया—उसके सामने की पहाड़ी पर एक बहुत बड़ा भालू अपने बच्चे के साथ खड़ा था और उस पर हमला करने ही वाला था। दोनों भालू उनकी तरफ आने लगे। बेचारा बूढ़ा सांस रोककर पत्थर-सा बना वहीं खड़ा रह गया। उसकी ताकत बिल्कुल जवाब दे गयी थी और बचने का भी कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा था। रुस्तम को सीने से जोर से चिपटाकर बूढ़ा रो पड़ा। रुस्तम अपनी ओर बढ़ते हुए खूंखार जानवरों को देखकर

डर के मारे चीख उठा। रुस्तम की चीख सुनकर बूढ़े ने आंखें मीचे हुए ही सोचा कि अब उसका बेटा बच नहीं पायेगा और बेहोश हो गया। पर भालू धीरे से उनके पास पहुँचा, रुस्तम को बूढ़े की बाँहों में से सावधानीपूर्वक निकालकर उसका हाथ अपने बच्चे के हाथ में थमा दिया और बूढ़े को उठाकर अपनी माँद में ले आया।

सुबह सूरज निकला, बूढ़े ने आंखें खोलीं, तो देखा—उसका बेटा उसकी बाँहों में नहीं था। उसने घबराकर चारों ओर देखा—रुस्तम भालू के बच्चे के साथ एक कोने में बैठा शहद खा रहा था। बूढ़ा भौचक्का रह गया। उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। यह जानने के लिए कि वह जो देख रहा है वह सपना है या सच, उसने रुस्तम की आवाज दी। रुस्तम काफ़ी देर से बेहोश पड़े हुए अपने पिता की आवाज सुनकर फौरन भागकर उसके पास पहुँचा और बोला :

“पिताजी, उठिये, थोड़ा शहद खाइये।”

“तुम्हें इससे डर नहीं लगता?” बूढ़े ने भालू के बच्चे की ओर इशारा किया।

“यह मेरा दोस्त बन गया है,” बेटा बोला। “इसकी माँ हम दोनों को यहाँ ले आयी है। आपको लिटाकर वह मुझसे कह गयी है—‘तुम लोग शोर मत करना, यह जितनी देर सोये, सोने देना। मेरा बेटा तुम्हारा दोस्त है, तुम दोनों शहद खाओ, मैं अभी वापस आती हूँ’।”

बूढ़ा आश्चर्यचकित होकर रुस्तम को देखता रहा। वह समझ नहीं पा रहा था कि वह रुस्तम की बात पर विश्वास करे या नहीं। इसी बीच स्वयं रीछनी भी आ पहुँची। उसके एक हाथ में रोटियाँ थीं और दूसरे में दूध से भरा तूँबा। रीछनी को देखते ही बूढ़ा उठ खड़ा हुआ और उसने झुककर सलाम किया। रीछनी दूध और रोटी ज़मीन पर रखकर बूढ़े से बोली :

“बैठिये, आप तकलीफ मत कीजिये। मैं आपके लिए दूध और रोटी लायी हूँ। पहले खा लीजिये, फिर बातें करेंगे।”

रीछनी का अपने प्रति इतना प्रेमपूर्ण व्यवहार देखकर बूढ़े को बड़ा आश्चर्य हुआ। रीछनी ने बूढ़े से खाने के लिए फिर आग्रह किया और बोली :

“आप मेरे बारे में कुछ गलत न सोचिये। यहाँ के बहुत-से गड़रिये मेरे दोस्त हैं। वे लोग हाकिमों और जमींदारों की भेड़े चराते हैं। यह दूध और रोटियाँ मैं उन्हीं से मागकर लायी हूँ।”

बूढ़े ने एक ठंडी सास लेकर रीछनी को अपना दुखड़ा सुनाया। उसे सुनकर रीछनी बोली :

“आप अब मुझे अपनी बेटी समझिये और मेरे बच्चे को अपने बेटे का दोस्त मानिये। हम लोग यहाँ मिल-जुलकर रहेंगे।”

और वास्तव में वे सब चैन से वहाँ रहने लगे। बूढ़ा दिन में पहाड़ों में लकड़ी काटता और रीछनी रात को उसे उठाकर शहर के पास रख आती, जहाँ बूढ़ा उसे बेचता। इस तरह वे लोग अपनी जीविका चलाते रहे। रुस्तम रीछ के बच्चे के साथ खेलता-कूदता बड़ा होने लगा। गड़रियो ने एक बार रुस्तम को रीछ के बच्चे के साथ कुश्ती लड़ते हुए देखा और उससे बहुत



प्रभावित हुए। पाँच-छ साल में ही रुस्तम की ख्याति चारों ओर फैल गयी। कोई ऐसा पहलवान नहीं रहा था, जो रुस्तम का मुकाबला कर सके। उसकी असौम्य शक्ति और फुर्ती के कारण शिकारियों ने रुस्तम का नाम रीछपछाड पहलवान रख दिया था।

एक बार जब रुस्तम और उसके पिता शहर में लकड़ी बेचकर लौट रहे थे, तो रास्ते में उन्हें अचानक बानात का चोगा पहने हुए और चितकबरे घोड़े पर अकड़कर बैठा एक आदमी मिला, जो चाबुक घुमा रहा था। उसकी ओर इशारा करते हुए बूढ़े ने रुस्तम से कहा

‘यही वह सलीमबाय है, जिसने हमारा घर छीनकर हमें बाहर निकाल दिया था।’

सलीमबाय जरूरत से ज्यादा खुश नज़र आ रहा था, बड़ी शान से मूछों पर ताब देता हुआ मुस्करा रहा था, और उसके चारों ओर भीड़ जमा थी। लोग सब कुछ भूलकर किसी चीज़ को देखे जा रहे थे।

अचानक रुस्तम को कराहने की आवाज़ सुनाई दी, जो जानी-पहचानी-सी लगी। रुस्तम भागकर भीड़ में घुसा, तो उसने देखा कि उसके भाई रीछ के बच्चे को शिकारियों ने पकड़कर ऊट पर लाद रखा है। लोगों की बातों से मालूम पड़ा कि सलीमबाय अपने आदमियों के साथ जंगल में से रीछ के बच्चे को पकड़ लाया है और अब हाकिम को भेंट करना चाहता है। रुस्तम को बहुत गुस्सा आया। वह लपककर रीछ के बच्चे के पास पहुँचा, एक पल में ही उसने सारी रस्सियाँ तोड़ फेंकीं और अपने दोस्त को गले लगा लिया। सलीमबाय के शिकारी रुस्तम पर टूट पड़े, पर जो भी शिकारी उसके नज़दीक आया, उसे उसने सिर पर उठाया और घुमाकर दूर फेंक दिया। जिसने भी एक बार रुस्तम की ताकत आजमा ली, उसने दुबारा उसके पास फटकने का खतरा मोल नहीं लिया। रुस्तम सलीमबाय की ओर लपका पर वह सिर पर पांव रखकर भाग निकला। रुस्तम रीछ के बच्चे को गोदी में उठाकर जंगल की ओर चला गया। जिन लोगों ने रुस्तम की असाधारण शक्ति, फुर्ती और बहादुरी देखी थी, वे उसकी तारीफ करने लगे। थोड़े दिनों में ही रुस्तम की ख्याति सारे शहर में फैल गयी।

सलीमबाय को रात को भी कपकपी आती थी और वह डर के मारे घर से बाहर ही न निकलता था। हाकिम ने गुस्से में आकर हुक्म जारी किया: “किसी भी कीमत पर उस पहलवान को पकड़कर मेरे सामने हाज़िर किया जाये, जिसने शिकारियों से रीछ के बच्चे को छीन लिया था।” पर किसी की भी हिम्मत नहीं हुई कि जाकर रुस्तम को पकड़े और अगर किसी को जबरदस्ती भेजा भी जाता, तो वह बिना कुछ किये वापस आकर कहता, “मुझे वह मिला ही नहीं।”

गरीब और भूखे लोग, जिन्हें शहर में खाने को कुछ न मिल पाता था, रुस्तम की शरण में आकर अपने को सुरक्षित महसूस करने लगे। वे सब रुस्तम के साथ जंगल में लकड़ी काटकर शहर में बेचकर गुज़ारा करने लगे। सलीमबाय को किसी ने बताया कि रुस्तम उसी बूढ़े का बेटा है, जिसे उसने उसका घर छीनकर निकाल दिया था। उन्हें यह भी बताया गया कि अब वे आज़ादी से पहाड़ों में रह रहे हैं और जमींदारों के अत्याचारों से तंग आकर शहर से भागने-वाले गरीबों को शरण और मदद दे रहे हैं। सलीमबाय यह सुनकर भड़क उठा और उसने

फौरन शहर के हाकिम को सारी बात बताई। हाकिम ने एक सौ सैनिकों के साथ आर्चा के जंगल पर चढ़ाई कर दी। रास्ते में उसने अपने सैनिकों से कहा।

“जो भी रुस्तम को जिंदा पकड़कर लायेगा, उसके साथ मैं अपनी बेटी की शादी कर दूंगा और उसे सौ सैनिकों का अफसर बना दूंगा।”

हाकिम के सैनिकों के घोड़े हवा से बातें करते हुए दौड़ने लगे। अंत में वे आर्चा के जंगल के पास एक छप्पर में पहुँचे।

हाकिम बड़े घमण्ड के साथ अपने सैनिकों से बोला:

“हम लोग इस छप्पर में छिप जाते हैं, नहीं तो हमारे आने की खबर पाकर रुस्तम पहाड़ों में भाग जायेगा। हम लोग रात को हमला करके उसे पकड़ लेगे।”

बूढ़ा अपने साथियों के साथ शहर में लकड़ी बेचने गया हुआ था। रुस्तम अपने दोस्त रीछ के बच्चे के साथ एक छोटी पहाड़ी पर सो रहा था। शीतल पुरवाई रुस्तम के चेहरे को छूते हुए बह रही थी और रीछ के बच्चे की मुलायम खाल का स्पर्श भी उसे मधुर लग रहा था। उसकी नींद खुली, तो उसने देखा—रीछनी उसे उठाकर कहीं ले जा रही है। रुस्तम ने उससे पूछा:

“क्या हुआ?”

“तुम्हें पर हमला करके पकड़ना चाहते हैं। शहर का हाकिम अपने एक सौ सिपाहियों के साथ यहाँ आया हुआ है।”

एक सुरक्षित जगह में पहुँचकर रीछनी ने रुस्तम को जमीन पर उतार दिया।

“आप मुझे यहाँ क्यों लायी हैं?” रुस्तम ने पूछा।

“मैं तुम्हें बचाना चाहती हूँ,” उसने जवाब दिया।

रुस्तम ने विरोध किया:

“आखिर हम कब तक बेकार ही उन लोगों से डरकर भागते रहेंगे? चलकर उनका मुकाबला करना चाहिए!”

रीछनी रुस्तम को समझाने लगी:

“वे लोग बहुत ज्यादा हैं और घोड़ों पर सवार हैं और हमारे दोस्त इस वक्त शहर में हैं।”

उसी समय रुस्तम का दोस्त रीछ का बच्चा इधर-उधर हिलता-डोलता उनके पास पहुँचा। रुस्तम उसे देखकर बहुत खुश हुआ।

रीछनी ने फिर रुस्तम को भागने के लिए मनाया, पर बहादुर नहीं माना। तब उसने पूछा:

“आखिर तू क्या करना चाहता है?”

“हम खुद ही दुश्मन पर हमला करेंगे!” रुस्तम बोला। रीछनी के बच्चे ने अपना मुँह ऊँचा उठाकर दिखाया कि वह कितनी बहादुरी से दुश्मन से जूझेगा और रुस्तम की कमर में बाँधे डालकर कहने लगा:

“अरे, ये सैनिक हमारा क्या मुक़ाबला करेंगे, हम इन्हें अच्छी तरह मजा चखायेंगे।”

उसी समय उन्होंने पहाड़ की ढलान पर घुड़सवार सैनिकों को एड लगाते और तलवारे घुमाते हुए देखा। दुश्मन निकट आ रहे थे। अब रुस्तम को हाकिम, उसके सैनिकों और घोड़ों की आवाज़ें भी सुनाई देने लगीं। थोड़ी देर बाद सैनिक घोड़ों से उतरकर, पत्थरों के पीछे छिपते हुए रुस्तम की गुफा की ओर बढ़ने लगे। अब और देर करना ठीक नहीं था। रुस्तम, रीछनी और उसके बच्चे ने बड़े-बड़े पत्थर उठाकर दुश्मनों पर फेंकने शुरू कर दिये। जमकर लड़ाई होने लगी। दुश्मनों पर पत्थरों की बौछार हो रही थी। कुछ दुश्मनों के सिर कुचल गये, कुछ की रीढ़ की हड्डियां टूट गयीं और बहुत-से कलाबाजियाँ खाते हुए नीचे तक लुढ़कते गये। रुस्तम और रीछ का बच्चा दोनों बहुत खुश हुए, क्योंकि दुश्मनों की संख्या लगातार कम होती जा रही थी। मगर रुस्तम का लगाया पत्थरों का ढेर खत्म हो गया। उसी क्षण दोस्तों ने देखा कि रीछनी भी कहीं गायब हो गयी है। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। इस बीच हाकिम और उसके सैनिकों ने उन पर फिर से हमला कर दिया। रुस्तम सोटा लेकर दुश्मनों पर दूध पड़ना चाहता था, पर उसी समय रीछनी आर्चा का मोटा तना उठाकर ले आयी। वह तने को घुमाते हुए आगे बढ़ी। तने की घातक चोटों से दुश्मन एक के बाद एक मरकर गिरने लगे। बचे हुए सैनिक और हाकिम सिर पर पैर रखकर भागे। दोस्तों के हाथ काफ़ी चीज़ें लगीं। हाकिम की लज्जाजनक हार और लड़ाई के मैदान से पीठ दिखाकर भागने की खबर लोगों को उसी दिन मालूम पड़ गयी। हाकिम कायरतापूर्वक अपने क़िले में जा छिपा। कुछ दिनों बाद हाकिम ने एलान कराया कि रुस्तम को ज़िंदा पकड़कर उसके महल में लाने-वाले आदमी को वह उस आदमी के वज़न के बराबर सोना इनाम में देगा। इमाम की बूढ़ी मां, जो पोपली, गंजी और कानी थी, इनाम की लालच में आकर हाकिम के पास पहुँची और बोली।

“हाकिम, मैं इस छोकरे रुस्तम को पकड़कर तुम्हारे सामने हाज़िर कर सकती हूँ।”

“अगर तुम मेरा यह काम कर दो, तो मैं तुम्हारी सारी इच्छाएँ पूरी कर दूँगा,” हाकिम बोला।

बुढ़िया ने कहा:

“इस काम के लिए तुम मुझे पन्द्रह ऐसे बफ़ादार आदमी दो, जिनके चेहरे पर दाढ़ी या मूँछ का एक भी बाल न हो। जब मैं उस छोकरे को पकड़कर तुम्हारे सामने हाज़िर कर दूँगी, उस दिन से तुम बिना मेरी सलाह के हुकूमत का कोई काम नहीं करोगे।”

हाकिम ने बुढ़िया की शर्त मान ली। और दूसरे दिन ही बुढ़िया की अगुआई में पन्द्रह बिना दाढ़ी-मूँछवाले आदमी औरतों के भेष में पहाड़ों की ओर चल पड़े। बुढ़िया के हुक्म के अनुसार वे लोग रास्ते में आपस में बुरी तरह लड़ते-झगड़ते और मारपीट करते हुए चलने लगे। खून में लथपथ और सारे शरीर पर खरोंचे और चोटों के निशान लिये हुए ये “औरतें” और “लडकियाँ” आर्चा के जंगल में पहुँचीं। उनकी कराहने की दर्दभरी आवाज़ें सुनकर रुस्तम अपने सारे लकड़हारे दोस्तों के साथ उनके पास भागा आया और पूछने लगा कि उनकी यह

हालत किसने की। बुढ़िया अपने कपड़े फाड़ती हुई रुस्तम के पैरों से ऐसे लिपटकर रोने लगी, जैसे उसके ऊपर कोई बहुत बड़ी मुसीबत आयी हो। वह पत्थर पर सिर पीट-पीटकर रो-चिल्ला रही थी

“अगर हमें रुस्तम नहीं मिला, तो वह जालिम हम सबको मार डालेगा, बरबाद कर देगा। रुस्तम मिल जाये, तो वह हमारा दुखड़ा सुनेगा, सहानुभूति और प्यार दिखायेगा और हमें मरने से जरूर बचा लेगा। वह अगर एक बार भी दिखाई दे जाये, तो हम अपना दुखड़ा उसे सुनाकर जी हल्का कर लें!”

“आप मत रोइये। मैं ही रुस्तम हूँ। क्या हुआ? मुझे बताइये,” रुस्तम बोला। उसी क्षण सारी पन्द्रह “औरतें” रुस्तम के पैरों में गिरकर रोने-चिल्लाने लगीं। बुढ़िया रो-रोकर कहने लगी

“हमारी आखों के तारे, रुस्तमजान, हमें इस जालिम जल्लाद से बचा ले। तुमसे हारकर यह जालिम अब हम लोगों से बदला ले रहा है। इस शहर के हाकिम ने, उसका सत्यनाश हो, हमें, हमारे पतियों और बच्चों को एक जगह इकट्ठे होने का हुक्म दिया और उसके बाद हम सबको उंडों से बुरी तरह पीटकर हमारे पतियों को काल-कोठरी में कैद कर दिया और बच्चों को पिंजरों में बन्द करके तपती धूप में लटका दिया। उसने हमारे घर छीन लिये और हम सबको स्लेपी में भगा दिया। अब हम क्या करें? किससे मदद मांगें?”

“बहनो, मत रोओ, धीरज रखो। तुम लोग हमारे साथ रहो। हम तुम्हारे पतियों और बच्चों को बचाने का कोई रास्ता ढूँढ़ेंगे।”

रुस्तम और उसके दोस्तों ने “औरतों” को दिलासा देकर खाना खिलाया और उनके रहने का इंतजाम किया। वे “औरतें” दिन में रुस्तम और उसके मित्रों के साथ लकड़ियां काटतीं और रात को अपनी-अपनी जगह पर जाकर सो जातीं।

एक बार जब रोछनी और उसका बच्चा कहीं दूर गये हुए थे और रुस्तम नींद न आने के कारण अकेला बैठा कुछ सोच रहा था, तो सिद्दीक मोची उसके पास आकर बैठ गया और कहने लगा:

“लगता है तुम अकेले बैठे ऊब गये हो। तुम चाहो, तो तुम्हें एक नीति-कथा सुनाऊँ?”

“बड़ी सुशी से सुनूंगा,” रुस्तम ने जवाब दिया।

सिद्दीक नीति-कथा सुनाने लगा:

“एक मोची था। वह पुराने जूतों की मरम्मत करता था और किसी तरह अपना पेट भरने लायक पैसा कमा लेता था। उसकी समझदार और सुंदर बेटी उसके जीवन का एकमात्र सुख और सहारा थी। हालांकि मोची बहुत गरीब था, पर फिर भी बहुत-से अमीर और जमींदार उसकी बेटी के साथ अपनी शादी तय करने के लिए अगुए भेजते रहते थे। मोची ने उनमें से किसी का भी प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया, क्योंकि वह जानता था कि उसकी बेटी को पड़ोसी के सुंदर और चतुर लड़के से प्यार है, जिसके साथ खेलती-कूदती वह बड़ी हुई थी। शहर के हाकिमों के जुल्मों से तंग आकर बेचारे लड़के और उसके परिवार के लोगों को



एक दिन अपना घर छोड़ देना पड़ा। पिता और पुत्र ने पहाड़ी जंगल में शरण ली। समय बीतता रहा और वह लड़का सुंदर और शक्तिशाली युवक बन गया। उत्पीड़ित और गरीब लोगों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण और प्रेमपूर्ण व्यवहार के कारण पहाड़ों के आस-पास रहनेवाले लोग युवक का बहुत सम्मान करते थे। वह असाधारण रूप से शक्तिशाली और साहसी था। उस वीर से घृणा करनेवाले दुश्मनों की उसके पास फटकने की भी हिम्मत नहीं होती थी। मोची और उसकी बेटी मन-ही-मन इस सज्जन और भले, बहादुर नौजवान पर गर्व करते थे। वे बड़ी उत्सुकता से उस दिन की प्रतीक्षा करते रहे थे, जब वह उनसे मिलने आयेगा। पर कई साल बीत गये और वह बहादुर उनसे एक बार भी मिलने नहीं आया।”

रुस्तम मोची की कहानी सुनकर दिल से कह उठा:

“उस बहादुर ने अच्छा नहीं किया।”

सिद्दीक मोची आगे सुनाने लगा:

“मोची की बेटी की खूबसूरती के बारे में शहर के हाकिम ने भी सुना। अपनी चार पत्नियाँ होते हुए भी उसने मोची की बेटी को अपनी पाँचवीं पत्नी बनाने के इरादे से कीमती तोहफों के साथ शादी का संदेश भेजा, पर मोची ने उसका प्रस्ताव ठुकरा दिया। तब हाकिम के हुक्म से मोची के हाथ-पैर बाँधकर पानी में फेंक दिया गया, उसका घर जला दिया गया और उसकी बेटी को जबरदस्ती वहाँ से हाकिम के घर ले जाया गया। पिता को मछुओं ने बचा लिया, पर बेचारी बेटी, तरह-तरह की यंत्रणाएँ सहते हुए भी, उस नौजवान की प्रतीक्षा करती रही। कुछ समय मछुओं के साथ रहने के बाद उस लड़की का पिता उस नौजवान को लड़की का हाल सुनाने के लिए पहाड़ पर पहुँचा।”

रुस्तम की मनोदशा देखकर सिद्दीक मोची अपनी कहानी आगे सुनाना चाहता था, पर अचानक हाकिम की सतायी हुई “औरतों” में से एक दौड़ी आयी।

“रुस्तमजान, आपकी धर्म की माँ मर रही है। वह आपको देखने के लिए तरस रही है, आप फौरन चलिए।”

रुस्तम उठकर बुढ़िया के पास भागा। सिद्दीक मोची गंभीर मुद्रा में अपनी राह चल दिया। जब रुस्तम बुढ़िया के पास पहुँचा, तो वह अटक-अटककर सांस ले रही थी, जैसे सचमुच मर रही हो। रुस्तम उसके ऊपर झुका ही था कि दूसरी “औरत” बोली:

“माँ, अब आप चैन से मर सकेंगी, आपका बहादुर बेटा आ गया है।”

‘मरणासन्न’ बुढ़िया ने हाथ उठाकर इशारा किया जैसे अपने आखिरी समय में वह रुस्तम को गले लगाकर चूमना चाहती हो। रुस्तम का सिर झुकते ही बुढ़िया ने कोई जहरीली दवाई उसकी नाक से लगा दी। रुस्तम उसी वक्त बेहोश होकर गिर पड़ा।

बुढ़िया फौरन उठ खड़ी हुई और हुक्म देने लगी:

“इसको जल्दी से बाघ दो!”

“औरतो” ने फौरन रुस्तम को रस्सियों से कसकर बांध दिया और चारों ओर नज़रे दौड़ाकर पहले से ही तैयार रखी हुई एक डोली पर उसे डालकर शहर की ओर भाग निकले।

किसी महल में लाकर उन लोगों ने उसे देहरी के बाहर ही डाल दिया। उस घर में शानदार कालीनो और मखमल की मुलायम गद्दियों पर रईस लोग बैठे थे और उनके सामने तोहफों के तौर पर बेशकीमती कपड़े रखे हुए थे। जैसे ही बहादुर को लाकर दरवाजे के पास फेंक दिया गया, हाकिम खुशी से फूल उठा और बोला :

“ये बेशकीमती तोहफे आपके लिए ही हैं। हम उम्मीद करते हैं कि आप हमें ऐसा और भी मौका देगी !”

सलीमबाय फौरन उठा और सीना फुलाकर, मूंछों पर ताव देते हुए बोला :

“कल हम सब लोगों को मैदान में इकट्ठा करके उनके सामने इस बागी को फासी पर लटका देंगे और वहीं आपको सिर से लेकर पैर तक कीमती तोहफों से ठक देंगे।”

बुढ़िया ने एक व्यंग्यमिश्रित दृष्टि सलीमबाय पर डालते हुए कहा :

“अरे, जमींदार साहब, यह तो एक बहुत बड़ी शलती होगी। यह गाठ बांध लो कि इस छोकरे को लोगों के सामने किसी भी हालत में लाया नहीं जा सकता। फिर इस बागी को कल तक ज़िंदा छोड़ना खतरे से खाली नहीं। इसे होश में आने की देर है कि यह सारी रस्सियां तोड़कर आजाद हो जायेगा। इसे फौरन खत्म कर देना चाहिए।”

शहर का हाकिम बोला :

“बुढ़िया, जैसा तुम चाहती हो, हम वैसा ही करेंगे ! सब कुछ तुम्हारी ही मर्जी से होगा।”

“अच्छा, ध्यान से सुनो,” बुढ़िया बोली, “ऊंचे पहाड़ शैतान तेपा पर एक बहुत बड़ी खाई है, जिसका अंत किसी ने नहीं देखा है। उस खाई के घोर अंधेरे में बहुत-से राक्षस और अजदहे रहते हैं। आखिर, उन्हें भी तो कुछ खाने को चाहिए ...”

सब जोर से हंस पड़े। “चालाकी में शैतान भी आपका मुकाबला नहीं कर सकता,” एक अमीर कह उठा। जालिमों की ‘अदालत’ ने रुस्तम को यह सजा सुनायी। उसे पहाड़ पर ले जाकर खाई में फेंक दिया गया।

रुस्तम जब पहाड़ पर रहता था, तो वह सुबह उठकर बांसुरी पर एक धुन बजाता था, जो गड़रियों को बहुत पसंद थी। इस धुन को सुनकर रुस्तम के लकड़हारे दोस्त अपनी-अपनी भोंपड़ियों से निकलकर अपना काम शुरू कर देते थे। बांसुरी की आवाज़ उनके लिए दिन निकलने की सूचक थी। पर आज दिन निकलने पर भी कोई आवाज़ न सुनाई दी। पहले तो लकड़हारों ने सोचा कि अभी दिन नहीं निकला, पर जब वे लेटे-लेटे उकता गये, तो अपनी-अपनी भोंपड़ियों से बाहर निकलने लगे। रुस्तम के पिता घबराये हुए उस टेकरी की ओर गये, जहाँ उनका बेटा सोता था। वहाँ उन्हें केवल रुस्तम की टोपी ही दिखाई दी। बूढ़ा और ज्यादा घबराया और चारों ओर देखता हुआ जोर-जोर से आवाज़ देने लगा, “रुस्तमजान !” उनकी गरजदार आवाज़ सुनते ही लकड़हारे दौड़कर उनके पास आये। सब बड़े परेशान हुए। “हमें रुस्तम को आस-पास की सारी जगहों में ढूँढ़ना चाहिए,” उनमें से कोई बोला। सोच में डूबे हुए रुस्तम के बूढ़े पिता अचानक लपककर “औरतों” की भोंपड़ियों की तरफ भागे।

थोड़ी ही देर में वे हाथ में एक नासदानी लिये हुए वापस आये, जिस पर सुनहरे अक्षरों में कुछ लिखा था, जो शायद उसके मालिक का नाम था। बूढ़े ने कुछ समय तक नासदानी को ध्यान से देखा और बड़े रोषपूर्ण स्वर में बोला।

“दोस्तो रुस्तमजान किसी की नीचतापूर्ण चाल का शिकार हो गया है। जो मुसीबतों की मारी “औरते” रोती हुई हमसे शरण मागने आयी थी, वास्तव में औरते नहीं थी। वे मर्द थे, और यह इस नासदानी से साबित हो गया है। यह नासदानी सलीमबाय के भतीजे बूरी की है।”

लकड़हारों में से एक ने अटक-अटककर किसी तरह नासदानी पर लिखा हुआ पढ़ा और उसने भी बूढ़े के सदेह की पुष्टि कर दी।

रुस्तम उस अथाह ख़ाई में पूरे एक दिन और एक रात सोता रहा। धीरे-धीरे जब उसे होश आया, तो उसने अपने को हाथ-पैर बंधे हुए किसी अनजानी जगह में पाया, जहाँ घोर अंधेरा छाया हुआ था। कहीं दूर से रोने-चिल्लाने और कराहने की आवाज़ें आ रही थीं। रुस्तम ने अपने शरीर पर कसकर बंधी हुई रस्सियों को तोड़ने की कितनी ही कोशिश की, पर उसे इसमें सफलता नहीं मिली। फिर भी उसने हिम्मत न हारी और अपनी कोशिशें जारी रखीं। अंत में उसके सीने पर बंधी रस्सी टूट गयी और थोड़ी ही देर में वह आजाद हो गया। वह फौरन उस ओर बढ़ा, जहाँ से कराहने की आवाज़ें आ रही थीं। उसने पता लगाने का निश्चय किया कि वहाँ क्या हो रहा है। काफ़ी दूर चलने के बाद हल्की-सी रोशनी में उसे बायीं ओर एक गुफा का मुँह दिखाई दिया, जो चक्की के पाट से बंद किया हुआ था। कराहने की आवाज़ें उसी गुफा में से आ रही थीं। रुस्तम ने अपने कंधे से चक्की के पाट को सरका दिया। जैसे ही वह गुफा के अंदर घुसा उसे अपने पैरों के नीचे आदमी की हड्डियाँ महसूस हुईं। वह साहसपूर्वक आगे बढ़ा। गुफा के अंदर जाने पर उसे एक छोटा महल नज़र आया, जिसके बाहर मिट्टी का चबूतरा बना हुआ था। चारों ओर मिट्टी के बर्तनों में दीप टिमटिमा रहे थे और किसी भी क्षण बुझ सकते थे। चबूतरे पर बिछी हुई तरह-तरह के जानवरों की फटी-पुरानी खालें अब गलने लगी थीं। महल के सामने उसे एक अघकारमय जगह दिखाई दी।

रुस्तम ने पास जाकर देखा, तो उसका दिल कांप उठा—बर्फ़ीले पानी से भरे एक बहुत बड़े मिट्टी के पात्र में एक सत्तरह बरस की लड़की कैद थी। उसके दोनों हाथ रस्सियों से दीवारों से बंधे हुए थे और उसकी चालीस चोटिया दीवारों पर लगी चालीस खूंटियों से बंधी हुई थी। वह बड़ी मुश्किल से सांस ले पा रही थी और लगता था कि इतनी असह्य पीड़ा के कारण वह किसी भी क्षण मर सकती है। लड़की अनिच्छा मुदरी थी। लगता था जैसे उसके चेहरे से आभा फूटी पड़ रही है और उसके आस-पास का अंधकार दूर हो रहा है। रुस्तम ने यह सोचने में समय व्यर्थ नहीं खोया कि यह लड़की कौन है और उसे क्यों इतनी असह्य यातनाएँ दी जा रही हैं। उसने फौरन सारी खूंटियाँ उखाड़कर लड़की को मुक्त कर दिया और एक लात मारकर मिट्टी के पात्र को उलट दिया। लड़की इतनी कमज़ोर हो गयी थी कि वह

खड़ी न हो सकी और ज़मीन पर गिर पड़ी। उसकी सांस इतनी धीमी चल रही थी कि लगता था उसके प्राणपक्षे रुक चुके हैं। उसी समय वहाँ एक कुबड़ा, टेढ़े पैरोवाला, बहुत लंबे बालोवाला बीना आया, जिसके साथ लगभग सत्तर साल का एक बूढ़ा था। उस बूढ़े की नाक उसकी लाठी से भी लंबी थी और चेहरे पर इनेगिने बारह बाल थे। बीना पाताल की दुनिया के डाकुओं का सरदार था। बूढ़ा इमाम उसका सहयोगी था, जिसका काम लोगों के धन का पता लगाकर डाकू को उनके यहाँ डाका डालने के लिए भेजना था। डाकू उस लड़की को इमाम की मदद से उठाकर लाया था और उसे अपनी पत्नी बनाना चाहता था, जिसमें उसे सफलता नहीं मिल रही थी। गुस्से में आकर डाकू लड़की को मार डालना चाहता था, पर जैसे ही इसकी खबर बूढ़े इमाम के कान में पड़ी, तो वह लड़की को मनाने के लिए बीने के साथ आ गया। रुस्तम पर अचानक नज़र पड़ते ही डाकू ने बूढ़े को आँखों ही आँखों में कुछ इशारा किया और ठहाका मारकर बोला:

“लगता है, कोई मेरे गुस्से की परवाह किये बग़ैर इस लड़की को बचाने के इरादे से यहाँ आया है।”

रुस्तम चुपचाप खड़ा डाकू को देखता रहा।

“ऐ, छोकरे, तू कौन है? अगर अपना नाम बताये बग़ैर नहीं मरना चाहता, तो अपना नाम बता!” डाकू गरजकर बोला और रुस्तम की ओर बढ़ा। रुस्तम का छोटे-से बच्चे की तरह मज़ाक़ उड़ाने के इरादे से डाकू ने अपना हाथ उसके कान की ओर बढ़ाया, पर अचानक उसके सीने में एक इतना जोर का धूँसा पड़ा कि वह तीन कलाबाज़ियाँ खाता हुआ बूढ़े से टकराया और उसे भी साथ में गिराता हुआ उसके ऊपर ही जा पड़ा। उठने की कोशिश में उसने बूढ़े को बिल्कुल ही कुचल डाला... बीना किसी तरह उठा, उसका चेहरा गुस्से से विकृत हो गया। अपनी तलवार निकालकर वह रुस्तम की ओर लपका। रुस्तम पहले से ही वह मिट्टी का बड़ा पात्र सिर के ऊपर उठाये तैयार खड़ा था। रुस्तम ने पूरी ताक़त के साथ वह बर्तन डाकू के सिर पर दे मारा। डाकू ज़मीन पर गिर पड़ा और रुस्तम ने फ़ौरन उसकी तलवार उठाकर उसे मार डाला।

ख़ूबसूरत लड़की की लंबी बरौनियोवाली आँखें थोड़ी-सी खुलीं और उसके सूखे होंठ थोड़े फड़फड़ाये कि रुस्तम ने तुरंत अपनी अंजलि में पानी भरकर उसके होंठों से लगा दिया। लड़की ने कुछ घूंट पानी पिया और भयभीत आँखों से रुस्तम की ओर देखकर पूछा:

“आप कौन हैं और यहाँ कैसे पहुँचे? मुझे मौत की सज़ा सुनाई गयी है। आप फ़ौरन यहाँ से भागकर अपनी जान बचाइये। अगर उन लोगों को मालूम पड़ गया कि आप मुझे बचाने आये हैं, तो ये आपको भी तड़पा-तड़पाकर मार देगे।”

रुस्तम लड़की की ओर देखकर बोला:

“आप अब आज़ाद हो चुकी हैं।”

लड़की विस्मित होकर बोली:

“आप क्या मुझे कोई परियों की कहानी सुना रहे हैं? ऐसा तो हो ही नहीं सकता।”



इतने सालों से उसके पंजों में फंसा एक भी आदमी यहाँ से जिंदा बचकर नहीं निकल पाया है। उस खून के प्यासे और भयानक आदमी को 'खूनी राक्षस' कहते हैं। इस राज्य में एक भी आदमी ऐसा नहीं है, जो उससे न डरता हो। नन्हे बच्चे तक उसका नाम सुनकर रोना बंद कर देते हैं, हजारों सैनिक भी उस नर-पिशाच का सामना नहीं कर सकते।"

लड़की ने घबराहट में अपनी कोमल उंगलियों से रुस्तम का हाथ छू लिया। वह बड़ी अधीरता से उसके बोलने की प्रतीक्षा कर रही थी।

"क्या इसी तलवार से वह डाकू पूरी सेना को मार भगाता था?" रुस्तम ने डाकू से छीनी हुई तलवार दिखाते हुए पूछा।

"यह आपके हाथ कैसे लगी?" लड़की ने फिर आश्चर्य व्यक्त किया।

रुस्तम लड़की का हाथ अपने हाथ में लेकर उसे गढ़ के पास ले गया, जहाँ डाकू और इमाम की लाशें पड़ी थीं। लड़की ने चैन की सास ली। रुस्तम के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए वह सीने पर हाथ रखकर भुकी और लंबी बरौनियोंवाली आकर्षक आंखें भुकाकर बोली:

"सुनहले देश के महावीर, तुम धन्य हो।"

रुस्तम यह शब्द सुनकर आश्चर्य से पूछ बैठा:

"आपको कैसे मालूम पड़ा कि मैं सुनहले देश से आया हूँ? आप कौन हैं?"

"मेरा नाम तोंग गुली\* है। आपके बारे में केवल मैं ही नहीं, यहाँ के सारे लोग जानते हैं, जो न जाने कितने सालों से आपके आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इस 'नर-पिशाच' को मारकर इसकी काली करतूतों से केवल आप ही हमें बचा सकते थे। आपका नाम रुस्तम है, आप लकड़हारे हैं, आप बहादुरी से जनता के शत्रुओं से लड़कर जनता की रक्षा करते हैं—ये सब बातें मुझे मेरे बाबा ने सुनाई थीं। चलिए, मैं आपको हमारे लोगों से मिलाती हूँ। यह मेरा सबसे पहला कर्तव्य है।"

वे दोनों शहर की ओर चल दिये। रास्ते में लड़की ने रुस्तम को अपने देश के बारे में बहुत-सी बातें बतायीं।

सुबह होते-होते वे एक मैदान के पास पहुँचे, जहाँ लोगों की बहुत बड़ी भीड़ जमा थी। लोगों के चेहरों से फ़ौरन मालूम पड़ गया कि उन पर बहुत बड़ी मुसीबत आनेवाली है। बहुत-से लोग रो रहे थे, कुछ बेबस होकर ज़मीन पर सिर पीटते हुए अपने कपड़े फाड़ रहे थे, कुछ बेहोश हो चुके थे और कुछ धैर्यवान व साहसी लोग अपने साथियों को दिलासा दिला रहे थे। आखिर लोग क्यों इतने घबराये हुए थे? थोड़ी दूर एक टेकरी पर एक चौदह साल का लड़का और एक भेड़ खड़े थे। उनकी आंखों पर पट्टी बंधी हुई थी। कुछ लोग रोते-बिलखते लड़के के पास जाना चाहते थे, पर बाक़ी लोग उन्हें उसके पास जाने से रोक रहे थे। रुस्तम यह सब देखकर आश्चर्यचकित रह गया और उसने लड़की से पूछा:

\* तोंग गुली—ऊषाकाल में खिलनेवाला फूल।

“तोग गुली, आखिर बात क्या है?”

तोग गुली ने आसू बहाते हुए जवाब दिया:

“अच्छा होता अगर मैं पैदा ही नहीं हुई होती, इससे कम-से-कम मुझे इतनी मुसीबते तो न देखनी पड़ती। दो साल से यह आम बात हो गयी है।”

रुस्तम “आम बात” से उसका आशय समझ नहीं पाया और फिर पूछ बैठा

“तोग गुली, तुम मुझे यह बात अच्छी तरह समझाओ।”

तोग गुली ने किसी तरह अपने पर काबू पाया और बताने लगी:

‘पिछले कुछ सालों से एक अजदहा हमारे इलाके में आ गया है। ठोर खाकर उसने बहुत-से परिवारों को तबाह कर दिया है। लोग उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं पा रहे हैं। वह अजदहा उस सामनेवाली टेकरी के पीछे ही रहता है। एक बार तो यह अजदहा सीधा हमारे शहर में ही घुसनेवाला था, लोगों में भगदड़ मच गयी, न जाने कितने आदमियों को खा जाता। उसके रास्ते में एक लड़का और एक भेड़ छोड़कर ही लोग उसे शहर में घुसने से रोक पाये। तब से हर रोज यही करना पड़ता है। लड़के और भेड़ को खाने से अजदहे का पेट भर जाता है और वह वहीं से वापस लौट जाता है।

जिस आदमी की भी बारी आती है, उसे अपना बेटा देना होता है और जिसके कोई बच्चा न हो, उसे एक भेड़ देनी होती है। उस अजदहे को लड़का और भेड़ चढ़ाना ही ‘आम बात’ हो गयी है।

पिछले साल, लगभग इसी समय मेरी तेरह बरस की छोटी बहन चेरिंगुल भी इस अजदहे की शिकार हुई थी। और लगता है, आज किसी बड़े आदमी के बेटे की बलि चढ़ाई जा रही है—देखिये कितने लोग इकट्ठे हो गये हैं।”

अचानक भीड़ में हलचल मच गयी। बहुत-से लोग आसमान की ओर हाथ उठाकर मदद की दुआ मांगने लगे।

“हाय, हाय, अजदहा लड़के की ओर बढ़ रहा है,” तोग गुली की आवाज कांप उठी और वह बेहोश होकर गिर पड़ी। रुस्तम ने नज़र घुमाकर देखा—एक काला भुजंग अजदहा धीरे-धीरे रेगता हुआ लड़के की ओर बढ़ रहा था। भेड़ अजदहे की गंध पाकर छटपटा उठी। लड़का भी हृदयविदारक आवाज़ में अपनी माँ को मदद के लिए पुकारते हुए छटपटाने लगा। पर लड़का और भेड़ दोनों ही सम्मोहित-से हुए वहीं खड़े रह गये। रुस्तम टेकरी की ओर लपका। इस बीच अजदहे ने लम्बी जीभ निकालकर अपने शिकार को मुंह की ओर खींचना शुरू कर दिया। जैसे ही लड़का अजदहे के मुंह तक पहुँचा, अजदहे के सिर पर एक जोरदार चोट पड़ी।

अजदहा दर्द से पागल हुआ बड़े जोर से दहाड़ मारकर पीछे मुड़ने ही वाला था कि रुस्तम फुर्ती से उछलकर उसकी गर्दन पर सवार हो गया और उसका सिर अपने दोनों पैरों के बीच भीचकर तलवार के एक वार से ही काट डाला।

लड़का, जिसे अजदहा निगलनेवाला था, रुस्तम के गले से लिपट गया। लोग खुशी मनाने

लगे—उनके लिए आज का दिन एक बहुत बड़ा त्योहार हो गया, क्योंकि इसी दिन उन्हें अपने जानी दुश्मन से छुटकारा मिला था। भीड़ में से एक लंबे कद का सफ़ेद दाढ़ीवाला आदमी निकलकर रुस्तम के पास आया और आंखों में खुशी के आंसू भरकर बोला

“तुम महावीर हो, तुमने हमें इस बहुत बड़ी मुसीबत से छुटकारा दिला दिया, हमारे सारे दुःख दूर कर दिये। तुम कौन हो?”

तोंग गुली को होश आया और उसने देखा—लोग खुशी से पागल हो उठे हैं और रुस्तम को चारों ओर से घेरे उसकी प्रशंसा कर रहे हैं। रुस्तम से सवाल पूछनेवाले आदमी ने तोंग गुली को सीने से लगा लिया और रोते हुए कहने लगा:

“मेरी बेटी, तू जिंदा है? तुझे उस गुफा से बचाकर कौन लाया?”

तोंग गुली बोली:

“जिस आदमी ने आप सबकी जान बचाई, वही मुझे भी गुफा से बचाकर लाया है। सुनहले देश का महावीर, जिसकी प्रशंसा के गीत आप गाया करते थे—लकड़हारा रुस्तम, आपके सामने खड़ा है। इसी ने उस ‘सूनी राक्षस’ और आदमखोर अजदहे को मारा है। सारी मुसीबतों से छुटकारा दिलाकर इसी ने हम सबको एक नयी जिंदगी दी है।”

सारे लोग रुस्तम की प्रशंसा करते हुए उसके साथ अपने शहर की ओर चल पड़े। लोगों ने बहुत दिनों तक खुशिया मनाई। रुस्तम कुछ समय तक उन लोगों के साथ रहा, पर फिर उदास हो गया, क्योंकि वह जल्दी-से-जल्दी अपने बड़े पिता और दोस्तों के पास लौट जाना चाहता था। एक बार रुस्तम ने तोंग गुली के पिता को अपने पिछले जीवन का सारा किस्सा सुनाया और यह भी बताया कि किस तरह उस चालाक बुढ़िया ने उसके हाथ-पैर बंधवाकर उस अंधेरी अथाह छाई में फिंका दिया था। यह बताकर कि उसे अपने देश की कितनी याद आती है, रुस्तम ने पूछा कि यहाँ से वहाँ कैसे पहुँचा जा सकता है। बहुत देर तक सोच में डूबे बाबा ने एक गहरी सांस ली और रुस्तम की ओर देखकर बड़े उदास स्वर में बोला:

“मेरे बहादुर दोस्त, जब से यह दुनिया बनी है, एक भी आदमी यहाँ से सुनहले देश में नहीं पहुँच पाया है। हमारे बाबा-परबाबाओं से सुनी हुई कहानियों के अनुसार हमारे शहर से बहुत दूर एक चालीस पहाड़ नाम की ऊँची चोटी है। सुना है, उस चोटी पर से ही एक रास्ता सुनहले देश की ओर जाता है। उस रास्ते को हममें से किसी ने भी नहीं देखा है। हजारों लोग उस चोटी की ओर जा चुके हैं, पर कोई भी उस तक नहीं पहुँच पाया है। उनमें से कोई जिंदा वापस नहीं आया। रास्ता बड़ा खतरनाक है, कदम-कदम पर तरह-तरह के जंगली जानवर मिलते हैं। उस चोटी का नाम भी चालीस पहाड़ यो ही नहीं पड़ा है। वे चालीस चिकने और सीधे पहाड़ एक के ऊपर एक खड़े हैं और हर पहाड़ कई हजार हाथों से कम ऊँचा नहीं है। मेरे दोस्त, तुम वहाँ लौटने का इरादा छोड़ दो और हमारे साथ रहकर हमारे सरदार और सेनापति बनो। हमारा दिल तुम्हें छोड़ने को बिल्कुल भी नहीं करता।”

रुस्तम अपने दोनों हाथ सीने पर रखकर आदरपूर्वक बोला:

“इसमें कोई संदेह नहीं कि आप बहुत ही नेक और भले आदमी हैं और मुझे इस दुनिया

के सारे खतरो और मुसीबतों से बचाना चाहते हैं। पर मेरे पिता और मेरे दोस्त तो मुनहले देश में हैं। पता नहीं, मेरे बगैर वे कैसे जी रहे होंगे? उनसे मिले बगैर मैं भी इस दुनिया में तड़पता रहूँगा और कभी सुखी न रह सकूँगा।”

बाबा ने रुस्तम की बात सुनकर न चाहते हुए भी उसे अपने देश लौटने की इजाजत दे दी। दूसरे दिन उस शहर के सारे लोगों ने रुस्तम को विदाई दी। शहर के सबसे बड़े बुजुर्ग ने रुस्तम का माथा चूमकर अपने बाबा का पांच हाथ लंबा तीर कमानसहित उसे दिया और बोला

“हमारी ओर से तुम्हें यह एक तुच्छ भेंट दे रहे हैं—रास्ते में यह तुम्हारी रक्षा करे।” रुस्तम ने हाथ हिलाकर शहर के लोगों से विदा ली और उस पहाड़ की ओर चल पड़ा। उसे रास्ते में कई रेगिस्तान, नदियाँ और छोटी-मोटी पहाड़ियाँ पार करनी पड़ी। अंत में वह चालीस पहाड़ की तलहटी में आ पहुँचा। पहाड़ की ओर देखते ही उसका दिल धक-से रह गया। वास्तव में उस चिकने पहाड़ पर चढ़ पाना असंभव-सा लगता था। एक पहाड़ के ऊपर दूसरा पहाड़ इस तरह खड़ा था कि उसकी चोटी भी दिखाई नहीं दे रही थी। यह निर्णय ले पाना भी मुश्किल हो रहा था कि उस पहाड़ पर किस ओर से पहुँचकर चढ़ा जाये। अचानक दूर से एक दहाड़ आती सुनाई पड़ी। एक क्षण बाद ही उसे एक शेर इधर-उधर कंकर-पत्थर छिटकाता हुआ मुंह बाये रुस्तम की ओर भागता हुआ नज़र आया। रुस्तम ने एक ओर उछलकर शेर पर तीर का निशाना लगाना चाहा। पर शेर यह देखकर रुक गया और सिर झुकाकर रुस्तम से बोला :

“ऐ, नेक आदमी! मेरी मदद कर, मेरे बच्चों को मरने से बचा ले!”

रुस्तम ने शेरनी के सिर पर प्यार से हाथ फेरकर पूछा :

“मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ? तुम जो कहो, मैं करने को तैयार हूँ।”

शेरनी रुस्तम को इशारा करके चट्टान के पीछे लपकी। रुस्तम उसके पीछे-पीछे दौड़ते हुए एक गुफा के मुह के पास पहुँचा, जहाँ बेल जैसा एक बहुत बड़ा बिच्छू मंडरा रहा था। यह बिच्छू गुफा में छुपे शेरनी के दो बच्चों को डंक मारना चाहता था। रुस्तम ने सीधे बिच्छू के सिर का निशाना लगाकर तीर मारा, जिससे वह बेहोश होकर एक ओर को लुढ़क गया। फिर उसने फौरन अपनी तलवार से बिच्छू के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। शेरनी के बच्चे, जो अब तक डरकर गुफा में छुपे हुए थे, भागकर बाहर निकले और अपनी माँ से लिपट गये। शेरनी ने सिर झुकाकर रुस्तम के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की। महावीर रुस्तम अब तक बुरी तरह थक चुका था और उसे वहीं नींद आ गयी। शेरनी अपने दोनों बच्चों को रुस्तम के पास छोड़कर गुफा में उन सबके लिए कुछ खाना तैयार करने चली गयी। शेरनी के बच्चे आपस में खेलने लगे। उसी समय अपने मुँह में भेड़ दबाये शेर भी आ पहुँचा। रुस्तम को देखते ही शेर भेड़ छोड़कर दहाड़ता हुआ उसे मारने के लिए लपका, पर उसके बच्चे उससे लिपट गये और बोले :

“इस आदमी को छूइये भी नहीं, इसने हमें मरने से बचाया है।”



शेर यह सुनकर खड़ा का खड़ा रह गया। उसी समय शेरनी भी गुफा में से निकली और शेर को सारा किस्सा सुनाकर उसे मरा हुआ बिच्छू भी दिखाया। शाम को जब रुस्तम की नींद खुली, तो उसने देखा कि बहुत-से शेर उसके चारों ओर पहरा देते हुए उसके जागने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। उन सब शेरों में एक शेर औरों से अलग ही नज़र आ रहा था - उसकी अयाल बहुत घनी थी, वह और सब शेरों से कुछ ऊँची जगह पर बैठा था। वह शेर उन पहाड़ों में रहनेवाले सब शेरों का मुखिया था। रुस्तम ने फ़ौरन उसके पास पहुँचकर उसका सादर अभिवादन किया। शेरों का मुखिया अपने दोनों पंजे रुस्तम के कंधों पर रखकर बोला

"तुमने उस भयावने बिच्छू को मार डाला, जिसके डर से हम भागते-फिरते थे और इस तरह न केवल हमें, बल्कि हमारी आनेवाली पीढ़ियों को भी विनाश से बचा दिया। बताओ, बहादुर, तुम्हारी ऐसी कौन-सी इच्छा है, जिसे हम पूरा कर सकते हैं?"

रुस्तम सिर झुकाकर बोला:

"मैं अपने देश लौटकर अपने घरवालों और मित्रों से मिलना चाहता हूँ।"

"पर वे कहाँ रहते हैं?" शेरों के मुखिये ने पूछा।

"वे लोग सुनहले देश में आर्चा के एक जंगल में रहते हैं," रुस्तम ने जवाब दिया।

यह सुनकर शेर अपनी भाषा में आपस में कुछ सलाह-मशविरा करने लगे। रुस्तम जल्दी-से-जल्दी अपने देश लौटना चाहता था और बड़ी अधीरता से उनके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था। थोड़ी देर बाद शेरों के मुखिये ने मुंह उठाकर जोर से दहाड़ मारी, जिससे सारा आकाश गूँज उठा। उसी समय एक छोटा-सा, पर मोटे-मोटे पंजोंवाला शेर दौड़ता हुआ वहाँ आ पहुँचा। आते ही वह अपने मुखिये के सामने मिर झुकाकर खड़ा हो गया।

"तुम इस नौजवान को चालीस पहाड़ की चोटी तक ले जाकर सुनहले देश का रास्ता दिखाओ और वहाँ से कुछ ऐसी चीज़ लेकर आओ, जिससे हमें विश्वास हो जाये कि तुमने इसे सही-सलामत वहाँ पहुँचा दिया," शेरों का मुखिया बोला। उस छोटे-से शेर ने एक बार फिर अपने मुखिये को झुककर सलाम किया और रुस्तम के पास आकर खड़ा हो गया। शेरों का मुखिया रुस्तम से बोला:

"मेरे बहादुर, तुम्हारी यात्रा बड़ी खतरनाक होगी। हमारा शेर तुम्हें एक ऐसी गुफा में से लेकर जायेगा, जिसमें घोर अंधेरा होगा और उसका अंत भी नज़र नहीं आयेगा। तुम बिल्कुल भी ज़िद न करना और जो कुछ हमारा शेर कहे, वैसा ही करना, नहीं तो कोई-न-कोई मुसीबत आ जायेगी। उसके बाद जैसे ही तुम सुनहले देश में कदम रखोगे, हमारे शेर के जरिये हमें वहाँ से कोई चीज़ जरूर भेज देना, जिससे हमें मालूम पड़ जायेगा कि तुम सही-सलामत वहाँ पहुँच गये हो!"

रुस्तम इन सारी बातों को ध्यान में रखकर छोटे शेर की पीठ पर बैठ गया। बाकी सारे शेर भी गुफा के मुह तक रुस्तम को विदाई देने आये। उन्होंने अपना परंपरागत विदाई का नाच किया। छोटा शेर रुस्तम को अपनी पीठ पर बिठाये गुफा में घुसा, थोड़ी देर एक जगह खड़ा रहा और फिर पवन वेग से उड़ चला। बीच-बीच में वह दहाड़ता भी रहा और उसकी

दहाड़ के जवाब में चारों ओर से कुछ आवाजें भी सुनाई देती रही। रुस्तम ने जानना चाहा कि ये आवाजें किसकी हैं :

“वनराज, ये रहस्यमय आवाजें किसकी हैं? मुझे कुछ बताओ तो सही।”

शेर बोला :

“मेरे बहादुर दोस्त, इस समय तुम्हारा सवाल पूछना ठीक नहीं। तुम चुप ही रहो, तो अच्छा होगा, नहीं तो तुम और मैं दोनों ही मारे जायेंगे।”

शेर अंधेरी गुफा में दौड़ता रहा और वे रहस्यमय खतरनाक आवाजें चारों ओर से सुनाई देती रही—कभी किन्हीं अदृश्य चिड़ियों के गाने की आवाज आती, कभी किसी पीड़ाग्रस्त प्राणी के कराहने की, कभी पापियों के नाचने-गाने की तेज आवाजें सुनाई देती, जैसे वे तुरही और डफ की लय पर नाच रहे हों, कभी लड़कियों के सुरीले गाने सुनाई देते, कभी गुफा को हिला देनेवाली बिजली की कड़क सुनाई देती। हालांकि रुस्तम को बहुत डर लग रहा था पर उत्सुकतावश वह फिर पूछ बैठा :

“वनराज, हमारे चारों ओर खुशियाँ बनानेवाले और दर्द से तड़पनेवाले आखिर ये कौन हैं?”

शेर ने फिर उससे प्रार्थना की :

“सुदा के वास्ते, अपने दोस्तों की खातिर अभी चुप रहो!”

रुस्तम समझ गया कि उसे शेर का कहा मान लेना चाहिए। वह चुपचाप शेर की पीठ पर बैठा अंधेरे में देखने की कोशिश करता रहा, पर उसे कुछ भी दिखाई न दिया। इस बीच शेर तीर की तरह उड़ता रहा। रुस्तम शेर की अयाल को कसकर पकड़े बैठा रहा। लगता था कि उनकी यात्रा का अंत ही नहीं होगा, पर शेर अचानक रुस्तम से बोला :

“मेरे बहादुर दोस्त, अब तुम अपनी आंखें बंद कर लो। और जब तक मैं न कहूँ, आंखें खोलने की हिम्मत मत करना। यह अच्छी तरह समझ लो कि अगर तुमने इस समय कोई गलती कर दी, तो उसके लिए तुम अपने ही नहीं मेरे दोस्तों के सामने भी जिम्मेदार होगे।”

रुस्तम आंखें मीचकर मजबूती से शेर की गरदन से चिपक गया। शेर और ज्यादा तेजी से भागने और इतने जोर से दहाड़ने लगा कि रुस्तम को भी डर लगने लगा। नसों के तनाव और डर के कारण रुस्तम के चेहरे से पसीने की धारें छूटने लगीं और उसके सारे कपड़े भीग गये। न जाने कितनी देर तक शेर तीर की तरह उड़ता रहा। अचानक रुककर वह बोला :

“अब उतर जाओ।” रुस्तम आंखें मीचे हुए शेर की पीठ से उतर गया। “अब आंखें खोल लो!” शेर बोला। रुस्तम ने आंखें खोलीं, तो उसने अपने को पहाड़ की चोटी पर पाया। हवा में फूलों, हरे-भरे पेड़ों और घास की सुगंध तैर रही थी, तथा चश्मों का स्वच्छ पानी कलकल करता बह रहा था। लगता था जैसे कोई माली इन सब फूलों और पेड़-पौधों की सभाल करता था।

“क्या इन सुंदर बागों और फुलवारियों में कोई रहता है?”

शेर इतना थक गया था कि वह इस सवाल का जवाब भी न दे सका। वह बिना कुछ

शहर का हाकिम अमीर लोगों, अपने सेनापतियों तथा अन्य प्रतिष्ठित अत्याचारियों से घिरा बड़ी बेफिक्री और घमंड से टहल रहा था।

सलीमबाय अपने लाखी रंग के घोड़े पर बैठा-बैठा शहर के हाकिम द्वारा विद्रोहियों को फांसी दिये जाने का हुक्म पढ़कर सुना रहा था। नगाड़े और ज़ोर से बजने लगे। जल्लादों ने कैदियों के गलों में फदे डाल दिये। सलीमबाय फांसी के नज़ारे का आनंद लेते हुए अपनी चांदी की नासदानी में से एक चुटकी नसवार निकालने लगा। वह नसवार जीभ के नीचे \* रखनेवाला ही था, कि एक ताकतवर हाथ का धक्का उसे लगा और वह घोड़े पर से नीचे गिर पड़ा।

सैनिकों ने उस आदमी को पकड़ने की कोशिश की, पर उन सबको ऐसी मार पड़ी कि वे वहाँ से भाग पड़े। जल्लाद कुछ भी समझ न पाते हुए भागकर छुपने की कोशिश करने लगे, पर उनमें से कोई भी बच नहीं पाया। पेड़ के तने की चोट उनके सिरो पर पड़ने से वे सब वहीं ढेर हो गये। जनता पर जुल्म ढानेवालों और जल्लादों का इन दोनों बहादुरों - रुस्तम और रीछनी ने ही काम तमाम कर दिया। इस बीच भीड़ में से कोई चिल्ला उठा : "इस तरह सलीमबाय को घोड़े से सिर्फ रुस्तम ही गिरा सकता है!" चारों ओर से खुशी की आवाज़ें आने लगीं : "हमारा बहादुर रुस्तम जिंदा है!", "हमारा बहादुर रुस्तम जिंदा है!" इस बीच बहादुर जनता के दुश्मनों को कड़ी सजा देते रहे। थोड़े समय बाद दोनों बहादुर कैद से छुड़ाये हुए अपने साथियों को लेकर वहाँ से चल दिये। मैदान में सिर्फ सलीमबाय, तीस जल्लादों और दो सौ सैनिकों की लाशें तथा फांसी के तख्तों और पिंजरों के टुकड़े ही पड़े रह गये।

लोग अपने बच्चों को गोदी में लेकर रुस्तम के साथ आर्चा के जंगल की ओर चल पड़े। सिद्दीक मोची अपनी बेटी को लेकर रुस्तम के पास आया। उसने मुस्कराते हुए रुस्तम से कहा :

"तुम्हें वह नीति-कथा याद है, जो मैं तुम्हें सुना रहा था और उस बुढ़िया ने अपनी पन्द्रह 'औरतों' के साथ आकर हमारी बात बीच में ही काट दी थी?"

रुस्तम बोला :

"वाह, कैसे भूल सकता हूँ, मुझे अच्छी तरह याद है! और मुझे हमेशा इस बात का अफसोस रहा है कि मैं आपकी नीति-कथा का अंत नहीं सुन पाया। अब सुनाइये!"

सिद्दीक मोची ने कनखियों से अपनी बेटी की ओर देखा, तो उसने सब कुछ समझकर आँखें भुका लीं। सिद्दीक मोची बोला :

"तुम्हारे सामने खड़ी मेरी बेटी जोहरा ही वह लड़की है, जो उस जल्लाद के जुल्मों को सहते हुए भी पूरे विश्वास के साथ अपने नौजवान के लौटने की प्रतीक्षा करती रही।"

रुस्तम ने फौरन जोहरा की ओर देखा। उसके अनार जैसे लाल गालों को देखकर रुस्तम के दिल में एक अलौकिक और अज्ञात भावना उमड़ी, जिसे व्यक्त करने के लिए उचित शब्द न मिलने पर वह मौन खड़ा रहा।

\* मध्य एशिया में नसवार खैनी की तरह भी इस्तेमाल की जाती है।

सिद्दीक मोची रुस्तम से कुछ सुनने की आशा कर रहा था। और बहादुर ने, जो खोया-खोया लग रहा था, धीमी आवाज में पूछा।

“उसका बहादुर नौजवान कौन है और कहाँ है?”

रुस्तम से कुछ कदमों की दूरी पर उसके पिता खड़े थे, जो लगता था, सब कुछ अच्छी तरह जानते थे कि बात किस बारे में हो रही है। सिद्दीक मोची और बूढ़े ने एक दूसरे की ओर अर्धपूर्ण दृष्टि डाली और मुस्करा उठे, इसके बाद मोची ने रुस्तम की ओर अनिमेष देखते हुए कहा।

“तुम जानना चाहते हो, वह नौजवान कौन है? वह वही है, जिसने पूछा था, ‘उसका बहादुर नौजवान कौन है?’”

रुस्तम ने आगे कदम बढ़ाते ही अपने पिता की ओर देखा। और उसके पिता ने भी मुस्कराकर सिद्दीक की बात का समर्थन कर दिया।

सुबह की शीतल मंद हवा से आर्चा के पेड़ों की सरसराहट सुहावनी लग रही थी, जैसे पेड़ भी अपने दोस्तों के वापस आने पर प्रसन्न हो रहे हों। आर्चा के जंगल में जहाँ कई दिनों से उदासी छाई हुई थी अब हसी-खुशी की आवाजें गूजने लगी। और सुनहले देश के महावीर की मदद से अत्याचारियों से हमेशा के लिए छुटकारा पाकर लोग सुख-चैन से रहने लगे।

## चालीस चोर और एक गंजा



बहुत समय पहले एक गजा आदमी रहता था। एक बार वह अपने बैल को चराने के लिए चरागाह में छोड़ने जा रहा था। सहसा चालीस चोर निकलकर आये और उसका बैल छीनकर ले गये। दूसरे दिन गजा अपने गधे को लेकर चोरो के पास पहुँचा और बोला:

“मेरे गधे की लीद की जगह रोजाना मुझे सोने की एक हजार अशरफियां मिलती हैं।”

चोरो ने गजे पर विश्वास करके उसे एक हजार अशरफियां दीं और गधा खरीद लिया। सबसे पहले वे गधे को अपने सरदार के पास ले आये, जिससे वे बहुत डरते थे। सरदार को जब गधे की खूबी मालूम पड़ी, तो वह उसे चौबीस घंटे खिलाता रहा। सुबह होते-होते उसे नींद आ गयी। जब उसकी नींद खुली, तो उसने देखा कि वह गधा तो दूसरे गधे जैसा ही है। पर फिर भी उसने यह जाहिर न होने दिया कि उसके साथ धोखा हुआ है और कहने लगा



“मैंने गधे को जहाँ बांधा था, वहाँ मुझे आज दो हजार अशरफियाँ मिलीं।”

बाकी चोर भी बारी-बारी से गधे को खिलाने लगे। और तब तक खिलाते रहे, जब तक उन सबको यह मालूम न हो गया कि गंजे ने उन्हें बेवकूफ बना दिया।

उन्होंने गंजे को जान से मार डालने की ठानी। गंजे को उनका इरादा पहले से मालूम पड़ गया, पर वह बिल्कुल भी नहीं घबराया। उसने एक भेड़ काटकर उसकी अंतड़ी में उसका खून भरा और अपनी पत्नी के गले में उसे बांधकर बोला:

“मैं तुझसे जो करने को कहूँ, तू उसका बिल्कुल उल्टा करना। फिर मैं तलवार का वार करूँगा और तू मरने का ढोंग करना। इसके बाद मैं डंडा मारूँगा और तू उठकर अपना काम करने लगना।”

उसने इतना कहा ही था कि चोर वहाँ आ घूमके। चोरों का सरदार गरजा:

“तूने हमें धोखा दिया, हम तुझे जान से मार डालेंगे!”

पर गंजे ने ऐसा ढोंग रचा, मानो वह उन्हें मेहमान मानकर उनकी आवभगत कर रहा हो।

“चूल्हा जला!” उसने अपनी पत्नी को आवाज देकर कहा।

उसकी पत्नी ने फौरन चूल्हे पर पानी छिड़क दिया और आग बुझ गयी। गंजा आग-बबूला हो उठा और अपने पिता की पुरानी तलवार उठाकर उसने अपनी पत्नी की गर्दन पर वार किया। तलवार का वार लगते ही पत्नी की गर्दन से खून के फव्वारे छूटने लगे और वह वहीं “मर गयी”। गंजे ने डंडा उठाकर कई बार पत्नी को मारा और उसकी पत्नी फौरन “जिंदा” होकर अपना काम करने लगी। चोर यह नजारा देखकर हैरत में पड़ गये। उन्होंने सोचा कि डंडा जादूई है और उसे गंजे से जबरन छीनकर भाग गये। अपने अड्डे पर पहुँचकर उन्होंने अपनी-अपनी पत्नियों को मार डाला और फिर उन्हें डंडे से मारने लगे, पर वे मुर्दा ही पड़ी रहीं। चोरों को बहुत गुस्सा आया और उन्होंने गंजे से फिर बदला लेने की ठानी। पर गंजे ने फिर एक चाल चली। वह अपनी माँ से बोला:

“आज चोर आयेंगे, पर उनके आने से पहले तुम कब्र खोदकर मुझे उसमें जिंदा ही दफना दो।”

उसके घरवालों ने गंजे को दफना दिया और उसके कहने के अनुसार उसमें एक छेद भी छोड़ दिया। चोर आये तो घरवाले बोले:

“गंजा आज मर गया। हमने उसे दफना दिया है।”

चोरों को विश्वास नहीं हुआ। वे कब्र के पास पहुँचे और उसमें से धुआँ निकलता देखकर उन्होंने सोचा: “इसका मतलब है—गंजे को उसके किये की सजा मिल रही है।” जब वे कब्र के पास शोर करने लगे, तो अचानक कब्र में से धुआँ निकलना बंद हो गया। चोर एक-एक करके छेद में से अंदर झाँककर देखने लगे। गंजा उनकी आँखों में पिसी मिर्च भोंकने लगा। “अरे, यह बदमाश धोखेबाज तो जिंदा है!” चोरों का सरदार चिल्लाया और उसने कब्र खोद डालने का हुक्म दिया। उन्होंने कब्र खोदी ही थी कि गंजा लपककर भाग पड़ा। चोरों ने

अपने घोड़ों पर उसका पीछा करके उसे पकड़ लिया। उन्होंने उसे पीट-पीटकर अधमरा कर दिया और एक बोरे में बन्द करके नदी में फेंकने चले। पर उसी समय चोरों को तीतरों का एक झुंड दिखाई दिया और वे उन्हें पकड़ने के लिए चारों दिशाओं में भागे। इसके थोड़ी देर बाद ही बोरे में बंद गंजे के पास से एक सौदागर अपनी भेड़ें हांकता हुआ गुजरा। गंजा बोरे के छेद में से सौदागर को देखते ही रोने-चिल्लाने लगा: "मुझे खान नहीं बनना, मुझे सेनानायक नहीं बनना!" सौदागर यह आवाज सुनते ही रुक गया और पूछने लगा:

"तुम कौन हो और बोरे में घुसकर क्यों बैठे हो?"

"मैं एक गरीब आदमी हूँ," गंजा बोला, "मुझे जबरन एक शहर का खान बनाना चाहते हैं। मैंने मना किया, तो मुझे बोरे में बांधकर जबरदस्ती उस शहर ले जा रहे हैं। मैं नहीं चाहता तो भी मुझे खान बनाना चाहते हैं।"

"अगर तुम खान नहीं बनना चाहते, तो मैं बनने के लिए तैयार हूँ!" सौदागर बोला और उसने बोरा खोल डाला। गंजा बोरे में से निकल आया और बोरे में उसकी जगह सौदागर ने ले ली। गंजे ने कसकर बोरे को बंद करके गांठ लगायी और सौदागर की भेड़ें लेकर चलता बना।

थोड़ी देर बाद चोर वापस आये। उनके हाथ एक भी तीतर न लगा था, इसलिए वे बहुत गुस्से में थे। बोरे को घोड़े पर लादकर वे नदी की ओर चल दिये। बोरे में बंद सौदागर बारबार चिल्लाता रहा: "मैं खान बनना चाहता हूँ, मैं सेनानायक बनना चाहता हूँ!" गुस्से में पागल चोरों ने सौदागर की खूब पिटाई की और उसे नदी में फेंक दिया।

एक बार जब चोर चोरी करके गंजे के पासवाली नदी के किनारे से गुजर रहे थे, तो उन्होंने देखा कि गंजा बड़े मजे से भेड़ें हांककर ले जा रहा है। चोरों का डर के मारे बुरा हाल हो गया, कांपते-कांपते उन्होंने गंजे से पूछा:

"अरे भई, हमने तो तुम्हें नदी में फेंक दिया था, और तुम यहाँ बड़े मजे में जिंदा घूम रहे हो और भेड़ें चरा रहे हो।"

गंजा जोर से हसकर बोला:

"अरे, तुम लोग पूरे बुद्ध हो, तुमने मुझे फेंकते समय मेरे हाथ में डंडा भी नहीं दिया। मैं बड़ी मुश्किल से किसी तरह हांक-हांककर इन भेड़ों को नदी के तल से बाहर लेकर आया हूँ।"

चोरों को गंजे की बात पर विश्वास हो गया। वे गंजे की मन्नत करने लगे:

"तुम हम सबको भी नदी में फेंक दो, हम भी वहाँ भेड़ों के झुंड लेकर आना चाहते हैं।"

गंजा बोला:

"तो फिर चलो, सब एक-एक बड़ी लाठी हाथ में ले लो।"

चोर फौरन लाठियां लेकर गंजे के पास पहुँचे।

“अच्छा, अब इसी जगह से नदी में छलांग लगाओ!” मंजा तेज बहती नदी की ओर इशारा करके बोला। चोरों ने आपस में सलाह करके फ़ैसला किया:

“हममें सबसे ताकतवर और बहादुर हमारा सरदार है। सबसे पहले वही नदी में कूदेगा। अगर वह न डूबा और वहाँ वास्तव में भेड़ों के झुंड दिखाई दिये, तो वह हमें भी बुला लेगा।”

चोरों का सरदार नदी में कूद गया और जैसे ही वह डूबने लगा उसने घबराकर हाथ ऊपर उठाया। चोरों ने सोचा कि सरदार उन्हें भी कूदने का इशारा कर रहा है और वे भी एक के बाद एक नदी में कूद गये। सबके सब नदी में डूबकर बह गये। गंजे ने चोरों से पीछा छुड़ाने के बाद उनके सारे चोरी के माल पर कब्ज़ा कर लिया और सारी ज़िंदगी सुख-चैन से जिया।

